

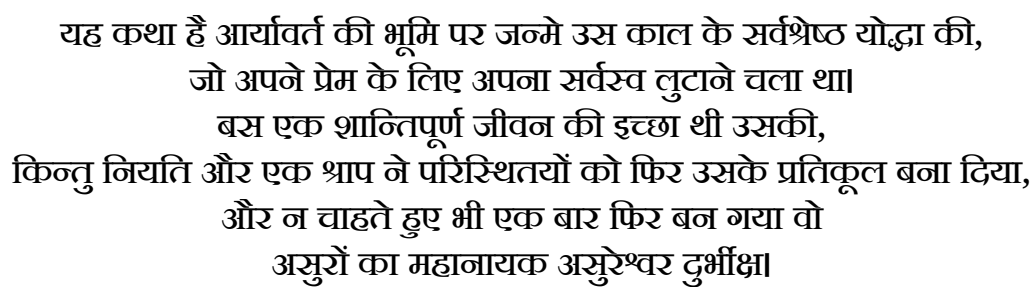


रणक्षेत्रम्

- खण्ड तीन -
दुर्भीक्ष और दुर्धरा



उत्कर्ष श्रीवास्तव



रणक्षेत्रम्

Uej Ke[eWwuejC#SeoEkeka lungeYeie

रणक्षेत्रम्

- खण्ड तीन -
दुर्भीक्ष और दुर्धरा

Uttam

उत्कर्ष श्रीवास्तव



Devi Chitra

अंजुमन प्रकाशन
942, मुहरीगंज, प्रयागराज-3 उत्तर प्रदेश, भारत
www.anjumanpublication.com
contact.anjumanpublication.com

प्रथम संस्करण अंजुमन प्रकाशन द्वारा 2019 में प्रकाशित
सर्वाधिकार टेक्सट उत्कर्ष श्रीवास्तव 2019
सर्वाधिकार सुरक्षित 2019
आवरण : ईशान चतुर्वेदी
टाइप सेटिंग : अंजुमन प्रकाशन

लेखक इस पुस्तक के मौलिक लेखन के नैतिक अधिकार का दावा करता है

यह पुस्तक या इसका कोई भी भाग लेखक की लिखित अनुमति के बिना पूर्ण या आंशिक रूप से इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक (जिसमें फिल्म/सीरियल/फोटोग्राफिक रिकार्डिंग/ पीडीएफ फारमेट भी सम्मिलित हैं) अभिलेखन विधि से या सूचना संग्रह तथा पुनः प्राप्त पद्धति (रिट्रीबल) अथवा अन्य किसी भी प्रकार से पुनः प्रकाशित, अनूदित या संचारित नहीं किया जा सकता।

इस उपन्यास के सभी पात्र और घटनाएँ काल्पनिक हैं। इसका किसी भी व्यक्ति अथवा घटना से कोई भी सम्बन्ध नहीं है। यदि कोई समानता पाई जाती है तो यह महज संयोग होगा।

॥ ॐ श्री गणेशाय नमः॥

मेरी माँ कहती हैं कि देवों में श्रेष्ठ भगवान गणेश का नाम पूजा में सबसे पहले लिया जाता है। इसलिए मैं भी अपनी इस महागाथा का आरम्भ इनकी आराधना से करता हूँ। क्योंकि इस कथा को लिखना मेरे लिए किसी पूजा से कम नहीं।

मेरे जीवन के सबसे बड़े आदर्श, मेरे नाना
श्री पौहारी शरण श्रीवास्तव
को समर्पित

दो शब्द

तो अंततः रणक्षेत्रम का वो भाग आ ही गया, जिसकी कई पाठकों को न जाने कबसे प्रतीक्षा थी। वास्तव में बड़ा ही दुर्गम मार्ग था इस पुस्तक को लिखने का। लिखते हुए बीच में दो महीने का विराम भी लेना पड़ा, क्योंकि दुर्भीक्ष नाम का यह पात्र मेरे खुद के जीवन को प्रभावित करने लगा था। अन्यथा यह पुस्तक और भी पहले पाठकों तक पहुँच गयी होती। जानता हूँ, यह सब कहना कुछ अजीब सा लगता है, किंतु सत्य तो फिर भी सत्य है, जिसे मैं छुपाना नहीं चाहता।

रणक्षेत्रम का तृतीय खण्ड मुख्य रूप से असुरेश्वर दुर्भीक्ष की प्रेम-कथा पर आधारित है। यह कथा बताती है कि कैसे एक स्त्री के प्रेम के लिए दुर्भीक्ष ने पातालपुरी के सिंहासन और असुरेश्वर के सम्मान तक को त्यागने का मन बना लिया था। किंतु परिस्थितियाँ फिर उसके विरुद्ध हो गयीं और गंधर्वराज उग्रसेन के बोले एक असत्य ने उसके भीतर के असुर को एक बार फिर जगा दिया।

और यह कथा केवल इसी पात्र के विषय में नहीं है, अपितु कुछ ऐसी सभ्यता के लोगों के विषय में भी है जिन्हें सदियों पूर्व उनकी मातृभूमि से खदेड़ दिया गया था और अब वह अपनी उस मातृभूमि को वापस पाने के लिए लौट रहे हैं। सदैव की ही भाँति यह कथा भी कई पात्रों से मिलकर बनी है, जिसमें सभी पात्र एक दूसरे से संबंधित हैं। इस पृष्ठ पर मैं इससे अधिक कुछ नहीं बताऊँगा, अन्यथा कथा को पढ़ने में वो आनंद नहीं आयेगा, जिसकी पाठकों में इच्छा है।

इस शृंखला के द्वितीय खण्ड ‘असुरेश्वर दुर्भीक्ष की वापसी’ के लिए मुझे पाठकों से बहुत सराहनायें मिलीं और आशा है रणक्षेत्रम के इस भाग को भी पाठकों का उतना ही प्रेम प्राप्त होगा। इतना ही नहीं, मुझे इस शृंखला के प्रथम खण्ड के लिए मिली-जुली प्रतिक्रिया मिली। कुछ लोग उस पुस्तक से संतुष्ट थे और कुछ नहीं। यहाँ मैं अपनी गलती स्वीकार करता हूँ और इसीलिए मैंने प्रथम भाग की कथा पूरी दोबारा लिख डाली है, जो शीघ्र ही प्रकाशित होगी। जो लोग पहले ही प्रथम भाग पढ़ चुके हैं, उन्हें आने वाला नया संस्करण पढ़ना आवश्यक नहीं है, क्योंकि मैंने बस उसी कहानी को और बेहतर तरीके से लिखा है और आने वाले भागों की कथा पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। मैं ऐसा इसलिए कर रहा हूँ, क्योंकि मैं एक यथार्थ से परिचित हूँ, कि रणक्षेत्रम जैसी शृंखला में इस जीवन में दोबारा नहीं बना पाऊँगा, इसलिए यह मेरा कर्तव्य बन जाता है कि मैं अपने पूरे सामर्थ्य और योग्यता का उपयोग कर अपने पाठकों को अपने लेखन से संतुष्ट करूँ, क्योंकि पाठकों के समर्थन के बिना मुझे मेरी इच्छित सफलता प्राप्त नहीं हो सकती और इस शृंखला के चौथे भाग को लिखने के लिए भी मुझे पाठकों के समर्थन की सबसे अधिक आवश्यकता होगी, क्योंकि चौथा खण्ड ‘भरतवंश का उदय’ इस शृंखला का अंत है और मेरे लिए एक बहुत बड़ी चुनौती भी है। मैं अपने स्तर पर पूर्ण प्रयास करूँगा कि मैं अपने पाठकों को संतोषजनक कथा सुना सकूँ।

रणक्षेत्रम शृंखला लिखने की इस यात्रा में मैं अकेला नहीं था। सबसे पहले मैं अपने मित्र अभिनव श्रीवास्तव का धन्यवाद करना चाहूँगा, जिसने इस पुस्तक के अंग्रेजी वर्जन में एडिटिंग का कार्य किया है और निःसंदेह इस पुस्तक के प्रकाशन समूह ‘रेडबैब बुक्स और एनीबुक्स’ का भी मैं विशेष धन्यवाद करना चाहूँगा, जिनकी मेहनत के बिना मैं इस मुकाम तक नहीं पहुँच

पाता।

अपने इस कार्य में समर्थन के लिए मैं अपनी माता श्रीमती अंजू श्रीवास्तव, पिता श्री रमेश चंद्र श्रीवास्तव और भाई हर्ष चंद्र का भी विशेष धन्यवाद करना चाहूँगा और अपने मित्रों विकासराय, विकास सिंह, आयुषी चित्रांश और रश्मि पाण्डेय को मैं कभी नहीं भूल सकता, जिन्होंने कभी मेरा साथ नहीं छोड़ा।

- उत्कर्ष श्रीवास्तव

पूर्व कथा

पाँच दिन के महासमर के उपरांत, वक्रबाहु की स्मृतियाँ लौट आती हैं। तब वो पैंसठ वर्ष पूर्व के अतीत का भेद सबके समक्ष खोलता है।

एकचक्रनगरी के कुलगुरु महर्षि ओमेश्वर पंचतत्वों की शक्ति के धारक थे। एकचक्रनगरी के महाराज ययाति को महर्षि ओमेश्वर के आशीर्वाद से एक पुत्र-रत्न की प्राप्ति होने वाली थी। उनका वह पुत्र महर्षि ओमेश्वर की ही भाँति पंचभूतों की शक्ति लेकर जन्म लेने वाला था।

जब रक्षगुरु भैरवनाथ को यह ज्ञात हुआ, तो उसने महर्षि ओमेश्वर को छलने की योजना बनायी। उसने उन्हें गलत सूचना दी, कि रक्षराज दुशल एकचक्रनगरी पर आक्रमण करने वाला है। महर्षि ओमेश्वर ने अपने सबसे शक्तिशाली शिष्य महाबली वक्रबाहु को अपने साथ लिया और पातालपुरी/पाताललोक पहुँचकर दुशल को युद्ध की चुनौती दी। दुशल ने वक्रबाहु को पराजित किया और यह बताया कि उसके मन में एकचक्रनगरी पर आक्रमण करने की कोई मंशा नहीं थी। इसके उपरांत दुशल ने वक्रबाहु के समक्ष अपनी मित्रता और सेनापति के पद का प्रस्ताव रखा। वक्रबाहु ने वह सम्मान स्वीकार किया और दुशल के गढ़ में रुक गया। महाऋषि ओमेश्वर पातालपुरी से लौट गये।

वहीं महर्षि ओमेश्वर की अनुपस्थिति में, भैरवनाथ ने उनका वेश धरा और महाराज ययाति की पत्नी को एक श्रापित फल खिला दिया। इसके परिणामस्वरूप महाराज ययाति का पुत्र एक मानव शरीर और आसुरी आत्मा लेकर जन्मा। उसे जन्म देते समय ही उसकी माता की मृत्यु हो गयी। जब महर्षि ओमेश्वर को इस सत्य का ज्ञान हुआ, तो उन्होंने राजा ययाति को स्पष्ट निर्देश दिए कि 'सुर्जन' (राजा ययाति का नवजात पुत्र) को एकचक्रनगरी के महल के भीतर ही कड़ी निगरानी में रखा जाय। इसके साथ ही महल में ही सुर्जन की शिक्षा-दीक्षा के लिए उन्होंने अपने एक शिष्य, महर्षि प्रजापति को भी नियुक्त किया।

इसके उपरांत, महर्षि ओमेश्वर विदर्भ के महाराज भभूति से भेंट करने पहुँचे, जिनके महल में भी संतान का जन्म होने वाला था। ओमेश्वर ने आशीर्वाद स्वरूप राजा भभूति को एक फल दिया और उनसे कहा कि वह फल वो अपनी पत्नी को खिला दें। राजा भभूति ने वैसा ही किया। शीघ्र ही राजा भभूति के घर एक तेजस्वी बालक विक्रमाजित ने जन्म लिया।

सोलह वर्षों के उपरांत, सुर्जन जीवन में प्रथम बार एकचक्रनगरी के भ्रमण पर निकला। उसके पिता महाराज ययाति ने उसे स्पष्ट निर्देश दे रखे थे कि उसका रथ एक क्षण के लिए भी नहीं रुकना चाहिए, अन्यथा यह दुर्भाग्य का सूचक होगा। शीघ्र ही उसके मार्ग में एक मेमना आ गया और उसकी रक्षा को एक बालक भी आया। सुर्जन के सारथी को रथ रोकने पर विवश होना पड़ा। यह देख सुर्जन को क्रोध आ गया। उसने उस बालक को दण्डित करने का प्रयत्न किया, किंतु तभी एक राजकुमार उसकी रक्षा को वहाँ आ पहुँचा। सुर्जन ने उस राजकुमार को पीछे धकेल दिया। सुर्जन को अपने किये पर ग्लानि तब हुई, जब उसे यह ज्ञात हुआ कि जिस राजकुमार पर उसने वार किया है वो कोई और नहीं उसका ज्येष्ठ भ्राता साकेत है, जो सोलह वर्षों के उपरांत गुरुकुल से अपनी शिक्षा पूर्ण करके लौटा है।

राजकुमार साकेत सोलह वर्षों के उपरांत अपने पिता से मिला, किंतु अभी तक वह इस सत्य

से अनभिज्ञ था कि सोलह वर्ष पूर्व सुर्जन को जन्म देते समय उसकी माता की मृत्यु हो चुकी है। उसने अपनी माता के विषय में प्रश्न किया, किंतु राजा ययाति ने बात को किसी प्रकार टाल दिया।

उसी दिन, राजा ययाति सागर पार की यात्रा पर निकल गये। उसी दिन की संध्या को, राजा ययाति की अनुपस्थिति में साकेत को यह ज्ञात हुआ कि उसकी माता की मृत्यु हो चुकी है, किंतु उनकी मृत्यु के कारण से वो अभी भी अनभिज्ञ था। उसे भड़काने के लिए रक्षगुरु भैरवनाथ ने एक साधारण से ग्रामीण का वेश धरा और उसके समक्ष सुर्जन को ही उसकी माता का हत्यारा ठहरा दिया। उसने यह भी कहा, कि सुर्जन एक श्रापित बालक है जो अपने कंठ पर अपशगुनी चिह्न लिए जन्मा है।

साकेत अपने महल में लौट आता है। वो उसी रात्रि एक सभा बुलाता है, और जैसे ही वह सुर्जन के कंठ पर अपशगुनी चिह्न को देखता है, वो अपने अनुज का ग्रामीणों द्वारा भीषण अपमान करवाता है और उसे राज्य से निष्कासित कर देता है। सुर्जन वनों में भटकने लगता है और दो दिवस तक भूख से तड़पने के उपरांत, वो अंततः मूर्छित होकर गिर जाता है। इसके उपरांत भैरवनाथ उसे सहारा देता है और उसे अपने ज्येष्ठ भ्राता के विरुद्ध भड़काता है कि साकेत ने उसे सिंहासन के लोभ के लिए निष्कासित किया है।

एक वर्ष के उपरांत, सुर्जन पातालपुरी के सिंहासन के लिए वहाँ के राजा रक्षराज दुशल को चुनौती देता है। इस द्वंद्व में वक्रबाहु की स्वतंत्रता दाँव पर लग जाती है। सुर्जन रक्षराज दुशल को पराजित करता है और केवल सत्रह वर्ष की आयु में असुरों का महानायक असुरेश्वर दुर्भीक्ष बन जाता है और वक्रबाहु उसका दास हो जाता है। इसके उपरांत भैरवनाथ, सुर्जन को कहता है कि उसे अपनी सुप्त शक्तियों को जागृत करने के लिए अभी और गहन साधना करते रहने की आवश्यकता है।

वहीं, घायल हुआ रक्षराज दुशल यात्रा करते हुए अश्व पर आरुढ़ हुए ही अपनी चेतना खो देता है। इसके उपरांत, विदर्भ की राजकुमारी शिवन्या (राजा भभूति की बहन) उसके प्राण बचाती है, और उसे मूर्छित अवस्था में ही छोड़कर चली जाती है। शीघ्र ही दुशल को यह ज्ञात होता है कि जिस राजकुमारी ने उसके प्राण बचाये हैं, डकैतों ने उसका अपहरण कर लिया है। दुशल, शिवन्या को डकैतों से बचाता है और ऐसे ही उनकी प्रेम-कथा का आरंभ होता है। राजा भभूति इस संबंध का विरोध करते हैं, किंतु फिर भी उनका विवाह हो ही जाता है।

एक वर्ष के उपरांत, शिवन्या एक पुत्र को जन्म देती है। उसका नाम भानुसेन पड़ता है और वक्रबाहु, दुशल के उस पुत्र को यह वरदान देता है, कि वो और उसके आने वाले वंशज वक्रबाहु के ही समान अतुल्य बल के साथ जन्म लेंगे।

वहीं पातालपुरी के सिंहासन पर बैठे सुर्जन को अपने पिता महाराज ययाति के मृत्यु-शर्या पर होने की सूचना मिलती है। वह उनसे भेंट करने एकचक्रनगरी पहुँचता है। अपने पिता की स्थिति देख, सुर्जन उन्हें यह वचन देता है कि प्रतिशोध के लिए वह अपने ज्येष्ठ भ्राता साकेत को अपने हाथों से नहीं मारेगा। महाराज ययाति की अंत्येष्टि के उपरांत, सुर्जन, साकेत को चेतावनी देता है कि उसके पास शोक मनाने के लिए केवल तेरह दिवस का समय है, इसके उपरांत वह एकचक्रनगरी पर आक्रमण कर देगा।

साकेत, सहायता के लिए महर्षि ओमेश्वर के पास जाता है। ओमेश्वर उसे समझाते हैं कि

उन्होंने दुर्भीक्ष के विरुद्ध प्रयोग के लिए पंचशस्त्र नामका एक महाअस्त्र निर्मित किया है। इसके उपरांत महर्षि ओमेश्वर, दुशल से कहते हैं कि वो अपने पूर्वज भगवान महाबली का दिव्य विजयधनुष ले आये, क्योंकि उस धनुष को उठाने वाला योद्धा कभी पराजित नहीं हो सकता।

दुशल और शिवन्या अपने पुत्र को राजा भभूति को सौंप देते हैं और अपनी यात्रा आरंभ करते हैं। बहुत कड़ी परीक्षाओं के उपरांत भगवान् महाबली उसे विजयधनुष सौंपने के लिए सहमत हो जाते हैं।

वहीं जब भैरवनाथ और दुर्भीक्ष, दुशल को अपने पक्ष में करने की योजना पर विचार-विमर्श कर रहे होते हैं, तब वक्रबाहु उनकी सम्पूर्ण वार्ता सुन लेता है, जिसमें दुर्भीक्ष भैरवनाथ की योजना का भाग बनने को स्पष्ट रूप से मना कर देता है। अगले दिन, दुर्भीक्ष अपने दास वक्रबाहु और असुरों की सेना के साथ एकचक्रनगरी पर आक्रमण कर देता है। एकचक्रनगरी के सहस्रों योद्धा मारे जाते हैं। दुर्भीक्ष एकचक्रनगरी के महल पर अधिकार कर लेता है और जिन ग्रामीणों ने उसे अपमानित किया था, वह उन्हें बंदी बना लेता है। दुर्भीक्ष उन सबकी हत्या करने ही वाला होता है, किंतु उसके भीतर छिपी मानवता और एक योद्धा के आदर्श उसे कमजोर और निःशस्त्र लोगों की हत्या करने से रोक लेते हैं। इसके उपरांत, दुर्भीक्ष साकेत को बंदी बनाता है और उससे अपने अपमान का प्रतिशोध लेने के लिए सम्पूर्ण एकचक्रनगरी में घसीटते हुए घुमाता है। इसके उपरांत, वह साकेत को जीवित छोड़ एकचक्रनगरी का महल त्यागने का निर्णय लेता है।

किंतु तभी, महाऋषि ओमेश्वर, विक्रमाजित और दुशल वहाँ आते हैं और विजयधनुष और पंचशस्त्र की सहायता से दुर्भीक्ष को परास्त कर देते हैं। वो मूर्छित हो जाता है और भैरवनाथ उसे मूर्छित अवस्था में ही लेकर पलायन कर जाता है। महर्षि ओमेश्वर भी इस युद्ध में बुरी तरह से घायल हो जाते हैं। मृत्यु से पूर्व वो अपने शिष्य वक्रबाहु को श्राप देकर पत्थर का बना देते हैं, क्योंकि उसने दुर्भीक्ष के हर कार्य में उसका समर्थन किया था।

दुर्भीक्ष की पराजय के उपरांत, दुशल और शिवन्या, राजा भभूति से भेंट करने पहुँचते हैं। भभूति उनसे विनती करते हैं कि वो अपने पुत्र भानुसेन को उनके साथ ही रहने दें। दुशल और शिवन्या इसके लिए सहमत हो जाते हैं और पातालपुरी की ओर प्रस्थान करते हैं। वहीं भैरवनाथ अपनी अंतिम चाल चलाता है। वह राजा भभूति को सम्मोहित करके उन्हें अपनी ही बहन शिवन्या की हत्या करने पर विवश कर देता है। इसके उपरांत वह दुशल को राजा भभूति के विरुद्ध भड़काता है। अपनी प्रिय भार्या की मृत्यु के शोक में, दुशल समग्र मानवजाति के विरुद्ध हो जाता है और रक्षराज मार्केश के रूप में अपनी नई पहचान बनाता है।

वक्रबाहु, दुशल की जीवनगाथा सुनाने के उपरांत, वर्तमान में लौट आता है। तेजस्वी और अखण्ड दोनों को ही अपनी भूल का एहसास होता है। वक्रबाहु वहाँ से प्रस्थान कर जाता है। शीघ्र ही सुवर्णा और तेजस्वी का विवाह होता है। अखण्ड, तेजस्वी को विदर्भ का नया महाराज घोषित कर देता है। इसके उपरांत, अखण्ड विदर्भ राज्य से प्रस्थान कर जाता है।

पच्चीस वर्षों उपरांत, रक्षराज दुशल का पौत्र 'सुबाहु' ब्रह्मदेव से यह वरदान प्राप्त करता है कि उसकी मृत्यु के उपरांत उसकी आत्मा किसी के भी शरीर में प्रवेश कर उस पर पूर्णतः अधिकार कर सकती है।

योजनानुसार सुबाहु महाराज तेजस्वी के पुत्र जयवर्धन के शरीर में प्रवेश कर जाता है और असुरेश्वर दुर्भीक्ष को वापस जीवित कर देता है। सत्तर वर्षों के उपरांत दुर्भीक्ष अपने नेत्र खोलता है।

उसका शरीर अभी भी अट्ठारह वर्ष के बालक जैसा ही रहता है। वो जयवर्धन को वचन देता है कि जब भी उसे आवश्यकता होगी वो उसकी सहायता करेगा।

अपनी शक्ति जुटाने के लिए, दुर्भीक्ष अपनी पुरानी पहचान सुर्जन नाम का उपयोग करता है और एकचक्रनगरी के एक गुरुकुल में प्रवेश कर वहाँ के कुलगुरु महर्षि वसुधर से शिक्षा प्राप्त करता है। वहाँ उसकी भेंट एकचक्रनगरी के राजकुमार 'शत्रुघन' से होती है और वो दोनों अभिन्न मित्र बन जाते हैं।

तीन वर्ष का समय और बीतता है। जयवर्धन असुरों की सेना लेकर विदर्भ पर आक्रमण कर देता है। सुर्जन (दुर्भीक्ष) और उसका मित्र शत्रुघन भी उस युद्ध में भाग लेते हैं। जब शत्रुघन पर प्राणघातक वार होता है, तब सुर्जन क्रोध में अपने नाम का भय फैलाने के लिए अपनी वास्तविकता प्रकट कर देता है। उस दिन समग्र संसार को यह ज्ञात हो जाता है कि असुरेश्वर दुर्भीक्ष लौट आया है।

विदर्भ के महाराज तेजस्वी युद्ध में बुरी तरह घायल हो जाते हैं। तब युद्ध क्षेत्र में महाबली अखण्ड आते हैं और विजयधनुष उठा लेते हैं। वो तेजस्वी को रणभूमि से निकाल ले जाते हैं, जहाँ तेजस्वी को पाँच दिन के महासमर में महाबली अखण्ड के जीवित बच जाने का रहस्य ज्ञात होता है, कि वो वास्तव में रक्षराज दुशल की आत्मा है, जो उन्हें जीवित रखे हुए है। अखण्ड, मृत्यु की ओर बढ़ रहे तेजस्वी को यह वचन देता है, कि वो उसके पुत्र को सुबाहु को दुष्टात्मा से मुक्त करायेगा।

असुरेश्वर दुर्भीक्ष के विषय में अब समस्त संसार को ज्ञात हो चुका था, इस कारण दुर्भीक्ष ने अपने परममित्र शत्रुघन से दूर चले जाने का निर्णय लिया जो उसकी वास्तविकता से अभी तक अनभिज्ञ था, क्योंकि वो नहीं चाहता था कि शत्रुघन उससे घृणा करे।

वर्ष पर वर्ष बीतते रहे। हस्तिनापुर के महाराज दुष्यंत को अपनी भूल का एहसास हुआ और उन्होंने अपनी भार्या शकुंतला को खोजना आरंभ किया। शीघ्र ही उनकी भेंट उनकी पत्नी शकुंतला और पुत्र सर्वदमन से हुई। वो उन्हें वापस हस्तिनापुर ले आये।

युवा होने के उपरांत, सर्वदमन की भेंट डकैतों के सरदार मेघवर्ण से हुई, जो जयवर्धन के विरुद्ध सेना का संगठन कर रहा था।

वहीं जयवर्धन विदर्भ के सिंहासन पर विराजमान था। शीघ्र ही उसे यह ज्ञात हुआ कि कुछ डकैत उसके विरुद्ध एकत्र हो रहे हैं। उन डकैतों की खोज में जयवर्धन ने बड़ा युद्ध छेड़ दिया, जिसमें उसके पुत्रों दिग्विजय और श्रुतायुध ने भी भाग लिया।

उनकी योजना पाँच सहस्र डकैत योद्धाओं से युद्ध करने की थी, किंतु आश्चर्यजनक रूप से उनके साथ युद्ध करने पाँच सहस्र गंधर्व योद्धा भी आ खड़े हुए। डकैतों के सरदार मेघवर्ण, गंधर्वों के सरदार चंद्रकेतु और हस्तिनापुर के युवराज सर्वदमन की एकता के समक्ष विदर्भ की सेना को पीछे हटने पर विवश होना पड़ा। वो वास्तव में महाबली अखण्ड ही थे, जो डकैतों और गंधर्वों के दल का मार्गदर्शन कर रहे थे। किंतु डकैतों के सरदार मेघवर्ण के मन में उनके लिए कोई सम्मान नहीं था, क्योंकि उसे लगता था कि महाबली अखण्ड ही उसके पिता के हत्यारे हैं। किंतु अपने मृत्युशर्या पर अपने पिता को दिए हुए वचन के कारण उसे उनके मार्गदर्शन में ही कार्य करना था।

विदर्भ का युवराज दिग्विजय, जिसका मुख एकदम अपने पिता से मिलता है, उसी ने विदर्भ

की सेना की युद्ध योजना युद्ध से पूर्व महाबली अखण्ड तक पहुँचाई थी, जो विदर्भ की सेना की पराजय का कारण बना। दिग्विजय भी अखण्ड के मार्गदर्शन में ही कार्य कर रहा था। उन्होंने दिग्विजय को और जानकारी इकट्ठा करने हेतु भेजा।

वहीं अपनी पराजय के उपरांत, राजा जयवर्धन, असुरेश्वर दुर्भीक्ष से भेंट करने पहुँचता है। दिग्विजय ने उसका पीछा किया। वहाँ दिग्विजय ने दुर्भीक्ष को भ्रमित करने का प्रयत्न किया। जब दुर्भीक्ष को यह ज्ञात हुआ तो उसने दिग्विजय का पीछा करना आरंभ किया। इस दौरान उसे महाबली अखण्ड के विषय में ज्ञात हुआ, जो गंधर्वों और डकैतों की सेना को तैयार कर रहे थे। उसने अखण्ड का पीछा किया, जिससे उसे डकैतों के निवास स्थान के विषय में ज्ञात हुआ और यह भी ज्ञात हुआ कि महाबली अखण्ड उसके विरुद्ध खड़े होने के लिए दो योद्धाओं को तैयार कर रहे हैं।

दुर्भीक्ष उन दो योद्धाओं के विषय में ज्ञात करने के लिए जिज्ञासु हो उठा। अखण्ड के डकैतों के शिविर से जाने के उपरांत उसने साधारण ग्रामीणों जैसा भेष बनाया और मेघवर्ण और चंद्रकेतु से मिलकर अपना परिचय सुर्जन के रूप में दिया और अंततः वह डकैतों के दल में सम्मिलित हो गया।

जब महाबली अखण्ड डकैतों की गुफाओं में लौटे, तब दुर्भीक्ष ने स्वयं को छिपाने का भरसक प्रयत्न किया, किंतु अखण्ड को ज्ञात हो ही गया कि वो वहीं है। शीघ्र ही दुर्भीक्ष को एक संदेश प्राप्त हुआ कि उसे विदर्भ की सेना के साथ हस्तिनापुर पर चढ़ाई करनी है। दुर्भीक्ष ने विदर्भ के राजा को यह संदेश भेजा कि वो अकेले ही हस्तिनापुर पर आक्रमण करेगा। दुर्भीक्ष हस्तिनापुर की ओर प्रस्थान कर गया। जब अखण्ड को यह ज्ञात हुआ, उसने मेघवर्ण, चंद्रकेतु और दिग्विजय को उनके मित्र सर्वदमन की सहायता हेतु भेजा।

हस्तिनापुर में दुर्भीक्ष और सर्वदमन एक दूसरे को दंढ की चुनौती देते हैं। उस भयंकर दंढ में सर्वदमन गंभीर रूप से घायल हो जाता है, तब दुर्धरा नाम की एक स्त्री वहाँ आकर सर्वदमन की रक्षा करती है। उस स्त्री को देखते ही दुर्भीक्ष विक्षिप्त सा हो जाता है और अपने शस्त्र गिराकर, वहाँ से प्रस्थान कर जाता है।

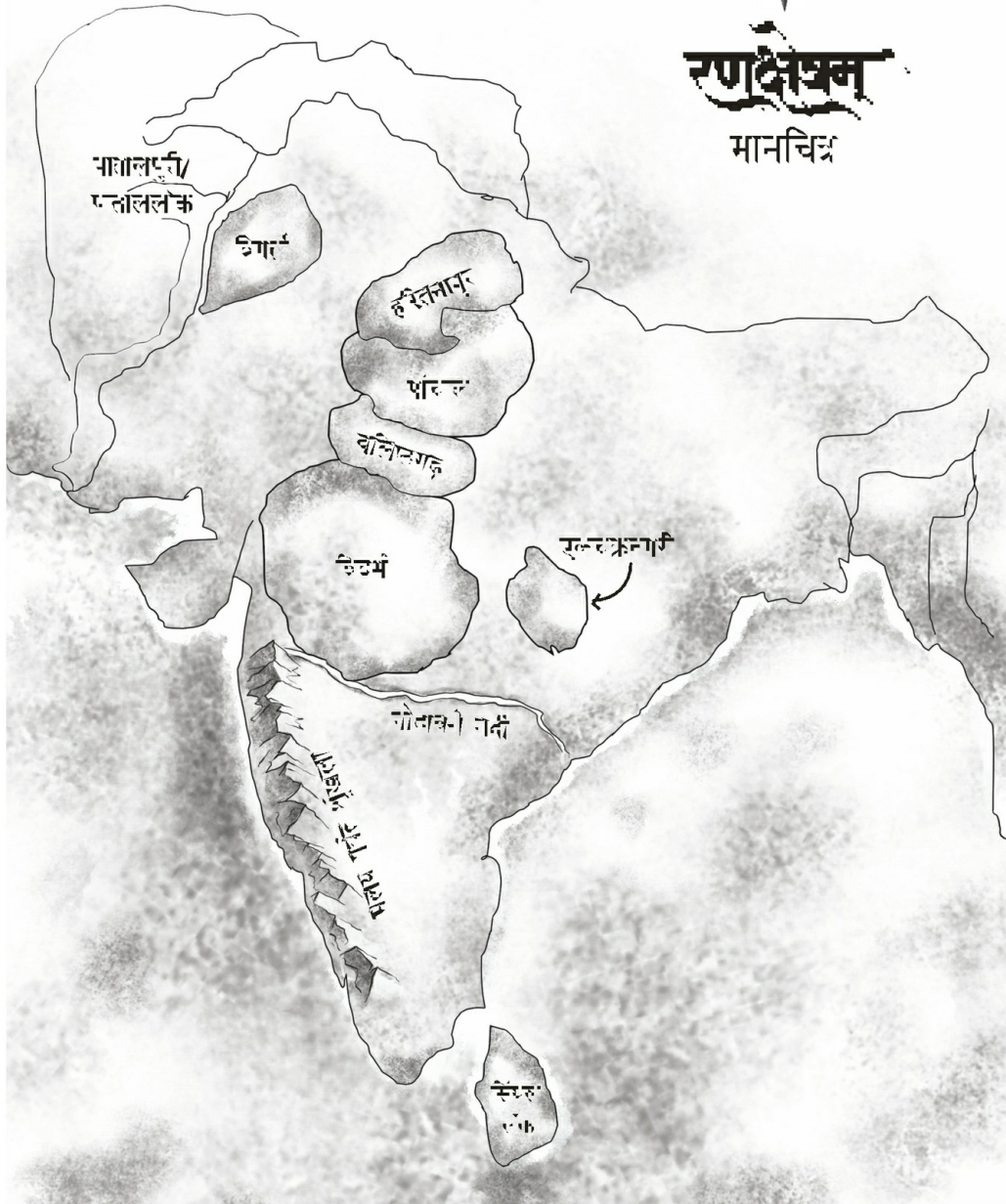
मेघवर्ण, चंद्रकेतु और दिग्विजय भी वहाँ पहुँचते हैं। अब सर्वदमन के साथ साथ वह सभी दुर्धरा की ओर जिज्ञासा भरी दृष्टि से देखते हैं कि क्या रहस्य है, जो दुर्भीक्ष उन्हें देख पीछे हट गया।

उन सभी प्रश्नों के उत्तर रणक्षेत्रम् के इस खण्ड में मिलेंगे।



रणक्षेत्रम्

मानचित्र



नये पात्र

रीछराज जामवंत - एक महाकाय रीछ, रामायण काल एक विकट योद्धा।

भद्राक्ष - असुरों का सेनापति।

कीर्तिध्वज - हस्तिनापुर का सेनापति।

शम्भाल - गरुड़ों का राजा।

शैलजा - शम्भाल की पत्नी।

उपनंद - त्रिगर्ता का राजा।

सुवर्मा - त्रिगर्ता का सेनापति।

उग्रसेन - गंधर्वों का राजा।

उपमन्यु - गंधर्वों का सेनापति।

दुर्मुद - डकैतों का सरदार (मेघवर्ण का पिता)।

अलम्बुष - द्रविड़ समाज का राजा।

तक्षक - नागलोक का एक निर्वासित नाग, जो खाण्डवप्रस्थ में निवास करता है।

जम्बाल - गरुड़राज शम्भाल का पुत्र।

अध्याय विवरण

1. [गरुडों का श्राप](#)
2. [जामवंत से युद्ध](#)
3. [त्रिगर्ता नरेश उपनंद](#)
4. [एक लघु प्रेम कथा](#)
5. [त्रिगर्ता का युद्ध](#)
6. [द्रोह का दण्ड](#)
7. [सत्य बाहर आया](#)
8. [विध्वंसक दुर्भीक्ष](#)
9. [एक नया अभियान](#)
 10. [सागर पार का छल](#)
 11. [द्रविड समाज](#)
 12. [रहस्य बाहर आये](#)
 13. [दूसरी योजना](#)

1. गरुड़ों का श्राप

सर्वदमन, मेघवर्ण, चंद्रकेतु और दिग्विजय ने दुर्धरा को प्रश्नों के जाल में घेर रखा था।

“आप मौन क्यों हैं देवी दुर्धरा? हम आपके उत्तर की प्रतीक्षा में हैं; क्या संबंध है आपका असुरेश्वर दुर्भीक्ष से?” सर्वदमन ने अधीरता से प्रश्न किया।

“आप लोगों को इन संबंधों के विषय में जानने की कोई आवश्यकता नहीं है। मेरे जीवन का बस एक ही लक्ष्य है, और वो है दुर्भीक्ष की मृत्यु।” दुर्धरा ने क्रोध में उत्तर दिया।

“नहीं, आज आपको मेरे सारे प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। क्यों आपके सामने आते ही उसने अपनी तलवार नीचे कर दी?” सर्वदमन ने प्रश्न किया।

दुर्धरा मौन थी। चंद्रकेतु उनके निकट आया, “यहाँ प्रश्न केवल आपके विषय में नहीं हैं, देवी दुर्धरा; यह हम सभी के विषय में है, इसलिए कृपा करके हमें रहस्य से अवगत कराइये। उस नीच दुर्भीक्ष ने हमारे लोगों की हत्या की है, हमें उनकी मृत्यु का प्रतिशोध लेना है और उसके लिए हमें उस दुर्भीक्ष के विषय में सबकुछ जाना आवश्यक है।”

“मैं ही हूँ वो, जिसके कारण दुर्भीक्ष ने हमारे समुदाय के पाँच सहस्र लोगों की हत्या की थी।” दुर्धरा ने कहा।

सर्वदमन के साथ बाकि खड़े योद्धा भी यह सुनकर स्तब्ध रह गए।

‘कैसे?’ मेघवर्ण ने प्रश्न किया।

दुर्धरा उनकी ओर मुड़ी।

* * *

दुर्धरा का नाम सुनकर भैरवनाथ स्तब्ध था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह दुर्भीक्ष से क्या कहे, जो एक मूरत की भाँति पत्थर पर बैठा था।

“मुझे कुछ समय के लिए एकांत की आवश्यकता है गुरुदेव; आप कृपा करके यहाँ से प्रस्थान कीजिये।” दुर्भीक्ष ने भैरवनाथ से कहा।

“तुम्हें अपनी पीड़ा से शीघ्र ही बाहर आना होगा। स्मरण रखना कि वो दुर्धरा ही है जो तुम्हारी मृत्यु का कारण बन सकती है, तुम्हें उसका वध करना ही होगा।” भैरवनाथ ने दुर्भीक्ष को भड़काने का प्रयत्न किया।

“मुझे एकांत चाहिए गुरुदेव, मुझे केवल एकांत चाहिए।” दुर्भीक्ष चीखा।

“ठीक है, इस समय मैं प्रस्थान करता हूँ, पातालपुरी में शीघ्र ही भेंट होगी।” भैरवनाथ मुड़कर जाने लगा।

“एक क्षण रुकिए गुरुदेव।” दुर्भीक्ष ने उसे पुकारा।

“कुछ और भी कहना चाहते हो?” भैरवनाथ उसकी ओर मुड़ा।

“दुर्धरा को कोई क्षति नहीं पहुँचनी चाहिए।” क्रोधित दुर्भीक्ष ने भैरवनाथ को चेतावनी दी।

भैरवनाथ उसके शब्दों को अनसुना कर वहाँ से प्रस्थान कर गया।

कुछ समय उपरांत, दुर्भीक्ष उस पत्थर से उठा और एक बार फिर वन में भ्रमण करने लगा। अतीत की घटनायें उसके समक्ष घूम रही थीं।

* * *

पूरी कथा जानने के लिए हमें दस वर्ष पीछे जाना होगा

बात उस समय की है, जब दुर्भीक्ष ने दक्षिणी आर्यावर्त के लगभग नब्बे प्रतिशत राज्यों को अपने समक्ष झुकने पर विवश कर दिया था और साथ ही उन हारे हुए राजाओं को विदर्भ के राजा जयवर्धन के साथ संधि-पत्र पर भी हस्ताक्षर करने को विवश कर दिया था। उसका नाम समग्र उत्तर, पूरब और पश्चिम दिशा में भी गूँज चुका था। किंतु उत्तर, पूरब और पश्चिम के राज्य अभी उसके कथित सामर्थ्य से अपरिचित थे।

पातालपुरी में निवास कर रहा असुरेश्वर दुर्भीक्ष एक संध्या कुछ दासियों के साथ जलकुण्ड में स्नान कर रहा था। तभी एक दूत वहाँ आ पहुँचा।

दुर्भीक्ष उसे देख क्रोधित हो उठा, “बिना अनुमति यहाँ प्रवेश करने का साहस कैसे किया तुमने?”

“क्षमा चाहता हूँ महाराज, किंतु सूचना आपके मित्र शत्रुघ्न के विषय में है और अत्यंत गंभीर है।” उस दूत ने अपना पक्ष रखा।

दुर्भीक्ष जलकुण्ड से बाहर आया और बिना विलंब किये उस दूत के निकट आया। उसने चिंतित स्वर में प्रश्न किया, “शत्रुघ्न के विषय में! क्या हुआ उसे?”

“अभी तो सबकुछ ठीक है महाराज, किंतु ऐसा कब तक रहेगा, कहना कठिन है।” उस दूत ने कहा।

“तुम ऐसा क्यों कह रहे हो? क्या होने वाला है?” दुर्भीक्ष अधीर हो रहा था।

“आर्यावर्त का एक शक्तिशाली राष्ट्र हस्तिनापुर, एकचक्रनगरी पर आक्रमण करने जा रहा है; सात दिवस के भीतर उनकी सेना एकचक्रनगरी पहुँच जायेगी।” उस दूत ने उस विकट स्थिति से दुर्भीक्ष को अवगत कराया।

दुर्भीक्ष यह सुनकर चिंतित हो गया, “ठीक है, तुम इस समय यहाँ से प्रस्थान करो, मैं देख लूँगा मुझे क्या करना है।” उसने दूत को प्रस्थान करने का संकेत दिया।

वह दूत मुड़कर जाने लगा।

“एक क्षण रुको!” दुर्भीक्ष ने उसे पुकारा।

“आज्ञा महाराज।” वह दूत दुर्भीक्ष की ओर मुड़ा।

“मैं शस्त्रागार की ओर जा रहा हूँ, सेनापति भद्राक्ष को सूचित करो कि मैं वहाँ उसकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।” दुर्भीक्ष ने उस दूत को आदेश दिया।

“अवश्य महाराज।” वो दूत प्रस्थान कर गया।

दुर्भीक्ष शस्त्रागार में गया। शीघ्र ही सेनापति भद्राक्ष भी वहाँ आ पहुँचा।

“आपने मुझे बुलाया महाराज!” भद्राक्ष दुर्भीक्ष के सम्मान में झुका।

“हाँ, तुम्हें एक आवश्यक कार्य सौंपना था मुझे।” दुर्भीक्ष अपने सेनापति की ओर मुड़ा।

“मैं सुन रहा हूँ महाराज।” भद्राक्ष आदेश की प्रतीक्षा में था।

“हमारे घुड़साल में जाओ और मेरे लिए सबसे शक्तिशाली और तीव्र गति से दौड़ने वाला अश्व खोजकर लाओ, मुझे इसी समय प्रस्थान करना है।”

“अवश्य महाराज; किंतु यदि आप आज्ञा दें, तो क्या मैं आपसे प्रश्न कर सकता हूँ कि इस समय आप कहाँ की ओर प्रस्थान कर रहे हैं?” भद्राक्ष ने प्रश्न किया।

“मैं बस तुम्हें इतना कहना बता सकता हूँ कि एक मित्र को मेरी आवश्यकता है और मैं उसी सहायता के लिए जा रहा हूँ; तुम हमारे घुड़साल के सभी अश्वों से भलीभाँति परिचित हो, उनकी संख्या सहस्रों में है... इसलिए जाओ और उनमें सबसे तेज और शक्तिशाली अश्व खोजकर मेरे पास ले आओ, मुझे विलंब हो रहा है।” दुर्भीक्ष ने कड़े स्वर में आदेश दिया।

“मैं महल से बाहर जा रहा हूँ... उस अश्व को महल के मुख्य द्वार पर ले आओ।” दुर्भीक्ष शस्त्रों सहित शस्त्रागार के बाहर चला गया।

“जो आज्ञा महाराज।” भद्राक्ष ने भी शस्त्रागार से बाहर की ओर प्रस्थान किया।

शीघ्र ही दुर्भीक्ष महल के मुख्य द्वार के बाहर खड़ा था। भद्राक्ष अश्व लेकर वहाँ आया। दुर्भीक्ष उस पर आरुढ़ हुआ और भद्राक्ष को चेतावनी दी, “मैं शीघ्र ही लौटूँगा, तब तक यहाँ का उत्तरदायित्व तुम पर है।”

“मैं ध्यान रखूँगा महाराज।” भद्राक्ष, दुर्भीक्ष के सम्मान में झुका।

* * *

दुर्भीक्ष एकचक्रनगरी की ओर बढ़ चला। छह दिन लगातार यात्रा करने के उपरांत वो एकचक्रनगरी की सीमा में प्रवेश कर गया।

रात्रि का अंतिम प्रहर बीतने को था। दुर्भीक्ष हस्तिनापुर की सेना की प्रतीक्षा में था।

शीघ्र ही उसे सहस्रों अश्वों के पदचापों के स्वर सुनाई दिए। हस्तिनापुर की सेना एकचक्रनगरी की सीमा में प्रवेश करने वाली थी।

दुर्भीक्ष एक पर्वत की ऊँचाई पर बैठा था। उस स्थान से उसकी दृष्टि चारों दिशाओं में कई ऊँचे स्थानों पर जा सकती थी। वो हस्तिनापुर की सेना की कार्यप्रणाली पर अपनी दृष्टि जमाये हुए था।

वहीं हस्तिनापुर के सेनापति ने अपने एक सैनिक को पास बुलाकर आदेश दिया, “जाओ और एकचक्रनगरी के राजा को सूचित करो, कि ये हमारी अंतिम चेतावनी है; या तो समर्पण करें, या भयंकर युद्ध के लिए सज्ज हो जायें।”

“अवश्य महामहिम।” उस सैनिक ने अपने अश्व की लगाम खींची और एकचक्रनगरी के महल की ओर बढ़ चला।

दुर्भीक्ष पर्वत की ऊँचाई से कूदकर सीधा नीचे आया और हस्तिनापुर के उस सैनिक का पीछा करने लगा, जो एकचक्रनगरी की ओर दूत बनकर जा रहा था।

एकचक्रनगरी के महल में प्रवेश करने के लिए उस दूत को एक सेतु पार करना था। उस सेतु के नीचे बह रहे जल की गति सामान्य थी। दुर्भीक्ष ने अपने अश्व की लगाम खींच उसे रोका। उस दूत का पीछा करने का विचार उसने त्याग दिया। कुछ क्षण विचार करने के उपरांत उसने अपने मुख को एक काले वस्त्र से ढका और पास के पर्वत की ओर अपना अश्व दौड़ाया।

वहाँ पहुँचकर वह अपने अश्व से उतरा और उस पर्वत पर चढ़ने लगा।

वहीं हस्तिनापुर के दूत को एकचक्रनगरी के महल में प्रवेश मिल गया। उसने राजदरबार में प्रवेश करने की आज्ञा माँगी और शीघ्र ही वह एकचक्रनगरी के राजा शत्रुघन के समक्ष खड़ा था।

“कहो दूत क्या कहना चाहते हो?” शत्रुघन ने उस दूत से प्रश्न किया।

“हस्तिनापुर की सेना आपके महल की ओर बढ़ रही है। हमारे सेनापति ‘कीर्तिध्वज’ ने आपको चुनौती भेजी है, इसलिए या तो आप समर्पण कीजिये, अन्यथा अपने राज्य के विनाश के लिए सज हो जाइए।” उस दूत ने संदेश पूरा किया।

शत्रुघन यह सुनकर क्रोध से काँप उठा। वह अपने सिंहासन से उठा और उत्तर दिया, “हम कायर नहीं हैं, जाओ और अपने सेनापति को सूचित करो, कि हम उनकी युद्ध की चुनौती स्वीकार करते हैं।”

“अवश्य महाराज।” वह दूत मुड़कर महल के बाहर चला गया।

उस दूत के प्रस्थान करने के उपरांत, राजसभा में उपस्थित एक मंत्री ने शत्रुघन से प्रश्न किया, “ये आपने क्या किया महाराज! हस्तिनापुर का सैन्य बल हमसे चार गुना अधिक है, हम उनका सामना करेंगे कैसे?”

शत्रुघन अपने सिंहासन से नीचे उतरा और कहा, “हमें उनका सामना करना ही होगा; बिना प्रतिरोध किये हम पराजय स्वीकार नहीं करेंगे, सेनापति को सेना सज्ज करने का संदेश दिया जाए।”

शत्रुघन राजसभा से बाहर चला गया। शीघ्र ही वो अपने महल के निकट के एक उपवन में आया। उस उपवन में एक मूर्ति थी और वह मूर्ति किसी और की नहीं, उसके परममित्र सुर्जन (दुर्भीक्ष) की थी।

वो उस मूर्ति को निहारते हुए हुए स्वयं से ही वार्ता कर रहा था, “आज तुम जीवित नहीं हो सुर्जन, इसलिए मैं अपनी भावनायें तुम्हारी इस मूर्त से साझा कर रहा हूँ। मैं नहीं जानता इस युद्ध के उपरांत मैं जीवित रहूँगा या नहीं... कदाचित् वो समय आ गया, कि मैं युद्ध में वीरगति पाकर तुमसे भेंट करने स्वर्ग की ओर प्रस्थान करूँ। आशा है हमारी भेंट शीघ्र ही होगी मित्र।”

शत्रुघन ने उस मूर्ति के हाथ में रखी तलवार की ओर देखा। उसने वह तलवार मूर्ति के हाथ से उठा ली।

उस तलवार को देखते हुए उसके मुख पर मंद मुस्कान सी छा गयी, “यह वही तलवार है न, जो तुमने उस युद्ध में उपयोग की थी... गुरु वसुधर द्वारा प्रदान की गयी ये तलवार तुम्हें अत्यंत प्रिय थी। मैं आज अपने जीवन का सबसे महत्वपूर्ण युद्ध लड़ने जा रहा हूँ और तुम्हारी ये तलवार मेरे साहस और शक्ति को बनाये रखेगी।” शत्रुघन ने उस तलवार को अपने माथे से लगाया।

उसके उपरांत वो कुछ कदम पीछे हटा और उस तलवार को ऊँचा किया, “तुम्हारी यह तलवार मेरी सबसे बड़ी शक्ति होगी सुर्जन; मैं जानता हूँ, आकाश में कहीं न कहीं से तुम्हारी दृष्टि मुझ पर अवश्य होगी और आज मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि मैं तुम्हें निराश नहीं करूँगा; आज मैं वैसे ही युद्ध करूँगा, जैसे वर्षों पूर्व तुमने मेरे लिए किया था... शीघ्र ही भेंट होगी मित्र।” इतना कहकर उसने रणभूमि की ओर प्रस्थान किया।

वहीं दुर्भीक्ष अपने मन में कोई योजना लिए पर्वत की ऊँचाई की ओर बढ़ रहा था। अपनी योजना के अनुसार कदाचित् उसे पर्वत की सबसे ऊँची चोटी पर पहुँचना था, जिसमें वह शीघ्र ही सफल हुआ। उस पर्वत के निकट ही वो सेतु था, जिसके नीचे बहती जल की धारा सामान्य गति से बह रही थी। जिस पर्वत की चोटी पर दुर्भीक्ष खड़ा था, उसकी समानांतर दिशा में एक और पर्वत था।

सूर्योदय होने को था। हस्तिनापुर की सेना उस सेतु के एक ओर खड़ी थे, तो एकचक्रनगरी की सेना उस सेतु की दूसरी ओर।

दुर्भीक्ष की दृष्टि शत्रुघन की ओर गयी। वर्षों के उपरांत अपने उस मित्र को देख दुर्भीक्ष के मुख पर मुस्कान आ गयी। अगले ही क्षण उसकी दृष्टि शत्रुघन के हाथ में थमी तलवार की ओर

गयी।

“यह तलवार तो मेरी है।” दुर्भीक्ष स्तब्ध रह गया।

“मुझे प्रसन्नता है, कि मेरी स्मृतियाँ आज भी तुम्हारे मन में हैं।” दुर्भीक्ष के नेत्रों से अश्रु की कुछ बूँदें छलक उठीं।

जैसे ही सूर्योदय हुआ, हस्तिनापुर के सेनापति कीर्तिध्वज ने अपनी तलवार ऊपर की ओर शंख फूँका।

शत्रुघ्न अपनी सेना का नेतृत्व स्वयं ही का रहा था। उसने भी शंख बजाकर युद्धारंभ की घोषणा की।

दुर्भीक्ष दोनों सेनाओं का निरीक्षण कर रहा था, “हस्तिनापुर का सैन्यबल एकचक्रनगरी की सेना से कहीं अधिक है; मुझे अपनी दिव्य पंचतत्व की शक्तियों का प्रयोग करना ही होगा।”

पर्वत की चोटी पर खड़े दुर्भीक्ष ने अपने नेत्र बंद किए। वहीं हस्तिनापुर की सेना उस लंबे सेतु की ओर बढ़ी।

अकस्मात् ही सेतु के नीचे के जल के बहाव की गति बहुत अधिक तीव्र हो गयी। ऊँची-ऊँची लहरें उठकर हस्तिनापुर की सेना की ओर बढ़ीं।

उन लहरों को देख हस्तिनापुर के सैनिकों के मन में भय व्याप्त हो गया। वे पीछे हटने लगे।

शत्रुघ्न भी आश्चर्य में था, “यह क्या हो रहा है; अभी तक तो मौसम सामान्य था, ये अकस्मात् परिवर्तन कैसा। और ये ऊँची-ऊँची लहरें केवल शत्रु सेना की ओर ही क्यों बढ़ रही हैं?” उसके मन में कई प्रश्न उमड़ रहे थे।

सेनापति कीर्तिध्वज ने अपने सैनिकों को पीछे हटने का आदेश दिया।

“धनुर्धरों आगे आओ!” कीर्तिध्वज ने आदेश दिया।

उसके आदेश पर, सहस्रों धनुर्धर आगे आये।

दुर्भीक्ष ने ऊँची लहरों को रुकने का निर्देश दिया। पर्वत की चोटी पर खड़े खड़े उसने अपनी मुट्ठी भींची और उस पर्वत की चोटी पर भयंकर प्रहार किया। फलस्वरूप, एक भीषण ध्वनि उत्पन्न हुई और कई बड़े-बड़े पत्थर उस पर्वत के साथ-साथ सामने वाले पर्वत से भी टूटकर अलग हो गए।

वो विशाल पत्थर के टुकड़े धनुर्धरों पर गिरने लगे। कई धनुर्धर उन पत्थरों के नीचे दबकर मारे गए। सेनापति कीर्तिध्वज भी अपने अश्व से गिर पड़ा, किंतु वो क्षणभर में ही उठ खड़ा हुआ।

“सैनिकों पीछे हटो।” कीर्तिध्वज ने अपने सैनिकों को पीछे हटने का आदेश दिया।

हस्तिनापुर के सैनिकों के मन में भय का संचार हो चला था; वो सोच रहे थे कि प्रकृति उनके विरुद्ध कार्य कर रही है।

शत्रुघ्न भी आश्चर्य में था, “प्रकृति हमारे समर्थन में है, या इसके पीछे कोई और ही है?”

वहीं दुर्भीक्ष अभी भी पर्वत की चोटी पर खड़ा था।

“अब मुझे इस युद्ध का अंत करना होगा, किंतु इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि शत्रुघ्न की दृष्टि मुझ पर न पड़े।” उसने फिर से अपने नेत्र बंद किये और हाथों को ऊपर उठाया। परिणाम शीघ्र ही सामने आया। वायु की गति अकस्मात् ही तीव्र हो गयी।

उस वायु ने एकचक्रनगरी की सेना पर कोई प्रभाव नहीं डाला, किंतु हस्तिनापुर की सम्पूर्ण सेना पूरी तरह से अस्त वस्त होकर भटकने लगी। उस सेना में भगदड़ मच गयी। शत्रुघ्न अब भी अनुमान लगाने का प्रयत्न कर रहा था, कि ये हो क्या रहा है। वायु और धूल इस प्रकार उड़ रही

थी, कि अनुमान लगाना असंभव था कि सामने वाली सेना के साथ क्या घटित हो रहा है। एकचक्रनगरी के योद्धाओं को कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।

जब दुर्भीक्ष ने देखा कि शत्रुघन अपने शत्रुओं की गतिविधियों की ओर देख नहीं पा रहा है, तो वह पर्वत से छलाँग लगाकर नीचे आ गया।

कीर्तिध्वज अपने सैनिकों को नियंत्रित करने का भरसक प्रयत्न कर रहा था, किंतु उसकी दृष्टि भी स्पष्ट रूप से कुछ नहीं देख पा रही थी। दुर्भीक्ष उसकी ओर दौड़ पड़ा और उसे धकेलकर भूमि पर गिरा दिया।

इसके उपरांत वो कीर्तिध्वज को घसीटते हुए उस क्षेत्र से बाहर ले आया, जहाँ तीव्र गति से वायु चल रही थी।

कीर्तिध्वज गंभीर रूप से घायल हो गया, फिर भी अपनी शक्ति और साहस जुटाकर वो भी भूमि से उठा और दुर्भीक्ष की ओर देखा। दुर्भीक्ष के मुख को ढका हुआ वस्त्र तीव्र वायु के कारण हट चुका था।

“कौन हो तुम?” कीर्तिध्वज ने प्रश्न किया।

दुर्भीक्ष ने उसकी गर्दन पकड़कर उसे एक वृक्ष से सटा दिया।

“मैं इस राज्य का रक्षक हूँ; क्या लगता है तुम्हें; तुम्हारी सेना जिस स्थिति से जूझ रही है, वो प्रकृति का प्रकोप है। यदि ऐसा विचार तुम्हारे मन में है, तो मूर्ख हो तुम। मैं वो हूँ जो इन सब पर नियंत्रण कर सकता है और जो इस राज्य पर आये हर संकट के समक्ष खड़ी सबसे बड़ी दीवार है... मैं तुम्हें अंतिम चेतावनी दे रहा हूँ, यहाँ लौटने का साहस मत करना।” कहकर दुर्भीक्ष ने उसे भूमि पर पटक दिया।

कीर्तिध्वज भूमि से उठा, “तुम्हें अनुमान भी नहीं है तुमने किसे छेड़ा है। मैं हस्तिनापुर का सेनापति हूँ। कदाचित् तुमने हमारे महाराज दुष्यंत का नाम नहीं सुना; यदि वो रणभूमि में उतर आये, तो तुम अनुमान भी नहीं लगा सकते कि इस राज्य की क्या दशा होगी।”

दुर्भीक्ष ने एक बार फिर कीर्तिध्वज की गर्दन पकड़ी और उसे एक वृक्ष से सटा दिया। इसके उपरांत, उसने उसका दायाँ पंजा पकड़ा और उसकी हड्डी तोड़ दी। इसी प्रकार उसने उसके बायें पंजे की हड्डी भी तोड़ दी।

“अब, जब तुम्हारा राजा तुम्हारी यह दशा देखेगा, तो उसे स्वयं यह भान हो जायेगा कि उसका सामना किससे हो रहा है।” दुर्भीक्ष ने उसे भूमि पर धकेल दिया।

उसका बल देख कीर्तिध्वज के मन में भय व्याप्त हो गया। दुर्भीक्ष ने उसका जबड़ा पकड़कर उसे एक बार फिर चेतावनी दी।

“जाओ और अपने महाराज को सूचित कर दो कि इस राज्य का रक्षक मैं हूँ और यह प्रकृति मेरे नियंत्रण में है।” दुर्भीक्ष ने उसके मस्तक पर निर्णायक प्रहार किया। हस्तिनापुर का वो सेनापति मूर्छित हो चुका था।

“शत्रुघन की दृष्टि मुझ पर नहीं पड़नी चाहिए, मुझे इस बात का ध्यान रखना होगा।” विचार करते हुए दुर्भीक्ष वापस पर्वत की ओर बढ़ा।

पर्वत पर चढ़ने के उपरांत, उसने तीव्र गति से बहती वायु को रुकने का संकेत दिया।

शत्रुघन शत्रुसेना की स्थिति देख स्तब्ध रह गया। उनका सेनापति मूर्छित था। सभी सैनिक और उनके अस्त्र-शस्त्र अस्त-व्यस्त होकर भूमि पर पड़े थे। वह सभी पीछे हटने लगे।

“ये सब क्या हो रहा है, भला प्रकृति हमारी सहायता क्यों कर रही है।” शत्रुघन आश्चर्य में था।

“अनुमान लगाना कठिन है महाराज; मेरे सुझाव हैं कि हमें लौटना चाहिए और कुछ सैनिकों को सुरक्षा की दृष्टि से यहाँ छोड़ देना चाहिए।” एकचक्रनगरी के सेनापति ने सुझाव दिया।

“उचित है, लौट चलो।” शत्रुघन ने अपना अश्व घुमाया।

एकचक्रनगरी की सेना लौटने लगी।

लौटते हुए शत्रुघन के मन में केवल एक ही बात थी, “किसने सहायता की हमारी? प्रकृति ने अथवा कोई और ही था।”

वहीं पर्वत की चोटी पर खड़ा दुर्भीक्ष अपने मित्र को महल लौटते हुए देख रहा था।

“आशा है तुम्हें पुनः देखने का अवसर शीघ्र ही प्राप्त हो शत्रुघना।” दुर्भीक्ष के मुख पर मंद मुस्कान छा गयी।

इसके उपरांत वह पर्वत की चोटी से कूदा और क्षणभर में भूमि पर आ गया। वह अपने मित्र को देखते हुए मुस्कुरा रहा था कि तभी अकस्मात् ही पर्वत से टूटा हुआ एक छोटा पत्थर नीचे गिरकर उसके सर से टकराया।

वह पीछे मुड़ा और पर्वत की ओर देखा और एक बड़े छेद को देखकर आश्चर्य में पड़ गया, जो पत्थरों के टूटने से पर्वत में बन गया था।

“यह क्या है!” जिज्ञासु दुर्भीक्ष एक बार फिर उस पर्वत पर चढ़ने लगा।

उस छेद के निकट आकर दुर्भीक्ष ने निष्कर्ष निकाला, “तो मेरा अनुमान सही था, यह कोई छेद नहीं, अपितु एक गुफा प्रतीत होती है; मैंने इस पर पहले ध्यान क्यों नहीं दिया।” दुर्भीक्ष संशय में था।

“चलो अब देख ही लेते हैं।” जिज्ञासु दुर्भीक्ष उस गुफा में प्रवेश कर गया।

वह आधे प्रहर तक लगातार चलता रहा, ‘ये गुफा तो काफी लंबी प्रतीत होती है।’

शीघ्र ही वह एक खुले मैदान में आया।

“वाह! इस स्थान का सौंदर्य तो अद्भुत है।” दुर्भीक्ष ने अपने कदम आगे बढ़ाये।

वह पूरा स्थान हरियाली से भरा हुआ था, जहाँ हर ओर एक मनमोहक इत्र की सी सुगंध फैली हुई थी। सामने एक अंधकारमय वन था, किंतु दूर से देखने में वह बहुत ही आकर्षक लग रहा था।

अगले ही क्षण उसे कोई उड़ता हुआ जीव, वन की ओर जाता दिखाई दिया।

‘वो क्या है?’ दुर्भीक्ष की जिज्ञासा बढ़ती ही जा रही थी। वह उसका पीछा करते हुए घने वन की ओर दौड़ा।

“यह वन तो बहुत अधिक अंधकारमय है।” वृक्षों के घनत्व और प्रकाश के अभाव में वो पूरा वन अंधकारमय हो गया था। दुर्भीक्ष उसी वन में चला जा रहा था।

अकस्मात् ही एक परछाई तीव्र गति से आई और दुर्भीक्ष को पीछे से धकेलकर भूमि पर गिरा दिया।

दुर्भीक्ष स्तब्ध रह गया, क्योंकि इस प्रहार के लिए वह सज्ज नहीं था। भूमि पर गिरे हुए ही वह क्षणभर में पलटा और स्वयं को कई भालाधारियों से घिरा हुआ पाया।

उन योद्धाओं का मुख उस घने अंधकारमय वन में दिखना असंभव था, किंतु दुर्भीक्ष ने उनमें से एक के हाथ को ध्यान से देखा... वो एक गरुड़ के पंजे के समान था।

‘ये किस प्रकार के जीव हैं’ दुर्भीक्ष के मन में जिज्ञासा जागी, इसलिए उसने कोई प्रतिरोध नहीं किया।

शीघ्र ही दुर्भीक्ष को एक मोटी और मजबूत लोहे की बेड़ी से बाँध दिया गया।

“इसे पिंजरे में डाल दो!” उनमें से एक योद्धा ने आदेश दिया।

शीघ्र ही उस घने वन में एक पिंजरा लाया गया और दुर्भीक्ष को उसमें डाल दिया गया। दो अश्वों ने उस पिंजरे को खींचना आरंभ किया, जिसमें दो पहिये भी लगे हुए थे।

‘इनकी भाषा तो हमारे ही समान है, किन्तु मैंने एक गरुड़ का पंजा देखा था... नहीं नहीं, हो सकता है ये मेरा भ्रम हो।’ दुर्भीक्ष विचार कर रहा था।

वह योद्धा उसे एक खुले मैदान में ले आये। दुर्भीक्ष उनकी ओर ध्यान से देख रहा था। उन सभी का मुख से लेकर सम्पूर्ण शरीर काले वस्त्रों से ढका हुआ था। किन्तु अगले ही क्षण उसने उनमें से एक के हाथ पर दृष्टि डाली।

‘ये हाथ... ये तो वास्तव में एक गरुड़ के पंजे के समान हैं; तो फिर यह मनुष्यों की भाँति वार्ता कैसे कर रहे हैं!’ दुर्भीक्ष आश्चर्य में था।

वो पिंजरा खुला और दुर्भीक्ष को उसमें से बाहर फेंक दिया गया।

बेड़ियों में बँधा दुर्भीक्ष भूमि पर था। उसने अपनी दृष्टि उठाई और अपने सामने खड़े योद्धा की ओर देखा। ऊपर से लेकर नीचे तक उसका शरीर काले वस्त्रों से ढका हुआ था। केवल उसके हाथ दिखाई दे रहे थे, जो एक गरुड़ के पंजे के समान थे।

“बस बहुत हुआ!” क्रोधित दुर्भीक्ष उठा और लोहे की वह बेड़ियाँ तोड़ दी।

उसका यह अद्भुत बल-प्रदर्शन देख सभी उपस्थित जन स्तब्ध रह गए।

“बहुत हुआ! कौन हो तुम और मुझे यहाँ क्यों लाये हो?” दुर्भीक्ष क्रोध में चीखा।

उनमें से एक दुर्भीक्ष के निकट आया और भारी स्वर में पूछा, “यह क्षेत्र हमारा है, तुम यहाँ कैसे पहुँचे? यहाँ का मार्ग तुम्हें किसने दिखाया?”

दुर्भीक्ष क्रोध से उस योद्धा की ओर देखने लगा।

“तुम हमारे क्षेत्र में हो, फिर भी हमें इस प्रकार घूरने का दुस्साहस कर रहे हो...” उस योद्धा ने दुर्भीक्ष को पीछे धकेला।

दुर्भीक्ष एक बार फिर भातों से घिर गया।

“अब मेरी सहनशक्ति समाप्त हुई!” उसने अद्भुत चपलता का प्रदर्शन किया और उनमें से दो योद्धाओं के भाले छीनकर हवा में छलाँग लगायी। उसकी गति असामान्य थी और कुछ ही क्षणों में उसने उन सभी छह योद्धाओं को भूमि पर गिरा दिया, जिन्होंने उसे घेर रखा था।

भूमि पर गिरते ही उनमें से कुछ योद्धाओं के मुख को ढका वस्त्र हट गया। दुर्भीक्ष उनके मुख देख स्तब्ध रह गया।

“गरुड़! तुम्हारा अस्तित्व अब भी है?” दुर्भीक्ष ने आश्चर्यपूर्वक प्रश्न किया।

उसके समक्ष खड़े गरुड़ों के सरदार ने भी अपने मुख को ढका वस्त्र हटाया और आगे आया। उसका कद लगभग दुर्भीक्ष के ही समान था। भुजायें और कंधे एक मनुष्य के जैसे और हाथ का पंजा एक गरुड़ के पंजे जैसा था... पाँव के साथ भी कुछ ऐसा ही था। उसकी पीठ पर बड़े-बड़े पंख लगे हुए थे।

वहाँ उपस्थित शेष गरुड़ों ने भी अपने मुख को ढका वस्त्र हटा दिया।

“हाँ, हम आज भी जीवित हैं” एक गरुड़, जो कदाचित् उनका सरदार था, आगे आया।

दुर्भीक्ष मुस्कुराया, “मैंने भगवान् राम और रावण के युद्ध की कथा सुन रखी है, किंतु वानर, गरुड़ और रीछों जैसे अद्भुत जीव तो उस काल में थे। कुछ लोग कहते हैं, कि उस युद्ध के कुछ वर्षों उपरांत उन्हें किसी ने नहीं देखा, किंतु वो गलत थे; वो आज भी अस्तित्व में हैं”

गरुड़ों का सरदार क्रोधित हो उठा, “हमारे अस्तित्व का चिंतन करने की की आवश्यकता तुम्हें नहीं है। हम अपने जीवन में शांति की आशा से मानवों से दूरी बनाये रखते हैं... किंतु तुम्हें हमारा रहस्य ज्ञात हो चुका है, इसलिए अब तुम्हारी मृत्यु निश्चित है” उसने म्यान से तलवार खींच निकाली।

दुर्भीक्ष मुस्कुराया, “तुम्हें अनुमान भी है कि इस समय तुम किसके समक्ष खड़े हो?”

वह गरुड़ हँस पड़ा, “तुम्हें अनुमान है कि मैं कौन हूँ? मैं ‘जटायु’ और ‘संपाती’ (रामायण के दो गरुड़ योद्धा) जैसे योद्धाओं के वंश से हूँ; गरुड़राज ‘शम्भाल’ कहते हैं मुझे”

“सैनिकों पीछे हटो!” शम्भाल ने आदेश दिया।

“ओह तो तुम्हारी मंशा दंड करने की है!” दुर्भीक्ष मुस्कुरा रहा था।

“उचित अनुमान लगाया तुमने। तुम्हारा अद्भुत बल देख, तुमसे दंड करने की इच्छा बहुत अधिक प्रबल हो गयी है” शम्भाल ने भाला उठाया।

एक अन्य गरुड़, दुर्भीक्ष के पास भी एक भाला लेकर आया। शीघ्र ही एक दूसरे को घूरते हुए वह दोनों अखाड़े में पहुँचे।

वो दोनों एक दूसरे की ओर दौड़े और उन दो भालों के टकराव ने भीषण ध्वनि उत्पन्न की।

‘वाह! यह तो बहुत चपल योद्धा हैं’ दुर्भीक्ष उससे लड़ते हुए विचार कर रहा था।

उन दोनों का दंड पूरे आधे प्रहर तक चला। अंततः शम्भाल निःशस्त्र हो गया। उसका भाला टूट गया और अब दुर्भीक्ष का भाला उसके कंठ पर था।

“तुम पराजित हुए गरुड़राज।” दुर्भीक्ष ने छीटाकशी की।

“वध कर दो मेरा; अपनी प्रजा के सामने मिली पराजय के इस भार को लेकर जीवित नहीं रह सकता।” शम्भाल घुटनों के बल बैठ गया।

“तुम एक उत्तम श्रेणी के योद्धा हो; शम्भाल और उसके लिए मैं तुम्हारा सम्मान करता हूँ। किंतु तुम्हारा वध करने का कोई विशेष कारण नहीं है मेरे पास।” दुर्भीक्ष ने भाला भूमि पर पटका और मुड़ गया।

यह सुनकर शम्भाल को क्रोध आ गया। वह भाला लेकर भूमि से उठा और दुर्भीक्ष की पीठ पर प्रहार किया। दुर्भीक्ष घायल हो गया।

“दंड का केवल एक ही अर्थ है, विजय अथवा मरण... यदि तुम मेरा वध नहीं करोगे, तो मैं तुम्हारा वध कर दूँगा।” क्रोधित शम्भाल ने एक बार फिर उसकी पीठ में भाला घोंपा।

“एक और छल; तुम्हें अनुमान भी नहीं कि कितनी घृणा करता हूँ मैं तुम्हारे जैसे कपटी योद्धाओं से।” दुर्भीक्ष के नेत्र क्रोध से लाल हो उठे। उसने अपनी पीठ से भाला बाहर खींच निकाला और पीछे मुड़ा।

दुर्भीक्ष के स्वतः भरते घावों को देख शम्भाल स्तब्ध रह गया।

दुर्भीक्ष क्रोध में शम्भाल को घूर रहा था। तभी एक गरुड़ स्त्री वहाँ आ पहुँची, जो कि शम्भाल की पत्नी थी। उसने निःशस्त्र शम्भाल और क्रोधित दुर्भीक्ष की ओर देखा।

शम्भाल ने भी दुर्भीक्ष के क्रोध से धधकते नेत्रों की ओर देखा।

“तुमने मुझसे दंड माँगा था, जो कि न्यायपूर्ण होना चाहिए था।” दुर्भीक्ष ने निःशस्त्र हुए शम्भाल की छाती पर प्रहार किया। वह भाला शम्भाल की छाती से होता हुआ, उसके हृदय को चीरकर उसकी पीठ से पार हो गया। दुर्भीक्ष ने उसे भाले सहित हवा में उठाया और भूमि पर पटक दिया। यह दृश्य देख वह गरुड़ स्त्री स्तब्ध रह गयी। उसके मुख से शब्दों का फूटना कठिन हो रहा था।

शम्भाल अपनी मृत्यु के निकट था। क्रोधित दुर्भीक्ष उसके निकट आया और उसके नेत्रों में देखा, “मुझे छल से घृणा है... तुम्हें देख मुझे उस नीच योद्धा का स्मरण हो आया, जिससे मैं सबसे अधिक घृणा करता हूँ।” उसने उसकी छाती पर भीषण प्रहार किया।

शम्भाल गंभीर रूप से घायल हो गया। उस क्षण दुर्भीक्ष के नेत्रों की क्रूरता और क्रोध ने सभी उपस्थित योद्धाओं के मन में भय का संचार कर दिया। उसका मुख गरुड़राज शम्भाल के रक्त से लाल हो गया था। वह भूमि से उठा और अपने नेत्र बंद कर विचार किया, ‘काश! ऐसा मैं तुम्हारे साथ कर सकता, विक्रमाजिता।’

‘नहीं...!’ वह गरुड़ स्त्री सदमें से बाहर आयी और अपने पति की ओर दौड़ी।

“नहीं नहीं...” शम्भाल को घायल देख उसके नेत्र अश्रुओं से भर गए।

उसका क्रंदन सुन अकस्मात् ही दुर्भीक्ष अपने विचारों से बाहर आ गया। “ओह! यह मैंने क्या कर दिया, यह तो नृशंसता है।” उसे अपने किये पर विश्वास ही नहीं हो रहा था कि शम्भाल के साथ उसने क्या कर दिया। उसने उस गरुण स्त्री को समझाने का विचार किया, किंतु इतना साहस नहीं जुटा पाया।

कुछ क्षणों के उपरांत वह गरुड़ स्त्री दुर्भीक्ष की ओर मुड़ी। वह क्रोध से उसकी ओर देख रही थी, “तुमने इन पर तब प्रहार किया, जब यह निःशस्त्र थे; यह छल है।”

“मैं... मैंने छल किया... दंड में छल इसने किया था; इसने मुझ पर पीछे से प्रहार किया था, जब मैं निःशस्त्र था।” दुर्भीक्ष ने अपना पक्ष रखा।

“ओह, तब तो तुम्हारे शरीर पर भी घाव होने चाहिए; किंतु मुझे तो कोई घाव नहीं दिखाई देता।” वह गरुड़ स्त्री क्रोध से दुर्भीक्ष को देख रही थी।

दुर्भीक्ष के घाव स्वतः ही भर चुके थे, इसलिए उसके पास कहने को कुछ न था।

वहीं घायल शम्भाल ने उसे रोकने का प्रयत्न किया, “रुक... रुक जाओ, शैलजा...” किंतु इससे अधिक वह कुछ नहीं बोल पाया। उसका शरीर कुछ ही क्षणों में प्राणविहीन हो गया।

शैलजा शम्भाल की ओर मुड़ी। अपने पति की निष्प्राण काया देख वो स्तब्ध रह गयी। वो शम्भाल के मुख को निहारे जा रही थी।

कुछ क्षणों के उपरांत वो दुर्भीक्ष की ओर मुड़ी, “तुमने एक निःशस्त्र योद्धा के साथ छल किया है; तुमने उसकी हत्या की है जो मुझे सर्वाधिक प्रिय था... इसलिए आज मैं तुम्हें श्राप देती हूँ, तुम जिससे भी सबसे अधिक प्रेम करोगे, वही तुम्हारी मृत्यु का कारण बनेगा।”

दुर्भीक्ष क्रोध में शैलजा पर चीखा, “मैंने कोई छल नहीं किया; छल तुम्हारे पति ने मेरी पीठ पर प्रहार करके किया था।”

क्रोधित शैलजा भूमि से उठी और दुर्भीक्ष की ओर क्रोध से देखा, “तो तुम यह कहना चाहते हो कि तुम इतने सामर्थ्यवान हो कि गरुड़राज को दंड में पराजित कर सकते थे?”

“निःसंदेह, तुम्हारे पति ने मेरा सामर्थ्य देख ही मुझे दंड की चुनौती दी थी।” दुर्भीक्ष ने गर्व से कहा।

“ओह! तो फिर यदि ऐसा है, तो मैं तुम्हें चुनौती देती हूँ, कि यदि तुममें सामर्थ्य है तो हमारे महामहिम को पराजित करके दिखाओ, क्योंकि उनके अतिरिक्त ऐसा कोई योद्धा नहीं था, जो गरुड़राज को परास्त कर सके।” शैलजा ने चुनौती दी।

“तुम्हारे महामहिम!” दुर्भीक्ष ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“हाँ, हमारे महामहिम... यदि तुममें उनका सामना करने का सामर्थ्य है, तो मेरे साथ आओ, मैं उनसे न्याय की गुहार लगाऊँगी और वही तुम्हारा प्रारब्ध निश्चित करेंगे।” शैलजा ने चुनौती भरे स्वर में कहा।

दुर्भीक्ष ने अपने भाले पर कसाव बढ़ाया, “चुनौती स्वीकार है।”

2. जामवंत से युद्ध

“तो फिर उचित है, मेरे साथ आओ।” शैलजा एक निश्चित दिशा की ओर बढ़ चली।
दुर्भीक्ष उसके पीछे गया। गरुड़ योद्धाओं में से किसी में भी उन दोनों के मध्य हस्तक्षेप करने का साहस नहीं था।

शीघ्र ही शैलजा एक गुफा के निकट पहुँचा। दुर्भीक्ष उसका पीछे करते हुए वहाँ पहुँच आया।
शैलजा अपने घुटनों के बल झुकी, “महामहिम, हमें आपकी आवश्यकता है; न्याय को आपकी आवश्यकता है महामहिम।”

कुछ गरुड़ योद्धा भी वहाँ पहुँच आये।
शीघ्र ही कुछ भारी पदचापों की आहट सुनाई दी, जैसे कोई विशालकाय जीव गुफा से बाहर आ रहा हो। दुर्भीक्ष भी उसे देखने के लिए अधीर हो रहा था।

शैलजा का स्वर सुनकर एक विशालकाय रीछ, गुफा से बाहर आया। उसका कद सामान्य मनुष्य से लगभग डेढ़ गुना था। दुर्भीक्ष उसे देख स्तब्ध रह गया।

“रीछराज जामवंत की जय हो! रीछराज जामवंत की जय हो!” शैलजा का अनुसरण करते हुए सभी गरुड़ योद्धा उनके सम्मान में घुटनों के बल झुक गए।

उस विशालकाय रीछ की दहाड़ सहन करना वहाँ उपस्थित लोगों के लिए कठिन हो रहा था। उस दहाड़ ने दुर्भीक्ष को भी दो कदम पीछे हटने पर विवश कर दिया।

“तुमने मुझे क्यों पुकारा शैलजा? मैं तपस्या में लीन था?” जामवंत ने शैलजा से भारी स्वर में प्रश्न किया।

“मैं क्षमा चाहती हूँ रीछराज; किंतु इस मनुष्य ने गरुड़राज की छल से हत्या की है... इसे लगता है कि जगत में इसके जोड़ का कोई योद्धा नहीं है, इसलिए मैं यहाँ न्याय की आशा लेकर आयी हूँ महामहिम।” शैलजा ने उत्तर दिया।

दुर्भीक्ष स्तब्ध रह गया, “मैंने ऐसा कब कहा और जहाँ तक शम्भाल की मृत्यु का प्रश्न है, तो वो स्वयं इसके लिये उत्तरदायी है; उसने पहले मुझे दंष्ट्र की चुनौती दी और अपनी पराजय के उपरांत उसने छल से मेरी पीठ पर वार किया, इसलिए उस कायर के साथ मैंने कुछ अनुचित नहीं किया।”

“नहीं महामहिम, ये असत्य कह रहा है; यदि इसकी पीठ पर वार हुआ था, तो इसके घाव कहाँ हैं? मुझे तो दिखाई नहीं देते... मुझे न्याय चाहिए, महामहिम।” अपने नेत्रों में प्रतिशोध की ज्वाला लिए शैलजा ने जामवंत से गुहार लगायी।

जामवंत दुर्भीक्ष के निकट आये, “पहले ये बताओ तुम हो कौन और एक मनुष्य होते हुए यहाँ पहुँचे कैसे?”

“रीछराज जामवंत, आप आज भी जीवित हैं!” दुर्भीक्ष ने उनके प्रश्न को अनसुना कर दिया।

“पहले मेरे प्रश्न का उत्तर दो।” रीछराज ने दुर्भीक्ष को घूरकर देखा।

“मेरा नाम सूर्जन है, मुझे असुरेश्वर दुर्भीक्ष के नाम से भी जाना जाता है।” दुर्भीक्ष ने दृढ़ता से उत्तर दिया।

जामवंत को शंका हुई, “असुरेश्वर दुर्भीक्ष? तो तुम्हारे कहने का अर्थ है कि तुम एक असुर हो; किंतु तुम्हें देखकर ऐसा प्रतीत तो नहीं होता, मुझे सत्य बताओ।” जामवंतने कठोर स्वर में प्रश्न किया।

यह देख शैलजा ने हस्तक्षेप किया, “इन प्रश्नों का क्या औचित्य है महामहिम; मुझे न्याय चाहिए और उसके लिए आपको इसे दण्डित करना होगा। इसे अपनी शक्ति पर बहुत अभिमान है, मैं चाहती हूँ कि आप इसका यह अभिमान तोड़ दें।”

जामवंत ने दुर्भीक्ष को घूरकर देखा, “तो तुम्हें अपने सामर्थ्य पर बहुत अहंकार है?”

“यह सत्य नहीं है; मैं बस इतना कह रहा हूँ कि शम्भाल को मैंने एक उचित दंड में परास्त किया है।” दुर्भीक्ष ने गर्व से कहा।

“तुम अभिमानी हो। तुम दिखने में तो मनुष्य प्रतीत होते हो, किंतु स्वभाव से असुर हो।”

“मैं आधा मनुष्य और आधा असुर हूँ; आर्यावर्त की भूमि के श्रेष्ठ योद्धाओं में से एका।” दुर्भीक्ष ने गर्व से कहा।

जामवंत मुस्कुराये, “आर्यवर्त के श्रेष्ठ योद्धाओं में से एक... चलो फिर तुम्हारे बल का परीक्षण ले ही लिया जाय।”

“आप आयु और अनुभव में मुझसे बहुत आगे ही नहीं, अपितु प्राचीन काल के महानतम योद्धा भी हैं, मैं आप पर शस्त्र नहीं उठा सकता।” दुर्भीक्ष अपने घुटनों के बल झुक गया।

“तो तुम टालने का प्रयत्न कर रहे हो।” जामवंत ने उस पर छीटाकशी की।

“मैं टालने का प्रयत्न नहीं कर रहा; मैं स्वयं को रोक रहा हूँ, क्योंकि मैं आप जैसे महान योद्धा को पराजित कर अपमानित नहीं करना चाहता।” दुर्भीक्ष अभी भी अपने घुटनों पर ही झुका हुआ था।

उसके इन शब्दों को सुन जामवंत को क्रोध आ रहा था।

वहीं शैलजा ने एक बार फिर हस्तक्षेप किया, “आप स्वयं इसका अभिमान देख लीजिये महामहिम; परोक्ष रूप से यह आपको दंड की चुनौती ही दे रहा है, इसका वध कर ही देना चाहिए।”

“मौन रहो शैलजा, मैं उपस्थित हूँ अभी यहाँ।” जामवंत झट्टा उठे।

शैलजा पीछे हट गयी।

इसके उपरांत जामवंत, दुर्भीक्ष के निकट गए, “उठो और मेरे नेत्रों में देखो।”

दुर्भीक्ष उठा। दोनों महायोद्धाओं के नेत्र एक-दूसरे को निहार रहे थे।

“परोक्ष रूप से तुमने मुझे दंड की चुनौती दे ही दी है।” जामवंत के नेत्र क्रोध से लाल हो रहे थे।

“नहीं, मेरे कहने का यह अर्थ नहीं था; मैं तो बस आप पर शस्त्र नहीं उठाना चाहता।” दुर्भीक्ष ने विनम्रता से कहा।

जामवंत का क्रोध सीमा पार कर गया। उन्होंने अपने पैर से दुर्भीक्ष की छाती पर प्रहार किया।

फलस्वरूप वह दस गज की दूरी पर जा गिरा।

कुछ क्षणों के लिए दुर्भीक्ष का मस्तिष्क सुन्न सा हो गया। उस भयंकर प्रहार से वो स्तब्ध था। वहीं यह देख शैलजा और अन्य गरुड़ योद्धाओं के मुख पर प्रसन्नता छा गयी।

कुछ क्षणों के उपरांत दुर्भीक्ष भूमि से उठा, “बड़ा ही भयंकर प्रहार था। एक नया अनुभव प्राप्त

हुआ आज।”

वहीं जामवंत एक बार फिर उसकी ओर दौड़े और उसके मुख पर मुष्टि प्रहार किया। दुर्भीक्ष रक्त उगलता हुआ एक बार फिर भूमि पर गिर पड़ा।

वो एक बार फिर भूमि से उठा, “आप मेरे धैर्य की परीक्षा ले रहे हैं रीछराज।”

जामवंत ने उसकी गर्दन पकड़ी और उसे उठाकर एक बड़े पत्थर की ओर फेंक दिया।

दुर्भीक्ष एक बड़े पत्थर से टकराया और एक बार फिर भूमि पर गिर पड़ा। अब उसके मन में भी क्रोध का संचार होने लगा था।

जामवंत एक बार फिर उसकी ओर दौड़े। इस बार दुर्भीक्ष ने भूमि से उठकर, अपनी ओर आती जामवंत की मुष्टि को अपने बायें पंजे पर रोक लिया।

“बहुत हो गया आपका शक्ति प्रदर्शन रीछराज जामवंत!” दुर्भीक्ष ने अपने दायें हाथ से जामवंत की छाती पर भीषण प्रहार किया।

उस प्रहार ने जामवंत को पाँच गज पीछे हटा दिया। शैलजा, सभी उपस्थित गरुड़ योद्धा... यहाँ तक की जामवंत भी उस युवान का बल देख अचंभित रह गए।

“इतना भीषण बल! कौन हो तुम?” जामवंत ने दुर्भीक्ष से आश्चर्य से प्रश्न किया।

“दुर्भीक्ष, असुरों का महानायक।” दुर्भीक्ष ने गर्व से कहा।

“तुम दिखने में तो असुर प्रतीत नहीं होते; मैंने तो सोचा था कि तुम किसी राज्य के राजकुमार हो।” जामवंतने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“आपने उचित ही समझा रीछराज; मैं आधा मनुष्य और आधा असुर हूँ और एकचक्रनगरी का राजकुमार भी था मैं और आज असुरेश्वर दुर्भीक्ष के नाम से जाना जाता हूँ।” दुर्भीक्ष ने गर्व से कहा।

“तुम बहुत अभिमानी हो; मैंने तुम्हें कमतर आँका, किंतु तुम एक उचित दंड के योग्य हो।” जामवंत कुछ कदम पीछे हटे।

“गदाएँ लाओ!” जामवंत ने आदेश दिया।

दो गरुड़ योद्धाओं ने दो गदा लीयाँ। एक दुर्भीक्ष की ओर बढ़ाया और दूसरी जामवंत की ओर। जामवंत ने गदा उठाकर दुर्भीक्ष को चुनौती दी, “गदा पर अपनी पकड़ मजबूत रखना दुर्भीक्ष, इस बार मैं सावधान रहूँगा।”

दुर्भीक्ष ने गदा पकड़ी और जामवंत की ओर बढ़ा। जामवंत अपने प्रतिद्वंद्वी की ओर तीव्र गति से दौड़े। दुर्भीक्ष भी तीव्र गति से दौड़ रहा था। दोनों योद्धाओं ने लंबी छलाँग लगायी और अपनी गदायें टकरायीं।

उस टकराव ने भयंकर ध्वनि उत्पन्न की। दोनों योद्धाओं को पीछे हटना पड़ा। गरुड़ों के मन में भय व्याप्त होने लगा। यह दो अलग अलग युग के श्रेष्ठ योद्धाओं का दंड था।

दंड चलता रहा। दो सूर्योदय और सूर्यास्त बीत गए, किंतु दंड अभी भी जारी था। उस दंड का स्वर कोसों दूर तक सुना जा सकता था। गरुड़ इस महान दंड के साक्षी थे।

दंड के तीसरे दिन जामवंत, दुर्भीक्ष पर हावी हो रहे थे। उन्होंने उसे उठाकर एक पत्थर की ओर फेंक दिया।

दुर्भीक्ष एक बार फिर उठा और जामवंत की ओर दौड़ा... किंतु इस बार उसकी गति पहले जितनी तीव्र नहीं थी।

वो दोनों एक बार फिर भिड़ गये। जामवंत ने उस पर छीटाकशी की, “क्या हुआ युवान? इच्छाशक्ति समाप्त तो नहीं हो रही तुम्हारी?”

दुर्भीक्ष ने अपने प्रतिद्वंद्वी के नेत्रों में देखा, “मैं फिर से कहता हूँ रीछराज, आपको इस द्वंद से कुछ प्राप्त नहीं होगा, क्योंकि जब तक मैं जीवित हूँ, पराजय स्वीकार नहीं करूँगा और विश्वास कीजिये, मैंने शम्भाल को उचित द्वंद में परास्त किया है... मैंने अपने पूरे जीवन में किसी भी प्रतिद्वंद्वी योद्धा के साथ कपट नहीं किया।”

जामवंत दुर्भीक्ष की ओर देख मुस्कराये, “जानता हूँ; पहले भी मैं तुम्हारे विषय में सुन चुका हूँ। सम्पूर्ण आर्यवर्त को तुम्हारे विषय में ज्ञात है दुर्भीक्ष; किंतु जो योद्धा मेरे समक्ष खड़ा है, वो वैसा प्रतीत नहीं होता जैसा मैंने उसके विषय में सुन रखा है।”

“आपके कहने का अर्थ क्या है रीछराज?” दुर्भीक्ष ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

जामवंत ने दुर्भीक्ष को पीछे धकेला, “इस द्वंद का अंत हम यहीं करते हैं।”

दुर्भीक्ष भी द्वंद के लिए वापस उनकी ओर नहीं दौड़ा।

जामवंत गरुड़ों की ओर मुड़े, “हमें वार्ता करनी है, तुम लोग यहाँ से प्रस्थान करो।”

“किंतु महामहिम...” शैलजा ने हस्तक्षेप करना चाहा।

“इसने शम्भाल के साथ कोई कपट नहीं किया; वो अपनी मृत्यु के लिए स्वयं उत्तरदायी था।” जामवंत ने स्पष्ट रूप से कह दिया।

क्रोधित शैलजा ने दुर्भीक्ष की ओर देखा, “तो इसने आपको भी छल लिया महामहिम। किंतु एक बात स्मरण रखना दुर्भीक्ष, मेरा श्राप तुम्हें मृत्यु शर्या तक अवश्य ले जायेगा; मैं अपने पति की मृत्यु का प्रतिशोध लेने के लिए अवसर की प्रतीक्षा करूँगी, मुझे स्मरण रखना असुरेश्वर दुर्भीक्ष, मैं अवसर की प्रतीक्षा करूँगी।” शैलजा मुड़कर लौट गयी।

“वो पीड़ा में है, उसे जाने दो और वैसे भी आर्यावर्त के महानतम योद्धाओं की श्रेणी में होने के उपरांत, तुम्हें क्षमा करना सीखना होगा, क्योंकि मुझे नहीं लगता कि इस सम्पूर्ण आर्यवर्त में ऐसा कोई भी योद्धा होगा, जो तुम्हारे समक्ष खड़ा हो सके।” जामवंत ने दुर्भीक्ष को समझाने का प्रयत्न किया।

दुर्भीक्ष ने जामवंत की ओर देखा। उसके नेत्र पीड़ा से परिपूर्ण थे, “आपको क्या लगता है रीछराज, मुझे मृत्यु का भय है? यह सत्य नहीं है, क्योंकि इसका अनुभव मुझे पहले भी मिल चुका है।” कहकर वो एक पत्थर पर बैठ गया।

जामवंत ने उसके कंधे पर हाथ रखा, “तुमने मृत्यु का अनुभव किया है, कैसे? मैं तुम्हारे विषय में सब कुछ जाना चाहता हूँ।”

“किंतु क्यों? आपकी दृष्टि में तो मैं केवल एक असुर हूँ।”

“नहीं, तुम वो नहीं हो जो संसार तुम्हारे विषय में कहता है; यह संसार चाहे कुछ भी कहे, मैं उनका विश्वास नहीं करूँगा; तुम एक आदर्श योद्धा हो, और तुम्हारा इतना परिचय ही पर्याप्त है, तो फिर तुम असुरों का समर्थन क्यों कर रहे हो, तुम्हें तो आर्यवर्त के वीरों के लिए एक उदाहरण बनना चाहिए, उन्हें प्रेरित करना चाहिए।” जामवंत ने कौतूहलवश प्रश्न किया।

दुर्भीक्ष पत्थर से उठा, “क्योंकि इसके अतिरिक्त मेरे पास और कोई विकल्प नहीं है।”

जामवंत ने अधीरता से प्रश्न किया, “किंतु क्यों? मैं जानना चाहता हूँ।”

दुर्भीक्ष ने अपने जीवन का इतिहास सुनाना आरंभ किया, जब उसे एकचक्रनगरी से

निष्कासित किया गया था।

अपनी जीवनगाथा सुनाने के उपरांत उसने जामवंत से प्रश्न किया, “अब आप ही बताइये, क्या अपराध था मेरा? जन्म लेते ही मुझे अपनी माँ का हत्यारा घोषित कर दिया गया... एकचक्रनगरी के युद्ध में मैंने किसी निरपराध की हत्या नहीं की, क्या ये मेरा अपराध था? मैं उस व्यक्ति के समर्थन में खड़ा हूँ, जिसने मुझे मेरा जीवन लौटाया और उसके लिए मुझे अपने एकमात्र मित्र शत्रुघन को भी खोना पड़ा। मैं नहीं चाहता कि संसार मुझसे भयभीत हो; मैं उनके नेत्रों में केवल अपने लिए सम्मान देखना चाहता हूँ, किंतु सत्य तो यह है कि आर्यवर्त के लोगों को यह ज्ञात ही नहीं कि वास्तव में मैं हूँ कौन... ‘दुर्भीक्ष’ नाम सुनकर ही उनके मन में भय व्याप्त हो जाता है। किंतु मैं भी एक साधारण जीवन जीना चाहता हूँ, इन सब चिंतनों से मुक्त होना चाहता हूँ।”

“दुर्भीक्ष... असुरेश्वर दुर्भीक्ष; इस नाम से तुम्हें मुक्ति पानी होगी।” जामवंत ने प्रेमपूर्वक कहा।

“इस जन्म में तो यह संभव नहीं है रीछराजा।” दुर्भीक्ष मुस्कुराया।

“संभव है।”

“किंतु यह संभव कैसे होगा? मैंने जयवर्धन को वचन दिया है, कि जब तक मैं जीवित हूँ, उसके समर्थन में खड़ा रहूँगा।” दुर्भीक्ष ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“ये तो तुम्हारे चुनाव पर निर्भर करता है सुर्जन; क्या तुम्हें पातालपुरी के सिंहासन का मोह है? या तुम्हें लोगों के मन में अपने लिए सम्मान देखना है? जयवर्धन का समर्थन तो तुम एक योद्धा के रूप में भी कर सकते हो, इसलिए पहले मेरे प्रश्न का उत्तर दो।” जामवंत ने दुर्भीक्ष से प्रश्न किया।

“चुनाव तो मैं सम्मान का ही करूँगा, सिंहासन का मुझे कोई लोभ नहीं। किंतु असुरों का उत्तरदायित्व भी तो मुझ पर है। मेरे गुरु भैरवनाथ ने मुझ पर विश्वास किया, मेरे जीवन को आधार दिया; मैं उनके साथ विश्वासघात नहीं कर सकता।”

“ठीक है, तुम्हें ऐसा करने की आवश्यकता नहीं है... किंतु क्या केवल कुछ दिनों के लिए तुम अपना जीवन शांति से जीना चाहोगे?” जामवंत मुस्कुराये।

“यह कैसे संभव होगा?” दुर्भीक्ष ने प्रश्न किया।

जामवंत ने अपनी शक्तियों का प्रयोग कर एक साधारण मनुष्य का रूप ले लिया, “मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें साधारण जीवन का स्वाद चखाता हूँ, जो हर चिंतन से मुक्त होती है।”

“मैं समझ नहीं पा रहा, आप करना क्या चाहते हैं।” दुर्भीक्ष असमंजस में था।

“एक साधारण ग्रामीण की भाँति वस्त्र धारण करो, तुम्हें तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर शीघ्र मिल जायेंगे।” जामवंत मुस्कुराये।

“ठीक है, जैसा आप कहें।” दुर्भीक्ष ने सहमति जताई।

शीघ्र ही जामवंत की ही भाँति दुर्भीक्ष ने भी एक साधारण ग्रामीण जैसे वस्त्र पहन लिए।

जामवंत ने दो अश्वों का भी प्रबंध कर दिया।

“हम कहाँ जा रहे हैं?” दुर्भीक्ष ने प्रश्न किया।

“मार्ग में बता दूँगा, अभी केवल मेरा अनुसरण करो।” जामवंत ने अश्व पर आरुढ़ होते हुए कहा।

दुर्भीक्ष भी उनका अनुसरण करते हुए, अश्व पर आरुढ़ हो गया।

उन दोनों ने अपनी यात्रा प्रारंभ की।

* * *

कुछ दिनों की यात्रा के उपरांत, वह एक वन में पहुँचे।

“हम कहाँ हैं?” दुर्भीक्ष ने प्रश्न किया।

“कदाचित् एक शांत वन में।” जामवंत ने उत्तर दिया।

“किंतु किसलिए...?” दुर्भीक्ष ने संशय में प्रश्न किया।

“पहले मैं जो कह रहा हूँ उसे ध्यान से सुनो। मैं एक व्यापारी हूँ और तुम मेरे अंगरक्षक हो।” जामवंत ने कहा।

“अंगरक्षक!?” दुर्भीक्ष ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“हाँ, अंगरक्षक। अब मैंने तो एक सामान्य मनुष्य का रूप ले लिया है, किंतु तुम तो ऐसा कर नहीं सकते। अपने हृष्ट-पुष्ट देह की ओर देखो; यह कार्य तुम्हारे लिए सबसे अधिक उपयुक्त है।” जामवंत ने मुस्कराते हुए कहा।

“मैं अभी तक समझ नहीं पा रहा रीछराज, आपकी मंशा क्या है?”

“बस तुम मेरा अनुसरण करते रहो; तुम्हें नहीं लगता कि कुछ दिन उत्तरदायित्वों के भार से मुक्त होकर एक शांतिपूर्वक जीवन जीना चाहिए?” जामवंत ने प्रश्न किया।

“कदाचित् आपका कथन उचित है; मैं सज्ज हूँ।” दुर्भीक्ष ने सहमति जताई।

“तो इस समय से तुम्हारा नाम सुर्जन है; मैं एक व्यापारी हूँ और तुम मेरे अंगरक्षक हो और एक व्यापारी के रूप में मेरा नाम सुलोचन होगा।” जामवंत ने कहा।

“जैसा आप उचित समझें। वैसे भी यह मेरे लिए सम्मान की बात है रीछराज; किंतु यदि आप व्यापारी हैं, तो व्यापार करेंगे किसका?” दुर्भीक्ष ने प्रश्न किया।

“वो भी शीघ्र ही पता लगा लेंगे... और इस समय मैं तुम्हारा सरदार हूँ और मेरा नाम सुलोचन है, रीछराज नहीं... और तुम सुर्जन हो, एक सामान्य अंगरक्षक।”

“हाँ, मैं ध्यान रखूँगा।” सुर्जन मुस्कराया।

“तो चलो फिर, किसी निकट के ग्राम को ढूँढ़ते हैं।” जामवंत (सुलोचन) ने अपने अश्व की लगाम खींची और आगे बढ़े।

सुर्जन और सुलोचन, दोनों किसी ग्राम की खोज में थे। शीघ्र ही उनकी दृष्टि एक वृद्ध व्यक्ति पर पड़ी, जो भारी सामग्रियों से भरे एक वाहन को खींच रहा था। उस भार को खींचना उसे कठिन प्रतीत हो रहा था।

सुर्जन और सुलोचन उस वृद्ध व्यक्ति की ओर बढ़े।

“क्या आपको सहायता की आवश्यकता है?” सुर्जन ने उस वृद्ध से प्रश्न किया।

“नहीं नहीं, मुझे किसी सहायता की आवश्यकता नहीं है।” उस वृद्ध व्यक्ति ने रुष्टता से उत्तर दिया और आगे बढ़ने लगा।

“तुम्हें वास्तव में सहायता की आवश्यकता है और तुम्हें भलीभाँति ज्ञात है, कि तुम इस भार को अब और नहीं खींच सकते।” सुलोचन ने उस वृद्ध व्यक्ति से कड़े स्वर में कहा।

“ठीक है; मैं एक व्यापारी हूँ और मुझे ये सारी सामग्री बाजार में ले जाकर बेचनी है, यदि तुम लोग मेरी सहायता करना चाहते हो, तो इस वाहन को पास के ग्राम तक पहुँचा दो, किंतु इसके लिए मैं तुम्हें कुछ देने वाला नहीं हूँ।” उस वृद्ध व्यक्ति ने स्पष्ट रूप से कहा।

सुर्जन ने उसे विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया, “ठीक है, हमें आपसे कोई...।”

किंतु सुलोचन ने हस्तक्षेप किया, “एक क्षण रुको सुर्जन; हम ऐसे ही इसकी सहायता क्यों करें? तुम्हें हमारी सहायता का मेहनताना तो देना ही होगा।”

“किंतु...।” सुर्जन ने हस्तक्षेप करने का प्रयत्न किया।

सुलोचन ने उसे मौन रहने का संकेत किया, “हम भी व्यापारी हैं और इसलिए हम भी लेन-देन के नियमों का अनुसरण करते हैं।”

“मुझे ज्ञात था।” वह वृद्ध व्यक्ति मुड़कर वाहन को खींचने लगा।

“तुम्हारे पास अब भी विकल्प है; यदि असफल रहो, तो हमारे पास आ जाना।” सुलोचन ने उस जाते हुए वृद्ध व्यक्ति को कहा।

उस व्यक्ति ने भरसक प्रयत्न किया, किंतु वह उस वाहन के साथ दस गज भी पार न कर सका। इसके उपरांत उसने पीछे मुड़कर सुलोचन और सुर्जन की ओर देखा और हाँफते हुए कहा, “ठीक है, मैं तुम्हें मेहनताना देने को सज्ज हूँ।”

“उचित है।” सुलोचन और सुर्जन अपने अश्व से नीचे उतरे और उसकी ओर बढ़े और उसके वाहन को खींचने में उसकी सहायता में जुट गए।

किंतु शीघ्र ही झाड़ियों के हिलने का स्वर सुलोचन के कर्णों को छू गया। पीछे मुड़कर देखने पर सामने का दृश्य हृदय विदारक भी था और आश्चर्यजनक भी। कुछ दूरी पर लगड़बग्घे, दो मृत मानवों के शरीर को झाड़ियों से खींचकर ले जा रहे थे। सुलोचन के मन में संशय उत्पन्न हो गया। उन्होंने मुड़कर उस वृद्ध व्यक्ति के कमर में बँधी कटार की ओर देखा।

शीघ्र ही वह तीनों एक गहरी खाई के निकट पहुँचे। उस खाई को पार करने हेतु एक सेतु बना हुआ था।

“ठीक है, हमें सेतु के उस पार पहुँचना होगा।” उस वृद्ध व्यक्ति ने कहा।

सुलोचन ने उससे प्रश्न किया, “ठीक है, हम कर देंगे, किंतु यह तो बताओ, यह वाहन जो इतने भारी बक्सों से लदा है, इन बक्सों में है क्या?”

उस वृद्ध व्यक्ति को क्रोध आ गया। उसने अपनी कमर से कटार निकाली और सुलोचन की ओर मुड़कर उसकी गर्दन पर कटार रखी, “यह जानना तुम्हारा कार्य नहीं है; तुम्हें अपने कार्य से सरोकार रखना चाहिए, अन्यथा मृत्यु तुमसे अधिक दूर नहीं है।”

वहीं सुलोचन ने उस कटार की ओर देखा, उस पर ताजा रक्त लगा हुआ था, “तो तुम मेरी उसी प्रकार हत्या करना चाहते हो, जैसे तुमने अपने साथियों की हत्या की थी।”

वह वृद्ध व्यक्ति स्तब्ध रह गया, “तुम्हें यह कैसे ज्ञात हुआ?”

“अनुमान लगाया... तुम्हारी इस कटार पर लगा ताजा रक्त और कुछ कोस पहले दो मृत शव को ध्यान में रखा था मैंने।” सुलोचन ने उस वृद्ध व्यक्ति की ओर घृणित दृष्टि से देखा।

“तो तुम कुछ अधिक ही जान गए हो; इसका अर्थ है, कि तुम्हारी मृत्यु आवश्यक है।” उस वृद्ध व्यक्ति ने सुलोचन पर प्रहार करने का प्रयत्न किया, किंतु सुर्जन ने उसका हाथ पकड़कर उसे पीछे धकेल दिया।

उस वृद्ध व्यक्ति का दायाँ पाँव एक छोटे पत्थर से टकराया और वह अपना संतुलन खो बैठा। वह भूमि पर गिरा और लुढ़कते हुए खाई की ओर जाने लगा।

“नहीं नहीं, रक्षा करो मेरी।” वह वृद्ध व्यक्ति भय के मारे चीख पड़ा।

सुर्जन उसकी सहायता के लिए दौड़ा, किंतु तब तक बहुत विलंब हो चुका था। वह वृद्ध व्यक्ति गहरी खाई में गिरता चला गया। उसके चीखने का स्वर वातावरण में गूँजता रहा।

सुर्जन खाई के किनारे आया। उसने उस वृद्ध व्यक्ति को गिरते हुए देखा, जो शीघ्र ही उसे मृत्यु के मुख में ले गया। सुलोचन भी खाई के किनारे के निकट आये।

“हमें उसकी रक्षा करनी चाहिए थी।” सुर्जन को ग्लानि का अनुभव होने लगा।

“तुमसे कोई त्रुटि नहीं हुई है सुर्जन। यह मनुष्य के दुष्कर्मों का फल ही है, जो उसे मृत्यु के द्वार पर लाकर खड़ा कर देता है।” सुलोचन ने उसे समझाने का प्रयत्न किया।

सुर्जन ने साँस भरते हुए सुलोचन की प्रशंसा की, “वैसे आपका बुद्धि कौशल प्रशंसनीय है।”

“हाँ, वो तो है; चलो देखते हैं, इस वाहन में है क्या।” सुलोचन (जामवंत) वाहन की ओर बढ़े।

“हाँ, चलिए।”

सुर्जन और सुलोचन वाहन के निकट आये और बवसों को ढका वस्त्र हटाया।

“इतना सारा स्वर्ण...!” सुर्जन स्तब्ध रह गया।

“जाहिर सी बात है, कीमती वस्तु ही होनी थी, इसीलिए तो उसने अपने दो साथियों की हत्या की।” सुलोचन मुस्कुराये।

“तो अब हमें क्या करना चाहिए?” सुर्जन ने प्रश्न किया।

“कोई और ऐसा है, जो इस स्वर्ण के योग्य हो? मुझे तो ऐसा नहीं लगता; तो फिर यह स्वर्ण अब हमारा है।”

“क... क्या आपको विश्वास है कि हम जो कर रहे हैं वो उचित है, रीछराज?” सुर्जन ने प्रश्न किया।

“सरदार सुलोचन; रीछराज नहीं... तुम्हें स्मरण तो है न, कि मैं तुम्हारा सरदार हूँ और तुम मेरे अंगरक्षक? हमें व्यापार के लिए कुछ वस्तुओं की आवश्यकता होगी, इसलिए यह स्वर्ण हमारे लिए सहायक सिद्ध होगा।” सुलोचन मुस्कुराये।

“ह... हाँ, क्षमा चाहता हूँ, जैसी आपकी इच्छा।” सुर्जन मुस्कुराया।

“तो फिर चलो, हम व्यापारी थे और इसे सिद्ध करने के लिए हमारे पास पर्याप्त धन भी है।” सुलोचन ने चलते हुए कहा।

“अवश्य सरदार।” सुर्जन ने सहमति जताई।

सुलोचन मुस्कुराये, “धीरे-धीरे सीख रहे हो, चलते चलो।”

3. त्रिगर्ता नरेश उपनंद

“किंतु हम जायेंगे कहाँ?” सुर्जन ने प्रश्न किया।

“देखते हैं, निकट में कोई न कोई नगर या ग्राम तो होगा ही।” सुलोचन ने कहा।

‘अवश्या’

सुर्जन और सुलोचन रूपी जामवंत, किसी उपयुक्त स्थान की खोज में निकल पड़े। शीघ्र ही उन्हें एक विशाल द्वार दिखाई दिया। लगभग तीन सौ गज की दूरी से वह द्वार स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

“किसी राज्य का द्वार प्रतीत होता है।” सुर्जन ने अनुमान लगाया।

“हम्म... तुमने उचित कहा, ऐसा ही प्रतीत होता है; किंतु स्मरण रखना, सुर्जन, तुम एक साधारण अंगरक्षक हो, उसी प्रकार व्यवहार करना। चाहे परिस्थिति कैसी भी हो, तुम्हारा सत्य बाहर नहीं आना चाहिए।” सुलोचन ने उसे स्पष्ट निर्देश दिए।

“चिंतित मत होइए, मैं ध्यान रखूँगा।” सुर्जन ने सहमति जताई।

किंतु इससे पूर्व वह आगे बढ़ते, एक तलवार सुलोचन की पीठ पर आयी। सुर्जन के साथ भी यही हुआ।

“जीवित रहना चाहते हो तो चले जाओ; तुम्हारा यह वाहन अब हमारा हुआ।” पीछे से एक चेतावनी भरा स्वर सुनाई दिया।

सुलोचन ने पीछे मुड़ने का प्रयत्न किया।

“जीवन चाहते हो तो हिलने का प्रयत्न मत करो।” एक और चेतावनी सुनाई दी।

सुर्जन से यह सहन नहीं हुआ। उसने अपने पीछे तनी तलवार पकड़ी और पलटकर अपने पीछे खड़े व्यक्ति का कंठ पकड़ लिया। उसने उस व्यक्ति को उठाया और उस दूसरे व्यक्ति की ओर फेंक दिया, जो सुलोचन की पीठ पर तलवार ताने खड़ा था।

सुलोचन पीछे मुड़कर मुस्कुराये, “मैं एक व्यापारी हूँ और यह मेरा अंगरक्षक; हम आपके लिए क्या कर सकते हैं? क्या आपको किसी सहायता की आवश्यकता है?”

उनके समक्ष लगभग सात लुटेरे खड़े थे। वह सभी उन दोनों को क्रोध से घूर रहे थे।

“हाँ, मैं समझ गया; इसका अर्थ है कि सहायता की आवश्यकता हमें है।” सुलोचन ने सुर्जन की ओर देखा।

वो सुर्जन के निकट आकर बोले, “एक साधारण योद्धा की भाँति ही रहना।”

“इनकी संख्या केवल सात है; आपको नहीं लगता कि साधारण योद्धा इन्हें पराजित कर सकता है?” सुर्जन ने सुलोचन से प्रश्न किया।

‘नहीं’ सुलोचन ने स्पष्ट रूप से कहा।

“कम से कम वो अपना रक्षण तो कर ही सकता है?” सुर्जन ने एक बार फिर प्रश्न किया।

“हाँ, कदाचित्” सुलोचन ने सुर्जन की ओर देखा।

किंतु प्रहार करने के स्थान पर उनके मध्य में खड़े एक लुटेरे ने अपने मुख से एक गुप्त ध्वनि निकालनी आरंभ की। फलस्वरूप घने वन से निकलकर लगभग पचास लुटेरे वहाँ आ पहुँचे।

सुलोचन ने साँस भरते हुए कहा, “शत्रुओं की संख्या बढ़ गयी है और एक साधारण योद्धा को सहायता की आवश्यकता होगी।” उन्होंने मुड़कर नगर के मुख्य द्वार की ओर देखा।

“किंतु हमें सहायता प्राप्त होगी कहाँ से?” सुर्जन ने प्रश्न किया।

“कुछ अधिक नहीं, बस तीन सौ गज की दूरी पर हैं।” कहकर सुलोचन चीखे, “कोई है! सहायता करो हमारी।”

मुख्य द्वार पर खड़े रक्षकों ने उनकी ओर देखा, “लुटेरों का एक और काण्ड।” उनमें से एक ने कहा।

“चलो, हमें उन्हें रोकना होगा।” दूसरे रक्षक ने आगे बढ़ते हुए कहा।

लगभग दस रक्षक, हाथों में भाले लिए सुलोचन और सुर्जन की ओर दौड़े।

“केवल दस!” सुलोचन ने झट्लाते हुए साँस भरी।

“पर्याप्त है।” सुर्जन पीछे मुड़ा और अपनी ओर आते एक लुटेरे के मुख पर मुष्टि से प्रहार किया। वह लुटेरा रक्त उगलता हुआ भूमि पर गिर पड़ा। सुर्जन ने वाहन पकड़ा और मुख्य द्वार से आते हुए रक्षकों की ओर दौड़ा। सुलोचन भी उसके पीछे दौड़े।

वो पचास लुटेरे और दस द्वार रक्षक वन और मुख्य द्वार के मध्य में एक साथ पहुँचे। उनके बीच की दूरी अब लगभग पचास गज ही रह गयी थी। सुर्जन और सुलोचन अब रक्षकों के साथ थे।

“केवल दस हैं ये, टूट पड़ो!” एक लुटेरे ने हुंकार भरी। कदाचित् वह उन लुटेरों का सरदार था। सभी लुटेरों का मुख भूरे वस्त्रों से ढका हुआ था।

रक्षक शत्रु की संख्या देख हिचकिचाने लगे। उनमें से एक ने निर्देश दिया, “सहायता का संकेत भेजो, हमें नगर की सेना की आवश्यकता है।”

उसके निर्देश पर एक रक्षक ने भाले पर वस्त्र बाँधकर उसे जलाया और आकाश की ओर फेंका।

“किंतु इनकी संख्या बहुत अधिक है।” उनमें से एक रक्षक के मन में भय का संचार होने लगा था।

“हमें इनका सामना करना ही होगा, क्योंकि हम रक्षक हैं और यही हमारा उत्तरदायित्व है।” उन रक्षकों के निर्देशक ने भाले और ढाल पर अपनी पकड़ मजबूत की और आक्रमण की मंशा से खड़ा हो गया।

वो लुटेरे निकट आ रहे थे।

सुलोचन, सुर्जन के निकट आये, “सुर्जन, तुम्हें इनमें से किसी का वध नहीं करना, इन्हें केवल परास्त करो, यह मेरा आदेश है।”

सुर्जन ने अपना मस्तक हिलाकर सहमति जताई।

लुटेरे निकट आते जा रहे थे। सुर्जन उन रक्षकों के आगे आकर नेतृत्व की अवस्था में खड़ा हो गया। द्वार-रक्षक यह देख स्तब्ध रह गए।

सुलोचन ने रक्षकों को विश्वास दिलाया, “विश्वास रखिये, उनमें से बीस को यह अकेला पराजित कर सकता है; बाकी के लिए आपकी सहायता की आवश्यकता होगी।”

रक्षकों के पास विचार करने का अधिक समय नहीं था। उन्होंने एक दूसरे की ओर देख सहमति में सर हिलाया।

“मुझे बस एक ढाल चाहिए।” सुर्जन ने रक्षकों से ढाल की माँग की।

उन रक्षकों के निर्देशक के पास विचार करने को समय नहीं था। उसने अपनी ढाल उसे दे दी।
‘आक्रमण...!’ उसके निर्देश पर दस रक्षक सुर्जन के साथ दौड़ पड़े।

ग्यारह योद्धाओं और पचास लुटेरों के मध्य संघर्ष आरंभ हो गया। सुर्जन ने ढाल उठाई और उसे चक्र की भाँति घुमाकर फेंका। वह ढाल, प्रत्यावर्ती बाण की भाँति सुर्जन के हाथों में वापस लौट आया। उस ढाल ने छह लुटेरों के मस्तक पर चोट कर उनकी चेतना छीन ली थी।

सुर्जन एक बार फिर शत्रु की ओर दौड़ा। वह लुटेरों को सबसे अधिक क्षति पहुँचा रहा था। सभी लुटेरों के मुख भूरे वस्त्रों से ढके हुए थे। कुछ ही समय में लगभग पचीस लुटेरे अपनी चेतना खो चुके थे।

अकस्मात् ही एक लुटेरे ने सुर्जन की पीठ पर प्रहार किया। क्रोधित सुर्जन पीछे मुड़ा। उस लुटेरे को उठाया और भूमि पर गिरा दिया। उस लुटेरे के मुख को ढका वस्त्र हट गया। उस मुखवस्त्र के पीछे का मुख देख सुर्जन मंत्रमुग्ध सा हो गया। वो एक सुंदर युवा कन्या थी।

वो युवती उठी। उसने तलवार चलायी। सुर्जन ने उसका प्रहार अपने हाथ पर रोका और उसकी तलवार मजबूती से पकड़ ली, “शांत हो जाओ कन्या, मैं स्त्री पर वार नहीं करता।”

“ओह, तो त्रिगर्ता के योद्धा का कहना है कि वो स्त्री पर वार नहीं करता, बड़े ही आश्चर्य की बात है।” सुर्जन और उस कन्या के नेत्र एक दूसरे को घूरने लगे।

तभी त्रिगर्ता की सेना अपने सेनापति के नेतृत्व में सहायता के लिए आ पहुँची। वह निकट आते जा रहे थे।

सुर्जन और वह युवती अभी भी एक दूसरे की ओर देख रहे थे।

“पीछे हटो!” डकैतों के लिए आदेश सुनाई दिया।

वो युवती अपनी चेतना में लौट आयी। एक डकैत आकर उसे खींचने लगा, “पीछे हटिये ‘दुर्धरा’, हम संकट में हैं।”

“नहीं, मेरे पिता यहीं हैं, मैं नहीं जाऊँगी।” उस युवती ने स्पष्ट रूप से कहा।

“हमें पीछे हटना ही होगा; हम आपके पिता की रक्षा के लिए अवश्य लौटेंगे।” वह लुटेरा उस कन्या को अपने साथ ले गया। सुर्जन ने उसे रोकने का तनिक भी प्रयत्न नहीं किया।

वो सभी घने वन में अटश्य होने ही वाले थे, किंतु उससे कुछ क्षण पूर्व, दुर्धरा ने पलटकर सुर्जन की ओर देखा। उसकी दृष्टि अभी भी उसी पर थी।

वह मुड़कर घने वनों में खो गयी। सुर्जन अब भी उसी दिशा में देख रहा था।

त्रिगर्ता के सेनापति सुर्जन के निकट आये, “तुमने उसे छोड़ क्यों दिया?”

सुर्जन अपनी चेतना में लौटा और सेनापति की ओर देखा, “मैं किसी स्त्री पर वार नहीं कर सकता।”

सेनापति यह सुनकर मौन रह गए।

लगभग पचीस लुटेरे भूमि पर मूर्छित पड़े थे।

“बंदी बना लो इन्हें।” सेनापति ने आदेश दिया।

सभी लुटेरों को शीघ्र ही बंदी बना लिया गया। इसके उपरांत सेनापति सुर्जन के निकट आये, “सहायता के लिए धन्यवाद! कृपया अपना परिचय दीजिये।”

“मेरा नाम सुलोचन है; मैं एक व्यापारी हूँ और यह मेरा अंगरक्षक है।” सुलोचन ने हस्तक्षेप किया।

“मैंने प्रश्न आपसे नहीं किया।” सेनापति ने सुलोचन की ओर देखा।

सुर्जन और सुलोचन एक-दूसरे की ओर देखने लगे।

“ओह! क्षमा कीजिये। मैंने आपका अपमान करने की मंशा से यह नहीं कहा।” सेनापति ने मुस्कुराकर कहा। सुलोचन भी मुस्कुराये।

अगले ही क्षण सेनापति ने सुर्जन की ओर देखा, “वैसे आपका यह अंगरक्षक बहुत ही उत्तम श्रेणी का योद्धा प्रतीत होता है... नाम क्या है तुम्हारा?”

‘सुर्जना’ उसने अपना परिचय दिया।

“तो सुर्जन, मेरी इच्छा है कि तुम हमारे महामहिम से भेंट करो। वो त्रिगर्ता नरेश हैं, तुम्हारी वीरता को वो अवश्य पुरस्कृत करेंगे।” सेनापति ने कहा।

सुर्जन ने सुलोचन की ओर देखा। सुलोचन ने अपने नेत्रों से उसे सहमति का संकेत दिया।

‘अवश्य’ सुर्जन ने सेनापति से कहा।

“उचित है, आप दोनों मेरे साथ आइए।” सेनापति उन दोनों को अपने साथ ले गए।

* * *

शीघ्र ही उन सभी ने त्रिगर्ता का मुख्य द्वार पार किया। सुलोचन और सुर्जन उस नगर को निहारने लगे।

“यह नगर तो बड़ा ही सुंदर प्रतीत होता है, है न!” सुलोचन ने सुर्जन से प्रश्न किया।

“हाँ और यहाँ के लोग भी।” सुर्जन ने दुर्धरा के मुख को स्मरण करते हुए कहा।

किंतु जब वो नगर के भीतरी भाग में पहुँचे, तो त्रिगर्ता के सैनिकों का अपने लोगों के प्रति व्यवहार देख दंग रह गए। कुछ मजदूर एक भारी-भरकम वाहन को रस्सी से खींच रहे थे। उन पर पशुओं की भाँति लगातार कोड़े बरसाए जा रहे थे। उनमें से एक मजदूर रस्सी छोड़कर भूमि पर गिर पड़ा। उस मजदूर को क्रूरता से घसीटकर दूर फेंक दिया गया।

सुलोचन(जामवंत) की मुट्ठियाँ क्रोध से भिंच गयीं, किंतु उन्होंने कोई कदम उठाना उचित नहीं समझा। उन्होंने सुर्जन की ओर देखा। सुर्जन ने भी सुलोचन की ओर देख सांकेतिक प्रश्न किया कि वो क्या करे। सुलोचन ने उसे शांत रहने का संकेत दिया।

वहीं सेनापति ने उन दोनों की ओर देखकर कहा, “मैं जानता हूँ, यह आश्चर्यजनक है, किंतु हम यह करने के लिए विवश हैं।”

“किंतु क्यों?” सुलोचन ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“केवल हमारे महाराज ‘उपनंद’ के कारण। जैसे ही उनके पिता ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी घोषित किया, वैसे ही उन्होंने अपने पिता की हत्या कर दी। राज्य के महामंत्री ने सत्तर योद्धाओं को लेकर विद्रोह कर दिया, किंतु महाराज उपनंद ने अकेले ही उन सत्तर योद्धाओं का वध कर दिया। वो बहुत शक्तिशाली हैं, उनके समक्ष खड़े होने का सामर्थ्य किसी में नहीं है, वो अकेले ही एक साथ दस गजों को पकड़कर गिरा सकते हैं, वो बहुत निर्दय हैं और अपनी प्रजा से उसी निर्दयता से व्यवहार करता है। हम उनका आदेश मानने को विवश हैं।” सेनापति ने विस्तृत किया।

“ठीक है, हम समझ सकते हैं।” सुलोचन आगे बढ़ते रहे।

वह सभी बढ़ते रहे। कुछ समय उपरांत सुलोचन के मन में एक प्रश्न उमड़ा, “मैं आपसे एक प्रश्न पूछ सकता हूँ?”

‘कहियो’ सेनापति ने कहा।

“हम उन लुटेरों के विषय में कुछ जानना चाहते हैं” सुर्जन ने प्रश्न किया।

“वो गंधर्व हैं, जो कि पहले हमारे सहयोगी भी थे। पहले वो गंधर्व हमारी सेना का एक प्रमुख भाग हुआ करते थे, किन्तु पूर्व नरेश महाराज ‘सत्व’ की मृत्यु के उपरांत राजा उपनंद ने उन गंधर्वों पर आक्रमण कर उन्हें पराजित कर दिया। उसने गंधर्व ग्राम से जीवन के संसाधन छीन लिए और उनके गाँवों को जला दिया, इसलिये वो गंधर्व जीवित रहने के लिए लूटपाट पर उतर आये हैं। वो इस वन से भलीभाँति परिचित हैं, इसलिए वो बड़ी ही सरलता से इसमें खो जाते हैं, किंतु आज आप लोगों के कारण हमने पचीस गंधर्वों को बंदी बना लिया, आपका साहस अतुल्य है।” सेनापति ने विस्तृत किया।

“आपको ऐसा क्यों लगता है, कि वो निर्दयी राजा उपनंद मुझे पुरस्कृत करेगा?” सुर्जन ने प्रश्न किया।

“उनमें कुछ अच्छे गुण भी हैं। महाराज उपनंद अपने वचन के पक्के हैं। वो क्रूर अवश्य हैं, किंतु अपने वचन से पीछे नहीं हटते। गंधर्वों से उनकी घृणा का कारण उनका निजी है, किंतु वो वीर योद्धाओं का सम्मान करते हैं।” सेनापति ने उत्तर दिया।

“उचित है, हमें भी शीघ्र ही ज्ञात हो जायेगा।” सुर्जन ने कहा।

शीघ्र वह सभी एक अखाड़े में पहुँचे। उस अखाड़े में एक बलिष्ठ योद्धा लगभग दस पहलवानों से युद्धाभ्यास में व्यस्त था।

“उस योद्धा की ओर देखिये, वही हैं हमारे राजा उपनंद। यह उनके अभ्यास का समय है।” सेनापति ने उस बलिष्ठ योद्धा की ओर संकेत कर कहा।

वो सभी दस योद्धा भालों और ढाल से सुसज्जित थे। उपनंद भी उनसे युद्ध को तत्पर था। उसके हाथों में एक भी शस्त्र नहीं था।

सुर्जन ने उसकी ओर ध्यान से देखा, “यह अभ्यास बहुत ही मनोरंजक होगा।”

दसों योद्धा उसकी ओर दौड़े। उपनंद भी एक निश्चित अवस्था में आकर उनकी ओर दौड़ा। किंतु उन पर प्रहार करने के स्थान पर उसने हवा में एक लंबी छलाँग लगायी और उन दसों योद्धाओं को पार कर गया। क्षणभर में ही वो पलटा और और उनमें से दो योद्धाओं की पीठ पर भयंकर प्रहार कर उनकी ढालें छीन ली। वो दो योद्धा भूमि पर गिर पड़े। शेष बचे आठ योद्धा भाला लिए उपनंद की ओर दौड़े।

इस बार उपनंद ने अद्भुत गति और चपलता का प्रदर्शन किया और अपनी ओर आते हुए सभी भालों को दो ढालों पर सफलतापूर्वक रोका और उन सबको पीछे धकेल दिया।

‘अद्भुत!’ सुर्जन मुस्कराया।

वो आठ योद्धा एक बार फिर भूमि से उठे और उपनंद की ओर दौड़े। उपनंद ने इस बार दोनों ढालों को चक्र के समान घुमाकर फेंका। वो दोनों ढाल प्रत्यावर्ती बाण की भाँति उन सभी आठ योद्धाओं के मस्तक से टकराकर उपनंद के हाथों में वापस लौट आयी। वो सभी आठ योद्धा भूमि पर गिरकर मूर्छित हो गए।

“अद्भुत, इस दाँव का प्रयोग तो मैं भी केवल अपने दायें हाथ से ही कर सकता हूँ।” सुर्जन स्तब्ध रह गया।

“यह सभी दस योद्धा त्रिगर्ता की सेना के श्रेष्ठ योद्धाओं में से थे।” सेनापति ने गर्व से कहा।

वहीं उपनंद ने दहाड़ लगायी, “मल्ल योद्धाओं, सज्ज रहो!”

उस आदेश को सुनकर, चार बलिष्ठ और हष्ट पुष्ट शरीर वाले मल्ल उपनंद की ओर दौड़े। उनमें से एक ने उपनंद का दायाँ हाथ पकड़ा और दूसरे ने बायाँ, तीसरे ने पीछे से उसकी गर्दन पकड़ी और चौथा गदा लिए उसके सामने खड़ा हो गया।

“सज्ज हो?” उपनंद ने चौथे मल्ल से प्रश्न किया।

“जी महाराज।” चौथे मल्ल ने उत्तर दिया।

“तो फिर मेरे संकेत पर आरंभ करना।” उपनंद मुस्कुराया।

“यह कैसा दाँव है?” सुर्जन ने सेनापति से प्रश्न किया।

“शून्य समयावधि दाँव। इससे पूर्व कि चौथा मल्ल हमारे महाराज तक पहुँचे, उन्हें शेष तीनों योद्धाओं को भूमि पर गिराना है; बस देखते जाइये।” सेनापति ने कहा।

चौथा मल्ल, उपनंद की ओर दौड़ा। कुछ ही क्षणों में उपनंद को पकड़े हुए शेष तीन योद्धा भूमि पर गिर पड़े और जैसे ही चौथा मल्ल उपनंद पर प्रहार करने आया। उसने उसकी गदा पकड़ी और अपने दाये पंजे से उसकी छाती पर भीषण प्रहार किया। वो चौथा मल्ल दस गज दूर जाकर गिरा और पीड़ा से चीखने लगा।

“अद्भुत! किंतु यह हुआ कैसे?” सुर्जन स्तब्ध रह गया।

“उनके इस दाँव के विषय में तो मैं भी ठीक तरह से नहीं जानता; केवल उन्हीं को यह रहस्य ज्ञात है, कदाचित् वो उन तीनों योद्धाओं की कुछ महत्वपूर्ण नसें दबा देते हैं।” सेनापति ने उत्तर दिया।

“इन चंद क्षणों में? उनके हाथ भी उस समय मुक्त नहीं थे, तब भी?” सुर्जन ने आश्चर्यपूर्वक प्रश्न किया।

“हाँ, कुछ ऐसा ही है। यह हमारे महाराज की एक विलक्षण प्रतिभा है और मुझे नहीं लगता जो तीन योद्धा भूमि पर गिरे पड़े हैं, वो इस स्थिति में हैं जो यह बता सकें कि उनके शरीर के किस भाग पर चोट लगी है, क्योंकि बिजली की गति से किया उनका यह अकस्मात् प्रहार उनके पूरे शरीर को पीड़ा देता है और चेतना लौटने के उपरांत उन्हें कुछ स्मरण नहीं रहता कि उन्हें कहाँ चोट पहुँची थी।” सेनापति ने विस्तृत वर्णन किया।

“वाह! आज तक ऐसे दाँव नहीं देखे।” सुर्जन ने प्रशंसनीय स्वर में कहा।

शीघ्र ही सूर्य अस्त हुआ और अभ्यास का समय भी समाप्त हुआ। उपनंद ने मुड़कर अपने सेनापति की ओर देखा।

“मेरा अनुसरण करो।” सेनापति अपने घुटनों के बल झुक गया। सुर्जन और सुलोचन भी उसका अनुसरण करते हुए उपनंद के समक्ष घुटनों के बल झुक गए।

उपनंद उनके निकट आया, “खड़े हो जाओ।”

“यह दोनों कौन हैं?” उपनंद ने अपने सेनापति से प्रश्न किया।

“आपने मुझे एक सामर्थ्यवान योद्धा की खोज करने का आदेश दिया था महाराज; यह एक व्यापारी है और यह उसका अंगरक्षक... इन्हीं के कारण हम आज पच्चीस गंधर्व योद्धाओं को बंदी बनाने में सफल हुए हैं।” सेनापति ने विस्तार से बताया।

उपनंद ने सुर्जन की ओर ध्यान से देखा, “अद्भुत! किससे शिक्षा प्राप्त की है तुमने?”

“एकचक्रनगरी के कुलगुरु महाऋषि वसुधर से महाराज।” सुर्जन ने उत्तर दिया।

“हम्म... इन्हें अतिथिगृह लेकर जाओ सुवर्मा (सेनापति का नाम)। इनसे मैं कल प्रातः भेंट करूँगा।” उपनंद, अखाड़े से प्रस्थान कर गया।

“अवश्य महाराज।” सुवर्मा ने अपना सर झुकाया।

इसके उपरान्त वो सुर्जन और सुलोचन की ओर मुड़ा, “चलिए, मैं आप लोगों को आपका कक्ष दिखा देता हूँ।”

संध्या का समय था। सुर्जन और सुलोचन भोजन कर रहे थे। उस कक्ष में और कोई नहीं था।

“आपको क्या लगता है, उसने आज ही हमसे भेंट क्यों नहीं की?” सुर्जन ने सुलोचन से प्रश्न किया।

“मैं भी यह नहीं सोच पा रहा।” सुलोचन अनुमान लगाने का प्रयत्न कर रहे थे।

“तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर मेरे पास है।” तभी सुवर्मा उस कक्ष में पधारे।

“सेनापति, आसन ग्रहण करें।” सुलोचन ने उनका स्वागत किया।

‘अवश्य।’ सुवर्मा वहाँ एक आसन पर बैठ गए।

“हम आपके उत्तर की प्रतीक्षा में हैं।” सुर्जन ने जिज्ञासा भरी दृष्टि से सुवर्मा की ओर देखा।

“सत्य तो यह है कि मेरी आयु अधिक हो चली है और हमारे महाराज उपनंद एक नए सेनापति की खोज में हैं; इसलिए उन्होंने आदेश दिया था कि मैं किसी सामर्थ्यवान योद्धा की खोज करूँ, जो मेरा स्थान ले सके और मेरे विचार से आपका अंगरक्षक इसके लिए सबसे अधिक योग्य प्रतीत होता है। कल प्रातः होने वाली प्रतियोगिता में आपके इस अंगरक्षक को अपना सामर्थ्य सिद्ध करना होगा, तभी महाराज उपनंद आपसे भेंट करेंगे।” सुवर्मा ने विस्तार से बताया।

“किंतु यह तो मेरा अंगरक्षक है, मैं इसे महाराज को नहीं सौंप सकता।” सुलोचन ने थोड़े क्रोधित स्वर में कहा।

सुवर्मा क्रोध में अपने आसन से उठे, “ऐसा दुस्साहस पुनः न करना पथिक; तुम इस समय त्रिगर्ता में हो, तुम्हें भान भी नहीं कि हमारे महाराज उपनंद की अवज्ञा करने पर तुम्हारी क्या दशा की जाएगी। तुम एक व्यापारी हो, इसलिए तुम्हें तुम्हारी मुँहमाँगी रकम मिल जायेगी।” सुवर्मा, क्रोध में कक्ष से बाहर चले गये।

सुर्जन को क्रोध आ रहा था, “यदि आप कहें, तो मैं इसका मस्तक उखाड़कर फेंक दूँ रीछराज।”

“नहीं सुर्जन, धैर्य रखना सीखो और मुझे रीछराज कहकर संबोधित न करो, दीवारों के भी कान होते हैं।” सुलोचन ने उसे रोका।

“क्षमा चाहता हूँ, किंतु आप चाहते क्या हैं? क्या आप मुझे उस निर्दय उपनंद का दास बनते देखना चाहते हैं?” सुर्जन ने अधीर होकर प्रश्न किया।

“तुम बहुत शीघ्र अधीर हो जाते हो सुर्जन; धैर्य रखना सीखो... मैं इस समय किसी और विषय पर विचार कर रहा हूँ।” सुलोचन ने सुर्जन को घूरते हुए कहा।

“क्षमा चाहता हूँ, किंतु आप किस विषय पर विचार कर रहे हैं?” सुर्जन ने प्रश्न किया।

“कदाचित् हमने उचित नहीं किया सुर्जन; मुझे लगता है कि गंधर्व निरपराध हैं, क्योंकि उनके पास जीवित रहने का और कोई मार्ग नहीं है, इसलिए उन्होंने डकैती का मार्ग चुना। कदाचित् वास्तविक दोषी उपनंद हैं।” सुलोचन ने अनुमान लगाने का प्रयत्न किया।

“तो अब हमें क्या करना चाहिए?” सुर्जन ने सुझाव माँगा।

“हमें यहाँ से छुपकर पलायन करना होगा। कदाचित् तुम्हारे बल परीक्षण के लिए कल उपनंद तुम्हें चुनौती देगा; किंतु हमारे पास उसके लिए व्यर्थ का समय नहीं है। परिस्थितियाँ भी यही कहती हैं कि अब हमें यहाँ और नहीं रुकना चाहिए। पत्चीस गंधर्व हमारे कारण बंदी बने हुए हैं। पहले हमें यह ज्ञात करना होगा कि उनके साथ क्या होने वाला है... यदि वो निरपराध हैं, तो उन्हें मुक्त कराना होगा।” सुलोचन ने कहा।

“क्या आपके पास कोई योजना है?” सुर्जन ने प्रश्न किया।

“हाँ, एक योजना तो है, किंतु इस समय केवल मेरे कार्य करने का समय है, तुम यहीं रुको।” यह कहकर सुलोचन (जामवंत) ने सुवर्मा का रूप ले लिया।

“मैं समझ नहीं पा रहा, आप करना क्या चाहते हैं?” सुर्जन ने आश्चर्यपूर्वक प्रश्न किया।

“चिंतित मत हो सुर्जन, बस देखते जाओ; अब मुझे उपनंद से भेंट के लिए जाना है, तुम यहीं रुको।” जामवंत (सुवर्मा) उस कक्ष से बाहर चले गए।

अब जामवंत सुवर्मा के रूप में सबके सामने महल में टहल रहे थे, त्रिगर्ता के महल के रक्षक उन्हें सुवर्मा ही समझ रहे थे।

शीघ्र ही जामवंत ने उपनंद का कक्ष खोजकर उस पर दस्तक दी, “भीतर आने की आज्ञा है महाराज?”

एक रक्षक ने द्वार खोला। उपनंद अपने कक्ष के एक आसन पर बैठा था।

सुवर्मा को देख उसे थोड़ा आश्चर्य हुआ, “इस रात्रि के समय यहाँ कैसे आना हुआ सुवर्मा?”

“यदि आपके विश्राम में खलल डाला हो, तो क्षमा चाहता हूँ महाराज।” जामवंत (सुवर्मा) ने कहा।

“उसकी आवश्यकता नहीं है सुवर्मा; कोई विशेष बात?” उपनंद ने प्रश्न किया और रक्षक को बाहर जाने का संकेत दिया।

“कुछ बहुत विशेष नहीं महाराज; मैं तो बस उन गंधर्वों के विषय में जानने आया था, हमें उनके साथ क्या करना चाहिये?”

उपनंद अपने आसन से उठा और सुवर्मा रूपी जामवंत की ओर देखा, “तुम्हें क्या लगता है, हमें उनके साथ क्या करना चाहिए?”

“व...वो तो आप पर ही निर्भर करता है महाराज।” जामवंत ने हिचकिचाते हुए कहा।

उपनंद ने मुड़कर एक मंदिर के प्याले की ओर देखा, “मुझे आज भी स्मरण है, किस प्रकार गंधर्वों की राजकुमारी दुर्धरा ने मुझे अपमानित किया था। तुम्हें तो ज्ञात ही होगा कि जिन पत्चीस गंधर्वों को हमने बंदी बनाया है, उनमें गंधर्वों का सरदार ‘उग्रसेन’ भी है और मैं इस अवसर का पूरा लाभ उठाऊँगा।”

“क्षमा कीजिये महाराज, मैं आपकी बात समझा नहीं।” जामवंत ने संशयपूर्वक कहा।

“नगाड़ों के स्वर से पूरे वन में घोषणा करवाओ। जानता हूँ, गंधर्वों को खोजना कठिन कार्य है, किंतु नगाड़ों का स्वर इतना तीव्र होना चाहिए, कि यह घोषणा उन तक पहुँच ही जाय।” उपनंद के मुख पर क्रूरता भरी मुस्कान थी।

“कैसी घोषणा महाराज?”

“यही कि उन गंधर्वों के पास सात दिवस का समय है; या तो राजकुमारी दुर्धरा मेरे सामने आकर समर्पण करे, या फिर उन पत्चीस गंधर्वों की निर्ममता से हत्या कर दी जाएगी; नगर के

चौराहे पर उन्हें सूली पर लटका दिया जायेगा। मुझे किसी भी मूल्य पर दुर्धरा से अपना प्रतिशोध चाहिए। शीघ्र से शीघ्र घोषणा करवाओ।” उपनंद ने मदिरा का पात्र उठाकर पी लिया।

जामवंत ने अपने क्रोध को किसी प्रकार नियंत्रित किया।

“अवश्य, महाराज। मैं घोषणा करवाता हूँ।” जामवंत (सुवर्मा) कक्ष से बाहर चले गए।

जामवंत अपने कक्ष की ओर बढ़े और उसमें क्रोध में प्रवेश कर गए। सुर्जन उनकी प्रतीक्षा में था। जामवंत ने एक बार फिर सुलोचन का रूप धर लिया।

“क्या हुआ सरदार, आप इतने विचलित क्यों दिखाई पड़ रहे हैं?” सुर्जन ने प्रश्न किया।

“मेरा अनुमान उचित था। हमसे एक बहुत बड़ा अपराध हो गया है।” सुलोचन ने उत्तर दिया।

“आपके कहने का अर्थ क्या है?” सुर्जन ने आश्चर्यपूर्वक प्रश्न किया।

“हमें इसी समय वन की ओर प्रस्थान करना होगा; उन पच्चीस गंधर्वों को बचाने के लिए हमारे पास केवल सात दिवस का समय है।”

सुर्जन को अभी भी उनकी बात समझ नहीं आ रही थी, “हमें उन गंधर्वों को बचाना है? किंतु हम ये करेंगे कैसे? एक व्यापारी होने के कारण आप तो युद्ध करेंगे नहीं और मैं भी एक साधारण सा योद्धा ही हूँ और वैसे भी उपनंद ने मुझे कल प्रातः बुलाया है।”

“हमारे पास उसके लिए समय नहीं है सुर्जन; हमें शीघ्र यहाँ से वन की ओर पलायन करना होगा... वन में हमें उन गंधर्वों को खोजकर उन्हें सत्य से अवगत कराना होगा, और उन्हें पूरी स्थिति समझानी होगी।” सुलोचन ने उसे समझाने का प्रयत्न किया।

“ठीक है, तो फिर पलायन की योजना क्या है?” सुर्जन ने प्रश्न किया।

“तुम्हारे लिए एक कम्बल की आवश्यकता होगी; मैं सुवर्मा का रूप ले लूँगा।” सुलोचन (जामवंत) ने योजना समझाई।

“ठीक है, कम्बल तो इस कक्ष में ही पड़ा है।” सुर्जन ने कक्ष में रखे कम्बल की ओर दृष्टि घुमायी।

वहीं जामवंत ने एक बार फिर सुवर्मा का रूप धर लिया।

“अब मेरे साथ आओ।” जामवंत और सुर्जन, कक्ष से बाहर चले गए। सुर्जन ने स्वयं को कम्बल से ढक रख था।

वो दोनों महल के मुख्य द्वार की ओर बिना किसी भय के बढ़ते चले गए। किसी में उन्हें रोकने का साहस नहीं था। शीघ्र ही वो महल के मुख्य द्वार से निकलकर नगर के मुख्य द्वार तक पहुँचे।

“सेनापति जी!” एक रक्षक ने उन्हें पीछे से आवाज लगाई।

नगर के मुख्य द्वार का वह रक्षक, जामवंत (सुवर्मा) की ओर बढ़ा, “प्रश्न करने के लिए क्षमा चाहता हूँ महामहिम, किंतु इस मध्यरात्रि में आप उस घने वन की ओर क्यों जा रहे हैं और आपके साथ यह कम्बल ओढ़े हुआ व्यक्ति कौन है?”

“चिंतित मत हो, हम एक गुप्त अभियान पर जा रहे हैं; मैं इस व्यक्ति का परिचय तुम्हें नहीं दे सकता, क्योंकि कुछ बातों का गुप्त रहना आवश्यक है।” जामवंत (सुवर्मा) ने स्पष्ट रूप से कहा।

“जैसा आप उचित समझें महामहिम; मैं आपसे और कुछ नहीं कह सकता।” वो रक्षक पीछे हट गया।

जामवंत और सुर्जन वन की ओर बढ़ चले और शीघ्र ही उस घने अंधकारमय वन में खो गये।

एक प्रहर बीता। त्रिगर्ता के वास्तविक सेनापति सुवर्मा, नगर के मुख्य-द्वार पर आये। रक्षक उन्हें देख स्तब्ध रह गए।

“सेनापति जी...।” एक रक्षक ने सुवर्मा की ओर आश्चर्य से देखा।

“क्या हुआ, तुम मुझे इस प्रकार क्यों देख रहे हो?” सुवर्मा को भी थोड़ा आश्चर्य हुआ।

“आपने इस मुख्य द्वार को एक प्रहर पहले ही पार किया था और वन की ओर गए थे और अब आप नगर के भीतर से आ रहे हैं, आश्चर्य है।” रक्षक ने आश्चर्य से कहा।

“क्या? तुम्हारा मस्तिष्क विकसित तो नहीं हो गया? एक प्रहर पूर्व मैं अपने कक्ष में विश्राम कर रहा था; मैं इस रात्रि के अंधकार में घने वन की ओर क्यों जाऊँगा।” सुवर्मा ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“नहीं महामहिम, मैं असत्य नहीं कह रहा; आप चाहें तो यहाँ खड़े दूसरे रक्षक से पूछ सकते हैं।” उस रक्षक ने कहा।

सुवर्मा दूसरे रक्षक की ओर मुड़ा।

“ये उचित कह रहा है महामहिम।” दूसरे रक्षक ने उसका समर्थन किया।

सुवर्मा स्तब्ध रह गये, ‘कुछ बहुत गलत हो रहा है, मुझे महाराज को सूचित करना होगा।’

सूर्य शीघ्र ही उदय हुआ। उपनंद अपने कक्ष से बाहर आया और प्रातः काल के पूजन के लिए जलाशय की ओर बढ़ा।

सुवर्मा जलाशय की ओर दौड़ा। राजा उपनंद अपने प्रातः काल के पूजन में व्यस्त था। अपने नेत्र बंद कर वो गहन ध्यान में लीन था। उसका आधा शरीर जल में था।

सुवर्मा ने विचार किया, ‘उनकी पूजा में व्यवधान उत्पन्न नहीं किया जा सकता, मुझे प्रतीक्षा करनी होगी... किंतु मेरा रूप धरने की शक्ति है इसके पास; कदाचित वो नए अतिथि, व्यापारी सुलोचन और उसका अंगरक्षक सुर्जन तो नहीं, मुझे पहले उनकी खोज करनी चाहिए।’

सुवर्मा, महल की ओर दौड़े और अतिथि-गृह में पहुँचकर देखा, वहाँ कोई न था।

“मेरा संदेह सत्य सिद्ध हुआ।” बिना समय नष्ट किये, सुवर्मा उस जलाशय की ओर दौड़े, जहाँ उपनंद पूजन के लिए खड़ा था।

शीघ्र ही अपने प्रातः काल का पूजन समाप्त कर उपनंद, जलाशय से बाहर आया। सुवर्मा उनके समक्ष खड़े थे।

“क्या हुआ सुवर्मा, तुम चिंतित दिखाई दे रहे हो।” उपनंद ने उनके मुख का भाव देख प्रश्न किया।

“हमारे साथ छल हुआ है महाराज।” सुवर्मा ने कहा।

“क्या कहना चाहते हो! किसने छला है हमें?” उपनंद ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“वो दो अतिथि, महाराज।” सुवर्मा ने कहा।

“विस्तार से बताओ।” उपनंद को क्रोध आ रहा था।

सुवर्मा ने सब कुछ विस्तार से बताया।

उपनंद का क्रोध बढ़ता जा रहा था, “तो यह बात स्पष्ट है, कि वो कोई साधारण व्यापारी और अंगरक्षक नहीं थे; उनमें से एक तुम्हारा रूप लेकर मेरे कक्ष में आया था और गंधर्वों के विषय में जानकारी इकट्ठी करने का प्रयत्न कर रहा था।”

“तो फिर हमें आने क्या करना होगा महाराज?” सुवर्मा, आदेश की प्रतीक्षा में थे।

“मेरी योजना बदलने नहीं वाली; मैं तुम्हें वही आदेश देता हूँ जो मैंने उस बहुरूपिये को दिया था। वन में घोषणा कर दो, पूरी गंधर्व प्रजाति को यह ज्ञात हो जाना चाहिए कि उनके पास केवल सात दिवस का समय शेष है, उनका सरदार और चौबीस और गंधर्व हमारे बंदी हैं। यदि उन्हें जीवित पाना चाहते हैं, तो राजकुमारी दुर्धरा को मेरे समक्ष समर्पण करना होगा।” उपनंद ने आदेश दिया।

“जो आज्ञा महाराज।” सुवर्मा वहाँ से प्रस्थान कर गये।

* * *

पाँच सौ नगाड़े और पंद्रह सौ सैनिक, घोषणा करने हेतु वन की ओर बढ़े। वहाँ जामवंत ने एक बार फिर सुलोचन का रूप लिया और सुर्जन के साथ वन में भ्रमण करने लगे।

“हम एक प्रहर से गंधर्वों की खोज कर रहे हैं; कहाँ और कैसे मिलेंगे हम उनसे?” सुर्जन ने प्रश्न उठाया।

“सुना है उनकी संख्या सहस्रों में है; इस वन में छुपना उनके लिए सरल कार्य नहीं होगा।” सुलोचन (जामवंत) ने उत्तर दिया।

अगले ही क्षण वो दोनों लगभग दस भालों से घिर गए।

सुलोचन ने मुस्कराकर सुर्जन की ओर देखा, “हमने उन्हें ढूँढ लिया।”

“कदाचित् हाँ...।” सुर्जन भी मुस्कराया।

“झुक जाओ...!” उनमें से एक भालाधारी उन पर चीखा।

सुलोचन और सुर्जन, अपने हाथ उठाकर घुटनों के बल झुक गए।

“बंदी बना लो इन्हें!” एक दूसरे भालाधारी ने कहा।

सुलोचन और सुर्जन, दोनों को ही मजबूत लोहे की बेड़ियों से बाँध दिया गया।

“इन्हें राजकुमारी के पास ले चलो।” एक और निर्देश सुनाई दिया।

सुर्जन और सुलोचन को एक गाँव में ले जाया गया, जो वन के बहुत ही भीतरी भाग में था। किसी के लिए भी वहाँ का मार्ग खोजना सरल नहीं था। वहाँ लाकर उन दोनों को एक वृक्ष से बाँध दिया गया।

“राजकुमारी, हमें वो अपराधी मिल गए।” वो सभी भालाधारी, घुटनों के बल झुक गए।

वन के उस भीतरी भाग के गाँव में सैकड़ों लोग सुर्जन और सुलोचन की ओर हेय दृष्टि से देख रहे थे।

एक युवती उनके समक्ष दृढ़ता से आ खड़ी हुई। वहाँ उपस्थित सभी जन उसके सम्मान में घुटनों के बल झुक गए।

सुर्जन, अपने सामने खड़ी युवती को देख स्तब्ध रह गया। यह वह युवती थी, जिसे उसने गंधर्वों से युद्ध करते समय देखा था।

“तो मेरा अनुमान उचित ही था, यही हैं गंधर्वा।” सुलोचन ने सुर्जन की ओर देखा।

“हाँ, यह देखकर तो मुझे भी प्रसन्नता हुई।” सुर्जन मुस्कराते हुए एकटक उस युवती की ओर देखे जा रहा था।

वह युवती उसके निकट आयी और क्रोध में प्रश्न किया, “तुम इस प्रकार मुझे देखकर मुस्करा क्यों रहे हो?”

“वो... बस यँ ही, कुछ विशेष बात नहीं है।” सुर्जन हिचकिचाने लगा।

अगले ही क्षण उस युवती की तलवार सुर्जन की गर्दन पर थी। “केवल तुम्हारे कारण आज पच्चीस गंधर्व योद्धा बंदी बने हैं।” वह युवती क्रोध से सुर्जन की ओर देख रही थी।

“आपका नाम क्या है?” सुर्जन ने उस युवती से पूरे साहस से प्रश्न किया।

“यह प्रश्न करने का साहस कैसे हुआ तुम्हारा?” उस युवती के नेत्रों में सुर्जन पर वार करने की मंशा स्पष्ट देखी जा सकती थी।

वहीं सुलोचन ने स्थिति को नियंत्रित करने का प्रयत्न किया, “एक क्षण रुक जाइये राजकुमारी; हम सत्य से अनभिज्ञ थे, इसलिए हम यहाँ आपकी सहायता के लिए आये हैं।”

उस युवती ने मुस्कुराकर छीटाकसी की, “तुम्हारे कहने का अर्थ है कि तुम दोनों यहाँ हमारी सहायता के लिए आये हो... एक साधारण व्यापारी हो तुम।”

“किंतु यह मेरा अंगरक्षक तो है।” सुलोचन ने सुर्जन की ओर गर्व से देखा।

“इसने कुछ गंधर्व योद्धाओं को पराजित क्या कर लिया; तुम तो...।” किंतु वह युवती अपने शब्द पूरे नहीं कर पायी।

एक गंधर्व ने उस युवती को पीछे से पुकारकर हस्तक्षेप किया, “राजकुमारी दुर्धरा, नगाड़ों के स्वर से एक संदेश आया है।”

“कैसा संदेश?” दुर्धरा ने उस गंधर्व से प्रश्न किया।

“यह संदेश सैकड़ों नगाड़ों से हम तक पहुँचाने का प्रयत्न किया जा रहा है।” उस गंधर्व ने कहा।

“मैंने पूछा, वो संदेश है क्या?” दुर्धरा ने क्रोधवश उस दूत गंधर्व की ओर देखा।

यह देख सुर्जन ने उनके बीच हस्तक्षेप किया, “यही, कि अपने बंदी बने योद्धाओं की रक्षा के लिए आपके पास केवल सात दिवस का समय शेष है।”

दुर्धरा सुर्जन की ओर मुड़कर चीखी, “तुम वहीं मौन खड़े रहो।”

इसके उपरांत वह गंधर्वों की ओर मुड़ी और पुकार लगायी, “सेनापति उपमन्यु!”

“आपके आदेश की प्रतीक्षा में हूँ राजकुमारी।” एक हष्ट-पुष्ट योद्धा दुर्धरा के समक्ष आ खड़ा हुआ।

“आप हम सबसे अधिक अनुभवी हैं सेनापति। हमें आपके सुझाव की आवश्यकता है, कैसे मुक्त करायें हम अपने पिता और शेष गंधर्व योद्धाओं को? आपकी राय क्या है?” दुर्धराने उपमन्यु से प्रश्न किया।

“इस समय यह लगभग असंभव है राजकुमारी। हमारी संख्या केवल दस सहस्र है, और महर्षि शंकराचार्य भी इस समय यहाँ उपस्थित नहीं हैं। हम उपनंद को युद्ध में परास्त नहीं कर सकते।” उपमन्यु ने असमर्थता जताई।

“हाँ, आपका कहना तो उचित है उपमन्यु; किंतु हमें कैसे भी करके अपने उन पच्चीस योद्धाओं की रक्षा करनी ही है।” दुर्धरा ने उपमन्यु की ओर देखकर कहा।

“यह लगभग असंभव है राजकुमारी। उपनंद के महल में घुसने के सात मार्ग हैं, किंतु उससे पूर्व हमें नगर का मुख्य द्वार पार करना होगा, जहाँ पर लगभग पचास रक्षक दिन-रात पहरा देते हैं; उनमें से कई ऊँची-ऊँची मचानों पर खड़े होते हैं ताकि वो दूर तक अपनी दृष्टि जमाये रख सकें। यदि उनमें से किसी भी रक्षक को तनिक सभी संकट का संकेत मिला, तो वो मुख्य घंटे को

बजा देंगे और मुख्य द्वार पर सहस्रों योद्धा आ खड़े होंगे। और तो और कारागार की ओर जाने वाले सातों मार्ग के हर मार्ग पर सैकड़ों योद्धा अपने शस्त्र लिए सज्ज खड़े होते हैं, इसलिए महल में प्रवेश करना कठिन है।” उपमन्यु ने विस्तार से बताया।

“क्या मैं कुछ कह सकता हूँ?” सुर्जन ने हस्तक्षेप करने का प्रयत्न किया।

क्रोधित दुर्धरा ने मुड़कर तलवार सुर्जन की गर्दन पर तानी और उस पर चीखी, “केवल तुम्हारे कारण हम इस परिस्थिति में हैं, इसलिए तुम तो अपना मुँह खोलने का साहस करो ही मत।”

“ठीक है, जैसी आपकी इच्छा।” सुर्जन ने हाथ उठाकर कहा।

दुर्धरा उपमन्यु की ओर मुड़ी।

वहीं सुलोचन ने सुर्जन से प्रश्न किया, “बड़े आश्चर्य की बात है सुर्जन। दुर्धरा के यह तीखे स्वर सुनकर भी तुम्हें क्रोध नहीं आ रहा, अद्भुत!”

सुर्जन, सुलोचन की ओर देख मुस्कुराया, “मुझे नहीं पता, किंतु उसके नेत्रों की झलक देख मुझे क्रोध आता ही नहीं। मैं तो बस उन नेत्रों को निहारना चाहता हूँ।”

“हम्म, वैसे ये मेरे मतलब की बात तो नहीं है।” सुलोचन ने मुस्कुराकर कहा।

वहीं दुर्धरा और उपमन्यु अभी तक विचार-विमर्श कर रहे थे।

“हमारे पास कोई मार्ग नहीं है राजकुमारी; यदि हम उन पच्चीस गंधर्वों की रक्षा को जायेंगे, तो सहस्रों और जीवन दाँव पर लग जायेंगे।” उपमन्यु ने समझाने का प्रयत्न किया।

“क्या हमारे पास एक भी मार्ग नहीं है, उनकी रक्षा करने का?” दुर्धर निराश होकर एक पत्थर पर बैठ गयी।

“हैं क्यों नहीं; एक क्या हमारे पास दो दो मार्ग हैं।” सुलोचन ने हस्तक्षेप किया।

दुर्धरा पत्थर से उठी और सुलोचन के निकट आयी, “ठीक है, मैं तुम्हारी बात भी सुनना चाहूँगी।”

“मुझे लगता है कि आपके लोगों ने आपको पूरी सूचना दी ही नहीं। मेरे कहने का अर्थ है कि उस घोषणा के विषय में नहीं बताया, कि उपनंद ने आपको सात दिवस का समय दिया क्यों है।” सुलोचन ने कहा।

सुलोचन इससे पहले आगे कुछ कहते, उपमन्यु ने तलवार खींच निकाली और सुलोचन पर तान दी, “अपना मुख बंद रखो; हम उपनंद की यह माँग कभी पूरी नहीं करेंगे।”

“रुकिए!” दुर्धरा ने हाथ उठाकर उपमन्यु को रुकने का निर्देश दिया। उसे अपनी तलवार नीचे करनी पड़ी।

“तुम कहते जाओ, मैं सुन रही हूँ।” दुर्धर ने सुलोचन को जारी रखने को कहा।

“उपनंद ने आपको सात दिवस का समय दिया है, जिसमें आपको उसके समक्ष समर्पण करना है। कदाचित् उसकी एक ही इच्छा है, कि वो आपको पाना चाहता है। मैं नहीं जानता किसलिए; किंतु उसे आपसे किसी बात का प्रतिशोध चाहिए।” सुलोचन ने विस्तृत किया।

दुर्धरा को क्रोध आने लगा। उपमन्यु ने हुंकार भरी, “हमारी सम्पूर्ण गंधर्व प्रजाति अपने प्राण त्याग सकती है, किंतु अपनी राजकुमारी के सम्मान को दाँव पर नहीं लगा सकती।”

दुर्धरा ने किसी प्रकार अपने क्रोध को नियंत्रित किया, “एक क्षण ठहरिये उपमन्यु; मुझे दूसरे मार्ग के विषय में जानना है, तुम अपना कथन जारी रखो व्यापारी।”

“दूसरा विकल्प केवल एक है... और वो है मेरा अंगरक्षक सुर्जन” सुलोचन ने गर्व से कहा।
दुर्धरा ने सुर्जन की ओर ध्यान से देखा। वहीं सुलोचन ने उसे आदेश दिया, “तनिक इन्हें अपनी शक्ति का चमत्कार तो दिखलाओ सुर्जन।”

सुर्जन मुस्कुराया, “जैसी आपकी इच्छा सरदार।” सुर्जन ने अपनी शक्ति जुटाई और स्वयं को बाँधी हुई लोहे की बेड़ियों को तोड़ दिया। उसने वृक्ष को पीछे धकेला और पूरी तरह मुक्त हो गया। वो विशाल वृक्ष, भूमि पर गिर पड़ा।

दुर्धरा के साथ-साथ शेष सभी गंधर्व उसका यह बल देख अचंभित रह गए।

“मैं बस यही समझाना चाहता था।” सुलोचन मुस्कुराये।

“मुक्त कर दो इसे।” दुर्धरा ने सुलोचन को मुक्त करने का आदेश दिया।

इसके उपरांत दुर्धरा, सुर्जन और सुलोचन की ओर बढ़ी, “एक कारण बताओ, जिससे मैं तुम दोनों पर विश्वास कर सकूँ।”

सुलोचन ने मुस्कुराते हुए कहा, “इस समय हमारे पास कोई कारण तो नहीं है, किंतु सत्य तो यह है कि आपके पास और कोई मार्ग नहीं है।”

दुर्धरा ने कोई उत्तर नहीं दिया। वो सुर्जन के निकट गयी और उसके नेत्रों में देखा, “यह कोई साधारण योद्धा तो नहीं है; तो यह एक साधारण से व्यापारी का अंगरक्षक कैसे हो सकता है।”

“हाँ, यह तो सत्य है कि यह कोई साधारण योद्धा नहीं है; यह महर्षि वसुधरा का शिष्य है। इसके जीवन में कोई नहीं था और अपनी शिक्षा पूरी करने के उपरांत जब यह गुरुकुल से बाहर आया, तो मुझसे इसकी भेंट हुई। इसके जीवन का कोई उद्देश्य नहीं था, इसलिए अब यह मेरा अंगरक्षक है।” सुलोचन ने कुछ ही क्षणों में कथा की रचना कर दी।

सुर्जन आश्चर्यचकित रह गया, “वाह, क्या कथा थी, अद्भुत!”

दुर्धरा ने सुर्जन की ओर देखा, “बताओ, क्या चल रहा है तुम्हारे मस्तिष्क में?”

“मुझे कुछ समय तो दीजिये।” सुर्जन अभी भी दुर्धरा की ओर देख मुस्कुरा रहा था।

“मुस्कुराना बन्द करो और स्थिति की गंभीरता को समझो; तुम्हारे पास केवल कल सूर्योदय तक का समय है, उसके उपरांत मुझे एक उपयुक्त योजना चाहिए।” दुर्धरा ने कठोर स्वर में कहा।

“उसके लिए हमें एकांत की आवश्यकता होगी।” सुर्जन ने कहा।

यह सुनकर दुर्धरा अपने सैनिकों की ओर मुड़ी और आदेश दिया, “इन्हें कल सूर्योदय तक के लिए अकेला छोड़ दो।”

सभी गंधर्व योद्धाओं ने शीघ्र ही वह स्थान छोड़ दिया और एक गुफा की ओर बढ़े। जब अंतिम गंधर्व ने उस गुफा में प्रवेश किया, तो दुर्धरा ने मुड़कर सुर्जन की ओर देखा, “हमें कल सूर्योदय तक परिपक्व योजना चाहिये।”

सुर्जन, दुर्धरा को देख मुस्कुराता रहा।

“हूँह, इससे कोई कार्य ठीक से होगा भी, या केवल मुस्कुराता रहेगा।” दुर्धरा मुड़कर गुफा के भीतर चली गयी। वह थोड़ी झल्लाई हुई थी, किंतु मुड़ने के उपरांत उसके मुख पर भी एक मंद मुस्कान सी आ गयी।

उनके प्रस्थान के उपरांत, सुलोचन ने सुर्जन से प्रश्न किया, “तो क्या योजना है तुम्हारी?”

“मैंने अभी तक इस पर विचार नहीं किया... मैं तो सोचता हूँ, सीधे महल में प्रवेश करूँ और उन पच्चीस गंधर्वों को मुक्त करा लाऊँ।” सुर्जन ने कहा।

“नहीं, तुम ऐसा नहीं कर सकते। भूलो मत, तुम यहाँ केवल एक मानव योद्धा हो और तुम्हें उसी प्रकार युद्ध करना है।” सुलोचन ने कहा।

सुर्जन एक पत्थर पर बैठा और गहन विचारों में खो गया।

“क्या हुआ सुर्जन? क्या महान असुरेश्वर को केवल अपने बल का प्रयोग करना आता है? क्या वो अपने बुद्धि-कौशल का उपयोग नहीं कर सकता?” सुलोचन ने छीटाकशी करते हुए कहा।

सुर्जन ने साँस भरते हुए कहा, “प्रयास करता हूँ।”

कुछ क्षणों के उपरांत सुर्जन उठा, “मुझे इसी समय जाना होगा।”

“किंतु इस समय तुम जा कहाँ रहे हो?” सुलोचन ने प्रश्न किया।

“मेरे मन में एक योजना चल रही है, किंतु उसके लिए पहले मुझे त्रिगर्ता के महल में घुसना होगा।” सुर्जन ने कहा।

“ठीक है, मैं तुम्हारी यहीं प्रतीक्षा करूँगा।” सुलोचन ने सहमति जताई।

सुर्जन, उपनंद के की नगरी की ओर बढ़ चला।

* * *

सुर्जन छुपते-छुपाते दबेपाँव त्रिगर्ता नगरी की ओर बढ़ रहा था। नगर के मुख्य द्वार की सुरक्षा कहीं अधिक बढ़ा दी गयी थी। पचासके स्थान पर अब लगभग सौ सैनिक नगरद्वार की सुरक्षा में लीन थे। उनमें से कुछ ऊँची मचानों पर खड़े दूर तक दृष्टि रखने का प्रयत्न कर रहे थे। रक्षकों की दृष्टि बचाता हुआ, वो नगर के भीतर जाने के लिए एक ऊँची दीवार पर चढ़ने लगा। वो दीवार पर चढ़कर पहुँचने ही वाला था, कि एक सैनिक ने उसे देख लिया। किंतु इससे पूर्व कि वो सैनिक अपने मुख से कुछ शब्द निकालता, सुर्जन ने दीवार पर लटके हुए ही उसका पाँव पकड़कर उसे नीचे खींचा और लटकते हुए ही उसके कंधे के पास की नस दबाकर उसे मूर्छित कर भूमि पर फेंक दिया। वो अब दीवार पर चढ़ चुका था। वहाँ से उसकी दृष्टि मचान पर खड़े एक सैनिक पर पड़ी। वो दबे पाँव उस मचान के निकट गया और छोटी छलाँग लगाकर उस मचान पर पहुँच गया और सैनिक की किसी भी गतिविधि से पूर्व ही उसे मूर्छित कर दिया। इसके उपरांत उसने उस सैनिक के वस्त्र से स्वयं के वस्त्र बदल लिए और उसका शिरस्त्राण भी अपने सर पर पहन लिया।

अब सुर्जन, त्रिगर्ता के सैनिक की ही वेशभूषा में था। वो मचान से नीचे उतरा और कारागार की खोज में निकल पड़ा।

वो दृढ़ता से कारागार की खोज में नगर के भीतर घूम रहा था। रात्रि के अंधकार और मुख को ढके शिरस्त्राण के कारण इतनी विशाल नगरी में किसी का ध्यान उस पर नहीं गया। शीघ्र ही सुर्जन महल के निकट पहुँचा। महल के द्वार-रक्षक ने उसे रोककर प्रश्न किया, “इस मध्य-रात्रि में महल के भीतर कहाँ जा रहे हो?” वो उसे त्रिगर्ता का एक सैनिक ही समझ रहा था।

“सेनापति सुवर्मा ने मुझे कारागार के निकट आने की सूचना भिजवाई थी; मैं तो केवल उनके आदेश का पालन कर रहा हूँ।” सुर्जन ने दृढ़ता से उत्तर दिया।

“ठीक है, यदि सेनापति का आदेश है, तो हम तुम्हारा मार्ग नहीं रोकेंगे।” द्वार रक्षक किनारे हट गया।

सुर्जन महल के भीतर प्रवेश कर गया और कारागार की खोज में लग गया। शीघ्र ही किसी प्रकार उसने कारागार का मार्ग ढूँढ़ा और वहाँ तक पहुँच गया।

उसने देखा कि जैसा उपमन्यु ने बताया था, कि कारागार तक पहुँचने के लिए सात द्वार पर सौ-सौ सैनिक तैनात किये गए हैं... वैसा कुछ भी नहीं था, अपितु एक मुख्य कारागार के आसपास पूरे दो सहस्र सैनिक तैनात किये गए थे।

“कदाचित् यही वो स्थान है, जहाँ गंधर्वों को बंदी बनाया गया है और यहाँ की सुरक्षा व्यवस्था परिवर्तित कर दी गयी है।” सुर्जन ने अनुमान लगाने का प्रयत्न किया।

वहीं, नगर द्वार पर जिस मचान का सैनिक मूर्छित था, उसकी चेतना लौट आयी। वह तत्काल ही मचान से नीचे उतरकर एक रक्षक सैनिक के पास आया और प्रश्न किया, “वह घुसपैठिया कहाँ गया?”

उसके वस्त्रों को देख वह दूसरा सैनिक स्तब्ध रह गया, “कौन घुसपैठिया और तुम्हारे वस्त्रों को क्या हुआ?”

उस सैनिक का ध्यान अपने वस्त्रों की ओर अब गया था, “अरे! मेरे वस्त्रा मैं समझ गया; उस घुसपैठिये ने मुझे मूर्छित कर कदाचित् मेरे वस्त्र धारण किए और महल की ओर बढ़ गया होगा।” उस सैनिक ने अनुमान लगाने का प्रयत्न किया।

“तो फिर चलो, हमें यह सूचना महल में पहुँचानी होगी।” वो दोनों सैनिक महल की ओर भागे।

उपनंद अपने कक्ष में बैठा था। एक रक्षक ने उसका द्वार खटखटाया।

“भीतर आ जाओ।” उपनंद ने कहा।

वो रक्षक कक्ष के भीतर आया। “कोई विशेष बात?” उपनंद ने उससे प्रश्न किया।

“हस्तिनापुर के सेनापति कीर्तिध्वज महल में पधारे हैं महाराज।” उस रक्षक ने उत्तर दिया।

उपनंद को आश्चर्य हुआ, “हस्तिनापुर के सेनापति इस समय पधारे हैं, किंतु क्यों?”

“कारण मुझे ज्ञात नहीं महाराज। वो केवल आपसे भेंट करना चाहते हैं।” रक्षक ने उत्तर दिया।

“ठीक है, उन्हें बुला लो और राजसभा को भी इसी समय बुलाओ; मैं उनसे सभा में ही मिलूँगा... कदाचित् कोई विशेष बात ही होगी।” उपनंद ने रक्षक को आदेश दिया।

“जो आज्ञा महाराज।” वो रक्षक प्रस्थान कर गया।

मध्य रात्रि के समय ही त्रिगर्ता के महल में सभा बुलाई गयी।

उपनंद ने कीर्तिध्वज का स्वागत किया।

“मैं इस सम्मान के योग्य नहीं हूँ महाराज; मैं केवल सहायता की आशा से आपके पास आया हूँ।” कीर्तिध्वज विचलित था।

उपनंद सिंहासन से नीचे उतरा और कीर्तिध्वज के निकट आया, “समस्या बहुत गंभीर प्रतीत होती है।”

“हाँ महाराज, समस्या बहुत ही गंभीर है... पहली बार ऐसा हुआ है कि हस्तिनापुर की सेना रणभूमि से रिक्त हाथ लौटी है, यह हमारे लिए बहुत ही लज्जाजनक है।” कीर्तिध्वज ने कहा।

“हस्तिनापुर की सेना की पराजय! यह तो असंभव है; कैसे हुआ यह? आर्यावर्त के शक्तिशाली से शक्तिशाली राष्ट्र के मन में भय उत्पन्न करने के लिए तो महाप्रतापी महाराज दुष्यंत का नाम ही पर्याप्त है।” उपनंद स्तब्ध रह गया।

“यही कारण है, जो मैं महाराज दुष्यंत के समक्ष जाने का साहस नहीं जुटा पा रहा।” कीर्तिध्वज का मस्तक लज्जा से नीचे झुका हुआ था।

“चिंतित मत होइये सेनापति जी, मैं आपके साथ हूँ; हस्तिनापुर, मित्र राज्य के साथ-साथ हमारा संबंधी भी है। महाराज दुष्यंत की बहन मेरी धर्म पत्नी हैं, इसलिए अब इस विपदा को मैं सँभालूँगा; बताइये, कौन हैं वो?” उपनंद ने प्रश्न किया।

“कुछ दिनों पूर्व हमने एकचक्रनगरी पर आक्रमण किया था...” कीर्तिध्वज ने युद्ध का पूरा विवरण कह सुनाया।

“एक योद्धा ने हस्तिनापुर की समस्त सेना को पराजित कर दिया? एक ऐसा मनुष्य, जो प्रकृति को नियंत्रण में कर सकता है?” उपनंद स्तब्ध रह गया।

“यह सत्य है महाराज। और विडंबना तो यह है कि वो योद्धा कौन है, यह कोई नहीं जानता।” कीर्तिध्वज ने निराशाजनक स्वर में कहा।

उपनंद कुछ क्षण मौन रहा। उसके उपरांत उसने कीर्तिध्वज को विश्वास दिलाया, “मैं भी उस योद्धा को देखना चाहता हूँ, जिससे आर्यावर्त की भूमि अब तक अनभिज्ञ है। इस सप्ताह मैं थोड़ा व्यस्त हूँ कीर्तिध्वज। किंतु हम अगले ही सप्ताह एकचक्रनगरी की ओर प्रस्थान करेंगे और मैं स्वयं उस महायोद्धा का सामना करूँगा।”

अगले ही क्षण दो रक्षकों ने सभा में प्रवेश किया। वह दोनों हाँफ रहे थे।

उपनंद को थोड़ा अटपटा सा लगा, “क्या हुआ, तुम दोनों इस प्रकार हाँफ क्यों रहे हो?”

“एक घुसपैठिया महल में घुस आया है महाराज।” उनमें से एक कहा।

‘घुसपैठिया...!’ कीर्तिध्वज को भी आश्चर्य हुआ।

“चलो देखते हैं।” उपनंद ने अपने कदम आए बढ़ाये। कीर्तिध्वज उसके पीछे चल दिया।

महल के कई रक्षक घायल होकर भूमि पर पड़े थे। सुर्जन महल से भागने को था। वो महल की दीवार पर चढ़ने लगा। तभी उपनंद वहाँ आ पहुँचा।

“बाण चलो।” उपनंद ने उपस्थित सैनिकों को आदेश दिया।

लगभग पचास तीक्ष्ण बाण सुर्जन की पीठ की ओर बढ़े। सुर्जन, बाणों से बचने के लिए दीवार छोड़ भूमि पर कूदा। जैसे ही वह उठा, भाला लिए उसे दस सैनिकों ने घेर लिया। तब तक उसने अपना मुख काले वस्त्र से ढक लिया था।

महल का मुख्य द्वार लगभग पचास गज की दूरी पर था। सुर्जन पलायन का मार्ग खोज रहा था।

उपनंद उसके निकट आया, “अपने मुख को ढका वस्त्र हटाओ।”

सुर्जन ने स्वयं को घेरे हुए भालाधारियों की ओर देखा। उसने अपने बायें पैर से पीछे की दीवार पर दबाव बनाया और दायें पैर से दो भालाधारियों की छाती पर प्रहार कर उन्हें भूमि पर गिरा दिया। उस घेरे में एक रिक्त स्थान बना, फिर दीवार के सहारे उसने छलाँग लगायी और घेरे से बाहर आ गया। इसके उपरांत वो महल के मुख्य द्वार की ओर दौड़ा। मुख्य द्वार के रक्षक उसकी ओर दौड़े।

सुर्जन भी उन सैनिकों की ओर दौड़ रहा था, किंतु उन पर आक्रमण करने के स्थान पर उसने छलाँग लगायी और उन सैनिकों को पार कर गया।

उपनंद स्वयं उसके पीछे दौड़ा। उसके सैनिक उसे मार्ग देने के लिए किनारे हटते गए। कीर्तिध्वज भी उनके पीछे गया।

सुर्जन मुख्य द्वार की ओर दौड़ रहा था। उपनंद ने अपने एक रक्षक से भाला लिया और घुमाते

हुए सुर्जन की ओर फेंका। उस भाले ने सुर्जन के पैर पर चोट की। वो अपना संतुलन खो भूमि पर गिर पड़ा।

उपनंद ने उसकी ओर दौड़ लगायी और उसे पकड़ने के लिए लंबी छलाँग लगायी। सुर्जन लगभग फँस चुका था। उपनंद ने पूरी शक्ति से उसे जकड़ रखा था।

किंतु सुर्जन का सामर्थ्य उससे कहीं अधिक था। उसने उपनंद का हाथ पकड़ा और उसे उठाकर महल के द्वार की ओर फेंक दिया।

उपनंद मुख्य द्वार के निकट भूमि पर गिर गया। उसका बल देख वह पूरी तरह स्तब्ध रह गया। किंतु इस मुठभेड़ में सुर्जन के मुख को ढका वस्त्र हट गया, जिस पर केवल कीर्तिध्वज ने ध्यान दिया।

सुर्जन का मुख देख कीर्तिध्वज का मन भय और आश्चर्य से भर गया, “ये..ये, तो वही हैं!”

वहीं उपनंद उसकी ओर मुड़ा। किंतु इससे पूर्व वो सुर्जन का मुख देख पाता, सुर्जन ने छलाँग लगायी और उसके मुख पर भीषण मुष्टि प्रहार किया। उपनंद अपनी चेतना खोकर भूमि पर गिर पड़ा।

अपने राजा की यह दशा देख महल के रक्षक भयभीत हो गए। किसी और ने सुर्जन का मार्ग रोकने का साहस नहीं किया। उसने अपना मुख ढका और महल से बाहर निकल गया।

नगर के बीच मार्ग में बहुत से सैनिकों ने उसका मार्ग रोकने का साहस किया, किंतु उन सभी को गिराता हुआ सुर्जन, शीघ्र ही नगर के मुख्य द्वार से बाहर चला गया।

शीघ्र ही वो नगर के पार वाले वन में खो गया। महल के सैनिकों का मन भय से आतंकित था और होता भी क्यों न... कदाचित् यह प्रथम बार था जब उनके महाराज को किसी ने इतनी बुरी तरीके से पराजित किया था।

तभी सेनापति ‘सुवर्मा’ वहाँ आ पहुँचे। उपनंद को मूर्छित देख वो अपने महाराज की ओर दौड़े।

“महाराज! महाराज!” सुवर्मा ने उपनंद को जगाने का प्रयत्न किया।

वो अपने एक सैनिक की ओर मुड़े और चीखे, “कैसे हुआ यह?”

“एक घुसपैठिये ने यह किया है महामहिम।” एक रक्षक ने बोलने का साहस किया।

सुवर्मा उस सैनिक की ओर बढ़े और उसे तमाचा जड़ दिया, “घुसपैठिया? तुम सब क्या कर रहे थे?”

यह देख कीर्तिध्वज ने हस्तक्षेप किया, “इन्हें दोष मत दीजिये सेनापति जी, इसमें इनका कोई दोष नहीं है।”

सुवर्मा कीर्तिध्वज की ओर मुड़े, “इनका दोष नहीं है? आप कहना क्या चाहते हैं और यहाँ उपस्थित हर सैनिक के नेत्रों में यह कैसा भय व्याप्त दिखाई दे रहा है, मैं समझ नहीं पा रहा।”

भय केवल उन सैनिकों के नेत्रों में ही नहीं, अपितु कीर्तिध्वज के नेत्रों में भी स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

“क्या हुआ कीर्तिध्वज, आप उत्तर क्यों नहीं दे रहे?” सुवर्मा अधीर हो रहे थे।

“वो भय का पर्याय था। वो वही योद्धा था, जिसने अकेले ही हस्तिनापुर की समस्त सेना को अकेले ही पराजित कर दिया था।” कीर्तिध्वज ने विस्तृत किया।

सुवर्मा ने आश्चर्य से प्रश्न किया, “हस्तिनापुर की समस्त सेना को अकेले पराजित कर दिया! कौन था वो योद्धा?”

“वो वास्तव में कौन है, यह तो मैं भी नहीं जानता, किंतु सत्य यही है कि उपनंद जैसे महारथी के लिए उसकी मुष्टि का एक ही प्रहार पर्याप्त था और उसका सामर्थ्य सिद्ध करने के लिए इतना ही पर्याप्त है।” कीर्तिध्वज ने भयपूर्वक कहा।

सुवर्मा क्षणभर के लिए स्तब्ध रह गये। उन्होंने कीर्तिध्वज से कुछ नहीं कहा और अपने सैनिकों को आदेश दिया, “महाराज को भीतर के कक्ष में ले जाओ।”

कई सैनिक उपनंद को उठाकर कक्ष की ओर दौड़े।

वहीं सुर्जन उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ जामवंत/सुलोचन उसकी प्रतीक्षा में थे।

“तुम तो होने वाले सूर्योदय से पहले ही लौट आये।” सुलोचन मुस्कुराये।

सुर्जन आकाश की ओर देख मुस्कुराया, “हाँ, वो तो हैं सरदार और योजना भी तैयार है।”

“हम भी उस योजना के विषय में सुनना चाहेंगे।” पीछे से एक स्वर सुनाई दिया।

दुर्धरा, उपमन्यु और अन्य गंधर्व उनके पीछे खड़े थे। सुर्जन उनकी ओर मुड़ा।

“उचित है, मैं समझाता हूँ।” सुर्जन ने साँस भरते हुए कहा।

4. एक लघु प्रेम कथा

“नहीं, एक क्षण रुको..।” इससे पहले की सुर्जन अपनी योजना समझाता, दुर्धरा ने उसे रोका।

“ठीक, किंतु किसलिए?” सुर्जन ने कारण जानना चाहा।

“मैंने तुम्हें बताया था कि हमारी संख्या दस सहस्र है, किंतु तुम इस योजना के संचालक हो, इसलिए तुम्हें हमारी वास्तविक संख्या ज्ञात होनी चाहिए।” दुर्धरा ने स्पष्ट रूप से कहा।

“और आपकी वास्तविक संख्या है क्या?” सुर्जन ने प्रश्न किया।

“पंद्रह सहस्र।”

“पंद्रह! किंतु...” सुर्जन को थोड़ा अचरज हुआ।

“दस सहस्र गंधर्व और पाँच सहस्र डकैत।” दुर्धरा ने विस्तृत किया।

“डकैत?” सुर्जनने यह शब्द सुन आश्चर्य से प्रश्न किया।

“हाँ, मैं डकैतों की सेना के विषय में कह रही हूँ और यह रहे डकैतों के सरदार दुर्मुद।” दुर्धरा ने पीछे मुड़कर देखा।

एक हष्ट-पुष्ट शरीर वाला मनुष्य सामने आया। उसका मुख काले वस्त्र से ढका हुआ था।

“हम्म, वैसे तो यह अप्रत्याशित था, किंतु निःसंदेह सहायक सिद्ध होंगे यह हमारे लिए।” सुर्जन, दुर्मुद की ओर बढ़ा।

“तो आपके दल की विशेषता क्या है?” सुर्जन ने प्रश्न किया।

दुर्मुद ने दुर्धरा की ओर देखा।

“हमारे पास और कोई विकल्प नहीं है, हमें इस पर विश्वास करना ही होगा।” दुर्धरा ने कहा।

“हमारी संख्या पाँच सहस्र है। वर्षों से हमारे गुरुदेव हमें प्रशिक्षित कर रहे हैं; उन्होंने कई प्रकार के भयंकर व्यूह के निर्माण में पारंगत किया है, जिससे हम स्वयं से संख्या में दस गुना बड़ी सेना को पराजित कर सकते हैं।” दुर्मुद ने विस्तृत किया।

“और कौन हैं आपके वो गुरुदेव?” सुर्जन ने प्रश्न किया।

“वो जानना तुम्हारा कार्य नहीं है, तुम केवल इस योजना का नेतृत्व कर रहे हो, तुम हमारे सरदार नहीं हो।” दुर्मुद ने रुष्ट स्वर में कहा।

सुर्जन ने अपना माथा झुकाया और भूमि की ओर देखा। उसके नेत्र क्रोध से जल रहे थे, किंतु उसकी दृष्टि नीचे होने के कारण किसी ने उसके मुख के भाव को नहीं देखा। उसने पीछे मुड़कर देखा, सुलोचन का हाथ उसके कंधे पर था। वो उसे नियंत्रण में रहने का संकेत दे रहे थे।

तभी दुर्धरा ने उन दोनों के मध्य हस्तक्षेप किया, “यह उचित कह रहे हैं; डकैतों का गुरु कौन है, इससे तुम्हें कोई सरोकार नहीं होना चाहिए, तुम हमारी योजना पर ध्यान दो।”

“हाँ हाँ क्यों नहीं।” दुर्धरा के मुख से फूटे शब्द मानो उसके लिए अमृत का कार्य कर रहे थे। वो एक बार फिर उसकी ओर देखने लगा।

“योजना के विषय में कुछ कहोगे?” दुर्धरा ने उसकी चुप्पी तोड़ी।

“हाँ हाँ तो मैं क्या कह रहा था, एक क्षण मुझे स्मरण करने दो।” सुर्जन संशय में था।

दुर्धरा के मुख पर भी मंद मुस्कान सी आ गयी थी। सुलोचन ने उसके मुख का यह भाव देख लिया।

‘हम्म...!’ सुलोचन ने सुर्जन को ध्यान योजना की ओर केंद्रित करने का संकेत दिया।

“हाँ हाँ, अब योजना के विषय में गंभीरता से बात करते हैं; आप लोग आइये मेरे साथ।” सुर्जन एक वृक्ष की ओर बढ़ा।

“हम, महल पर दुर्गाष्टमी के दिन आक्रमण करेंगे... अर्थात् आज से तीसरे दिन। मैंने त्रिगर्ता के सैनिकों से सुना है कि उपनंद माँ दुर्गा का बहुत बड़ा भक्त है, उस दिन सूर्योदय से दो प्रहर तक वो पूजन में व्यस्त रहेगा; आक्रमण का सबसे उचित समय यही होगा... हम दो दिशा से आक्रमण करेंगे और जैसा कि उपमन्यु ने बताया था, कारागार की सुरक्षा योजना अब वैसी नहीं रही, वो अब परिवर्तित हो चुकी है।” सुर्जन समझाता रहा।

“किंतु हम आक्रमण करेंगे कैसे, वास्तविक योजना है क्या?” दुर्मुद ने प्रश्न किया।

“सब लोग मेरे साथ आइये।” सुर्जन एक निश्चित स्थान की ओर बढ़ा।

उन सभी ने सुर्जन का अनुसरण किया। शीघ्र ही वह सभी एक निश्चित स्थान पर पहुँचे, जहाँ बहुत से वृक्ष लगे हुए थे।

“यह स्थान त्रिगर्ता नगरी के मुख्य द्वार के बहुत निकट है; हमारा यहाँ आना और रुकना, दोनों सुरक्षित नहीं है, तुम हमें यहाँ क्यों लाये हो?” दुर्धरा ने प्रश्न किया।

“धैर्य रखिये, हमारी योजना के लिए यह आवश्यक था। मुझे तीन सौ धनुष चाहिए।” सुर्जन ने कहा।

दुर्धरा ने अपने एक सैनिक को संकेत किया।

शीघ्र ही तीन सौ धनुष लाये गये।

“इन्हें लगातार वृक्ष की शाखाओं से बाँध दो।” सुर्जन ने कहा।

दुर्धरा ने अपने सैनिकों को आदेश का पालन करने का संकेत दिया।

कार्य संपन्न होने के उपरान्त सुर्जन ने कहना आरंभ किया, “जैसा कि हम देख सकते हैं, यहाँ दस-दस वृक्षों की तीन पंक्तियाँ हैं, जो एक दूसरे की सामानांतर दिशा में हैं; हमें अपना ध्यान हर वृक्ष की दस शाखाओं पर लगाना है, एक धनुष को पाँच बाणों के साथ इन तीन सौ शाखाओं पर बाँधा जायेगा। वृक्ष की तीनों पंक्तियों के मध्य लगभग दस गज की दूरी है। तीन सौ धनुष, तीस वृक्षों की तीन सौ शाखाओं पर बाँधे जायेंगे, अर्थात् हर वृक्ष पर दस धनुष। हर वृक्ष के लिए एक मजबूत, मोटी और लंबी रस्सी चाहिए होगी, जो उस वृक्ष के सभी धनुषों को आपस में जोड़कर रखे और हर वृक्ष पर पाँच योद्धा उस रस्सी को नियंत्रित करने हेतु तैनात किये जायेंगे। इसका अर्थ यह है कि हमें एक सौ पचास कुशल धनुर्धरों की आवश्यकता होगी और जैसा कि मैंने कहा हर धनुष पर पाँच बाण चढ़े होंगे, अर्थात् मेरे संकेत पर हर वृक्ष से पचास बाण चलेंगे।” सुर्जन ने विस्तृत किया।

सुर्जन के मस्तिष्क में क्या चल रहा था, यह किसी को समझ नहीं आ रहा था। वो सभी एक-दूसरे की ओर देख रहे थे।

सुर्जन मुस्कुराया, “नहीं समझे? चलो आप सभी को पूरी योजना समझाता हूँ।”

सुर्जन उन्हें योजना समझाने लगा।

“अद्भुत! बहुत अद्भुत।” दुर्धरा ने प्रशंसा की।

“आपने उचित कहा राजकुमारी, यह योजना अवश्य कार्य करेगी।” उपमन्यु ने समर्थन किया।

“मुझे प्रस्थान करना होगा।” दुर्मुद ने प्रस्थान की इच्छा प्रकट की।

“तुम इस समय कहाँ जा रहे हो?” सुर्जन ने उससे प्रश्न किया।

“मुझे तुम्हें बताने की आवश्यकता नहीं है; मैं योजना के लिए समय पर पहुँच जाऊँगा।” दुर्मुद ने रुष्टता से उत्तर दिया।

सुर्जन उसकी ओर बढ़ा, “मुझे तुम्हारा मुख देखना है।” सुर्जन ने उसके मुख को ढका वस्त्र हटाने का प्रयत्न किया।

दुर्मुद ने क्रोध में उसका हाथ पकड़ लिया, “ऐसा दुस्साहस करने का विचार भी अपने मन में मत लाना... हम डकैत हैं, हमारी पहचान गुप्त रहती है और सदैव रहेगी।”

सुर्जन क्रोध से दुर्मुद की ओर देखने लगा।

वहीं दुर्धरा ने स्थिति को नियंत्रित करने का प्रयत्न किया, “बस बहुत हुआ; तुम दोनों अपने क्रोध को शांत करो। यदि यह अपना मुख नहीं दिखाना चाहते, तो तुम इन्हें विवश नहीं कर सकते सुर्जन।”

सुर्जन ने सहमति जताकर अपने कदम पीछे हटाये। वहीं दुर्मुद भी पीछे हटते हुए वहाँ से प्रस्थान कर गया।

सुर्जन उसकी ओर संदेह भरी दृष्टि से देख रहा था। वहीं दुर्धरा उसके मुख की ओर देख रही थी।

“हमें अपनी योजना पर कार्य आरंभ कर देना चाहिए।” दुर्धरा ने उसका ध्यान उस ओर से हटाने का प्रयास किया।

“हाँ हाँ, हमारे पास केवल दो दिवस का समय शेष है और हमारे सैनिकों को इस योजना के लिए कड़ा अभ्यास करना होगा; उसके लिए मुझे एक सौ पचास कुशल धनुर्धरों की आवश्यकता है।” सुर्जन ने गंधर्वों को संकेत देना आरंभ कर दिया।

शीघ्र ही एक सौ पचास कुशल धनुर्धर, सुर्जन के समक्ष उपस्थित थे। वो उन सभी को अभ्यास कराने के कार्य में व्यस्त हो गया, ताकि योजना को फलीभूत किया जा सके।

* * *

वहीं महल में उपनंद की चेतना लौट आयी। उसके मस्तक में भयंकर पीड़ा हो रही थी।

“आप ठीक हैं?” सुवर्मा ने एक जल का पात्र अपने राजा की ओर बढ़ाया।

क्रोधित उपनंद ने जल का पात्र फेंक दिया। उसके नेत्र क्रोध से जल रहे थे। वो अपनी शय्या से उठा।

“शांत हो जाइये, महाराज, मेरी विनती है आपसे, शांत हो जाइये।” सुवर्मा ने उपनंद को समझाने का प्रयत्न किया।

“नहीं, मुझे अब शांति नहीं मिलेगी।” उपनंद चीखा।

उसने सुवर्मा की गर्दन पकड़ ली, “मुझे कैसे भी वो घुसपैठिया चाहिए।”

“यह असंभव है महाराज।” वहाँ खड़े कीर्तिध्वज ने हस्तक्षेप किया।

उपनंद, कीर्तिध्वज की ओर मुड़ा और उसकी गर्दन पकड़ ली, “साहस कैसे हुआ तुम्हारा, साहस कैसे हुआ तुम्हारा यह कहने का।” उपनंद ने उसे उठाकर द्वार से सटा दिया।

“अह... समझने का प्रयत्न कीजिये, महाराज। वो वही योद्धा था,...जिसके विषय में मैंने आपको बताया था।” कीर्तिध्वज ने खाँसते हुए कहा।

उपनंद उसे नीचे लेकर आया, “ठीक है, कहो क्या कहना चाहते हो, मैं सुन रहा हूँ।”

“मैं बस यही कहना चाहता हूँ कि वो वही योद्धा था, जिसने हस्तिनापुर की सेना को अकेले ही पराजित कर दिया था और विवश होकर मुझे रणभूमि से भागना पड़ा।” कीर्तिध्वज ने विस्तृत किया।

उपनंद ने उसकी बात ध्यान से सुनी, “तो तुम्हारे अनुसार वो वही योद्धा था, जिसने हस्तिनापुर की समस्त सेना को अकेले पीछे हटने पर विवश कर दिया था?”

“हाँ महाराज, मैं पूरे विश्वास से कह सकता हूँ, उसका वो मुख मेरे मन से कभी नहीं मिट सकता महाराज।” कीर्तिध्वज ने स्पष्ट किया।

“किंतु एकचक्रनगरी का वो योद्धा हमारे राज्य में आया क्यों था?” उपनंद के मन में प्रश्न उमड़ा।

“कहना कठिन है महाराज; कहीं ऐसा तो नहीं कि वो हस्तिनापुर के सेनापति कीर्तिध्वज के पीछे यहाँ आया हो।” सुवर्मा ने अनुमान लगाने का प्रयत्न किया।

उपनंद कुछ क्षणों के लिए मौन रहा। कुछ क्षणों उपरांत, उसने सुवर्मा की ओर देखा, “तुम मेरे साथ आओ सुवर्मा।”

* * *

वहीं दूसरी ओर संध्या के समय, सुर्जन नदी के किनारे एक पत्थर पर बैठा था। उससे कुछ कदम की दूरी पर दो बालक और एक बालिका दौड़ते हुए क्रीड़ा में लीन थे।

शीघ्र ही दुर्धरा वहाँ से होकर गुजरी। उसने पत्थर पर बैठे सुर्जन की ओर देखा। बालकों द्वारा मचाने वाला शोर भी उसका मौन तोड़ने में असमर्थ था।

दुर्धरा उसके निकट आयी और उसके बगल के एक पत्थर पर बैठ गयी। सुर्जन उसकी ओर देख मुस्कराया। दुर्धरा भी मुस्करा दी।

“तो...।” यह दुर्धरा के मुख से फूटा पहला शब्द था।

“तो... क्या कुछ विशेष नहीं; वैसे यह तीनों बालक कौन हैं?” सुर्जन ने हिचकिचाते हुए प्रश्न किया।

“वो कन्या मेरी बहन है, उसका नाम सुनंदा है।” दुर्धरा ने अपनी बहन से परिचय कराया।

“और शेष दोनों बालक? वो साधारण प्रतीत नहीं होते।” सुर्जन की दृष्टि विशेषतः उन दो बालकों पर थी।

“तुम ऐसा क्यों सोचते हो? उनमें कौन सी विशेष बात है?” दुर्धरा ने प्रश्न किया।

“उनके मुख का तेज; खेलते हुए दौड़ने में उनकी यह असामान्य गति साधारण मनुष्य जैसी नहीं है... आपको ऐसा नहीं लगता कि यह चीजें इन दोनों को दूसरों से अलग बनाती हैं?” सुर्जन ने दुर्धरा की ओर देखा।

“वैसे तुम्हें मुझे आप बुलाने की आवश्यकता नहीं है और हाँ, तुम्हारा कथन उचित है, उनमें से एक डकैतों के सरदार का पुत्र ‘मेघवर्ण’ है और दूसरा हमारे सेनापति उपमन्यु का पुत्र ‘चंद्रकेतु’ है।” दुर्धरा ने उनका परिचय दिया।

“हाँ, अच्छी बात है और आश्चर्यजनक भी।” सुर्जन विचारों में खो गया।

“तुम क्या विचार करने लगे?” दुर्धरा ने उसे देख, प्रश्न किया।

“कुछ विशेष नहीं, बस ऐसे ही; वैसे मैं तुमसे एक प्रश्न करना चाहूँगा।”

‘कहो’ दुर्धरा ने उसके प्रश्न की प्रतीक्षा में थी।

“वो क्रूर राजा उपनंद तुम्हें पाने के लिए इतना व्यग्र क्यों है, मैं समझ नहीं पा रहा।”

“तुमने यह प्रश्न क्यों किया; क्या तुम्हें लगता है कि मेरे सौंदर्य में इतना सामर्थ्य नहीं?”
दुर्धरा ने प्रश्न किया।

“अरे, मेरे कहने का अर्थ यह नहीं था; तुम्हारा सौंदर्य तो अद्भुत है, किंतु मैं तो बस यह कहना चाहता हूँ कि...” सुर्जन हिचकिचा रहा था।

“हाँ, तुम्हारा अनुमान उचित है; यहाँ प्रश्न केवल सौंदर्य का नहीं है, वो मुझे अपने अहंकार की संतुष्टि के लिए प्राप्त करना चाहता है।”

“थोड़ा विस्तार से बताओ।” सुर्जन ने कहा।

“मेरे पिता और उपनंद के पिता महाराज सत्व ने हमारा विवाह निश्चित किया था। जिस दिन उपनंद ने सिंहासन के लोभ में अपने पिता महाराज सत्व की हत्या की थी, उस समय हम और हमारे पिता भी त्रिगर्ता के महल में उपस्थित थे। जब मेरे पिता को इसका ज्ञान हुआ, उन्होंने उपनंद और मेरा संबंध तोड़ने की घोषणा की। उपनंद को क्रोध आया, उसने मेरा हरण करने का प्रयत्न किया और मैंने उसी की सभा में उसी के लोगों के समक्ष उसके गाल पर तमाचा जड़ दिया... इसके उपरांत हमने एक विशेष द्रव्य का प्रयोग किया, जिससे वो मूर्छित हो गया। हम उसके महल से भागने में सफल रहे। तब से अपने अहंकार की संतुष्टि के लिए वो मुझे प्राप्त करना चाहता है, किंतु इन वनों में हमें खोजना सरल कार्य नहीं है।” दुर्धरा ने विस्तृत किया।

“हम्म, तो यह कथा है।” सुर्जन ने साँस भरते हुए कहा। उसे सारी कथा समझ आ गयी।

कुछ क्षणों की शांति के उपरांत, दुर्धरा ने उससे प्रश्न किया, “तुम मेरे एक प्रश्न का उत्तर दोने?”

‘कहो’ सुर्जन ने मुस्कुराते हुए कहा।

“तुम हमारी सहायता कर क्यों रहे हो?” दुर्धरा ने प्रश्न किया।

सुर्जन मुस्कुराया, “तुम्हें क्या लगता है, क्यों कर रहे हैं हम ऐसा?”

“कोई तो कारण होगा।”

“विस्तार से तो नहीं कह सकता, किंतु कदाचित् कुछ पाप हुए जीवन में; जिनके विषय में विस्तार से तो नहीं कह सकता, समझ लो बस उसी का प्रायश्चित्त करने के लिए तुम्हारी सहायता कर रहा हूँ।” सुर्जन ने कहा।

दुर्धरा ने कहा, “तो इसके उपरांत तुम क्या करने वाले हो?”

“इसके उपरांत..?” सुर्जन ने थोड़े अचरच से प्रश्न किया।

“मेरे कहने का अर्थ है, मेरे पिता और अन्य गंधर्वों को मुक्त कराने के उपरांत।” दुर्धरा ने कहा।

कुछ क्षण विचार करने के उपरांत सुर्जन ने कहा, “अह... पता नहीं, वैसे भी मेरे जीवन का कोई विशेष लक्ष्य तो है नहीं; तो मैं अपने सरदार के साथ ही चलूँगा।”

“क्या तुम्हें वास्तव में लगता है तुम इसी के योग्य हो?” दुर्धरा ने प्रश्न किया।

“मैं नहीं जानता मैं किस योग्य हूँ, किंतु कदाचित् और कोई विकल्प है ही नहीं मेरे पास।”

“मैं जानती हूँ, तुम इससे कहीं अधिक पाने के योग्य हो” दुर्धरा ने उसकी ओर देखा।

सुर्जन क्षणभर के लिए मौन हो गया। उसने उठकर नदी की ओर देखा।

दुर्धरा भी उठकर उसके निकट आयी, “अब तुम क्या विचार करने लगे?”

“मैं वास्तव में नहीं जानता कि मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ... मैं बस एक शांतिपूर्वक वातावरण चाहता हूँ, इसलिए मैं तुम्हारे पिता और गंधर्वों को मुक्त कराने के उपरांत यहाँ से प्रस्थान कर जाऊँगा।” सुर्जन मुड़कर जाने लगा।

दुर्धरा ने उसका हाथ पकड़कर उसे रोका। सुर्जन स्तब्ध रह गया। उसने मुड़कर देखा, दुर्धरा उसी की ओर देख रही थी।

उसे थोड़ा अचरज हुआ।

दुर्धरा उसके निकट आयी, “तुम्हारे मुख पर यह अचरज का भाव कैसा?”

सुर्जन कुछ भी कहने में असमर्थ प्रतीत हो रहा था।

“क्या हुआ! जिस दिन से तुमने मुझ पर दृष्टि डाली है, तुम एकटक मुझे देखे ही जा रहे हो, तो फिर अब क्या हुआ?” दुर्धरा एकटक सुर्जन के नेत्रों की ओर देख रही थी।

“वो... उसके लिए मैं क्षमा चाहता हूँ; आप राजकुमारी हैं, मुझे अपनी सीमा में रहना चाहिए था।” सुर्जन हिचकिचाने लगा।

दुर्धरा ने उसका हाथ छोड़ दिया। सुर्जन कुछ कदम पीछे हटा। वो अब भी उसके नेत्रों में देख रही थी। सुर्जन वहाँ से प्रस्थान कर गया।

“उसके मुख पर यह शिकन कैसी?” दुर्धरा को सुर्जन के मुख के भाव देख थोड़ा आश्चर्य हुआ।

वहीं सुर्जन मौन होकर वन में टहलने लगा। दुर्धरा ने उसका पीछा करना आरंभ किया।

“कोई समस्या है?” एक स्वर सुर्जन को पीछे से सुनाई दिया।

सुर्जन ने पीछे मुड़कर देखा, जामवंत सुलोचनके रूप में उसके समक्ष खड़े थे।

“वो... कुछ विशेष नहीं, बस यँ ही मन की शांति के लिए भ्रमण कर रहा था।” सुर्जन ने साँस भरते हुए उत्तर दिया।

सुलोचन उसके निकट आये, “वैसे मैं तो तुम्हारे विषय में सब कुछ जानता हूँ; तो क्या तुम मुझसे भी अपनी भावनायें साझा नहीं कर सकते?”

“अवश्य कर सकता हूँ, किंतु मैं जानना चाहूँगा कि जिसे मैं अपनी समस्या सुना रहा हूँ, वो कौन है, व्यापारी सुलोचन अथवा रीछराज?” सुर्जन ने प्रश्न किया।

“रीछराज..।” दुर्धरा यह नाम सुन स्तब्ध रह गयी। वो उन दोनों की वार्ता वृक्ष की ओट में छुपकर सुन रही थी।

“इस समय तुम मुझे केवल एक मार्गदर्शक मान सकते हो।” सुलोचन ने उत्तर दिया।

सुर्जन ने उनकी ओर देखा; उसके पास कहने को शब्द नहीं थे।

“तो यह दुर्धरा के विषय में है?” सुलोचन ने प्रश्न किया।

“अ..आपको कैसे ज्ञात हुआ?” सुर्जन स्तब्ध रह गया।

“मैं दो दिवस से तुम्हें देख रहा हूँ; मुझे ज्ञात है कि पिछले दो दिनों में तुमने जो भी किया है और आगे जो भी करोगे, वो केवल उसी के लिए है, है न?” सुलोचन ने अनुमान लगाया।

सुर्जन मौन था।

“क्या हुआ सुर्जन, तुम्हें तो सदैव छोटी-छोटी बातों पर क्रोध आ जाता था; किंतु दुर्धरा तुमसे कितने भी तीखे स्वर में बात करे, तुम्हें क्रोध नहीं आता, इसका कारण क्या है?” सुलोचन ने प्रश्न उठाया।

कुछ क्षण मौन रहने के उपरांत सुर्जन ने कहा, “मैं नहीं जानता इसका क्या अर्थ है; यह इतना सरल नहीं है, मुझे समय चाहिए।” सुर्जन एक पत्थर पर बैठ गया।

“हाँ, जानता हूँ, यह इतना सरल नहीं है... मैं समझ सकता हूँ, तुम्हारे कंधों पर बहुत सारे उत्तरदायित्व हैं; किंतु एक मार्गदर्शक होने के नाते मैं तुमसे बस एक बात कहना चाहूँगा।” सुलोचन ने कहा।

“और वो क्या है?” सुर्जन ने सुलोचन के मुख की ओर देखा।

“यही कि जीवन में चुनाव वही उचित है, जो आत्मा को संतुष्ट करे।” सुलोचन मुस्कुराये।

“आपके कहने का अर्थ मैं समझा नहीं।” सुर्जन ने संशय में प्रश्न किया।

“मेरे साथ आओ।”

“कहाँ?” सुर्जन ने प्रश्न किया।

“एक उदाहरण की खोज में?” सुलोचन एक मार्ग पर चल पड़े।

“उदाहरण की खोज में, चलिए फिर।” सुर्जन उठकर उनके साथ चल दिया।

दुर्धरा ने उनका पीछा किया, किंतु वो दोनों घने वन में न जाने कहाँ लुप्त हो गए।

वो उन्हें ढूँढ़ने में असफल रही। “कहाँ गये यह दोनों? और कौन है यह रीछराज?” उसके मन में कई प्रश्न उमड़ रहे थे।

वो दोनों एक मार्ग से कई कोस दूर निकल आये और शीघ्र ही एक निश्चित स्थान पर पहुँचे।

“आप मुझे यहाँ क्यों लाये हैं?” सुर्जन ने प्रश्न किया।

“कोई हमारा पीछा कर रहा था, उसे भटकाना आवश्यक था।” सुलोचन ने उत्तर दिया।

“हमारा पीछा कर रहा था; कौन था वो?” सुर्जन को थोड़ा क्रोध आया।

“मैं उसके विषय में कह रहा हूँ, जिस पर तुम मोहित हो चुके हो।” सुलोचन ने मुस्कुराकर कहा।

“दुर्धरा...?” सुर्जन ने अनुमान लगाया।

“चलो उस उद्देश्य को पूरा करते हैं, जिसके लिए हम यहाँ आये हैं।” सुलोचन आगे बढ़ते रहे। सुर्जन उनके पीछे गया।

कुछ दूर चलने के उपरांत सुलोचन ने एक वृक्ष के नीचे बैठे व्यक्ति की ओर संकेत किया, “वृक्ष के नीचे बैठे उस व्यक्ति की ओर ध्यान से देखो।”

“कोई भिक्षुक प्रतीत होता है, जिसके हाथ में भोजन का एक पात्र है; जिसमें उसके उदर की क्षुधा मिटाने जितना भोजन है। वह भोजन को इस प्रकार देख रहा है, जैसे वो काफी समय से भूखा हो।” सुर्जन ने अनुमान लगाने का प्रयत्न किया।

“हम्म... और उसके बगल में तुम क्या देख रहे हो?” सुलोचन ने प्रश्न किया।

“एक श्वान, जो कदाचित् भोजन की खोज में इधर-उधर का स्थान सँघ रहा है।” सुर्जन ने उत्तर दिया।

कुछ क्षणों उपरांत वह श्वान, आशा भरी दृष्टि से भिक्षुक की ओर देखने लगा। उस भिक्षुक को दया आ गयी। उसने श्वान को दयापूर्वक अपने निकट बुलाया।

उस भिक्षुक ने अपना भोजन श्वान के साथ आधा-आधा बाँट लिया।

“अब मुझे लगता है, कि वो दोनों बड़ी रुचि से अपना भोजन कर रहे हैं।” सुलोचन मुस्कुराये।

“किंतु यह भोजन दोनों में से किसी को संतुष्ट तो नहीं करेगा।” सुर्जन ने संशय पूर्वक कहा।

“तुम गलत समझे सुर्जन, वो दोनों संतुष्ट हैं।”

“किंतु ऐसा कैसे हो सकता है!” सुर्जन अभी भी संशय में था।

“यद्यपि उनका उदर संतुष्ट न हुआ हो, किंतु उनकी आत्मा अवश्य संतुष्ट हुई है।” सुलोचन ने मुस्कुराते हुए सुर्जन की ओर देखा।

सुर्जन अभी भी संशय में था।

“क्या हुआ, किस शंका में हो?” सुलोचन ने मुस्कुराते हुए प्रश्न किया।

“हाँ, शंका तो है, क्योंकि आपका कहा गया वाक्य मुझे समझ नहीं आया।” सुर्जन ने कहा।

“यहाँ प्रश्न उदर की संतुष्टि का नहीं, अपितु आत्मा की संतुष्टि का है। वो एक भिक्षुक एक मनुष्य है, उसके पास विचार करने की क्षमता है और निःसंदेह उसकी आत्मा और मन पवित्र हैं। भूखे रहने की पीड़ा से वो परिचित है, इसलिए वह चाहता है कि उसके सामने खड़ा श्वान उस पीड़ा को न भोगे। ऐसा प्रतीत होता है कि वो अपने आस-पास के जीवों को पीड़ा में नहीं देख सकता, इसलिए सामर्थ्य अनुसार उन्हें संतुष्ट करने का प्रयत्न कर रहा है।” सुलोचन ने विस्तार से बताया।

“तो यह मेरे लिए एक शिक्षा थी, है न?” सुर्जन के मुख पर मंद मुस्कान छा गयी।

“हाँ, तुम्हारा अनुमान उचित ही है; एक शिक्षा आत्मा की संतुष्टि की। तुम असुरों के महामहिम हो। आर्यावर्त का सबसे सामर्थ्यवान योद्धा भी तुम्हारा सामना नहीं कर सकता। उस भिक्षुक की ओर देखो, उसे हर दिन भूख से लड़ना पड़ता है, संघर्ष करना पड़ता है; फिर भी यह जानते हुए उसने अपना भोजन बचाने या अपने उदर को संतुष्ट करने के स्थान पर अपने सामर्थ्य अनुसार अपना भोजन बाँटकर अपनी आत्मा को संतुष्ट करने का चुनाव किया। अर्थात् वो तो अपने जीवन को सफल बनाकर अपनी मुक्ति के मार्ग पर चल पड़ा है। अब तुम बताओ, क्या तुम अपने जीवन से संतुष्ट हो, क्योंकि तुम उस क्रूर राजा जयवर्धन की कठपुतली मात्र हो।” सुलोचन ने प्रश्न उठाया।

“यह सत्य नहीं है; मैं असुरों का महानायक हूँ और समग्र संसार को इस बात का ज्ञान है। मैं उसकी कठपुतली नहीं, अपितु केवल उसका सहायक हूँ।” सुर्जन ने उत्तर दिया।

“किंतु तुम करते तो वैसा ही हो जैसा विदर्भ का वो नरेश तुमसे करने को कहता है, क्या यह सत्य नहीं है?” सुलोचन ने प्रश्न किया।

“मैंने उसकी सहायता का वचन लिया हुआ है।”

“एक वचनबद्ध सहायक और दास में अधिक भेद नहीं होता असुरेश्वर दुर्भिक्षा माना तुम अपने प्रण से बँधे हो, किंतु जब तुम उसके आदेश से किसी युद्ध पर जाते हो और नरसंहार करते हो, तो क्या उन लोगों से तुम्हारी कोई निजी शत्रुता रहती है, जिनका रक्त तुम उस क्रूर राजा के लिए बहाते हो... या वो नरसंहार और अपने नाम का भय फैलाना तुम्हें संतुष्टि देता है; क्या है तुम्हारे मन के संतोष का भेद? मैं जानना चाहता हूँ, कि लोगों के मन में तुम अपनी कैसी छवि बनाना चाहते हो।”

कुछ क्षण विचार करने के उपरांत सुर्जन ने उत्तर दिया, “एक आदर्श योद्धा के रूप में, ओ

कभी अपना वचन भंग नहीं करता।”

“किंतु तुम्हारी इस छवि से संसार परिचित तो नहीं है सुर्जन; तुम तो किसी और कार्य के लिए ही विख्यात हो।” सुलोचन ने उस पर छीटाकशी की।

“मैं कभी ऐसा नहीं चाहता था। ये प्रश्न तो हर समय मेरी आत्मा के द्वार पर दस्तक देता रहता है, कि वास्तव में चाहता क्या हूँ?”

“ऐसा इसलिए है, क्योंकि तुम्हारे जीवन का कोई उद्देश्य है ही नहीं।” सुलोचन ने कहा।

“हाँ, कुछ ऐसा ही प्रतीत होता है।” सुर्जन ने साँस भरते हुए कहा।

“वो कन्या तुम्हारा उद्देश्य हो सकती है।”

“वो कन्या..।” सुर्जनने संशयपूर्वक सुलोचन की ओर देखा।

सुलोचन मुस्कुराये, “हाँ, वो कन्या... एक पुरुष की इच्छा और क्या होती है, कि उसे अपने जीवन में प्रेम मिले और परिवार की सारी प्रसन्नता प्राप्त हो।”

“क्या आपको गरुड़राज की पत्नी का श्राप स्मरण नहीं?” सुर्जन ने पूछा।

सुलोचन मुस्कुराया, “वो श्राप तो बहुत ही साधारण सा था; मृत्यु का श्राप और वो तो हर जीव का प्रारब्ध है, उससे कोई नहीं भाग सकता।”

“मुझे मृत्यु का कोई भय नहीं है।” सुर्जन ने दृढ़ता से उत्तर दिया।

“मैं जानता हूँ सुर्जन। मृत्योपरांत हम सब मिट्टी के बने जीव इसी मिट्टी में समा जाते हैं, और वो हमारी आयु नहीं अपितु हमारा नाम है, जो शेष रह जाता है, आयु का वो कोई महत्व होता ही नहीं।”

सुर्जन ध्यानपूर्वक सुन रहा था।

सुलोचन ने कहना जारी रखा, “अब तक संसार ने तुम्हारी क्रूरता देखी है और अब तुम गंधर्वों के रक्षक बनकर आये हो। तुम उस क्रूर उपनंद से युद्ध करने वाले हो; देखते हैं, कि लोगों की प्रतिक्रिया में क्या अंतर आता है, यह अंतर तुम्हारे मन को संतोष प्रदान करता है या नहीं।”

कुछ क्षण विचार करने के उपरांत सुर्जन ने सहमति जताई, “मैं भी उस पल की प्रतीक्षा में हूँ।”

“तो दुर्धरा के विषय में क्या करना है?” सुलोचनने प्रश्न किया।

“पहले हम अपना मुख्य कार्य संपन्न कर लें, उसके विषय में हम बाद में विचार करेंगे।” सुर्जन ने झेंपते हुए कहा।

“जैसा तुम उचित समझो।” सुलोचन ने सहमति जताई।

“अब हमें थोड़ा विश्राम कर लेना चाहिए।” सुर्जन ने जम्हाई लेते हुए कहा।

“हाँ, अभी हमारे पास कोई और कार्य तो है नहीं, चलो लौट चलते हैं।” सुलोचन ने सहमति जताई।

शीघ्र ही सुर्जन और सुलोचन शिविर में लौट आये और विश्राम के लिए लेट गया। वो दोनों एक ही शिविर में विश्राम कर रहे थे।

शीघ्र ही एक तलवार सुलोचन की गर्दन पर आयी। उनके नेत्र खुल गए।

“मौन रहो...।” वो तलवार दुर्धरा के हाथ में थी। उसने धीमे स्वर में सुलोचन को मौन रहने का संकेत दिया।

सुलोचन ने उसके संकेत का मान रखा।

“बाहर आओ” दुर्धरा ने सुलोचन को संकेत किया।

दुर्धरा और सुलोचन शिविर से बाहर आये। रात्रि का अंधकार चारों दिशाओं में छाया हुआ था। इसके उपरांत दुर्धरा ने सुलोचन की ओर मुड़कर प्रश्न किया, “अब बताओ, कौन हो तुम?”

“एक व्यापारी, बताया तो था।” सुलोचन ने उत्तर दिया।

“तो फिर यह रीछराज कौन है?” दुर्धरा ने सुलोचन के कंठ पर तलवार रख क्रोध में प्रश्न किया।

सुलोचन मुस्कुराये, “मैं जानता था, किंतु यह अनुमान नहीं था कि तुम इतनी शीघ्र अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर दोगी।”

“अंतिम अवसर दे रही हूँ, कौन हो तुम?” दुर्धरा का क्रोध बढ़ता ही जा रहा था।

सुलोचन अपने वास्तविक अर्थात् रीछराज जामवंत के रूप में आ गए, “जैसा की तुमने सुन रखा था, रीछराज जामवंत कहते हैं मुझे।”

उस विशालकाय रीछ को देख दुर्धरा के हाथ से तलवार गिर पड़ी।

“भयभीत मत हो, पुत्री तुमने कदाचित् मेरे विषय में सुना ही होगा; मैं वही हूँ जिससे तुम भलीभाँति परिचित हो।” जामवंत मुस्कुराये।

दुर्धरा अपने घुटनों के बल झुक गयी, “रीछराज जामवंत... प्राचीन काल के महायोद्धा।”

“तो जैसा कि मैंने अनुमान लगाया था, तुम तो मुझसे परिचित हो।” जामवंत अभी भी मुस्कुरा रहे थे।

“म... मुझे क्षमा कीजिये महामहिम, मैं बस...” दुर्धरा हिचकिचाहट में थी।

“मेरे मन में तुम्हारे लिए कोई द्वेष नहीं है पुत्री, भूमि से उठो।” जामवंत ने कहा।

दुर्धरा ने उठकर जामवंत की ओर देखा। वो मौन रही।

“तुम सोच रही होगी कि मैं यहाँ क्यों आया हूँ, है न?” जामवंत ने मुस्कुराते हुए प्रश्न किया।

“हाँ हाँ महामहिम।” दुर्धरा अभी भी हिचकिचा रही थी।

“वो आर्यावर्त का सबसे महान योद्धा है, जिसे तुम्हारी आवश्यकता है।”

“अ... आप किसके विषय में बात कर रहे हैं महामहिम?” दुर्धरा ने प्रश्न किया।

“उसी के विषय में, जिसका तुम पीछा कर रही थी और तुम्हें सत्य का अनुमान हुआ।”

“सु... सुर्जन?” दुर्धरा के मुख से शब्द फूटे।

“हाँ, वो महान योद्धा सुर्जन, जिसे संसार असुरेश्वर दुर्भीक्ष के नाम से जानता है।” जामवंत ने उजागर किया।

दुर्धरा वह नाम सुन स्तब्ध रह गयी। उसके मन में थोड़ा भय भी समा गया। “अ...असुरेश्वर दुर्भीक्ष... मैंने सुना है उसके विषय में; वो आर्यावर्त का सबसे नीच, क्रूर और भयंकर योद्धा है।”

“यह सब भ्रान्ति हैं दुर्धरा; वो वैसा नहीं है... वो केवल उस क्रूर राजा जयवर्धन का सहायक है। उसका हृदय पवित्र है और केवल तुम ही हो, जो उस पवित्र हृदय को स्वर्ण हृदय में परिवर्तित कर सकती हो।” जामवंत, दुर्धरा को समझाने का भरसक प्रयत्न कर रहे थे।

“व... वो एक असुर है महामहिम, मैं यह कैसे करूँगी?” दुर्धरा के मुख पर भय सा छा गया।

“हाँ मैं जानता हूँ; वो एक ऐसा मनुष्य है, जिसकी आधी आत्मा आसुरी है... किंतु तुमने तो उसे देखा है, क्या तुम्हें वो असुर प्रतीत होता है?” जामवंत ने प्रश्न किया।

“नहीं महामहिम, मुझे ऐसा लगा तो नहीं।” दुर्धरा ने उत्तर दिया।

“उसके जीवन का केवल एक ही लक्ष्य है, वो अपनी पहचान एक आदर्श योद्धा के रूप में बनाना चाहता है, जो कभी अपने वचन से पीछे नहीं हटता। किंतु वो अकेला है; उसके चारों ओर वो कपटी लोग घूमते रहते हैं, जो उसे पथ भ्रष्ट करने का प्रयत्न करते रहते हैं और संसार यह सोचता है कि वह स्वयं ही एक दुर्दांत है, किंतु यह सत्य नहीं है; सत्य तो यह है कि उसके हृदय में तुम्हारे प्रति भावनायें उत्पन्न होने लगी हैं।”

“आप ऐसा कैसे कह सकते हैं?” दुर्धरा ने प्रश्न किया।

“असुरेश्वर दुर्भीक्ष अपने क्रोध के लिए जाना जाता है। तुमने उस पर क्रोध किया, उस पर कई बार चीखी, किंतु उसने सदैव मुस्कुराकर ही उत्तर दिया... क्यों वो तुमसे इतने कोमल भाव से व्यवहार करता है?” जामवंत ने प्रश्न किया।

दुर्धरा विचारों में खो गयी।

जामवंत ने कहना जारी रखा, “वो अकेला है, उसे तुम्हारी आवश्यकता है, अन्यथा पापी लोग उसका पथ भ्रष्ट करते रहेंगे।”

“किंतु उसके पास तो आपका साथ है महामहिम, इससे उचित और क्या हो सकता है।” दुर्धरा ने कहा।

“मेरा कार्य सम्पन्न हुआ, अब मेरे प्रस्थान का समय हो चला है; अब मैं सब कुछ तुम पर छोड़ रहा हूँ... मेरे जाने के उपरांत उसे ढाँढ़स बँधाना तुम्हारा कार्य है और इस बात का ध्यान रखना, उसे और किसी को भी यह सत्य ज्ञात नहीं होना चाहिए, कि मेरी भेंट तुमसे हुई थी।” जामवंत ने उसे चेताया।

“किंतु...” इससे पूर्व कि दुर्धरा कुछ कहती, जामवंत वहाँ से अदृश्य हो गए।

“मैं उसे कैसे समझाऊँगी?” दुर्धरा के मन में प्रश्न उमड़ा।

कुछ क्षणों उपरांत वो सुरजन के शिविर में गयी और बाहर से ही शिविर का वस्त्र हटाकर उसके मुख को निहारने लगी। उसके मुख का तेज अद्भुत और आकर्षक था। निद्रा में वो और भी मनमोहक प्रतीत हो रहा था।

कुछ क्षण उसे निहारने के उपरांत दुर्धरा अपने शिविर की ओर लौट गयी।

* * *

सूर्य की पहली किरण के साथ ही सुरजन ने अपने नेत्र खोले। उसने अपने बगल में देखा, सुलोचन वहाँ नहीं थे।

“इनकी नींद तो पहले ही खुल जाती है।” शर्या से उठते ही उसने विचार किया।

अपनी शर्या को व्यवस्थित करते हुए उसे एक पत्र मिला। उसने वह पत्र उठाया और उसके शब्द पढ़े।

मेरा कार्य संपन्न हुआ; मैंने तुम्हें मार्ग दिखा दिया है, अब तुम्हें कौन सा मार्ग चुनना है, यह तुम पर निर्भर है।

-जामवंत

सुरजन वह पत्र पढ़ स्तब्ध रह गया। वो शिविर से बाहर आया और हर दिशा में दृष्टि घुमायी।

वो एक गंधर्व की ओर बढ़ा और उससे प्रश्न किया, “सुनो, तुमने मेरे सरदार को देखा क्या?”

“आपके सरदार?” उस गंधर्व ने अचरच भाव से प्रश्न किया।

“जो व्यापारी जो मेरे साथ आये थे, मैं उनके विषय में बात कर रहा हूँ; क्या तुमने उन्हें देखा है?” उसने एक बार फिर प्रश्न किया।

“नहीं, हमने तो उन्हें नहीं देखा।” उस गंधर्व ने निराशाजनक उत्तर दिया।

सुर्जन हर किसी से अपने सरदार के विषय में व्यग्रता से प्रश्न कर रहा था। दुर्धरा उसके पीछे पीछे चल रही थी।

अंततः सुर्जन हारकर नदी किनारे एक पत्थर पर बैठ गया। दुर्धरा ने एक वृक्ष की ओट में छुपकर उस पर दृष्टि जमाई हुई थी।

“आपने भी मेरा त्याग कर दिया रीछराजा।” उसके नेत्रों से अश्रु की चंद बूँदे छलक पड़ीं।

उसका मस्तक नीचे था। अकस्मात् ही एक हाथ ने उसके कंधे को छुआ।

“क्या हुआ, तुम यहाँ क्या कर रहे हो?” वो दुर्धरा थी, जिसने यह प्रश्न किया था।

सुर्जन ने पीछे मुड़कर देखा। उसके नेत्र भीने थे, “वो कुछ नहीं, बस यूँ ही।”

“यूँ ही... अपने सरदार का स्मरण कर रहे हो?” दुर्धरा ने उसकी ओर देखा।

“हाँ... ऐसा ही कुछ है।” सुर्जन ने मुस्कुराकर उत्तर दिया।

“तुम्हें अपने मुख पर यह बनावटी मुस्कुराहट लाने की आवश्यकता नहीं है।”

“बनावटी मुस्कुराहट? यह क्या कह रही हो?” सुर्जन ने हिचकिचाते हुए कहा।

सुर्जन ने उसकी आँखों में क्षणभर के लिए देखा।

“तुम उन्हें इतना क्यों स्मरण कर रहे हो? वो तो केवल एक सरदार थे, जिन्होंने तुम्हें अपना दास बनाया हुआ था।” दुर्धरा ने कहा।

सुर्जन ने उठकर स्पष्ट शब्दों में दुर्धरा से कहा, “मैं तुम्हें यह सब नहीं समझा सकता।”

वो पीछे मुड़कर जाने लगा। दुर्धरा ने उसका हाथ पकड़कर रोका।

वो उठी और सुर्जन के नेत्रों में देखा, “जीवन में हर व्यक्ति सदैव तुम्हारे साथ नहीं रह सकता, तुम्हारा उन पर कोई अधिकार नहीं था। कदाचित् वो तुम्हारे जीवन में किसी उद्देश्य से आये थे और कदाचित् वो उद्देश्य पूर्ण हो गया होगा।”

सुर्जन के पास कहने को शब्द नहीं थे। वो मौन रहा। वहीं दुर्धरा उसके निकट आयी, उसकी कमर पकड़ी और उसके होठों को चूम लिया।

इस अप्रत्याशित व्यवहार से सुर्जन स्तब्ध रह गया।

दुर्धरा ने उसके नेत्रों में देख दृढ़ता से कहा, “मैं नहीं जानती कौन तुम्हारे जीवन में स्थायी रहेगा या नहीं; किंतु मैं तुम्हारे हृदय में स्थान बनाकर, तुम्हारे जीवन में सदैव रहना चाहती हूँ।”

सुर्जन ने कुछ क्षणों तक उसके नेत्रों की ओर देखा। उसके नेत्रों में अगाध प्रेम स्पष्ट दिखाई दे रहा था, जिसे केवल महसूस किया जा सकता था। “तो रहोगी दुर्धरा।” सुर्जन ने उत्तर दिया।

कुछ क्षणों तक वो दोनों एक-दूसरे को निहारते रहे।

“कल हमें एक अभियान को पूरा करना है, क्या तुम्हें स्मरण नहीं?” सुर्जन अपनी चेतना में लौट आया।

“ओह! हाँ; हमें अभी बहुत सारी तैयारी करनी है।” दुर्धरा मुस्कुरायी।

“वैसे तुम काफी वाचाल और साहसी हो।” सुर्जन उसे देखते हुए मुस्कुराया।

“तो तुम्हें क्या लगता है, मुझे ऐसा नहीं होना चाहिए?” दुर्धरा ने प्रश्न किया।

“नहीं... मैं ऐसा नहीं कह रहा, किंतु....।” सुर्जन ने हिचकिचाते हुए कहा।

“तुम्हारे जैसे पुरुष के लिए यह आवश्यक ही था, अन्यथा तुम तो कभी अपने हृदय की बात मुझसे कहते नहीं।” दुर्धरा पीछे हटी।

“हाँ वो तो...।” सुर्जन को कोई उतर नहीं सूझ रहा था।

“चलो, कल के लिए हमें बहुत सारी तैयारियाँ करनी हैं, चलो मेरे साथ।” दुर्धरा एक मार्ग पकड़कर चलने लगी।

“मुझे कुछ क्षणों की आवश्यकता है; तुम जाओ, मैं तुमसे शीघ्र ही मिलूँगा।” सुर्जन ने विनती की।

“तुम ठीक रहोगे?” दुर्धरा ने पूछा।

“हाँ, बिलकुल।” सुर्जन ने उसे विश्वास दिलाया।

दुर्धरा वहाँ से प्रस्थान कर गयी।

वहीं सुर्जन नदी की ओर मुड़ा। उसने जामवंत का अंतिम पत्र निकालकर एक बार फिर उन शब्दों को पढ़ा।

मेरा कार्य संपन्न हुआ। मैंने तुम्हें मार्ग दिखा दिया है, अब तुम्हें कौन सा मार्ग चुनना है, यह तुम पर निर्भर है।

-जामवंत

“अलविदा रीछराज जामवंत; आपको स्मरण रखूँगा और आपके द्वारा रचित मनगढ़ंत कथाओं को भी।” पढ़ते हुए उसके मुख पर मंद मुस्कान छा गयी।

इसके उपरांत उसने वह पत्र अपनी कमर में टँगे एक झोले में रखा, “यह सदैव मेरे साथ रहेगा... आशा करता हूँ कि यह आपकी दी हुई शिक्षा का मुझे स्मरण कराता रहे।”

5. त्रिगर्ता का युद्ध

रात्रि का समय था। सुर्जन व्यवस्था का निरीक्षण करने हेतु घूम रहा था। पाँच सहस्र डकैत और दस सहस्र गंधर्व, युद्ध की तैयारी में लीन थे।

सुर्जन ने एक डकैत को बुलाकर प्रश्न किया, “तुम्हारा सरदार कहाँ है?”

“मुझे ज्ञात नहीं; जाने से पूर्व उन्होंने मुझे बताया नहीं।” उस डकैत ने उत्तर दिया।

यह सुनकर सुर्जन को क्रोध आ गया, “उसे अभी यहाँ आने को कहो; मुझे नहीं पता तुम यह कैसे करोगे... मैं इस युद्ध में तुम सबका नेतृत्व कर रहा हूँ और मैं उसे अभी यहाँ देखना चाहता हूँ।”

“अ... अवश्य महामहिम।” वो डकैत दुर्मुद को खोजने दौड़ा।

“क्या हुआ सुर्जन?” तभी दुर्धरा वहाँ आ पहुँची।

सुर्जन दुर्धरा की ओर मुड़ा, “मुझे अभी भी संदेह है दुर्धरा; मुझे नहीं लगता कि वो दुर्मुद विश्वास के योग्य है।”

यह सुनकर गंधर्वों के सेनापति उपमन्यु ने हस्तक्षेप किया, “वो हमारे साथ वर्षों से है, निःसंदेह वो तुमसे कहीं अधिक विश्वास के योग्य है।”

सुर्जन ने क्रोध से उपमन्यु की ओर देखा, “मैं नहीं जानता कि तुम उस पर कितना विश्वास करते हो... इस योजना का नेतृत्व मैं कर रहा हूँ और वो मुझे अभी इसी समय यहाँ चाहिए।”

“मुझे भलीभाँति ज्ञात है कि वो इस समय कहाँ है। किंतु तुम्हें इससे कोई सरोकार नहीं होना चाहिए। वह एक निजी कार्य के लिए गया है, जिसके विषय में मैं कोई चर्चा नहीं कर सकता।” उपमन्यु ने रुष्टता से कहा।

“बस करो! हमें कल साथ में युद्ध करना है।” दुर्धरा ने हस्तक्षेप किया।

सुर्जन और उपमन्यु, दोनों ही मौन हो गए। उपमन्यु क्रोध में वहाँ से प्रस्थान कर गया।

* * *

वहीं डकैतों का सरदार दुर्मुद घने वन में जा रहा था। उसके साथ दो बालक भी थे और यह कोई और नहीं ‘मेघवर्ण’ और चंद्रकेतु थे। शीघ्र ही उन सभी ने एक गुफा में प्रवेश किया।

उस गुफा में सैकड़ों डकैत उपस्थित थे।

“यह कौन सा स्थान है?” चंद्रकेतु ने चलते हुए प्रश्न किया।

“अह..।” दुर्मुद उत्तर देने ही वाला था।

किंतु इससे पूर्व वो इसका उत्तर देता, मेघवर्ण ने हस्तक्षेप किया, “यह एक भयंकर गुफा है, जहाँ भयंकर असुर और चुड़ैलें निवास करती हैं; हम तुम्हें उनका भोजन बनाने ले जा रहे हैं।”

चंद्रकेतु हँस पड़ा, “अठखेलियाँ करना बंद करो। तुम्हें अपने व्यंग्य के प्रयासों को सुधारने की आवश्यकता है मेघवर्ण; मैं बारह वर्ष का हो चुका हूँ, ऐसी चीजें मुझे भयभीत नहीं कर सकती।”

“तो क्या तुम यह कहना चाहते हो, ऐसे प्राणियों का अस्तित्व पृथ्वी पर होता ही नहीं?” मेघवर्ण ने प्रश्न किया।

“ऐसे प्राणी होते भी हों, तो मेरी तलवार का एक ही प्रहार उनके लिए पर्याप्त होगा।” चंद्रकेतु ने गर्व से कहा।

“ओह तो तुम स्वयं को इतना महान योद्धा समझते हो।” मेघवर्ण ने परिहासमय स्वर में कहा।

“बस करो!” दुर्मुद ने बालकों को आदेश दिया।

सुर्जन और मेघवर्ण यह सुनकर मौन हो गए।

दुर्मुद चलता रहा और शीघ्र ही एक व्यक्ति के समक्ष पहुँचा।

वह लम्बा चौड़ा व्यक्ति एक पत्थर पर बने आसन पर बैठ गया।

“मेरा अनुसरण करो।” दुर्मुद उस व्यक्ति के समक्ष घुटनों के बल झुक गया।

मेघवर्ण और चंद्रकेतु भी उसका अनुसरण करते हुए घुटनों के बल झुक गए।

“मेरे निकट आओ।” उस व्यक्ति ने आदेश दिया। उसका मुख एक काले वस्त्र से ढका हुआ था।

दुर्मुद और बालक आगे आये।

“यहाँ आने का कारण?” उस व्यक्ति ने प्रश्न किया।

“एक युद्ध हमारे द्वार पर खड़ा है, इसीलिए मैं इन बालकों को यहाँ सुरक्षित छोड़ने आया हूँ।” दुर्मुद ने उत्तर दिया।

‘युद्ध?’ उस व्यक्ति ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“हाँ, यह युद्ध उपनंद के विरुद्ध है, इसीलिए मैं चाहता हूँ कि यह दोनों बालक आपके साथ रहें।” दुर्मुद ने कहा।

मेघवर्ण ने हस्तक्षेप किया, “तो क्या मैं इस युद्ध में भाग नहीं ले सकता? मैं भी जाऊँगा युद्ध में।”

“हाँ, तलवार चलाने की विद्या तो हम भी जानते हैं, तो हम क्यों नहीं आ सकते?” चंद्रकेतु ने उसका समर्थन किया।

“मौन रहो!” दुर्मुद उन बालकों को डपटा।

“तुम्हारी शिक्षा तो अभी आरंभ ही हुई है... किसी भी युद्ध में भाग लेने से पूर्व तुम्हें लंबे समय तक अभ्यास करने की आवश्यकता है।” उस व्यक्ति ने उन दोनों को समझाने का प्रयत्न किया।

तभी एक डकैत ने वहाँ आकर हस्तक्षेप किया, “गुरुदेव....।”

“क्या हुआ? कोई विशेष बात?” उस व्यक्ति ने प्रश्न किया।

“हमने एक द्रोही को पकड़ा है गुरुदेव।” उस डकैत ने उत्तर दिया।

डकैतों के उस गुरु के नेत्रों में क्रोध की ज्वाला स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

वो अपने आसन से उतरे और आगे बढ़े।

“मेरे साथ आओ दुर्मुद और इन दो बालकों को भी अपने साथ लाना।” डकैतों के गुरु ने आदेश दिया।

“अवश्य गुरुदेव।” दुर्मुद ने सहमति जताई।

डकैतों के गुरु, गुफा के बाहर की ओर बढ़े। दुर्मुद के साथ मेघवर्ण और चंद्रकेतु भी उनके पीछे चल पड़े।

शीघ्र ही वह सभी एक खुले मैदान में पहुँचे।

“उस द्रोही को मेरे समक्ष लाओ।” डकैतों के गुरु ने आदेश दिया।

शीघ्र ही एक डकैत को बेड़ियों में बाँधकर उनके समक्ष लाया गया।

“क्या अपराध है इसका?” डकैतों के गुरु ने प्रश्न किया।

एक डकैत ने आगे बढ़कर कहा, “जिस दिन से हम डकैतों के इस दल में सम्मिलित हुए हैं, तबसे हमने अपना मुख छुपाने का प्रण लिया हुआ है; हमारे दल के बाहर का कोई भी व्यक्ति डकैत के रूप में हमारा मुख नहीं देख सकता। किंतु इसने डकैत के ही वेश में त्रिगर्ता के एक सैनिक के समक्ष अपने मुख को ढका वस्त्र हटाया और कल होने वाले युद्ध में हमारी योजना की सूचना उसे देने वाला था।”

“तुम्हें यह कैसे ज्ञात हुआ?” गुरुदेव ने प्रश्न किया।

उस डकैत ने उन्हें एक पत्र दिखाया, “इस पत्र के कारण गुरुदेव; मुझे यह इसके पास से मिला।”

डकैतों के गुरु ने वह पत्र लिया और उसे पढ़ना आरंभ किया, “यह तो एक युद्ध की योजना है।”

“हाँ, युद्ध की वो योजना, जिसका प्रयोग कर हम कल उपनंद के विरुद्ध युद्ध करने वाले हैं।” उस डकैत सैनिक ने कहा।

गुरुदेव ने वह पत्र दुर्मुद को दिखाया, “क्या तुम इस लिखावट को पहचानते हो?”

दुर्मुद ने वह पत्र लेकर ध्यान से देखा, “नहीं गुरुदेव, मैं इस लिखावट को नहीं पहचानता।”

“उचित है, तो फिर प्रतीक्षा किस बात की है? तुम डकैतों के सरदार हो, द्रोही को उपयुक्त दण्ड देना तुम्हारा कार्य है।” गुरुदेव ने दुर्मुद की ओर देखा।

“अवश्य गुरुदेव।” दुर्मुद ने आगे बढ़कर एक तलवार उठाई।

“उसे नीचे झुकाकर, उसका सर पत्थर पर लाओ।” दुर्मुद ने आदेश दिया।

वो उस द्रोही डकैत के निकट आया।

“मैं केवल एक बार प्रश्न करूँगा; किसने भेजा है तुम्हें?” गुरुदेव ने उस द्रोही प्रश्न किया।

“मैं उनका नाम नहीं जानता।” द्रोही डकैत ने उत्तर दिया।

दुर्मुद ने भारी तलवार उठाकर कहा, “तुम पर द्रोह का आरोप सिद्ध हुआ है, जिससे तुम्हारी निष्ठा कलंकित हुई और द्रोहियों के लिए केवल एक ही दण्ड का विधान है, इसलिए मैं डकैतों का सरदार होने के नाते तुम्हें मृत्युदण्ड देता हूँ।”

उस द्रोही डकैत ने दुर्मुद की ओर देखा, “मैं निष्ठावान ही था।”

“किंतु हमारे दल के प्रति नहीं।” कहकर दुर्मुद ने भारी तलवार का वार किया। उस द्रोही डकैत का मस्तक उसके धड़ से अलग होकर छटककर दूर जा गिरा।

मेघवर्ण और चंद्रकेतु यह दृश्य देख स्तब्ध रह गए। पहली बार उन्होंने किसी का सर, धड़विहीन होते हुए देखा था।

“भयभीत मत हो बालकों, तुम्हें इस दृश्य के लिए अभ्यस्त होना होगा।” दुर्मुद, बालकों की ओर देख मुस्कुराया।

“सब के सब प्रस्थान करो यहाँ से।” गुरुदेव ने डकैतों को आदेश दिया। वहाँ उपस्थित सभी डकैत प्रस्थान करने लगे।

“तुम नहीं दुर्मुद, तुम यहीं रुको।” गुरुदेव ने उसे रुकने का आदेश दिया।

“मेरी प्रतीक्षा करना।” दुर्मुद ने मेघवर्ण और चंद्रकेतु को प्रस्थान करने का संकेत दिया।

कुछ क्षणों के उपरांत, डकैतों के गुरु और दुर्मुद के अतिरिक्त उस स्थान पर और कोई नहीं था।

“क्या यही तुम्हारी न्याय करने की प्रक्रिया है?” गुरुदेव ने क्रोध में दुर्मुद से प्रश्न किया।

“मैं समझा नहीं गुरुदेव।” दुर्मुद ने अचरज भाव से कहा।

“अभी अभी तुमने जो किया है, क्या वो उचित था?” गुरु ने प्रश्न किया।

“मेरे विचार से तो मैंने केवल अपने दल के बनाये नियमों का पालन किया है, क्योंकि द्रोह का दण्ड तो मृत्यु ही है।” दुर्मुद ने अपनी सफाई में कहा।

“हाँ, यह नियम तो है, किंतु पूरी तरह से स्थिति, अपराध और परिस्थितियों को समझे बिना क्या एक सरदार ऐसा कर सकता है?” गुरुदेव को क्रोध आ रहा था।

“मैं... मैं क्षमा चाहता हूँ गुरुदेव, किंतु मैंने तो केवल बनाये गए नियमों का अनुसरण किया है।” दुर्मुद का मस्तक नीचे था।

गुरुदेव ने दुर्मुद की ओर देखकर कहा, “हमारे दल के अधिकतर सदस्य निरक्षर हैं; तुमने ही कहा था कि केवल कुछ ही लोग हैं जो साक्षर हैं और पढ़ना-लिखना जानते हैं... और जहाँ तक मैं जानता हूँ, जिस द्रोही का सर तुमने काटा है, वो निरक्षर था; तो यह पत्र किसने लिखा, जिसमें युद्ध की योजना के विषय में बताया गया है?”

“इस बात का ज्ञान मुझे नहीं है; क्या आप मुझपर आरोप लगा रहे हैं?” दुर्मुद ने आश्चर्य से कहा।

“नहीं, मैं ऐसा तो नहीं कह रहा... कोई बात नहीं, कल के युद्ध के उपरांत हम इस घटना की गहराई तक जायेंगे, इस समय तुम प्रस्थान करो।” गुरुदेव ने आदेश दिया।

किंतु इससे पूर्व कि दुर्मुद प्रस्थान करता, एक डकैत सैनिक वहाँ दौड़ते हुए आया, ‘महामहिम!’

“क्या हुआ? तुम भागते हुए आये हो?” दुर्मुद ने उसे हाँफते हुए देख प्रश्न किया।

“वो... वो, हाँ महामहिम।” डकैत ने उत्तर दिया।

“किंतु क्यों?” दुर्मुद ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“हमारे सेनापति, जो कल युद्ध में हमारा नेतृत्व करने वाले हैं, उन्होंने आपके लिए संदेश भेजा है, वो आपसे अभी भेंट करना चाहते हैं।” उस डकैत सैनिक ने कहा।

“एक क्षण रुको।” दुर्मुद के कुछ कहने से पूर्व ही गुरुदेव ने हस्तक्षेप किया। वो उस डकैत सैनिक की ओर बढ़े।

“इसका अर्थ यह है कि इस योजना को दुर्मुद ने नहीं बनाया?” गुरुदेव ने प्रश्न किया।

“हाँ गुरुदेव, यह सत्य है।” उस डकैत सैनिक ने उत्तर दिया।

“तो फिर कौन नेतृत्व कर रहा है तुम सबका?” गुरुदेव ने एक बार फिर प्रश्न किया।

“उसका नाम सुर्जन है; वो एक साधारण से व्यापारी का अंगरक्षक है।” दुर्मुद ने हस्तक्षेप किया।

गुरुदेव ने कुछ क्षण विचार किया, “सुर्जन... क्या तुम्हें पूरा विश्वास है?”

“हाँ गुरुदेव, वही उपनंद के विरुद्ध युद्ध में हमारा नेतृत्व कर रहा है।” दुर्मुद ने कहा।

गुरुदेव ने दुर्मुद के हाथ से वह पत्र लिया, “इस पत्र को ध्यान से देखा है तुमने? यह युद्ध की एक परिपक्व योजना है; तुम्हें वाकई लगता है कि साधारण सा अंगरक्षक ऐसी योजना बना

सकता है?”

“वो...।” दुर्मुद असमंजस की स्थिति में था।

“यह संभव नहीं है और यदि मेरा अनुमान गलत नहीं है, तो मैं इस व्यक्ति को जानता हूँ; इसका नाम मैं पहले भी सुन चुका हूँ और यदि ये वही है, जो मैं सोच रहा हूँ, तो हम सब एक बहुत बड़े संकट से घिर चुके हैं।” गुरुदेव ने चिंतित स्वर में कहा।

“मैं आपकी बात समझ नहीं पा रहा गुरुदेव।” दुर्मुद ने संशयपूर्वक कहा।

“इस वार्ता के लिए अभी समय नहीं है हमारे पास और तुम चिंतित मत हो, युद्ध के दौरान मेरी दृष्टि तुम पर रहेगी। इस समय तुम यहाँ से प्रस्थान करो और एक बात अपने मस्तिष्क में बिठाकर रखो, कि तुम्हें उस योद्धा से उलझना नहीं है; वो जैसा निर्देश देता है, तुम उसका अनुसरण करो।” गुरुदेव ने आदेश दिया।

“किंतु... गुरुदेव...” दुर्मुद असमंजस की स्थिति में था।

“जैसा मैंने कहा है, तुम बिलकुल वैसा ही करोने... यदि मेरा अनुमान उचित है, तो वो योद्धा बहुत ही भयंकर और संकटाकरी है।” गुरुदेव ने भारी स्वर में आदेश दिया।

“जो आज्ञा गुरुदेव।” दुर्मुद उनका आदेश मानने पर विवश हो गया। वो वहाँ से प्रस्थान कर गया।

इसके उपरांत डकैतों के गुरु अपने अश्व पर आरुढ़ हुए और एक निश्चित स्थान की ओर बढ़ चले।

कुछ समय तक चलने के उपरांत वह एक वृक्ष के निकट पहुँचे। उस वृक्ष की नीचे एक महाऋषि ध्यान में लीन थे।

डकैतों के गुरु अपने अश्व से उतरे और अपने मुख को ढका वस्त्र हटाया।

वृक्ष के नीचे बैठे महाऋषि ने अपने नेत्र खोले और उनकी ओर देखा, “आप यहाँ कई मास के उपरांत पधारें हैं महाबली अखण्ड।”

“हाँ महर्षि शंकराचार्य। यहाँ आने का कारण गंभीर है।” डकैतों के गुरु महाबली अखण्ड ने उत्तर दिया।

महर्षि शंकराचार्य उठकर महाबली अखण्ड के निकट आये, “क्या हुआ, आप बहुत चिंतित दिखाई दे रहे हैं।”

“हाँ, चिंता का ही तो विषय है।”

“किंतु ऐसा क्या हुआ?” महर्षि ने प्रश्न किया।

“वो लौट आया है। जिस दुर्दांत योद्धा के कारण हमने अपनी जन्मभूमि छोड़ी थी, वह लौट आया है।” महाबली अखण्ड ने कहा।

‘दुर्भीक्ष?’ महाऋषि शंकराचार्य स्तब्ध रह गए।

‘कदाचित्’

“कदाचित्? अब इसका क्या अर्थ है?” शंकराचार्य ने प्रश्न किया।

अखण्ड ने युद्ध-योजना का वह पत्र शंकराचार्य को दिखाया। “युद्ध के लिए बनायी गयी इस योजना की ओर देखिये; जिस योद्धा ने यह योजना बनायी है, वह उपनंद के विरुद्ध गंधर्वों और डकैतों की सेना का नेतृत्व कर रहा है और दुर्मुद के अनुसार वह एक साधारण से व्यापारी का अंगरक्षक है।”

‘और?’ शंकराचार्य ने प्रश्न किया।

“और उसका नाम सुर्जन है।”

शंकराचार्य ने युद्ध-योजना को ध्यान से देखा, “मैं आपसे सहमत हूँ अखण्ड; एक साधारण अंगरक्षक तो ऐसी योजना नहीं बना सकता।”

“और ऐसा कौन है जिसमें उपनंद जैसे महारथी को चुनौती देने का साहस हो।” अखण्ड ने कहा।

शंकराचार्य के मुख पर भी चिंता स्पष्ट दिखाई देने लगी, “आपका अनुमान उचित ही है अखण्ड; मुझे पूरा विश्वास हो चला है कि यह वही है... इसका अर्थ तो यह है कि...।”

“इसका अर्थ यह है कि समय आ गया है; यदि दुर्भीक्ष को मेघवर्ण और चंद्रकेतु के विषय में ज्ञात हो गया, तो वो उन्हें छोड़ेगा नहीं। अब हमें उनकी वास्तविक शिक्षा प्रारंभ करनी होगी, ताकि वो दुर्भीक्ष के विरुद्ध खड़े हो सकें, इसलिए मैंने निर्णय ले लिया है, उन बालकों को जितना बचपन जीना था, उन्होंने जी लिया, अब से वो अपनी शिक्षा के लिए हमारे साथ ही रहेंगे।” महाबली ने एक कठोर निर्णय लिया था।

“हाँ, यह उन दोनों के लिए आवश्यक है, आप इस पर अमल कीजिये।” शंकराचार्य ने सहमति जताई।

“हाँ ऋषिवर, किंतु पहले मुझे आने वाले युद्ध पर अपनी दृष्टि जमानी है। मैं जानना चाहता हूँ कि उसका यहाँ आने का वास्तविक उद्देश्य है क्या; क्यों दुर्भीक्ष, उपनंद के विरुद्ध गंधर्वों और डकैतों की सहायता कर रहा है?” अखण्ड के मन में कई प्रश्न उमड़ रहे थे।

“हाँ, हमें इस बात की गहराई तक जाना होगा।” महर्षि शंकराचार्य ने अखण्ड का समर्थन किया।

“मुझे अब प्रस्थान करना होगा, आज्ञा दीजिये।” महाबली ने अपने हाथ जोड़े और शंकराचार्य से विदा लेकर अपने अश्व पर आरुढ़ हो गए।

वहीं दुर्मुद शिविर में पहुँचा, जहाँ सुर्जन उसकी प्रतीक्षा में था।

“कहाँ थे तुम?” सुर्जन ने क्रोधवश प्रश्न किया।

इसके विपरीत दुर्मुद ने बड़े ही शांत भाव से उत्तर दिया, “कदाचित्, हमारे पास इन बातों के लिए समय शेष नहीं है... मैं बस युद्ध से पूर्व, मेघवर्ण और चंद्रकेतु को सुरक्षित स्थान पर छोड़ने गया था।”

उसके व्यवहार में यह अकस्मात् परिवर्तन देख सुर्जन को आश्चर्य हुआ।

“तो क्या अब हम कल के युद्ध में अपने अपने दायित्वों पर विचार-विमर्श करें?” दुर्मुद ने प्रश्न किया।

“हाँ हाँ, अवश्य।” सुर्जन ने सहमति जताई।

‘इसके व्यवहार में इस अकस्मात् परिवर्तन का कारण क्या हो सकता है?’ सुर्जन विचारों में था।

“तो फिर चलो, करते हैं विचार-विमर्श।” दुर्मुद एक पत्थर पर बैठ गया।

सुर्जन और अन्य योद्धा भी अलग-अलग पत्थरों पर बैठ गये। इसके उपरांत उन सभी ने युद्ध की योजना पर विचार-विमर्श आरंभ किया।

* * *

दुर्गाष्टमी का वह सवेरा आ ही गया। सभी गंधर्व और डकैत योद्धा अपने अपने निश्चित स्थान पर नियुक्त थे।

इससे अनभिज्ञ, उपनंदने देवी महादुर्गा का पूजन आरंभ किया।

कंधे पर धनुष और बाणों से भरा तूरीण लिए सुर्जन वन की सीमा पर खड़ा था। नगर का द्वार उस स्थान से लगभग तीन सौ गज की दूरी पर था।

उसने एक भाला उठाया और उस पर तेल से भीगा हुआ वस्त्र बाँधा। कुछ क्षण उपरांत उसने अपने मुख से एक गुप्त ध्वनि उत्पन्न की।

फलस्वरूप दस बलिष्ठ योद्धा, घने वन से बाहर आये। उन सभी के हाथ में जलते हुए भाले थे। सुर्जन ने अपने भाले को उनमें से एक के भाले से स्पर्श कराया।

अब वहाँ उपस्थित ग्यारह योद्धाओं के पास ग्यारह जलते हुए भाले थे।

“नगर के मुख्य-द्वार की ओर देखो; वो द्वार यहाँ से लगभग तीन सौ गज की दूरी पर है। उसके निकट ग्यारह लकड़ी के बने ऊँचे मचान हैं। मैंने बहुत परीक्षण के उपरांत तुम दसों को चुना है; स्मरण रहे, लक्ष्य चूकना नहीं चाहिए।” सुर्जन ने आदेश दिया।

“नहीं चूकेगा महामहिम; हम आपको निराश नहीं करेंगे।” उनमें से एक ने सुर्जन को विश्वास दिलाया।

“तो फिर सज्ज रहो।” सुर्जन ने आदेश दिया।

“हम सज्ज हैं।” सभी योद्धाओं ने एक साथ साहस से कहा।

“मेरा अनुसरण करो।” सुर्जन ने अपने पैर पीछे किये और एक निश्चित अवस्था में खड़ा हो गया।

उसने जलता हुआ भाला पूरी गति से फेंका। शेष दस योद्धाओं ने उसका अनुसरण किया।

सारे लक्ष्य लगभग सटीक थे। वह ग्यारह भाले ग्यारह ऊँची मचानों से टकराए।

द्वार-रक्षक इस आकस्मिक प्रहार से स्तब्ध रह गए। जलते हुए मचानों के सैनिक अपने प्राण बचाने के लिए कूद पड़े।

तीन सौ गज की दूरी से एक द्वार-रक्षक ने सुर्जन की ओर देखा। उसने एक तीव्र स्वर वाला शंख बजा दिया।

यह संकट का संकेत था। लगभग सौ सैनिक नगर द्वार से बाहर आये।

“तुम सब वन के भीतर जाओ!” सुर्जन के उस आदेश पर सभी दस योद्धा वन के भीतर चले गए और उसकी गहराइयों में खो गए।

“धनुर्धारी...!” उसके अगले आदेश पर लगभग एक सौ पचास धनुर्धर वन से बाहर आये।

“मेरे संकेत पर बाण चलाना।” सुर्जन शत्रुओं के निकट आने की प्रतीक्षा कर रहा था।

“वो भेदन सीमा में आ गये हैं, बाण संधान!” सुर्जन ने आदेश दिया।

एक साथ एक सौ पचास बाण तीव्र गति से हवा में उड़े। उन बाणों ने त्रिगर्ता के कई योद्धाओं को घायल किया। उनमें से कुछ मारे भी गये।

त्रिगर्ता के उन सौ सैनिकों में से एक ने नगरद्वार की ओर देख, पुकार लगायी, “हमें सहायता की आवश्यकता है!”

धनुर्धर कुछ दूरी पर खड़े हुए लगातार बाण पर बाण चला रहे थे।

यह देख नगरद्वार पर खड़े दो रक्षकों ने एकसाथ शंख फूँका।

सुर्जन मुस्कुराया।

कुछ ही समय में लगभग एक सहस्र सैनिक त्रिगर्ता नगरी के मुख्य-द्वार से बाहर आये।

सुर्जन ने अपने धनुर्धरों को आदेश दिया, “जाओ और अपने-अपने निश्चित स्थान को सँभालो।”

वो एक सौ पचास धनुर्धर वन के भीतर भागे और उन दस वृक्षों की तीन पंक्तियों में अपने-अपने स्थान पर खड़े हो गए।

शत्रु को भेदन सीमा के निकट आते देख, सुर्जन चीखा, “पहली पंक्ति, सज्ज हो जाओ।”

उसके आदेश पर पहली पंक्ति के दस वृक्ष की दस शाखाओं पर बँधे पाँच पाँच बाणों वाले धनुष तैयार थे। हर वृक्ष के लिए पाँच धनुर्धर उन धनुषों की रस्सी पकड़े आक्रमण को सज्ज थे।

‘आरंभ!’ सुर्जन ने अगला आदेश दिया।

उन धनुर्धरों ने वृक्ष से बँधी हुई उन रस्सियों को खींचा जिससे हर वृक्ष की शाखा के दस धनुष जुड़े हुए थे। पाँच सौ बाणों के साथ सौ धनुष आक्रमण को सज्ज थे।

जैसे ही सुर्जन ने शत्रु को भेदन सीमा के भीतर पाया। उसने चीखते हुए स्वर में आदेश दिया, “पहली पंक्ति, संधान!”

एक साथ पाँच सौ बाण घने वृक्षों की ओट से आकाश की ओर तीव्र गति से उड़े। पहली पंक्ति के बाण छूटते ही गंधर्व धनुर्धर घने वन में पलायन कर गए।

त्रिगर्ता के सैनिक गिरने लगे।

वहीं सुर्जन वहाँ स्थिर खड़ा था। उसने मुस्कुराकर एक और आदेश दिया, “दूसरी पंक्ति, संधान!”

उसके अगले आदेश पर, दूसरी वृक्षों की पंक्ति से भी पहली पंक्ति की ही भाँति पाँच सौ बाण छूटे। बाण छोड़ते ही पहली पंक्ति की भाँति दूसरी पंक्ति के धनुर्धर भी घने वन में लुप्त हो गये।

“वो बाण वन के पीछे से आ रहे हैं... वो अपनी पूरी शक्ति से आक्रमण कर रहे हैं।” त्रिगर्ता के एक सैनिक ने दूसरे से कहा।

“हाँ, तुम सत्य कह रहे हो; हमें इन्हें पराजित करने के लिए सेना और सेनापति की आवश्यकता होगी।” दूसरे सैनिक ने उसका समर्थन किया।

“पीछे हटो!” उस आदेश पर त्रिगर्ता के सैनिक पीछे हटने लगे।

सुर्जन मुस्कुरा रहा था।

वो दुर्गाष्टमी का सवेरा था। उपनंद अब भी माँ दुर्गा के पूजन में लीन था। कीर्तिध्वज कुछ सैनिकों के साथ देवी के मंदिर की सुरक्षा में था।

कुछ क्षणों उपरांत, त्रिगर्ता का एक घायल सैनिक वहाँ आया।

कीर्तिध्वज उसकी दशा देख स्तब्ध रह गया। वो उसकी ओर बढ़ा। “क्या हुआ?”

“हम पर आक्रमण हुआ है।” उस द्वार-रक्षक ने सूचित किया।

“आक्रमण हुआ है? किसने आक्रमण किया है हम पर?” कीर्तिध्वज ने प्रश्न किया।

“वन के भीतर से गंधर्व सेना लगातार हम पर आक्रमण किये जा रही है; वृक्षों के पीछे से सहस्रों बाण बरस रहे हैं। उनसे युद्ध करते हुए हमारे लगभग तीन सौ सैनिक वीरगति को प्राप्त हो चुके हैं और चार सौ से भी अधिक घायल हो गए हैं।” द्वार-रक्षक ने विस्तृत किया।

उपनंद यह सब सुन रहा था, किंतु उसने एक शब्द नहीं कहा। वो अपने पूजन में लीन रहा।

“ठीक है, तुम प्रस्थान करो।” कीर्तिध्वज ने उस रक्षक को आदेश दिया।
इसके उपरांत कीर्तिध्वज ने एक दूसरे सैनिक को आदेश दिया, “जाओ, और सेनापति सुवर्मा को खोजकर ले आओ।”

“अवश्य महामहिम।” वह सैनिक, सुवर्मा की खोज में निकल पड़ा।
शीघ्र ही वह सैनिक लौटकर आया। “सेनापति सुवर्मा यहाँ उपस्थित नहीं हैं महामहिम, उनका कक्ष रिक्त है।”

यह सुनकर कीर्तिध्वज चीखा “जाओ, और महल के हर कोने में उन्हें ढूँढो।”
कई सैनिक सुवर्मा की खोज में दौड़ पड़े।
वहीं सुर्जन, वन की सीमा पर खड़ा अपने शत्रुओं की प्रतीक्षा में था।
“तो इतना समय क्यों लगा रहे हैं?” उसके मुख पर चिंता के भाव आने लगे।
सुवर्मा की खोज में भेजे गए त्रिगर्ता के सभी सैनिक मंदिर लौट आये।
“सेनापति सुवर्मा हमें नहीं मिले।” सभी सैनिकों का यही उत्तर था।
कीर्तिध्वज स्तब्ध रह गया। उसने मुड़कर उपनंद की ओर देखा। वो अभी भी अपनी पूजन में लीन था।

“तो फिर ठीक है, इस युद्ध में मैं तुम्हारी सेना का नेतृत्व करूँगा; मेरे साथ आओ।”
कीर्तिध्वज ने आदेश दिया।

कीर्तिध्वज महल में कुछ सैनिकों के साथ चल रहा था। उनमें से एक से उसने प्रश्न किया,
“हमारा संख्याबल कितना है?”

“लगभग आधी अक्षौहिणी महामहिम।” एक सैनिक ने उत्तर दिया।

“क्या तुम्हें गंधर्वों के सैन्यबल के विषय में कोई ज्ञान है?” उसने उसी सैनिक से प्रश्न किया।

“उनकी सैन्य-संख्या लगभग दस सहस्र है महामहिम।” उस सैनिक ने उत्तर दिया।

“तो फिर ठीक है; एक चौथाई अक्षौहिणी सेना युद्ध के लिए एकत्र करो।” कीर्तिध्वज ने आदेश दिया।

“जो आज्ञा महामहिम।” वो सैनिक कार्य संपन्न करने हेतु प्रस्थान कर गया।

वहीं वन की सीमा पर खड़ा सुर्जन अधीर हो रहा था। वो गहन विचारों में था, “क्या होगा उनका अगला कदम? एक प्रहर में उपनंद का पूजन संपन्न हो जायेगा; यह हमारी योजना विफल कर सकता है।”

किंतु उसे और प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी।

त्रिगर्ता नगरी का मुख्य द्वार पूरी तरीके से खोल दिया गया।

लगभग साठ सहस्र की सेना उस द्वार से बाहर आयी।

लगभग 15,000 अश्वारोही, 28,000 पैदल सैनिक, 5,000 युद्धक हाथी और 5,000 रथ त्रिगर्ता की नगरी से बाहर आ रहे थे।

अगले ही क्षण सुर्जन की दृष्टि कीर्तिध्वज पर पड़ी, “हस्तिनापुर का सेनापति, ये यहाँ क्या कर रहा है? मैं तो सुवर्मा के आने की आशा में था।”

“मुझे अपना मुख छुपाना होगा।” सुर्जन ने अपना मुख एक वस्त्र से ढक लिया और वन के भीतर दौड़ा।

वहीं कीर्तिध्वज सामने से सेना का नेतृत्व कर रहा था।

त्रिगर्ता की सेना के समक्ष अब कोई योद्धा नहीं था। यह देख कीर्तिध्वज ने एक सैनिक से कहा, “यहाँ तो कोई सेना है ही नहीं।”

“वो वृक्षों के पीछे से हम पर आक्रमण कर रहे थे महामहिम।” त्रिगर्ता के उस सैनिक ने उत्तर दिया।

वहीं सुर्जन वन के भीतर आ चुका था। उसने तीसरे वृक्ष के निकट खड़े धनुधरों को आदेश दिया, “सज्ज हो जाओ।”

दस वृक्षों की कमान सँभाले पचास योद्धाओं की अंतिम पंक्ति रस्सी खींचकर बाणों के संधान के लिए सज्ज हो गयी।

कीर्तिध्वज अपनी सेना के साथ वन के निकट निरीक्षण के लिए आ रहा था।

“वो भेदन सीमा में आ गए हैं, संधान करो।” सुर्जन ने आदेश दिया।

पचास गंधर्वों ने रस्सी छोड़ दी। पाँच सौ बाण आकाश में तीव्र गति से उड़े।

‘भागो!’ सुर्जन ने उन पचासों योद्धाओं को आदेश दिया। वो पचास योद्धा भी वहाँ से पलायन कर गए।

“ढाल कवचा।” कीर्तिध्वज ने अपने सैनिकों को आदेश दिया।

भेदन सीमा में खड़े सैनिकों ने स्वयं को ढालों से ढक लिया। इस आक्रमण में उनमें से किसी को भी कोई क्षति नहीं पहुँची।

“यही आशा थी इनसे।” सुर्जन मुस्कुराया।

“हम वन में ही उनकी समाधि बनायेंगे, आक्रमण!” कीर्तिध्वज ने आदेश दिया।

कीर्तिध्वज के साथ त्रिगर्ता की सेना वन की ओर दौड़ पड़ी।

सुर्जन अपने अश्व पर आरुढ़ हुआ और एक निश्चित स्थान की ओर बढ़ चला।

त्रिगर्ता की आधी सेना वन में घुस आयी थी।

कुछ क्षणों के उपरांत, कुछ अश्वारोही और पैदल सैनिक फिसलकर भूमि पर गिर पड़े।

कीर्तिध्वज ने अपने अश्व की लगाम खींच उसे रोका।

“वहाँ क्या है?” कीर्तिध्वज ने प्रश्न किया है।

“यहाँ की भूमि गीली है महामहिम।” एक फिसले हुए सैनिक ने उत्तर दिया।

कीर्तिध्वज अपने अश्व से नीचे उतरा और उस मार्ग पर चला। निरीक्षण करने के उपरांत वह स्तब्ध रह गया, “यह जल नहीं, मिट्टी का तेल है।”

उसने उठकर चारों दिशाओं में दृष्टि घुमाई, “हमारी आधी सेना वन के भीतर आ चुकी है, किंतु किसी भी गंधर्व का दूर-दूर तक कोई चिह्न नहीं है। इसका अर्थ है कि यह हमारे लिये फैलाया गया एक जाल था।”

वहीं एक वृक्ष के पीछे छुपे सुर्जन ने एक जलता हुआ भाला लिया और कीर्तिध्वज के पास की भूमि की ओर फेंका। उस भाले के भूमि को स्पश करते ही अग्नि भड़क उठी और फैलने लगी।

“यह एक जाल है, खुले मैदान की ओर भागो।” कीर्तिध्वज ने अपने सैनिकों को आदेश दिया।

वहीं सुर्जन एक खुले मैदान की ओर बढ़ा चला जा रहा था। शीघ्र ही वह उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ दस सहस्र गंधर्व योद्धा युद्ध के लिए सज्ज खड़े थे।

“हमने योजना का प्रथम चरण पूर्ण किया।” सुर्जन ने घोषणा की।

गंधर्वों की सेना प्रसन्नता से झूम उठी। सुर्जन अपने अश्व से नीचे उतरकर उपमन्यु के निकट आया।

“तो तुमने कर दिखाया!” उपमन्यु ने उसकी ओर देखते हुए कहा।

“हाँ, वो तो है; किंतु ऐसा प्रतीत होता है कि तुम्हें इससे प्रसन्नता नहीं हुई।” सुर्जन ने उसके नेत्रों की ओर देखा।

“अब तुम दोनों मौन रहोगे?” दुर्धरा ने उन दोनों के मध्य हस्तक्षेप किया।

“नहीं, मैं मौन नहीं रहूँगा; यह अग्नि पूरे वन को भस्म कर देगी, फिर हम स्वयं को कहाँ छुपायेंगे?” उपमन्यु ने क्रोध में प्रश्न किया।

“ऐसा कुछ नहीं होने वाला।” सुर्जन ने उत्तर दिया।

“ऐसा ही होगा।” उपमन्यु अपने मत पर अड़ा रहा।

दुर्धरा को एक बार फिर उन दोनों के मध्य हस्तक्षेप करना पड़ा। “हाँ, ऐसा कुछ नहीं होगा, क्योंकि गीली मिट्टी पर अग्नि का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। सूर्योदय से पूर्व ही हमने सैकड़ों वृक्षों को काटकर वन के एक भाग को दूसरे से अलग कर दिया था। अब त्रिगर्ता की सेना वन के दूसरे भाग में फँस चुकी है, जो इस विशाल वन का मात्र छोटा सा एक भाग है और हमारा निवास विशाल और सुरक्षित भाग में है। वैसे तो अग्नि का संकट हमारी ओर नहीं बढ़ेगा और यदि कदाचित् ऐसा हुआ भी, तो सौ गंधर्व सैनिकों को वन के उन दो विभाजित भागों के मध्य घड़ों में पानी लेके इसीलिए सुसज्जित किया गया है, ताकि वो जब भी अग्नि को अधिक भड़कता हुआ देखें, तो वह लगातार दो वनों के बीच की मिट्टी को गीला करते रहें, ताकि अग्नि आगे न बढ़ने पाये।”

कुछ क्षण विचार करने के उपरांत उपमन्यु ने कहा, “क्या तुम्हें वाकई लगता है कि वन का यह छोटा सा भाग इतनी बड़ी सेना को रोक सकता है?” उसने एक प्रश्न उठाया।

सुर्जन मुस्कुराया, “हाँ, यह संभव नहीं होता, किंतु उन मूर्खों ने अपने साथ पाँच सहस्र युद्धक हाथी भी लाये हुए हैं और मेरे अनुमान से लगभग पंद्रह सौ हाथियों ने वन में प्रवेश भी कर लिया था और हम भलीभाँति जानते हैं कि जब हाथी की पूँछ में आग लगती है, तो वो क्या करता है।”

कुछ क्षण विचार के उपरांत, उपमन्यु ने मुस्कुराकर सुर्जन की प्रशंसा की, “तुमने काफी अच्छा और प्रभावशाली कार्य किया है, किंतु इसका मुझ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा... स्मरण रखना, इस युद्ध के उपरांत भी मेरी दृष्टि सदैव तुम पर रहेगी।”

सुर्जन झल्ला उठा। वो दुर्धरा की ओर मुड़ा। “मैं तो इस मनुष्य से तंग आ चुका हूँ। तुम अपने साथ कुछ सैनिकों को ले जाओ और दुर्मुद को सूचित करो कि उसके कार्य करने का समय आ गया है।”

‘अवश्या’ दुर्धरा अपने अश्व पर आरूढ़ हुई और बीस अश्वारोही सैनिकों के साथ चल पड़ी।

वन में अग्नि चारों ओर फैलकर भयंकर रूप ले चुकी थी। कीर्तिध्वज ने अपने सैनिकों को आगे बढ़ने का आदेश दिया।

सुर्जन का अनुमान उचित ही था। पूँछ में आग लगने के कारण कई युद्धक हाथी पागल हो गए थे। वह सभी नियंत्रण से बाहर होकर इधर-उधर भागने लगे। उन सबने सहस्रों सैनिकों को कुचलकर मार डाला। कई जलते वृक्षों ने भी गिरकर त्रिगर्ता के कई सैनिकों को जीवित ही भस्म

कर दिया।

कीर्तिध्वज चीखा, “पैदल सैनिक और अश्वारोही भागकर अपने प्राण बचाओ, युद्धक हाथियों को यहीं छोड़ दो, वन के बाहर की ओर भागो!”

अंततः, कीर्तिध्वज ने एक सुरक्षित मार्ग खोज निकाला और अपना अश्व आगे बढ़ाया। बची-खुची सेना उसके पीछे दौड़ी। वह सभी अपने प्राण बचाने के लिए दौड़ रहे थे। जलते हुए वन और आग की लपटों में बँधे गिरते वृक्षों ने उनकी स्थिति बहुत दयनीय बना दी थी।

वहीं दूसरी ओर वन की सीमा पर, त्रिगर्ता की आधी सेना अभी भी वन से बाहर खड़ी थी। जलते हुए वन में प्रवेश करने का साहस उनमें नहीं था। वह कीर्तिध्वज और अपनी शेष सेना से बिछड़ चुके थे।

वहीं दुर्मुद, नगर में प्रवेश करने के दूसरे मार्ग से कुछ दूरी पर प्रतीक्षा कर रहा था। दुर्धरा वहाँ बीस अश्वारोही सैनिकों के साथ पहुँची।

“समय आ गया है दुर्मुद।” दुर्धरा ने उसे संकेत दिया।

दुर्मुद नगरद्वार की ओर मुड़ा। वो अपने अश्व पर आरुढ़ हुआ, उसने म्यान से तलवार निकाली और उसे उठाकर संकेत दिया, “यह इस नगर का सबसे कमजोर द्वार है, तोड़ डालो इसे।” यह कहकर दुर्मुद ने अपने अश्व की लगाम खींची।

पाँच सहस्र डकैत योद्धा उसका अनुसरण करते हुए दौड़ पड़े। दुर्धरा भी बीस अश्वारोही सैनिकों के साथ तीव्र गति से आगे बढ़ी।

उस द्वार पर अधिक रक्षक नहीं थे।

डकैतों की सेना, द्वार तोड़ते हुए भीतर घुस आयी। बिना कोई समय गवाँये वो उस कारागार की ओर बढ़े, जहाँ पच्चीस गंधर्वों को बंदी बनाकर रखा गया था। उस कारागार की रक्षा के लिए लगभग दो सहस्र सैनिक नियुक्त थे। डकैतों की सैन्य शक्ति और कारागार के रक्षकों के मध्य संघर्ष आरंभ हो गया।

वहीं दूसरी ओर एक सैनिक यह सूचना लेकर उपनंद के पास पहुँचा, जो अभी तक अपने पूजन में व्यस्त था।

“महाराज! कारागार पर भी आक्रमण हो चुका है।” वह सैनिक चीखा।

तभी मंदिर की सुरक्षा में तैनात, वहाँ उपस्थित एक सैनिक ने उसके मुख पर मुष्टि प्रहार किया। “उनके पूजन में व्यवधान उत्पन्न करने का साहस दोबारा न करना।”

सबकुछ जानते हुए भी उपनंद, माँ दुर्गा के पूजन में लीन रहा।

वहीं कीर्तिध्वज ने जलता हुआ वन पार कर लिया। उसके साथ केवल एक सहस्र अश्वारोही, पाँच सहस्र पैदल सैनिक और लगभग 150 युद्धक हाथी ही शेष बचे थे।

खुले मैदान में गंधर्वों की सेना उनके समक्ष थी।

“वो घायल भी हैं और उनका संख्याबल भी कम हो चुका है, समाप्त कर दो इन्हें!” सुर्जन ने एक बार फिर अपना मुख ढका और गंधर्वों की सेना के साथ शत्रुओं की ओर दौड़ पड़ा।

कीर्तिध्वज ने भी अपने बचे-खुचे सैनिकों को युद्ध का आदेश दिया।

उन दोनों सेनाओं के मध्य भी युद्धारंभ हो गया। सुर्जन बड़ी बर्बरता से शत्रुओं का नाश कर रहा था।

“हमारे पास अधिक समय नहीं है, इस युद्ध को हमें शीघ्र से शीघ्र जीतना होगा।” उपमन्यु ने

लड़ते हुए सुर्जन से कहा।

“हाँ, तुम उचित कह रहे हो; मुझे इस सेना के सेनापति तक पहुँचना होगा।” सुर्जन ने एक शत्रु का मस्तक काटते हुए कहा और कीर्तिध्वज की ओर दौड़ पड़ा।

शीघ्र कीर्तिध्वज की रक्षा के लिए उसके सौ सैनिकों ने उसे घेर लिया।

“मेरे साथ आओ।” सुर्जन कुछ गंधर्वों को साथ लेकर कीर्तिध्वज की ओर दौड़ पड़ा।

यह कुछ ही क्षणों की बात थी। सुर्जन ने गंधर्वों की ढालों पर चढ़कर छलाँग लगायी और कीर्तिध्वज के बनाये घेरे के भीतर पहुँच गया। उसने दोबारा एक छलाँग लगायी और कीर्तिध्वज के मुख पर मुष्टि प्रहार किया।

कीर्तिध्वज अपने अश्व से गिर पड़ा। सुर्जन ने उसे पकड़कर उसके कंठ पर तलवार टिका दी, “रुक जाओ! तुम सब पराजित हुए।” सुर्जन चीखा।

सुर्जन का मुख अभी भी ढका हुआ था, इसलिए कीर्तिध्वज उसे पहचान न सका।

कीर्तिध्वज के नेतृत्व में युद्ध कर रहे त्रिगर्ता के योद्धा पीछे मुड़े।

“अपने शस्त्र गिराओ!” सुर्जन ने हुंकार भरी।

अपने सेनापति को बंदी देख, त्रिगर्ता के योद्धाओं ने शस्त्र गिरा दिए।

कीर्तिध्वज ने सुर्जन से चेतवानी भरे स्वर में कहा, “तुम्हें अनुमान भी नहीं है कि तुम किससे उलझ रहे हो, मैं हस्तिनापुर का सेनापति हूँ।”

सुर्जन मुस्कुराया, “तुम जो भी हो, मुझे कोई अंतर नहीं पड़ता, इस समय तुम्हारे प्राण मेरी दया पर निर्भर हैं।”

इसके उपरांत, सुर्जन ने कीर्तिध्वज को नीचे धकेला और उपमन्यु को आदेश दिया, “तुम दो सहस्र योद्धाओं के साथ यहीं रुककर इस पर दृष्टि जमाये रखो, शेष मेरे साथ आओ। त्रिगर्ता का सेनापति सुवर्मा अभी तक युद्ध भूमि में नहीं आया है, इसलिए निःसंदेह हमको सहायता की आवश्यकता पड़ सकती है।”

“अवश्य, तुम दुर्मुद और दुर्धरा की सहायता के लिए शीघ्र प्रस्थान करो।” उपमन्यु ने समर्थन किया।

गंधर्व सेना ने कीर्तिध्वज को घेर लिया।

वहीं सुर्जन शेष गंधर्व योद्धाओं को अपने साथ ले गया।

दुर्मुद और दुर्धरा कारागार के दो सहस्र रक्षकों से युद्ध में व्यस्त थे।

शीघ्र ही लगभग सात सहस्र गंधर्व योद्धाओं को लेकर सुर्जन वहाँ आ पहुँचा।

इसके उपरांत उन लोगों ने कारागार के रक्षकों का मनोबल पूरी तरह तोड़ दिया। उन रक्षकों ने शस्त्र गिराकर समर्पण कर दिया।

दुर्धरा और दुर्मुद कारागार की ओर बढ़े। शीघ्र ही राजा उग्रसेन और चौबीस अन्य गंधर्वों को मुक्त करा लिया गया।

‘पिताश्री...’ दुर्धरा अपने पिता के हृदय से जा लगी।

“कैसी हो दुर्धरा?” उग्रसेन के नेत्र अश्रुओं से भर गये।

सुर्जन और दुर्मुद, दोनों ही प्रसन्न थे।

“हम विजयी हुए।” सुर्जन ने घोषणा की।

“हाँ, वो तो है, किंतु उपनंद के यहाँ आने से पूर्व हमें यहाँ से निकल जाना चाहिए।” दुर्मुद ने

सुझाव दिया।

“हाँ, तुम्हारा कथन उचित है दुर्मुद; हमें इसी क्षण पलायन करना होगा।” सुर्जन ने दुर्मुद की बात से सहमति जताई।

सुर्जन ने आगे बढ़कर घोषित किया, “हमने अपना लक्ष्य पा लिया है, इसलिए हम सबको इसी समय प्रस्थान करना होगा।”

“बहुत शीघ्रता में हो, है न!” उस स्वर ने सबका ध्यान आकर्षित किया। सभी ने पलटकर देखा।

अपनी तलवार लिए खड़ा वो योद्धा कोई और नहीं, उपनंद ही था। उसके पीछे उसकी सेना चली आ रही थी।

उपनंद मुस्कुराया, “मेरी नगरी से निकलना क्या तुम्हें इतना सरल लगता है?”

किसी ने उसका उत्तर नहीं दिया।

शीघ्र ही उपनंद के पीछे सैकड़ों सैनिक एकत्र हो गये।

वो फिर से मुस्कुराया, “तुम लोगों को इस बात का ज्ञान तो होगा ही, कि मेरी सेना तुमसे पाँच गुना अधिक शक्तिशाली है; इसका अर्थ यह है कि यदि युद्ध हुआ तो तुम्हारी पराजय निश्चित है; किंतु मैं बस यह कहना चाहता हूँ, कि मेरे मन में अब भी तुम सबके लिए दया शेष है... तो यदि तुम मेरी एक बात मान लो तो तुम सब यहाँ से जीवित लौट सकते हो।”

“कैसी बात?” उग्रसेन ने आगे बढ़कर प्रश्न किया।

“मुझे दुर्धरा चाहिए; शेष सभी यहाँ से जा सकते हो।” उपनंद ने मुस्कुराकर कहा।

सुर्जन की मुट्ठियाँ भिंच गयीं। उसका मस्तक क्रोध से फटा जा रहा था। उसके नेत्र लाल हो रहे थे।

उग्रसेन का क्रोध भी सीमा पार हो गया। वो उपनंद पर चीखा, “हम सब चाहे वीरगति को प्राप्त क्यों न हो जायें, किंतु हमारी राजकुमारी समर्पण नहीं करेगी।”

उपनंद क्षणभर के लिए क्रोधित हुआ, किंतु अगले ही क्षण वो मुस्कुराया, “इतनी अधीरता एक राजा को शोभा नहीं देती; कुछ भी कहने से पूर्व एक बार तुम्हें विचार अवश्य कर लेना चाहिए... क्या तुम्हें वास्तव में लगता है कि इस संसार में मुझसे अधिक बलशाली और योग्य वर हैं तुम्हारी पुत्री के लिए? मैं तो ऐसा नहीं समझता।”

राजा उग्रसेन कुछ क्षणों के लिए मौन हो गये।

“इतना क्या विचार कर रहे हो उग्रसेन? क्या है तुम्हारे पास अपनी पुत्री के लिए कोई ऐसा वर, जो मुझसे अधिक योग्य हो?” उपनंद ने गंधर्वों के राजा से प्रश्न किया।

“हाँ, है।” दुर्धरा ने आगे कदम बढ़ाकर कहा।

उपनंद ने आश्चर्य से प्रश्न किया, “ओह! तो तुम्हारे पास मुझसे अधिक योग्य योद्धा है?”

“हाँ, अवश्य है।” दुर्धरा ने गर्व से उत्तर दिया।

उग्रसेन उसकी ओर आश्चर्य से देख रहे थे।

“तो मैं भी उसे देखना चाहूँगा।” उपनंद ने दुर्धरा से कहा।

‘सुर्जना’ दुर्धरा ने पुकार लगायी।

सुर्जन ने अपने मुख को ढका वस्त्र हटाया और आगे आया। वह उपनंद को क्रोध से घूर रहा था।

“तुम? तुम तो उस व्यापारी के अंगरक्षक थे ना” उपनंद उसे देख हँस पड़ा।

“इसने तुम्हारी आधी सेना को पराजित कर, मेरे पिता और अन्य गंधर्वों को मुक्त कराया है, क्या यह पर्याप्त नहीं है?” दुर्धरा ने गर्व से कहा।

उपनंद ने क्षणभर सुर्जन को निहारा। इसके उपरांत वह दुर्धरा की ओर मुड़ा। “हाँ, संभव है कि इसने यह महान कार्य संपन्न किया है; किंतु सत्य यह है कि उस समय मैं अपनी सेना के नेतृत्व के लिए उपस्थित नहीं था। इसने मेरी अनुपस्थिति का लाभ उठाया है... किंतु अब मैं यहाँ उपस्थित हूँ, तो तुम कैसे कह सकती हो, कि ये मुझसे श्रेष्ठ योद्धा है?”

दुर्धरा मौन रह गयी। उसके पास देने को कोई तर्क नहीं था।

उपनंद, सुर्जन की ओर मुड़ा, “तुमने कहा यह मुझसे श्रेष्ठ है; है न? चिंतित मत हो दुर्धरा, तुम्हारे इस भ्रम को मिथ्या सिद्ध किये बिना मैं तुम्हें ग्रहण नहीं करूँगा; इस योद्धा को अपना सामर्थ्य सिद्ध करने का पूर्ण अवसर प्राप्त होगा।”

इसके उपरांत उपनंद ने कुछ कदम पीछे हटकर घोषणा की, “सेनाओं में कोई युद्ध नहीं होगा, चुनौती हम दोनों के बीच होगी... मैं और यह योद्धा, जो भी नाम है इसका।”

“सुर्जन... सुर्जन नाम है मेरा और तुम्हारी चुनौती मुझे स्वीकार है।” सुर्जन ने उपनंद के नेत्रों में घूरकर देखा।

उपनंद हँस पड़ा। “युवावस्था का उबलता हुआ रक्त... चिंतित मत हो, मैं तुमसे द्वंद्व की प्रतियोगिता नहीं करने वाला, क्योंकि मैं एक ही बार में तुम्हारा मस्तक कुचलकर तुम्हारा वध नहीं करना चाहता, इसलिए हम एक खेल खेलेंगे; कम से कुछ समय तक तुम जीवित तो रह सकोगे।”

“खेल? कैसा खेल?” सुर्जन ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“हाँ, एक खेल... यदि तुम विजयी हुए तो दुर्धरा तुम्हारी, यदि मैं विजयी हुआ, तो वो मेरी।” उपनंद मुस्कुराया।

“पहले यह बताओ कि वह खेल है क्या?” सुर्जन ने प्रश्न किया।

“मेरे साथ आओ।” उपनंद आगे बढ़ा।

शीघ्र ही वह नगर द्वार के बाहर आया।

सुर्जन, उग्रसेन, दुर्मुद, दुर्धरा और कुछ अन्य गंधर्व उसके पीछे चले आ रहे थे। शीघ्र ही उपनंद एक खुले मैदान में पहुँचा।

इसके उपरांत वह सुर्जन की ओर मुड़ा, “बहुत साधारण सा खेल है; मैं अपना अर्थात् त्रिगर्ता का ध्वज लूँगा और तुम गंधर्वों का ध्वज उठाओगे।”

‘और?’ सुर्जन ने प्रश्न किया।

“हमारे बीच एक दौड़ होगी।” उपनंद ने कहा।

‘दौड़?’

“हाँ, एक दौड़। भगवान् शिव के मंदिर की ओर जाता हुआ सामने का यह मार्ग लगभग दो सहस्र गज लंबा है... हम इस स्थान से अपने-अपने हाथों में ध्वज लिए दौड़ेंगे; जो पहले मंदिर तक पहुँचकर अपनी ध्वजा मंदिर की चोटी पर लहराएगा, वो विजयी घोषित किया जाएगा। स्मरण रखना, आधे मार्ग तक कोई किसी के मार्ग में बाधा नहीं पहुँचायेगा, किंतु उसके उपरांत इस दौड़ के कोई नियम नहीं होंगे।”

“तो फिर जितनी तीव्रता से भाग सकते हो भागना उपनंदा” सुर्जन ने उसकी ओर मुस्कुराकर देखा।

उपनंद ने उसके निकट आकर उसके नेत्रों में ध्यान से देखा, “तुम साहसी भी हो और तुम्हारा व्यक्तित्व भी रहस्यमयी है; इस खेल में विजयी होने का आनंद अद्भुत होगा... किंतु मुझे नहीं लगता कि तुम्हारा यह साहस आधे मार्ग को पार करने के उपरांत तुम्हें जीवित रहने देगा।

सुर्जन मुस्कुराया, “देखते हैं; किसी का हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए।”

“मेरा वचन है, कोई हस्तक्षेप नहीं करेगा और मुझे वचन तोड़ने के लिए नहीं जाना जाता।” उपनंद ने उत्तर दिया।

“उचित है, फिर आरंभ करते हैं।” सुर्जन ने उत्तर दिया।

दुर्धरा ने गंधर्वों का ध्वज उठाया और राजा उग्रसेन के हाथ में दिया, “विश्वास रखिए पिताश्री, यह इसके योग्य है।”

उग्रसेन अपनी पुत्री की बात से सहमत होकर सुर्जन की ओर बढ़े।

सुर्जन अपने घुटनों के बल झुका। उग्रसेन ने ध्वज उसके हाथ में दिया। “मुझे तुम पर इसलिए विश्वास है, क्योंकि मेरी पुत्री को तुम पर विश्वास है।”

“मैं आपका विश्वास भंग नहीं करूँगा।” सुर्जन ने मुस्कुराते हुए विश्वास दिलाया।

इसके उपरांत सुर्जन ने उठकर उपनंद की ओर देखा।

उपनंद के हाथ में भी अब त्रिगर्ता का ध्वज था।

सुर्जन और उपनंद दोनों ही आरंभ रेखा के निकट आये। त्रिगर्ता, गंधर्व और कई डकैत सैनिक उस दौड़ को देखने के लिए आगे आये।

उपनंद ने अपने एक सैनिक को संकेत किया। त्रिगर्ता के उस सैनिक ने लाल ध्वज फहराना आरंभ किया।

उपनंद और सुर्जन, दोनों ही अपने लक्ष्य की ओर दौड़ पड़े। अलग-अलग योद्धाओं का समूह उन दोनों का मनोबल बढ़ा रहा था।

सुर्जन की गति उपनंद से कुछ तीव्र थी। वो कुछ गज आगे दौड़ रहा था। वन से होते हुए, सुर्जन ने आधा मार्ग पारकर लिया।

उपनंद मुस्कुराया। उसने अपना ध्वज उठाकर सुर्जन के पैर की ओर लक्ष्य कर फेंका। अपना संतुलन खोकर वो भूमि पर गिर पड़ा।

“तुम और तुम्हारे लक्ष्य के मध्य अभी भी मैं खड़ा हूँ।” सुर्जन को घूरते हुए उपनंद ने अपना ध्वज उठाया और आगे बढ़ गया।

किंतु सुर्जन ने उसका पाँव पकड़कर उसे पीछे खींच लिया। इसके उपरांत उसने छलाँग लगाकर उपनंद को पकड़ लिया।

क्रोधित उपनंद ने सुर्जन का हाथ पकड़ा और अपने पैर के प्रहार से उसे पीछे धकेल दिया।

सुर्जन भूमि पर गिर पड़ा। उपनंद भी भूमि से उठा, “तुम्हारी भुजाओं में बल तो है; चलो पहले ढंढ ही कर लेते हैं, तुम्हारा मस्तक कुचलकर ही मैं भगवान् शिव के मंदिर पर यह ध्वज लहराऊँगा।”

सुर्जन ने भी भूमि से उठकर उपनंद को चुनौती दी, “तो फिर आरंभ करते हैं।”

दोनों योद्धा एक दूसरे की ओर दौड़े और टकरा गये।

उपनंद ने उसके मुखपर मुष्टि से प्रहार करने का प्रयत्न किया, किंतु सुर्जन ने उसका हाथ पकड़ उसे भूमि पर धकेल दिया।

उपनंद स्तब्ध रह गया। उसने उठकर सुर्जन से आश्चर्य में प्रश्न किया, “कौन हो तुम?”

“तुम्हारा अंता” सुर्जन उसकी ओर दौड़ा और उसके मुख पर मुष्टि से प्रहार करने ही वाला था, किंतु उससे पूर्व ही गंधर्व, डकैत और त्रिगर्ता के कुछ अन्य सैनिक वहाँ आ पहुँचे।

“मुझे एक साधारण योद्धा की भाँति युद्ध करना होगा, अन्यथा दुर्धरा के मन में मेरे प्रति संदेह उत्पन्न हो जायेगा।” यह विचारकर सुर्जन ने अपने हाथ रोक लिए।

“तुम रुक क्यों गये?” उपनंद ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“बुद्धि विशेष नहीं... चलो एक बार फिर सबके समक्ष द्वंद्व आरंभ करते हैं।” सुर्जन ने सज्ज होते हुए कहा।

“जैसी तुम्हारी इच्छा” उपनंद उसकी ओर दौड़ा।

वो दोनों एक बार फिर टकरा गये। उपनंद के भीषण वारों से सुर्जन केवल अपना रक्षण करने का प्रयत्न कर रहा था।

“तुम्हें क्या लगता है दुर्धरा, क्या वो उपनंद का सामना कर पायेगा?” उग्रसेन ने दुर्धरा से प्रश्न किया।

“अवश्य पिताश्री, मुझे उस पर पूरा विश्वास है।” दुर्धरा ने गर्व से उत्तर दिया।

दोनों के बीच के द्वंद्व को एक प्रहर बीत चुका था।

द्वंद्व के क्षणों के दौरान ही उपनंद ने सुर्जन के कंठ के पास की एक कमजोर नस दबा दी। पीड़ा से चीखता हुआ सुर्जन भूमि पर गिर पड़ा। उसे उतनी पीड़ा हो तो नहीं हो रही थी, किंतु उसे ऐसा अभिनय करना उचित जान पड़ा।

उपनंद ने उसका मस्तक पकड़ा और ठहाका लगाया। “तुम केवल एक प्रेमी हो, है न? और तुम्हें लगता है कि तुम्हारा यह प्रेम तुम्हें इस द्वंद्व में विजय दिलाएगा। दुर्धरा केवल मेरी है... प्रेम के लिए नहीं, प्रतिशोध के लिए मैं उसे पाना चाहता हूँ। उसने मुझे अपमानित किया था, अब मैं उसे अपमानित करूँगा। तुम्हारा मस्तक कुचलने के उपरांत मैं उसे निर्वस्त्र कर नग्न अवस्था में त्रिगर्ता के हर मार्ग पर चलने को विवश कर दूँगा।”

उपनंद के उन शब्दों ने सुर्जन के क्रोध को जगा दिया। क्रोध से उसके नेत्रों में लालिमा छा गयी। इससे पूर्व कि उपनंद उसके मस्तक पर वार करता, उसने अपने प्रतिद्वंद्वी का हाथ पकड़ा और उसे भूमि पर गिरा दिया।

सुर्जन के नेत्रों में ज्वाला धधक रही थी। उस क्षण उसने तनिक भी विचार नहीं किया कि उसके आस-पास उपस्थित लोग क्या देखेंगे और कहेंगे। उसके भीतर का असुर जाग चुका था।

उपनंद एक बार फिर उठकर उसकी ओर दौड़ा। इस बार सुर्जन ने उसके मुख पर भीषण मुष्टि प्रहार किया।

उपनंद एक बार फिर भूमि पर गिर पड़ा। उस मुष्टि प्रहार ने उसका मन मस्तिष्क हिला दिया। “मुझे स्मरण है... यह वैसा ही मुष्टि प्रहार है; वही मुष्टि प्रहार, जो उस रात्रि उस घुसपैठिये ने मुझपर किया था, जिसने अकेले ही हस्तिनापुर की सेना को पराजित किया था।”

उपनंद ने उठकर सुर्जन की ओर देखा। उसके नेत्रों के पास से रक्त का प्रवाह होने लगा था और अपने प्रतिद्वंद्वी के नेत्रों की ज्वालामुखी देख उसके मन में भय का भी संचार होने लगा था।

सुर्जन एक बार फिर उसकी ओर दौड़ा और उसका कंठ पकड़कर उसे एक वृक्ष से सटा दिया।
“तुम्हें अनुमान भी नहीं है कि तुम्हारे समक्ष कौन खड़ा है।”

इसके उपरांत उसने उपनंद को पूरे शरीर सहित उठा लिया।

सभी उपस्थित योद्धा यह दृश्य देख स्तब्ध रह गए।

“कौन है यह? उपनंद पर इस प्रकार भारी पड़ने वाला साधारण योद्धा हो ही नहीं सकता।”
उग्रसेन भी स्तब्ध थे।

“हाँ पिताश्री, साधारण योद्धा नहीं है यहा” दुर्धरा ने गर्व से कहा।

वहीं सुर्जन ने उपनंद को भूमि पर पटका। वो कूदकर उसकी छाती पर सवार हो गया और उसके मुख पर मुष्टि प्रहार करने आरंभ कर दिए।

उपनंद का पूरा मुख रक्तंजित हो गया। उसका मस्तक कुचलने के लिए सुर्जन उस पर अंतिम वार करने ही वाला था, किंतु तभी उसकी पीठ पर किसी ने वार किया।

सभी उपस्थित योद्धा सुर्जन पर पीछे से वार करने वाले उस व्यक्ति को देख स्तब्ध रह गए। यह कोई और नहीं, डकैतों का सरदार ‘दुर्मुद’ था, जिसके हाथ में वो तलवार थी, जिसने सुर्जन की पीठ छलनी की थी।

‘दुर्मुद...!’ दुर्धरा उस पर चीख पड़ी।

सुर्जन ने मुड़कर दुर्मुद की ओर क्रोध से देखा। उसने उसका कंठ पकड़ा और उसके मुख को ढका वस्त्र हटा दिया।

सभी उपस्थित योद्धा, दुर्मुद का वास्तविक मुख देख स्तब्ध रह गए।

“सु... सुवर्मा, तुम...!” उपनंद, दुर्मुद की ओर देखते हुए मूर्छित हो गया।

डकैतों का सरदार कोई और नहीं, त्रिगर्ता के सेनापति सुवर्मा थे।

सुर्जन ने उसकी छाती पर पाँव से प्रहार किया और उसे भूमि से सटा दिया। “तुम सदैव एक संदिग्ध व्यक्ति थे, किंतु मैंने इतना कुछ नहीं सोचा था। तुम्हें तो मैं बाद में देखूँगा; पहले मुझे इस दौड़ में विजयी होना है।”

सुर्जन ने सुवर्मा को छोड़, अपनी पीठ में धँसी तलवार खींच निकाली। इसके उपरांत उसने गंधर्वों का ध्वज उठाया और भगवान् शिव के मंदिर की ओर दौड़ पड़ा।

“वो घायल है, ऐसी स्थिति में वो यह क्या कर रहा है?” उग्रसेन ने चिंता जताई।

“चिंतित मत होइए, पिताश्री; तलवार के एक वार में उसे रोकने का सामर्थ्य नहीं है।” दुर्धरा ने गर्वित होकर कहा।

शीघ्र ही सुर्जन, महादेव के मंदिर तक पहुँच गया। उसने मंदिर के बाहर झुककर प्रणाम किया। इसके उपरांत उसने मंदिर पर चढ़ना आरंभ किया और शीघ्र ही उसकी ऊँचाई पर ध्वज फहरा दिया।

“हर हर महादेव!” गंधर्वों की सेना ने हुंकार भरी।

वहीं उपनंद अभी भी भूमि पर मूर्छित पड़ा था।

सुवर्मा ने त्रिगर्ता के कुछ सैनिकों को आदेश दिया, “आओ, अपने महाराज को उठाओ और इन्हें महल तक सुरक्षित ले जाओ।”

त्रिगर्ता के सैनिक उपनंद की ओर दौड़े और उसे उठाकर ले गये। उन सैनिकों की संख्या कहीं अधिक थी, इसलिए उन्हें रोकने का साहस किसी ने नहीं किया।

उपनंद के जाने के उपरान्त, सुवर्मा ने अपनी तलवार गिराकर समर्पण का निर्णय लिया।

6. द्रोह का दण्ड

अगले ही क्षण सुर्जन को यह भान हुआ कि उसके घाव स्वतः ही भर गए हैं। मंदिर की ऊँचाई से उसने एक अश्व की ओर दृष्टि घुमाई, जो मंदिर के ठीक नीचे खड़ा था। वो मंदिर की ऊँचाई से कूदकर सीधा उस अश्व पर आरुढ़ हो गया और उस स्थान से पलायन कर गया।

दुर्धरा और अन्य गंधर्व यह देख स्तब्ध रह गए।

“इस घायल अवस्था में वो कहाँ जा रहा है?” दुर्धरा चिंतित हो उठी।

“चिंतित मत हो दुर्धरा; उसने तुम्हारे लिए युद्ध किया है, उसके इस कार्य के पीछे भी कोई न कोई कारण अवश्य होगा... मुझे विश्वास है कि वो शीघ्र ही लौट आएगा।” उग्रसेन ने अपनी पुत्री को समझाने का प्रयास किया।

सुवर्मा को डकैतों ने बंदी बना लिया था। उग्रसेन और दुर्धरा उनकी ओर बढ़े।

“सेनापति सुवर्मा, आप हमारे साथ वर्षों से कार्य कर रहे थे; आपने अपना मुख हमें कभी नहीं दिखाया, किंतु उसके उपरांत भी हमने आप पर विश्वास किया। किंतु हम गलत थे... आप तो कभी हमारे विश्वास के योग्य थे ही नहीं।” उग्रसेन ने सुवर्मा पर छीटाकशी की।

“आप उचित कह रहे हैं पिताश्री; सुर्जन को सदैव ही इस पर संदेह था।” दुर्धरा ने अपने पिता का समर्थन किया।

सुवर्मा ने कहना आरंभ किया, “मैंने वर्षों तक आप सबका समर्थन किया, आप लोगों के साथ लूटपाट की... मैं उपनंद के तरीकों का सदैव विरोधी था, और अब भी हूँ और यही कारण था कि मैंने आप सबका समर्थन किया; किंतु फिर भी वह मेरे महाराज हैं, मैं उन्हें मृत्यु के मुख में जाता हुआ नहीं देख सकता था।”

उग्रसेन मुस्कुराये, “आप पिछले चौदह वर्षों से डकैतों के सरदार हैं और उतने ही समय से त्रिगर्ता के सेनापति भी हैं। उस समय महाराज सत्व त्रिगर्ता के राजा थे। बहुत आश्चर्य की बात है, आपने तो बड़ी ही चतुराई से सबको छला है।”

“हम डकैत हैं, किंतु हम कभी निर्दोषों को कष्ट नहीं पहुँचाते। हमने पहले भी उन राज्यों को लूटा है, जो अपनी प्रजा पर अत्याचार करते थे और आज भी हम वही करते हैं।” सुवर्मा ने कहा।

“किंतु इस बार तुमने उस निर्दय राजा का समर्थन किया।” तभी पीछे से एक स्वर सुनाई दिया।

सभी योद्धाओं की दृष्टि उस स्वर की ओर मुड़ी। वो कोई और नहीं, अपने मुख को ढके हुए महाबली अखण्ड थे।

‘गुरुदेव!’ सुवर्मा उन्हें देख आश्चर्य में पड़ गया।

“आश्चर्य में मत पड़ो सुवर्मा; मैंने तुमसे कहा था, कि इस युद्ध में मेरी दृष्टि तुम पर रहेगी।” महाबली अखण्ड ने उसे क्रोध से घूरा।

“मैं क्षमा चाहता हूँ गुरुदेव; मैं अपने महाराज को मरने नहीं दे सकता था।” सुवर्मा ने उत्तर दिया।

“ओह! यदि यह सत्य है, तो जब उपनंद ने अपने पिता, महाराज सत्व को विष देकर मारा

था, तब तुमने कुछ क्यों नहीं किया? क्या तुमने उसे रोकने का प्रयत्न किया? मैं वर्षों से तुम्हारा गुरु हूँ, मैंने पहले भी तुम्हारा मुख देखा है; मुझे सदैव ज्ञात था कि वास्तव में तुम कौन हो, किंतु मैंने तुम्हें सत्य और धर्म के पक्ष में लड़ने के लिए तैयार किया था... कभी उपनंद जैसे दुर्दांत राजा का समर्थन करने की शिक्षा नहीं दी थी तुम्हें। मैंने तुम्हें त्रिगर्ता का सेनापति बनने के लिए इसलिए भेजा था, ताकि गंधर्व और डकैत समूह को समर्थन मिलता रहे और तुमने हमारे साथ ही छल किया।” महाबली अखण्ड लगातार सुवर्मा पर कटाक्ष किये जा रहे थे।

“मैंने उनके साथ कोई छल नहीं किया गुरुदेव; मैं केवल अपने महाराज का रक्षण करना चाहता था और जहाँ तक महाराज सत्व की मृत्यु का विषय है, तो मैं उस समय महल में उपस्थित नहीं था।” सुवर्मा ने उत्तर दिया।

महाबली अखण्ड ने पत्र निकालकर उसे दिखाया, “इस पत्र की ओर देखो... मैंने युद्ध के लिए बनायी गयी इस योजना वाले पत्र का ध्यान से निरीक्षण किया; यह लिखावट किसी और की नहीं, अपितु तुम्हारी ही है। इसका अर्थ यह है कि तुम्हीं ने उपनंद को उस डकैत द्वारा सावधान करने का प्रयत्न किया था। तुमने अपने ही लोगों के साथ कपट किया और जिस डकैत सैनिक ने तुम्हारे आदेश का पालन किया, उसे मृत्युदण्ड प्राप्त हुआ। अब मुझे समझ आया कि तुमने क्यों बिना घटना की गहराई से जानकारी करने के स्थान पर तत्काल ही उसका मस्तक काट गिराया।”

“जिस दिन मैं त्रिगर्ता का सेनापति नियुक्त हुआ था, मैंने सिंहासन पर आसीन हर राजा की रक्षा करने का प्रण लिया था। आपने तो हमारे दल को विदर्भ राज्य के विरुद्ध खड़ा होने के लिए संगठित किया था; तो फिर क्या अपराध हुआ मुझसे यदि मैंने त्रिगर्ता के राजा की रक्षा की?” सुवर्मा ने प्रश्न किया।

“मैंने इस दल को संसार के हर अधर्मी के विरुद्ध खड़ा होने के लिए संगठित किया था और जिस दिन तुमने त्रिगर्ता के सेनापति के रूप में अपना पद सँभाला था, उस समय त्रिगर्ता नरेश महाराज सत्व थे। गंधर्व उस समय त्रिगर्ता के सहयोगी थे और इस प्रकार हम भी एक प्रकार से उनके सहयोगी ही थे।” अखण्ड ने अपना मत रखा।

“किंतु त्रिगर्ता के सेनापति के रूप में मैंने जो प्रण लिया था, उसे मैं किस प्रकार त्याग दूँ?” सुवर्मा ने प्रश्न किया।

“तुमने जो किया है, वो तुम्हारे डकैत साथियों को मृत्यु के मुख में ले जा सकता था और केवल सत्य छुपाने के लिए तुमने अपने एक साथी की हत्या तक कर दी।” महाबली अखण्ड, सुवर्मा की ओर क्रोध से देख रहे थे।

सुवर्मा ने कोई उत्तर नहीं दिया। उनकी दृष्टि लज्जा से झुकी हुई थी।

महाबली अखण्ड ने कुछ कदम पीछे हटकर घोषणा की, “मेघवर्ण का दायित्व तुम्हें सौंपना मेरे जीवन की सबसे बड़ी भूल थी। तुम एक द्रोही हो, सुवर्मा और द्रोह का केवल एक ही दण्ड है। तुमने अपने राजा को बचाने के लिए, जो इस युद्ध में अपने सेनापति की पीठ पर वार किया, उसके लिए मैं तुम्हें क्षमा कर भी दूँ, किंतु अपना सत्य छुपाने के लिए अपने एक निर्दोष डकैत सैनिक की जो हत्या तुमने की है, उस जघन्य अपराध को क्षमा नहीं किया जा सकता; इसलिए आज इस दल के मार्गदर्शक होने के अधिकार से मैं तुम्हें मृत्युदण्ड देने की घोषणा करता हूँ। तुमने चौदह वर्षों तक इस दल के सरदार के रूप में कार्य किया, इसलिए मैं तुमसे तुम्हारी अंतिम

इच्छा जानना चाहूँगा; अपने जीवन के अतिरिक्त तुम कुछ भी माँग सकते हो।”

अश्रुओं की कुछ बूँदें सुवर्मा के नेत्रों से बह उठीं। उसने कहा, “मुझे केवल एक प्रहर का समय चाहिए; अपने जीवन के इन अंतिम क्षणों को मैं अपने पुत्र मेघवर्ण के साथ व्यतीत करना चाहता हूँ।”

महाबली अखण्ड उसके निकट आये। “तुम्हारी आत्मा पाप कर्मों से दूषित हो चुकी है सुवर्मा... इस बात का ध्यान रखना, कि इन अंतिम क्षणों में तुम उसे कुछ उचित ज्ञान दे सको।”

“मैं विश्वास दिलाता हूँ गुरुदेव, इस बार मैं आपको निराश नहीं करूँगा।” सुवर्मा ने विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया।

“रात्रि तक का समय है तुम्हारे पास... मुक्त कर दो इसे!” महाबली अखण्ड ने डकैतों को आदेश दिया।

इसके उपरांत उन्होंने घोषणा की। “मेघवर्ण हमारा होने वाला सरदार है। इस बात का विशेष ध्यान रहे, उसे अपने पिता के किये द्रोह के विषय में कोई जानकारी नहीं मिलनी चाहिए और इसमें तनिक भी चूक नहीं होनी चाहिए।”

* * *

वहीं सुर्जन घने वन में चला जा रहा था। वो अपने अश्व से नीचे उतरा और एक पौधे की ओर बढ़ा और कुछ पत्तों को तोड़ा। उसने उन पौधों का लेप बनाकर अपनी पीठ पर लगाया, जहाँ सुवर्मा ने उस पर प्रहार किया था। इसके उपरांत उसने अपने ऊपर के कुछ वस्त्र फाड़े और उसे अपनी पीठ पर एक पट्टी की भाँति बाँध लिया।

“तो तुम यहाँ हो!” पीछे से एक स्वर सुनाई दिया।

सुर्जन पीछे मुड़ा। यह कोई और नहीं, रक्षगुरु भैरवनाथ था। असुरों का सेनापति भद्राक्ष उसके साथ था।

सुर्जन ने मुस्कुराकर अपने गुरु को प्रणाम किया, ‘गुरुदेव।’

भैरवनाथ उसके निकट आया, “कहाँ थे तुम? हम कई दिनों से तुम्हारी खोज में थे और यह सब तुम क्या कर रहे हो, तुम्हारे घाव तो स्वतः ही भर जाते हैं।”

“प्रेम के लिए बहुत कुछ करना पड़ता है।” सुर्जन ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया।

“तुम्हारे मुख पर यह मुस्कान... यह तो दुर्लभ है; कुछ चल रहा है, है न?” भैरवनाथ मुस्कुराया।

सुर्जन मुस्कुरा रहा था।

“तुम बहुत गहरे प्रेम में पड़ चुके हो, है न?” भैरवनाथ मुस्कुराया।

“हाँ, वो तो है।” सुर्जन ने उत्तर दिया।

“उचित है... कौन है वो भाग्यशाली कन्या?” भैरवनाथ ने प्रश्न किया।

“उसका नाम दुर्धरा है।”

“बड़े ही आनंद की बात है; क्या वो भी तुमसे प्रेम करती है?” भैरवनाथ ने मुस्कुराते हुए सुर्जन से प्रश्न किया।

“हाँ, ऐसा ही है।” सुर्जन ने मुस्कुराकर उत्तर दिया।

“फिर तो उत्सव का विषय है यह। किंतु यह तो बताओ, इतने समय तक तुम थे कहाँ और तुमने अपनी कमर पर यह पट्टी क्यों बाँधी है?” भैरवनाथ ने प्रश्न किया।

“यह बहुत ही लंबी कथा है” सुर्जन ने कहा।

“लंबी कथा?”

“हाँ, एक लम्बी कथा। यह सब तब आरंभ हुआ, जब हस्तिनापुर की सेना ने एकचक्रनगरी पर चढ़ाई की थी। मैं अपने मित्र शत्रुघ्न की सहायता के लिए गया था।” सुर्जन ने आरंभ से लेकर अंत तक की कथा कह सुनाई।

“तो तुम्हारे कहने का अर्थ है कि तुमने गरुड़राज का वध किया और तुम्हें यह श्राप मिला, कि जिस व्यक्ति से तुम सबसे अधिक प्रेम करोगे, वही तुम्हारी मृत्यु का कारण बनेगा?” भैरवनाथ ने पुष्टि करने के लिए प्रश्न किया।

“हाँ, यही सत्य है।” सुर्जन ने पुष्टि की।

“किंतु फिर भी तुम उसे प्राप्त करना चाहते हो?” भैरवनाथ ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“हाँ” सुर्जन ने दृढ़ता से उत्तर दिया।

“क्यों? क्या तुम्हारा मस्तिष्क विकसित हो गया है? इस जीवन को वापस पाने के लिए तुमने सत्तर वर्षों तक प्रतीक्षा की और अब तुम इसे यूँ ही गँवाना चाहते हो।” भैरवनाथ को क्रोध आने लगा।

“मैं अपना जीवन नहीं गँवाने वाला। मैं प्रेम करता हूँ उससे और जहाँ तक मेरे जीवन का प्रश्न है, तो आपको तो यह ज्ञात ही होगा कि मृत्यु तो एक दिन सभी को आनी है, किंतु इस समय मैं अपना जीवन सुख से जीना चाहता हूँ। मैं नहीं जानता कि किस प्रकार वो मेरी मृत्यु का कारण बनेगी, किंतु मैंने उसके नेत्रों में देखा है, वो भी मुझसे प्रेम करती है और मैं उसके साथ अपना जीवन व्यतीत करना चाहता हूँ।” सुर्जन ने स्पष्ट रूप से कहा।

“उचित है... यदि वो तुमसे प्रेम करती है तो जाओ और उसे सत्य बता दो। जाओ और उसे बता दो कि तुम किसी साधारण से व्यापारी के अंगरक्षक नहीं, अपितु असुरों के महान नायक दुर्भीक्ष हो।” भैरवनाथ ने कहा।

“किंतु अब यह सत्य नहीं है।” सुर्जन ने कहा।

“इसका क्या अर्थ है?” भैरवनाथ ने आश्चर्यपूर्वक प्रश्न किया।

“हाँ, आज से मैं असुरों का नायक असुरेश्वर नहीं हूँ, केवल एक साधारण मनुष्य हूँ।” सुर्जन ने घोषणा की।

भैरवनाथ स्तब्ध रह गया, “क... क्या... क्या कहा तुमने?”

“हाँ, आपने उचित ही सुना; आज से मैं असुरेश्वर दुर्भीक्ष नहीं, केवल सुर्जन हूँ।”

भैरवनाथ क्रुद्ध हो उठा। “तुम्हारा मस्तिष्क वास्तव में विकसित हो चला है। मैंने वर्षों तक तुम्हारी प्रतीक्षा की; तुमने जयवर्धन के लिए युद्ध करने का संकल्प लिया था...।”

“और अपना वो संकल्प मैं कभी भंग नहीं करूँगा... जयवर्धन को जब भी मेरी आवश्यकता होगी, मैं युद्धभूमि में उपस्थित हो जाऊँगा।” सुर्जन ने हस्तक्षेप करते हुए कहा।

भैरवनाथ ने स्वयं को नियंत्रित करने का प्रयत्न किया। “तुम गहरे प्रेम में डूब चुके हो दुर्भीक्ष और इसने तुम्हारे विचार करने की क्षमता को घटा दिया है। क्या तुम इस बात को नकार सकते हो कि असुरों को भी एक नायक की आवश्यकता है?”

“हाँ, यह विचार तो मेरे मन में था ही और इसके विषय में मैंने एक निर्णय भी लिया है।” सुर्जन ने कहा।

“निर्णय? कैसा निर्णय?” भैरवनाथ ने अचरच भाव से पूछा।

सुर्जन, भद्राक्ष की ओर बढ़ा। “असुरों का नायक अब यही होगा और जब भी कोई युद्ध छिड़ेगा, मैं आप सबकी सहायता के लिए उपस्थित हो जाऊँगा।”

“किंतु...।” भद्राक्ष को यह अनुचित लगा।

“यह एक आदेश है भद्राक्ष।” सुर्जन ने कठोर स्वर में कहा।

“जो आज्ञा महाराज।” भद्राक्ष ने सहमति जताई।

भैरवनाथ ने हस्तक्षेप किया। “एक बार फिर विचार कर लो... एक स्त्री के लिए बहुत बड़ा सम्मान खोने जा रहे हो तुम।”

सुर्जन उसकी ओर मुड़ा। “यहाँ प्रश्न उस स्त्री का नहीं है गुरुदेव; मुझे अपने जीवन में केवल शांति की आकांक्षा है... मैं इस बोझ को अब और नहीं उठा सकता, इसलिए आज के उपरांत मैं केवल आपके लिए युद्धभूमि में लड़ता दिखाई दूँगा; समझने का प्रयत्न कीजिये, मुझे कोई सिंहासन नहीं चाहिए।”

भैरवनाथ ने शांतिपूर्वक उसकी बात सुनी। “उचित है; तुम्हारी जो इच्छा करे, वो करो; जब भी हमें तुम्हारी आवश्यकता होगी, हम तुम्हें संदेश भेज देंगे।”

“अवश्य गुरुदेव; जब भी आपको मेरी आवश्यकता होगी, मैं उपस्थित हो जाऊँगा, किंतु इस समय मुझे प्रस्थान करना होगा, वो लोग मेरी प्रतीक्षा में होंगे।” सुर्जन ने अपने गुरु के समक्ष हाथ जोड़े।

“ठीक है, प्रस्थान करो।” भैरवनाथ मुस्कुराया।

‘धन्यवाद।’ सुर्जन मुड़कर आगे बढ़ गया।

“एक और बात सुर्जन!” भैरवनाथ ने उसे पीछे से पुकार लगायी।

सुर्जन ने मुड़कर अपने गुरु की ओर देखा। “कहिये गुरुदेव।”

“स्मरण रखना, शांति कभी स्थायी नहीं होती।” रक्षगुरु ने चेतावनी भरे स्वर में कहा।

कुछ क्षण विचार के उपरांत सुर्जन ने कहा, “मैं जानता हूँ गुरुदेव।”

इसके उपरांत वह अपने अश्व आरूढ़ हुआ और अपने निश्चित स्थान की ओर बढ़ चला।

“हमारा अगला कदम क्या होना चाहिए गुरुदेव?” सुर्जन के घने वन में लुप्त होने के उपरांत भद्राक्ष ने भैरवनाथ से प्रश्न किया।

“हमें उसके प्रेम से उसे अलग करना होगा, क्योंकि यही एक मार्ग है उसके जीवन की रक्षा करने का।” भैरवनाथ ने कहा।

“मैं आपसे सहमत हूँ गुरुदेव, किंतु हम यह करेंगे कैसे?” भद्राक्ष ने प्रश्न उठाया।

“पहले मुझे यहाँ हुई सभी घटनाओं का पूर्ण रूप से विश्लेषण करना होगा; इसके उपरांत इस कार्य के लिए हमें एक उचित योजना की आवश्यकता होगी।” भैरवनाथ कोई योजना बुनने की ताक में था।

वहीं सुर्जन उस स्थान पर पहुँच आया, जहाँ गंधर्व उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। वो अपने अश्व से नीचे उतरा।

दुर्धरा बड़ी व्यग्रता से उसकी प्रतीक्षा में थी। उसे देखते ही वह उसकी ओर दौड़ी, “कहाँ थे तुम?”

“बस अपने घावों के उपचार के लिए गया था।” सुर्जन ने उत्तर दिया।

“अपने ऊपर का वस्त्र उतारो।” दुर्धरा ने उससे कहा।
 “कैसी बातें कर रही हो दुर्धरा; यहाँ इतने लोग खड़े हैं।” सुर्जन हिचकिचाने लगा।
 “जैसा कहा है, वैसा करो।” दुर्धरा ने क्रोध में कहा।
 “ठीक है।” सुर्जन ने अपने कमर के ऊपर का वस्त्र निकाल दिया।
 “देखो इस घाव की ओर, मैंने इस पर जड़ी बूटियाँ और पट्टी लगा दी है; यह शीघ्र ही ठीक हो जायेगा।” सुर्जन ने अपनी कमर पर बँधी पट्टी दिखाई।
 दुर्धरा ने क्षण भर उन घावों की ओर देखा, “उचित है, जाओ और कुछ समय विश्राम कर लो।”
 “हाँ, वो तो करना ही पड़ेगा।” सुर्जन ने साँस भरते हुए कहा।
 वहीं उग्रसेन अपनी पुत्री को देख विचारों में थे। “बहुत हठी है यहा।”

* * *

डकैतों के निवास स्थान पर, सुवर्मा ने मेघवर्ण को संदेश भेजा। वह गुफा के एक स्थान पर अकेले बैठे थे। मेघवर्ण उनके पास पहुँचा।
 ‘पिताश्री।’ मेघवर्ण सुवर्मा को देख उसके चरणों में झुका।
 “हम्म..।” सुवर्मा ने उसे उठाकर उसकी ओर मुस्कुराकर देखा।
 “आपने मुझे बुलाया?” मेघवर्ण ने प्रश्न किया।
 “हाँ, मैंने ही संदेश भिजवाया था... यहाँ बैठो।” सुवर्मा ने उसे अपने निकट बैठने को कहा।
 मेघवर्ण ने वैसा ही किया।
 “तो वैसे आजकल तुम्हारे जीवन में चल क्या रहा है?” सुवर्मा ने हिचकिचाते हुए प्रश्न किया।
 “वो... कुछ विशेष नहीं।” मेघवर्ण भी हिचकिचाहट में था।
 “हाँ, मैं समझ सकता हूँ, यह थोड़ा अजीब सा लगता है, क्योंकि बहुत समय हो गया, हमने इस प्रकार रूँ बैठकर वार्ता नहीं की, है न?” सुवर्मा मुस्कुराये।
 “हाँ, वो तो है।” मेघवर्ण ने भी मुस्कुराते हुए उत्तर दिया।
 “आज के दिन मैं सभी कार्यों से मुक्त हूँ; मेरे पास समय ही समय है, तो तुम अपने मन की जो भी बात मुझसे साझा करना चाहते हो, कर सकते हो।”
 “सच में पिताश्री?” मेघवर्ण उत्साहित हो गया।
 “हाँ, बिलकुल।” सुवर्मा ने मुस्कुराकर कहा।
 “मुझे तो आपको बहुत कुछ बताना है; वैसे मैंने तलवार चलाने का अभ्यास अभी आरंभ किया है, किंतु मैंने वहाँ और अभी अस्त्र-शस्त्र रखे देखे हैं...।” मेघवर्ण पूरे आधे प्रहर तक अपने बालपन की मासूम बातें करता रहा।
 आधे प्रहर के उपरांत सुवर्मा ने हस्तक्षेप किया, “बस, बस रुक जाओ। अब मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ।”
 “और वो क्या है?” मेघवर्ण ने उत्साह में प्रश्न किया।
 सुवर्मा, मेघवर्ण का हाथ पकड़कर भूमि पर बैठे और उस बालक के नेत्रों में देखा, “अब मेरी ध्यान से सुनो मेघवर्ण; तुम डकैत समूह के होने वाले सरदार हो और इस दल का सरदार होने के नाते तुम्हारा पहला दायित्व हमारे गुरुदेव का अनुसरण करना है... वो जो भी कहें, जैसा भी कहें

तुम्हें नेत्र बंद करके मानना है।”

“ठीक है पिताश्री; किंतु...।” मेघवर्ण ने बीच में बोलने का प्रयत्न किया।

“मेरी बात पूरी होने दो पुत्र, मेरे पास अधिक समय नहीं है।”

“किंतु मुझे तो लगा था कि आज आपने अपना समय मेरे लिए निकाला है।” मेघवर्ण ने मासूमियत से कहा।

“कुछ भी जीवन में स्थायी नहीं होता पुत्र... तुम्हारे लिए जो मैंने समय निकाला है, उसकी भी अपनी एक सीमा है, इसलिए मैं जो भी कह रहा हूँ, उसे ध्यान से सुनो।” सुवर्मा ने कहा।

“ठीक है, मैं सुन रहा हूँ।” मेघवर्ण ने कहा।

“हाँ, तुम्हें सुनना ही चाहिए, क्योंकि तुम डकैत समूह के होने वाले सरदार हो। स्मरण रखना, हमें डकैत कहा जाता है, किंतु फिर भी हम निर्दोषों को हानि नहीं पहुँचाते। हमारा लक्ष्य पाप कर्म करने वालों के विरुद्ध खड़ा होना है। गंधर्वों के साथ अपना संबंध कभी न तोड़ना, क्योंकि वो भी धर्म के मार्ग पर हैं; यह दोनों दल सदैव ही साथ रहे हैं और सदैव ऐसा ही रहना चाहिए और इस बात का विशेष ध्यान रखना कि तुम सदैव हमारे गुरुदेव का अनुसरण करो... उन्होंने हमारे इस दल का निर्माण किया है और उसे एक वृक्ष की जड़ की भाँति सींचा है, उनसे बड़ा और योग्य मार्गदर्शक तुम्हारे लिए और कोई नहीं हो सकता। इस युग में पापियों की संख्या बढ़ रही है और हमें उनके विरुद्ध खड़ा होना है; इसलिए मुझे वचन दो, चाहे कुछ भी हो जाए, तुम सदैव हमारे गुरुदेव का अनुसरण करोगे।”

“आप ऐसा क्यों कह रहे हैं? मेरा मार्गदर्शन करने के लिए तो आप यहाँ हैं ही?” मेघवर्ण ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

सुवर्मा ने साँस भरते हुए अपने उस गोद लिए हुए पुत्र की ओर देखा, “नहीं, मेरे पुत्र। आज तुम्हारे साथ मेरा अंतिम दिन है।”

मेघवर्ण उठ खड़ा हुआ और आश्चर्य से प्रश्न किया, “अंतिम दिन! आप इस प्रकार क्यों बात कर रहे हैं?”

“मैं एक अंतहीन यात्रा की ओर प्रस्थान कर रहा हूँ पुत्र; मैं वहाँ से वापस नहीं लौटूँगा... अब मैं पाँच सहस्र डकैतों के नेतृत्व के इस भार से मुक्त होना चाहता हूँ।” सुवर्मा ने कहा।

“यह तो कोई कारण नहीं हुआ प्रस्थान करने का; यदि आप अपने दायित्वों से मुक्त होना चाहते हैं, तो मैं आपके सभी दायित्वों का निर्वहन करूँगा। किंतु मैं आपका पुत्र हूँ, आपकी एकमात्र संतान हूँ; आप मुझे छोड़कर कैसे जा सकते हैं?” मेघवर्ण रुआँसा हो गया।

सुवर्मा ने मेघवर्ण को कसकर हृदय से लगा लिया, “मुझे जाना होगा, पुत्र; मैं यह करना नहीं चाहता, किंतु मैं विवश हूँ।”

मेघवर्ण ने उन्हें पीछे धकेल दिया, “मैं समझ गया आप ऐसा क्यों कर रहे हैं; क्यों मैं आपकी वास्तविक संतान नहीं हूँ, है न?”

सुवर्मा के नेत्रों से भी अश्रु की कुछ बूँदें बह निकलीं, “तुम्हारा यह अनुमान मिथ्या है पुत्र। मैं सदैव तुमसे कहना चाहता था, किंतु कभी कह नहीं पाया, कि एक तुम ही हो जिसका मेरे जीवन में महत्व है। वो तुम ही हो जिससे मैंने संसार में सबसे अधिक प्रेम किया है... तुम मेरी वास्तविक संतान रहो या नहीं, इस बात से कोई अंतर नहीं पड़ता।”

“तो फिर आप मुझे छोड़कर क्यों जा रहे हैं?” मेघवर्ण ने अधीरतापूर्वक प्रश्न किया।

सुवर्मा उसके निकट आये और उसके हाथों को अपने हाथ में लिया। “कुछ बातें ऐसी हैं, जो तुम युवा होने से पूर्व नहीं समझ सकते पुत्र, इसलिए मैं तुमसे केवल एक वचन चाहता हूँ, कि मेरे जाने के उपरांत तुम हमारे गुरुदेव का अनुसरण करोगे; वो जो कहेंगे, जैसा कहेंगे, तुम्हें वही करना होगा।”

“मैं ऐसा क्यों करूँ? आप मेरे पिता हैं, वो नहीं।” मेघवर्ण को क्रोध आने लगा।

“तुमने कहा कि तुम मेरी वास्तविक संतान नहीं हो; किंतु हमारे गुरुदेव ही वो व्यक्ति हैं, जिन्होंने नवजात अवस्था में तुम्हें मुझे सौंपा था और यही मेरी अंतिम इच्छा है।” सुवर्मा के नेत्र एक बार फिर नम हो गए।

मेघवर्ण, अश्रु बहाते हुए सुवर्मा से लिपट गया।

“अश्रु नहीं बहाओ पुत्र, यदि तुम मुझे अपना पिता मानते हो, तो मुझे वचन दो।” सुवर्मा ने मेघवर्ण से कहा।

मेघवर्ण ने अपने पिता के नेत्रों में देख कहा, “मैं आपको वचन देता हूँ पिताश्री, मैं डकैत समूह के गुरुदेव का सदैव अनुसरण करूँगा।”

सुवर्मा उठे। “बस यही थी मेरी अंतिम इच्छा... अलविदा मेरे पुत्र; तुम्हारे लिए लिया गया मेरा समय समाप्त हुआ, अब प्रस्थान का समय हो चला है।” यह कहकर वह मुड़ गए।

मेघवर्ण अभी भी उनकी ओर निहार रहा था।

एक क्षण उपरांत सुवर्मा पीछे मुड़े, “जीवन बहुत छोटा है मेघवर्ण। इसलिए प्रयत्न करना कि सदैव धर्म के मार्ग पर स्थिर खड़े रहो।”

“अलविदा पिताश्री।” मेघवर्ण के नेत्रों से अश्रु बहे जा रहे थे।

सुवर्मा वहाँ से प्रस्थान कर गए।

मेघवर्ण वहीं स्थिर खड़ा रहा। कुछ क्षणों उपरांत उसने निर्णय लिया, “मैं यह रहस्य ज्ञात करके रहूँगा कि आप कहाँ जा रहे हैं?”

वो सुवर्मा का पीछा करने आगे बढ़ा, किंतु पीछे से एक हाथ ने उसे रोक लिया। “हमें आदेश मिला है, आपको हमें दूसरे सुरक्षित स्थान पर ले जाना है।” उसके पीछे कई डकैत योद्धा खड़े थे।

“नहीं, मैं नहीं जाऊँगा।” मेघवर्ण ने स्पष्ट रूप से मना कर दिया।

“हठी बालक की भाँति व्यवहार न कीजिये छोटे सरदार, आप हमारे डकैत समूह का भविष्य हैं और यह हमारे गुरुदेव का आदेश है... आपने उनका अनुसरण करने का प्रण लिया है। यह एक पवित्र प्रतिज्ञा है, जिसे आपको भंग नहीं करना चाहिए।” उन पीछे खड़े डकैतों में से एक ने कहा।

मेघवर्ण उस आदेश को मानने को विवश हो गया।

वहीं सुवर्मा को दण्ड के लिए एक पत्थर के निकट लाया गया। भारी तलवार उठाये हुए महाबली अखण्ड वहाँ उपस्थित थे।

सुवर्मा को बेड़ियों में जकड़कर वहाँ लाया गया था। उनके मुख पर लेश मात्र भी भय नहीं था।

वहीं मेघवर्ण वन मार्ग में डकैतों के साथ चल रहा था। अकस्मात् ही एक स्वर सुन उसके कदम रुक गए।

“द्रोही... द्रोही... द्रोही...।” सैकड़ों मनुष्यों के मुख से निकल रहा वो स्वर इतना ऊँचा था, कि दूर-दूर तक सुना जा सकता था।

“यह कैसा स्वर है?” मेघवर्ण ने अपने साथ चलते हुए डकैत सैनिकों से प्रश्न किया।

“कुछ विशेष नहीं, हमें प्रस्थान करना चाहिए।” एक डकैत ने उत्तर दिया।

किंतु जिज्ञासु मेघवर्ण में इतना धैर्य नहीं था, “नहीं, मुझे जानना है, इसलिए सर्वप्रथम मैं उस स्थान पर जाऊँगा।”

“हमें आदेश मिला है, कि हमें आपको यहाँ से दूर ले जाना है, हमें उस आदेश का पालन करना ही होगा।” एक डकैत सैनिक ने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा।

“मैं समझ गया हूँ, कि कुछ तो गलत हो रहा है... मैं जाऊँगा और यह ज्ञात करूँगा कि वहाँ क्या हो रहा है।” मेघवर्ण ने उस डकैत को धकेलते हुए कहा।

चार डकैत सैनिकों ने उसे पकड़ लिया।

“आप सब मुझे वहाँ जाने से रोकने के लिए इतना प्रयास क्यों रहे हैं?” मेघवर्ण ने उन सबसे आश्चर्यपूर्वक प्रश्न किया।

“हमें ऐसा ही करने का आदेश मिला है।” एक डकैत सैनिक ने उत्तर दिया।

मेघवर्ण को क्रोध आ गया, “कदाचित् यह मेरे पिता के विषय में है; उनके विषय में मैं कोई संकट मोल नहीं ले सकता।”

उसने अपनी पूरी शक्ति का उपयोग किया और उन चारों डकैत सैनिकों को पीछे धकेल दिया। इसके उपरांत वो उन स्वरों की दिशा में दौड़ पड़ा।

उस चौदह वर्षीय बालक की भुजाओं का बल देख डकैत सैनिक स्तब्ध रह गये।

“अब मुझे यह समझ आया कि इस बालक को हमारा अगला सरदार क्यों चुना गया है।” एक डकैत सैनिक ने दूसरे से कहा।

“हाँ, तुमने सत्य ही कहा।” दूसरे डकैत सैनिक ने उसका समर्थन किया।

मेघवर्ण दौड़ता रहा।

वहीं सुवर्मा को बलि के पत्थर के और निकट लाया गया एवं उसका मस्तक काटने के लिए नीचे किया गया।

भारी तलवार लिए महाबली अखण्ड, सुवर्मा के निकट आये।

“तुम्हें द्रोह के अपराध में दोषी पाया गया है सुवर्मा... नियमों का पालन करते हुए मैं इस दल का संगठनकर्ता और डकैतों के मार्गदर्शक होने के अधिकार से तुम्हें मृत्युदण्ड देने की घोषणा करता हूँ।” अखण्ड ने घोषणा की।

“मुझे स्वीकार है।” सुवर्मा ने अपने नेत्र बंद कर लिए।

उसी क्षण मेघवर्ण वहाँ आ पहुँचा। अपने पिता का मस्तक उस पत्थर पर देख वो स्तब्ध रह गया।

सुवर्मा ने उसे देख लिया।

“अपने अंतिम क्षणों में तुम कुछ कहना चाहते हो सुवर्मा?” अखण्ड ने दण्ड देने से पूर्व प्रश्न किया।

मेघवर्ण का मानो कंठ ही जाम हो गया था। उसके मुख से शब्द नहीं फूट पा रहे थे, इसीलिए किसी का ध्यान उसकी ओर नहीं गया।

वहीं सुवर्मा की दृष्टि उसकी ओर गयी। उन्होंने अपने पुत्र की ओर मुस्कुराते हुए देखा और महाबली अखण्ड से अपने अंतिम शब्द कहे, “अपनी ली हुई प्रतिज्ञा किसी को भंग नहीं करना चाहिए, क्योंकि ईश्वर की दृष्टि सदैव हम पर रहती है।”

मेघवर्ण के लिए अपने पिता द्वारा दी गयी यह अंतिम शिक्षा थी। महाबली अखण्ड ने तलवार चलायी।

डकैतों के पूर्व सरदार का मस्तक पत्थर से छटककर दस गज की दूरी पर जा गिरा।

मेघवर्ण का पूरा शरीर कुछ क्षणों के लिए जम सा गया।

‘नहीं...!’ अगले ही क्षण मेघवर्ण चीखा।

महाबली अखण्ड और अन्य डकैतों का ध्यान उसकी ओर गया।

वो अपने पिता के तड़पते शरीर की ओर दौड़ा। कई डकैत सैनिकों ने उसे पकड़ने का प्रयत्न किया, किंतु क्रोधित मेघवर्ण ने उन सबको पीछे धकेल दिया।

अंततः महाबली अखण्ड ने उसका हाथ पकड़कर उसे रोका। उनके बल से मेघवर्ण पार नहीं हो पा रहा था।

“छोड़ो मुझे हत्यारे, तुमने मेरे पिता की हत्या की है।” वो चौदह वर्षीय बालक चीखा।

“वो तुम्हारा पिता नहीं था, केवल रक्षक था और उसका किया अपराध उसे मृत्यु के मुख में ले गया।” अखण्ड ने मेघवर्ण को डपटा।

मेघवर्ण ने अखण्ड के नेत्रों में क्रोध से देखा, “वो मेरे पिता थे और सदैव रहेंगे, क्यों मारा आपने उन्हें? क्या अपराध था उनका?”

“तुम्हारी आयु अभी इतनी नहीं हुई है कि मैं तुम्हें यह सब समझा सकूँ; यह घटना बहुत उलझी हुई है।” अखण्ड ने उत्तर दिया।

“मुझे अभी जानना है।” मेघवर्ण चीखा।

“नहीं, तुम्हें यह सत्य नहीं बताया जाएगा और मैं इस बात का भी ध्यान रखूँगा कि कोई और भी तुम्हें यह सत्य न बताये... एक दिन यह सत्य मैं तुम्हें स्वयं बताऊँगा, किंतु उसके लिए तुम्हें भी एक कार्य करना होगा।” अखण्ड ने कहा।

“कैसा कार्य?” मेघवर्ण ने क्रोध में प्रश्न किया।

“जिस दिन तुम मुझे पराजित करने जितने योग्य बन गए, मैं वचन देता हूँ कि मैं तुम्हें अपना मुख भी दिखाऊँगा और तुम्हारे पिता की मृत्यु के सत्य से तुम्हें अवगत भी कराऊँगा... और भूलो मत, तुमने मेरा अनुसरण करने की प्रतिज्ञा ली है।” अखण्ड ने उस चौदह वर्षीय बालक के नेत्रों में देखा।

मेघवर्ण ने सुवर्मा के शरीर की ओर देखा। उसके नेत्र अश्रुओं से भर गए। “हाँ, मेरे पिता की अंतिम इच्छा थी यह, इसलिए मैं आपका अनुसरण करूँगा।

“और मैं तुम्हें स्वयं से उच्च श्रेणी का योद्धा बनाने की शिक्षा दूँगा, उसके उपरांत तुम मुक्त हो जाओगे।” महाबली अखण्ड ने कहा।

“जिस दिन आपने मुझे मुक्त किया, सबसे पहले मैं आपका मस्तक कुचलूँगा।” मेघवर्ण, अखण्ड की ओर क्रोध से देख रहा था।

“मुझे उस दिन की प्रतीक्षा रहेगी; किंतु उससे पूर्व तुम्हें कड़ा अभ्यास कर स्वयं को इस योग्य बनाना होगा।” अखण्ड ने मेघवर्ण की ओर देखकर कहा।

“मैं करूँगा... मैं आज से ही अपनी शिक्षा आरंभ करूँगा और यह सुनिश्चित भी करूँगा कि आपसे कहीं अधिक श्रेष्ठ योद्धा बनूँ।” मेघवर्ण के नेत्र, प्रतिशोध की ज्वाला से धधक रहे थे।

“तो फिर पहले जाओ और अपने पिता के शव को अग्नि दो, यह शरीर अपनी अंत्येष्टि की

प्रतीक्षा में है।” अखण्ड ने वहाँ खड़े डकैत सैनिकों को चिता के प्रबंध करने का संकेत दिया।

शीघ्र ही डकैतों के पूर्व सरदार के शव को चिता पर लिटाया गया। मेघवर्ण के नेत्र अश्रुओं से भरे हुए थे। चंद्रकेतु उसके साथ था।

अपने नेत्रों में अश्रु लिए उसने सुवर्मा के शव को मुखान्न दी।

“सब ठीक हो जायेगा मेघवर्ण।” चंद्रकेतु ने अपने मित्र को सान्त्वना दी।

“हाँ, सब अवश्य ठीक हो जाएगा; जिस दिन मेरा प्रतिशोध पूर्ण होगा, उस दिन सब ठीक हो जायेगा।” मेघवर्ण के नेत्र प्रतिशोध की ज्वाला में धधक रहे थे।

तभी गंधर्वों का सेनापति उपमन्यु वहाँ आ पहुँचा। उसने झुककर अखण्ड का अभिवादन किया।

“यहाँ आने का कारण?” अखण्ड ने उससे प्रश्न किया।

“मैं यहाँ अपने पुत्र चंद्रकेतु को लेने आया हूँ और उसके साथ मेघवर्ण को भी।” उपमन्यु ने कहा।

चंद्रकेतु, मेघवर्ण की ओर देख मुस्कुराया, “तो अब तुम हमारे साथ रहोगे।”

“नहीं, मैं नहीं रहूँगा।” मेघवर्ण ने आगे बढ़कर उनकी वार्ता में हस्तक्षेप किया।

उपमन्यु, मेघवर्ण की ओर मुड़ा। “तुम्हें परिवार के सहारे और प्रेम की आवश्यकता है बालक और हम तुम्हारा परिवार बनेंगे।”

“मुझे किसी परिवार की आवश्यकता नहीं है, मेरी शिक्षा आरंभ होने का समय आ गया है। मेरा बालपन मेरे पिता की इस चिता के साथ जलकर भस्म हो गया, इसलिए अब मुझे किसी सहारे की आवश्यकता नहीं है।” मेघवर्ण ने दृढ़ता से कहा।

“किंतु...।” उपमन्यु स्तब्ध रह गया।

अखण्ड ने हस्तक्षेप कर उपमन्यु से कहा, “यह मेरा भी अंतिम निर्णय है... जब तक यह दोनों शिक्षण और अभ्यास द्वारा स्वयं को एक सामर्थ्यवान योद्धा में परिवर्तित नहीं कर लेते, ये कहीं नहीं जायेंगे... मैंने तुम्हें पहले भी कहा था, तुम्हारा यह पुत्र भी सदैव तुम्हारे साथ नहीं रहेगा।”

“हाँ, मुझे वो वचन स्मरण है जो चौदह वर्ष पूर्व मैंने और सुवर्मा ने आपको दिया था।” उपमन्यु ने सहमति जताई।

“तो फिर उन वचनों का मान रखने का समय आ गया है; तुम्हें यहाँ से प्रस्थान करना चाहिए।” अखण्ड ने आदेश दिया।

उपमन्यु ने क्षण भर साँस भरी और अखण्ड के समक्ष झुका, “जो आज्ञा, मैं अभी इस समय प्रस्थान करता हूँ।”

“किंतु पिताश्री....।” चंद्रकेतु ने हस्तक्षेप का प्रयत्न किया।

उपमन्यु ने चंद्रकेतु की ओर देखा, “मैं तुमसे भेंट करने आता रहूँगा पुत्र।”

7. सत्य बाहर आया

उपमन्यु वहाँ से प्रस्थान कर गया। उसे जाते हुए देख चंद्रकेतु के नेत्रों से अश्रु बह आये।
“मैं यहाँ तुम्हारे साथ हूँ” मेघवर्ण ने अपने मित्र के कंधे पर हाथ रखकर कहा।
वहीं उपमन्यु शेष सेना के साथ गंधर्वों के शिविर में पहुँचा। कीर्तिध्वज उसका बंदी था। उसे मूर्छित अवस्था में ही एक वृक्ष से बाँध दिया गया।
“अब हमें इसके साथ क्या करना चाहिए?” उपमन्यु ने सुझाव की माँग की।
“हमें इसे मुक्त कर देना चाहिए” सुर्जन ने सुझाव दिया।
दुर्धरा और अन्य गंधर्वों को उसका यह सुझाव अटपटा सा लगा।
“क्या तुम वास्तव में इसे मुक्त करने की बात कर रहे हो? यह हमारा शत्रु है।” उपमन्यु ने आश्चर्यपूर्वक प्रश्न किया।
“यह हस्तिनापुर का सेनापति भी है; हमारे साथ इसकी कोई निजी शत्रुता नहीं है और यही कारण है कि हमें इसकी हत्या नहीं करनी चाहिए” सुर्जन ने कहा।
“किंतु यह शत्रु सेना का सेनापति था।” दुर्धरा ने अपना मत रखा।
“एक विद्वान मनुष्य ने मुझसे कुछ स्वर्णिम शब्द कहे थे, कि हमें जीवन में उस मार्ग का चुनाव करना चाहिए, जो हमारी आत्मा को संतुष्टि प्रदान करे। मैं एक आदर्श योद्धा के रूप में अपनी पहचान बनाना चाहता हूँ, क्योंकि यही मेरे हृदय और आत्मा की संतुष्टि का मार्ग है और एक आदर्श योद्धा कभी घायल और मूर्छित योद्धा का वध नहीं करता।” सुर्जन ने दुर्धरा की ओर देखते हुए कहा।
“यदि हमने इसका वध नहीं किया, तो यह हमारे निवास-स्थान का भेद खोल देगा।” उपमन्यु ने हस्तक्षेप किया।
“और यदि इसकी हत्या की गयी तो हम पर कायरता का कलंक लग जायेगा और जहाँ तक हमारे निवास स्थान की सुरक्षा का प्रश्न है, तो उसके लिए मेरे पास एक योजना है।” सुर्जन ने कहा।
“और क्या है वो योजना?” उपमन्यु ने प्रश्न किया।
“हमें इसे सुरक्षित हस्तिनापुर तक पहुँचाना होगा। इसे लौटने में समय लगेगा और तब तक हम अपना निवास स्थान परिवर्तित कर दूसरे स्थान की ओर पलायन कर सकते हैं।” सुर्जन ने सुझाव दिया।
“वाह! क्या योजना है; तुम्हें वास्तव में लगता है कि हम इस योजना पर अमल करेंगे?” उपमन्यु ने उस पर कटाक्ष किया।
“हम इसी योजना पर अमल करेंगे।” पीछे से एक स्वर सुनाई दिया।
यह राजा उग्रसेन थे। महाऋषि शंकराचार्य भी उनके साथ थे। शंकराचार्य ने पहली ही दृष्टि में सुर्जन को पहचान लिया, किंतु सुर्जन ने कभी उनका मुख नहीं देखा था।
उपमन्यु अपने राजा के समक्ष झुका।
“घुटनों के बल झुको, यह हमारे राजा हैं।” दुर्धरा ने सुर्जन से कहा। उसने दुर्धरा का अनुसरण

किया और अन्य गंधर्वों की भाँति घुटनों के बल झुक गया।

“उठो सभी!” उग्रसेन ने आदेश दिया।

सभी गंधर्व खड़े हो गए।

“आपने अभी अभी क्या कहा महाराज?” उपमन्यु ने प्रश्न किया।

“यही कि हम सुर्जन के दिए इस सुझाव पर अमल करेंगे।” उग्रसेन ने कहा।

“किंतु, महाराज..।” उपमन्यु स्तब्ध रह गया।

“चकित मत हो उपमन्यु... एक समय ऐसा था जब त्रिगर्ता राज्य हमारा सहयोगी था; हमारे बीच का मतभेद महाराज सत्व की मृत्योपरान्त आरंभ हुआ। हमारी हस्तिनापुर से कोई शत्रुता नहीं है और यदि हमने उनके सेनापति का वध किया, तो एक और राज्य हमारा शत्रु बनकर खड़ा हो जायेगा, क्योंकि विदर्भ राज्य की ही भाँति हस्तिनापुर, आर्यवर्त की एक बड़ी शक्ति है।” उग्रसेन ने कठोर स्वर में कहा।

“मैं आपसे सहमत हूँ महाराज, किंतु उपनंद हस्तिनापुर के महाराज दुष्यंत का बहनोई है, निःसंदेह वह उसी का समर्थन करेंगे।” उपमन्यु ने अपना मत रखा।

“हाँ, तुम्हारा यह मत विचारणीय है उपमन्यु, किंतु मेरी भेंट हस्तिनापुर के महाराज दुष्यंत से हुई है; वह एक आदर्श योद्धा भी हैं और अपने वचन के पक्के भी... वो धर्म और अधर्म के मध्य का अंतर जानते हैं, हम इस विषय पर उनसे चर्चा करेंगे और हमें आशा है कि वो हमारा ही समर्थन करेंगे।” उग्रसेन ने कहा।

उपमन्यु के पास कहने को और कुछ नहीं था, “जैसी आपकी इच्छा महाराज।”

“तो फिर तय रहा, हम कीर्तिध्वज को सुरक्षित हस्तिनापुर भेजेंगे और यही मेरा अंतिम निर्णय है।” उग्रसेन ने आदेश दिया।

दुर्धरा ने सुर्जन की ओर देख कहा, “प्रतीत होता है कि तुमने मेरे पिता के मन पर भी अपना प्रभाव डालना आरंभ कर दिया है।”

“कदाचित्, हाँ।” सुर्जन मुस्कराया।

“तो फिर उचित यही होगा कि हम सब विश्राम हेतु प्रस्थान करें। आज का दिन बहुत कठिन परिश्रम वाला रहा... जाओ और सब अपने अपने शिविर में जाकर विश्राम करो।” उग्रसेन ने आदेश दिया।

सभी गंधर्व अपने अपने शिविर की ओर बढ़े। महर्षि शंकराचार्य अभी भी सुर्जन की ओर देख रहे थे।

“एक क्षण सुर्जन! शंकराचार्य ने उसे रोकने के लिए पीछे से पुकार लगायी।

सुर्जन, महर्षि की ओर मुड़ा। “कहिये ऋषिवर, क्या सहायता कर सकता हूँ मैं आपकी?”

उनकी वार्ता सुनने के लिए अब को कोई और वहाँ उपस्थित नहीं था। महाऋषि शंकराचार्य, सुर्जन के निकट आये और उससे प्रश्न किया, “कौन हो तुम सुर्जन?”

“वो... एक व्यापारी का अंगरक्षक।” सुर्जन ने हिचकिचाहट भरे स्वर में कहा।

“तो असुरों के महानायक दुर्भीक्ष आज एक ब्राह्मण के समक्ष हिचकिचा रहे हैं, ऐसा क्यों? कोई और तो यहाँ नहीं है।” शंकराचार्य ने उसकी ओर देख कटाक्ष किया।

सुर्जन स्तब्ध रह गया। “आपको यह सत्य कैसे ज्ञात हुआ? मैंने तो आज से पूर्व आपको नहीं देखा।”

इससे पूर्व वो कुछ और कहता, शंकराचार्य ने हस्तक्षेप किया, “किंतु मैंने तुम्हें देखा है; क्या योजना है तुम्हारी? क्या तुम दुर्धरा से वाकई प्रेम करते हो?”

“हाँ, मैं करता हूँ, इसलिए मैं यहाँ हूँ” सुर्जन ने दृढ़ता से उत्तर दिया।

“कदाचित्, तुम उचित मार्ग पर हो; क्या इस मार्ग पर सदैव चल पाओगे?” शंकराचार्य ने प्रश्न किया।

“कौन हैं आप?” सुर्जन ने जिज्ञासावश प्रश्न किया।

“जब महाराज तेजस्वी, विदर्भ के राजा थे, तब मैं उस राज्य का कुलगुरु था।” महाऋषि शंकराचार्य ने अपना परिचय दिया।

सुर्जन स्तब्ध रह गया। उसे सूझ नहीं रहा था कि वो क्या कहे।

“चिंतित मत हो, मैं तुम्हारा भेद नहीं खोलने वाला, किंतु उसके लिए मेरी एक शर्त है।” शंकराचार्य ने कहा।

“कैसी शर्त?” सुर्जन ने प्रश्न किया।

“तुम जिस मार्ग पर अभी चल रहे हो, तुम्हें उसी मार्ग पर चलते रहना होगा।”

“मैं आपकी बात समझा नहीं; क्या आप प्रतिशोध की मंशा नहीं रखते?” सुर्जन ने आश्चर्यपूर्वक प्रश्न किया।

शंकराचार्य ने साँस भरते हुए कहा, “नहीं, हमारी ऐसी कोई मंशा नहीं है... उस घटना के लिए केवल तुम उत्तरदायी नहीं थे; हमें केवल शांति की आकांक्षा है।”

“फिर तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, मैं शांति का यथासंभव प्रयत्न करूँगा, किंतु मैं अपनी ली प्रतिज्ञा तोड़ नहीं सकता।”

“हाँ, मुझे अनुभव है कि तुम ऐसा नहीं करोगे; तुम उस दुर्दांत राजा जयवर्धन के समर्थन में सदैव खड़े रहोगे... किंतु आज तक इससे तुम्हें प्राप्त क्या हुआ है?” महर्षि शंकराचार्य ने प्रश्न उठाया।

“उसने मुझे मेरा जीवन लौटाया है और मुझे उसका वो ऋण उतारना ही है।” सुर्जन ने स्पष्ट उत्तर दिया।

महाऋषि शंकराचार्य कुछ क्षण के लिए मौन हो गए।

“मैं तुम्हारी प्रशंसा करता हूँ दुर्भीक्ष; तुम्हें यह ज्ञात था कि तुम्हारा प्रेम तुम्हारी मृत्यु का कारण बन सकता है, फिर भी तुमने अपने प्रेम का चुनाव किया।” शंकराचार्य ने दुर्भीक्ष की प्रशंसा की।

सुर्जन स्तब्ध रह गया, “आपको यह रहस्य कैसे ज्ञात हुआ?”

उपनंद को परास्त करने के उपरांत जब तुम मंदिर से भागे थे, तब मैंने तुम्हारा पीछा किया था... जब तुम्हारी भेंट भैरवनाथ से हुई, तब एक वृक्ष की ओट में छुपकर मैंने तुम्हारी पूरी वार्ता सुनी।” शंकराचार्य ने उत्तर दिया।

“हम्म... इसका अर्थ है कि आप भी वहाँ उपस्थित थे?” सुर्जन मुस्कुराया।

“हाँ, मेरे कहने का अर्थ तो यही है।”

“तो क्या आप मुझे चेतावनी देने आये हैं?” सुर्जन ने प्रश्न किया।

शंकराचार्य मुस्कुराये, “मुझे ज्ञात है कि तुम्हें मृत्यु का कोई भय नहीं है... हमें केवल शांति की आकांक्षा है और मैंने सुना, तुमने भैरवनाथ से जो भी कहा। हमारी तुमसे कोई निजी शत्रुता

थी ही नहीं; जाओ और अपना जीवन शांति से व्यतीत करो और यदि तुम एक आदर्श योद्धा के रूप में अपनी पहचान बनाना चाहते हो, तो कभी शांति का मार्ग अवरुद्ध मत करना, क्योंकि एक आदर्श योद्धा का भी तो यही धर्म होता है, है न?”

“मैं वचन तो नहीं देता, किंतु ऐसा प्रयत्न अवश्य करूँगा।”

“उचित है... आशा है कि फिर कभी हमारी भेंट युद्धभूमि में न हो।” शंकराचार्य ने कहा।

“मैं भी ऐसी ही आशा करता हूँ ऋषिवरा” सुर्जन ने उत्तर दिया।

महर्षि शंकराचार्य प्रस्थान के लिए मुड़े।

“मुझे मृत्यु का भय नहीं है ऋषिवरा” सुर्जन ने उनकी पीठ के पीछे कहा।

शंकराचार्य उसकी ओर मुड़कर मुस्कुराये। “हाँ, मुझे यह ज्ञात है; किंतु यदि आवश्यकता पड़ी, तो हम उसका मार्ग भी खोज निकालेंगे।”

सुर्जन के मुख पर चुनौती भरी मुस्कान थी।

शंकराचार्य पलटकर घने वनों में लुप्त हो गए।

सुर्जन विचारों में खो गया। “इस नश्वर संसार में मृत्यु तो सबको आनी है और यदि मेरा प्रारब्ध... मेरी मृत्यु का मार्ग मेरे प्रेम से होकर निकालेगा, तो मैं उस मृत्यु का स्वागत करूँगा।”

* * *

वहीं अपने महल में उपनंद की चेतना एक दिन के पश्चात लौटी।

महल का एक रक्षक उसके कक्ष में आया, “आपसे कोई मिलने आया...।”

“चले जाओ, मैं किसी को देखना नहीं चाहता, चले जाओ!” उस रक्षक के शब्द पूरे होने से पूर्व ही उपनंद उस पर चीख पड़ा।

“जो... जो आज्ञा महाराजा” वो रक्षक भयभीत होकर कक्ष से बाहर जाने के लिए मुड़ा।

“रुको!” उपनंद ने उसे रुकने का आदेश दिया।

वो रक्षक उपनंद की ओर मुड़ा।

“कौन आया है?” उपनंद ने प्रश्न किया।

“वो... वो स्वयं को रक्षगुरु भैरवनाथ बता रहे हैं।” उस रक्षक ने हिचकिचाते हुए उत्तर दिया।

उपनंद यह नाम सुनकर स्तब्ध रह गया। उसने तत्काल ही उस रक्षक को आदेश दिया, “जाओ और उनसे कहो कि मैं उनसे उद्यान में भेंट करूँगा; उन्हें सम्मान सहित वहाँ ले आओ।”

“जो आज्ञा महाराजा” वह रक्षक प्रस्थान कर गया।

कुछ ही समय में भैरवनाथ, भद्राक्ष (असुरों का सेनापति) के साथ महल के उद्यान में उपस्थित हुआ। उपनंद भी शीघ्र ही वहाँ पहुँचा।

उसने भैरवनाथ के समक्ष हाथ जोड़े। “आपका स्वागत है।”

“आप एक दूसरे को जानते हैं?” भद्राक्ष ने प्रश्न किया।

“हाँ, कुछ गुप्त बातें होती रहती हैं हमारे बीच में, तुम्हें इससे कोई समस्या है?” भैरवनाथ ने भद्राक्ष को घूरते हुए प्रश्न किया।

“नहीं गुरुदेव, मैं हस्तक्षेप के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।” भद्राक्ष ने क्षमा याचना की।

“कौन है यह और यह आपके साथ यहाँ क्यों आया है?” उपनंद ने भैरवनाथ से प्रश्न किया।

“यह हमारी योजना का एक अंग है।” भैरवनाथ ने कहा।

“योजना? किस प्रकार की योजना?” उपनंद ने प्रश्न किया।

“तुम्हें दुर्धरा चाहिए, है न?” भैरवनाथ ने उपनंद से प्रश्न किया।

“नहीं, अब वो मुझे पाणिग्रहण हेतु नहीं चाहिए... मैं उस दौड़ में पराजित हुआ हूँ, इसलिए मुझे अपने वचन का मान रखना ही है, किंतु उसकी हत्या करने की इच्छा तो अभी भी मेरे मन में है। किंतु उसके और मेरे मध्य एक बहुत बड़ी दीवार खड़ी हो गयी है, मैं अब तक नहीं समझ पा रहा कि एक साधारण से अंगरक्षक ने मुझ पर विजय कैसे प्राप्त की?” उपनंद झल्लाया हुआ था।

“हाँ, मैं यह सब जानता हूँ, किंतु मैं तुमसे एक प्रश्न करना चाहता हूँ; क्या तुम्हें वाकई लगता है कि एक साधारण सा अंगरक्षक तुम्हें पराजित कर सकता है?” भैरवनाथ ने प्रश्न किया।

उपनंद ने थोड़े अचरज भाव से प्रश्न किया, “क्या आप मुझे कोई ऐसा रहस्य बताना चाहते हैं, जिससे मैं अनभिज्ञ हूँ?”

“तुम न जाने कितने रहस्यों से अनभिज्ञ हो उपनंद.... तुम्हें तो इस बात पर गर्व होना चाहिए, कि तुम्हें उनसे दंड करने का अवसर प्राप्त हुआ।” भैरवनाथ ने गर्व से कहा।

“एक अंगरक्षक से दंड करने में कैसा गर्व?” उपनंद ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“वो कोई साधारण अंगरक्षक नहीं, अपितु असुरों के महान नायक असुरेश्वर दुर्भीक्ष थे। वो महान असुरेश्वर थे, जिनसे तुम सदैव भेंट करने की इच्छा जताते थे।” भैरवनाथ ने उसे सत्य से अवगत कराया।

उपनंद स्तब्ध रह गया, “क्या...? यह आप क्या कह रहे हैं? आप मेरे साथ कोई परिहास तो नहीं कर रहे?”

“मैं कोई परिहास नहीं कर रहा; वो असुरेश्वर ही थे जिनसे तुम सदैव भेंट करने की इच्छा रखते थे।” भैरवनाथ मुस्कुराया।

उपनंद कुछ क्षणों के लिए मौन हो गया।

“फिर तो मैं दुर्धरा को कभी नहीं मार सकता, क्योंकि वो उनसे प्रेम करते हैं।” उपनंद झल्ला उठा।

“नहीं, तुम अब भी ऐसा कर सकते हो।” भैरवनाथ ने कहा।

“क्या? यह आप क्या कह रहे हैं? उनके विरुद्ध खड़े होने का सामर्थ्य नहीं है मुझमें।”

“मैंने ऐसा तो कहा ही नहीं, कि तुम्हें उनके विरुद्ध खड़ा होना है... इसीलिए तो हमें एक योजना की आवश्यकता है।” रक्षगुरु के मुखपर शैतानियत भरी मुस्कुराहट थी।

“कैसी योजना?” उपनंद ने प्रश्न किया।

भैरवनाथ ने उपनंद और भद्राक्ष को अपनी योजना समझानी प्रारंभ की।

योजना सुनने के उपरान्त भद्राक्ष स्तब्ध रह गया। “आप उनके साथ ऐसा कैसे कर सकते हैं? आप असुरेश्वर के साथ इतना बड़ा कपट करने जा रहे हैं?”

“समझने का प्रयत्न करो भद्राक्ष, हमें उनके प्रेम से उन्हें अलग करना ही होगा, यह उनके जीवन की रक्षा का प्रश्न है। क्या उन्हें मिले प्राणघातक श्राप का विस्मरण हो गया है तुम्हें?” भैरवनाथ ने अपना मत रखा।

“किंतु गुरुदेव, क्या अपने राजा को इस प्रकार छलना उचित है?” भद्राक्ष ने प्रश्न किया।

“तुम्हारे लिए क्या महत्वपूर्ण है, तुम्हारी निष्ठा, या तुम्हारे महाराज के प्राण?” भैरवनाथ ने प्रश्न किया।

भद्राक्ष एक गहरे धर्मसंकट में पड़ गया। उसके मुख से शब्द नहीं फूट पा रहे थे।

“यदि तुममें निर्णय लेने की क्षमता नहीं है, तो वैसा ही करो जैसा मैं तुमसे करने को कह रहा हूँ। वो हमारे महाराज हैं, असुरेश्वर हैं वो; किंतु उन्हें असुरेश्वर के इस पद पर मैंने बिठाया है, इसलिए जैसा मैं कहता हूँ, तुम वैसा ही करो।” भैरवनाथ ने आदेश दिया।

“जो आज्ञा गुरुदेवा” भद्राक्ष ने सहमति जताई।

“तो फिर निर्णय हो गया, हम तय योजना के अनुसार ही चलेंगे।” भैरवनाथ ने घोषणा की।

“मैं सहमत हूँ; हम कार्य शीघ्र ही आरंभ करेंगे।” उपनंद ने समर्थन किया।

“हाँ, हम अवश्य करेंगे।” भैरवनाथ के मुख पर शैतानियत भरी मुस्कराहट थी।

* * *

यह वो समय था, जब गंधर्व, त्रिगर्ता की भूमि छोड़कर हस्तिनापुर में बस गए थे। वो सभी हस्तिनापुर के वनों में निवास कर रहे थे।

एक रात्रि सुर्जन, गंधर्वों के शिविर में बैठा हुआ था।

एक गंधर्व शीघ्र ही वहाँ उपस्थित हुआ। “गंधर्वों के महाराज ने आपके लिए बुलावा भेजा है।”

“ठीक है, मैं शीघ्र ही उपस्थित होऊँगा।” सुर्जन ने उत्तर दिया।

गंधर्वों के राजा वन में लकड़ी के बने सिंहासन पर आसीन थे। सुर्जन शीघ्र ही वहाँ उपस्थित हुआ।

“स्वागत है महारथी सुर्जना।” उग्रसेन ने उसके सम्मान में कहा।

‘महाराज।’ सुर्जन उनके समक्ष अपने घुटनों के बल झुका।

“खड़े हो जाओ महारथी।” राजा उग्रसेन ने उससे कहा।

इसके उपरांत उग्रसेन अपने सिंहासन से उठे, “मैंने तुम्हें एक गंभीर विषय पर चर्चा के लिए बुलाया है सुर्जना।”

“मैं सुन रहा हूँ महाराज।” सुर्जन उनके शब्दों की प्रतीक्षा में था।

“मेरी पुत्री का तुमसे विवाह होने वाला है सुर्जन, इसलिए मैं तुम्हारे विषय में सब कुछ जानना चाहता हूँ।”

“अवश्य महाराज, आपको पूर्ण अधिकार है; मैं आपके प्रश्नों की प्रतीक्षा में हूँ।” सुर्जन ने सहमति जताई।

“मेरा पहला प्रश्न, कहाँ से आये हो तुम?” उग्रसेन ने प्रश्न किया।

“मैं एकचक्रनगरी का मूल निवासी हूँ।” सुर्जन ने उत्तर दिया।

“तुम्हारे गुरु कौन हैं?”

“एकचक्रनगरी के कुलगुरु महाऋषि वसुधरा।”

“अंतिम प्रश्न, तुम्हारे पिता कौन हैं?”

सुर्जन कुछ क्षणों के लिए मौन रहा।

“मुझे इस बात का ज्ञान नहीं है महाराज; मैंने कभी अपने माता-पिता को नहीं देखा, मैं एक अनाथ हूँ।” सुर्जन ने असत्य कहा।

“तो तुम्हारा पालन-पोषण किसने किया?” उग्रसेन ने पूछा।

“वो... एक किसान ने महाराज। जब मेरी आयु बहुत कम थी, तभी उनकी भी मृत्यु हो गयी, तबसे मैं महाऋषि वसुधरा का शिष्य मात्र हूँ।” सुर्जन ने कथायें रचनी आरंभ की।

“तो तुम केवल सुर्जन हो; तुम्हारा पीछे कोई नाम नहीं?” उग्रसेन ने आश्चर्यपूर्वक प्रश्न

किया।

“यही सत्य है महाराज।” सुर्जन ने उतर दिया।

सुर्जन और उग्रसेन, दोनों कुछ क्षणों तक मौन रहे। सुर्जन के मुख पर थोड़ी निराशा के भाव आने लगे थे।

“अपना मन छोटा न करो सुर्जन; हम उस प्रकार के लोग नहीं हैं, जैसा तुम हमें समझ रहे हो।” उग्रसेन मुस्कुराये।

“मैं समझा नहीं महाराज, आप कहना क्या चाहते हैं?” सुर्जन ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“तुम एक महान योद्धा हो सुर्जन। और मेरी पुत्री को वरने के लिए यह तुम्हारी सबसे बड़ी योग्यता है... हमें व्यक्ति के नाम से कोई प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि हम कर्म में विश्वास रखते हैं।” उग्रसेन ने घोषणा की।

सभी ने उनके इस निर्णय का अभिनंदन किया। कदाचित् सुर्जन के जीवन का यह सबसे अधिक सुखमय क्षण था। कुछ गंधर्वों ने उसे कंधे पर उठा लिया।

उग्रसेन ने उन्हें शांत होने का संकेत दिया। सुर्जन को भी नीचे लाया गया।

इसके उपरांत उग्रसेन ने घोषणा की, “हम शीघ्र ही महूर्त निकालेंगे, किंतु तब तक वर और वधू एक दूसरे से मिल नहीं सकते, यही हमारी परंपरा है।

“मैं सहमत हूँ महाराज।” सुर्जन ने मुस्कुराते हुए सहमति जताई।

“अब मैं हस्तिनापुर नरेश से भेंट करने जा रहा हूँ। इस समय हम उनके क्षेत्र में हैं, इसलिए मैं उनसे हमारी संधि के विषय में चर्चा करने जा रहा हूँ; तब तक सुर्जन और उपमन्यु गंधर्व दल के संरक्षक होंगे।” उग्रसेन ने आदेश दिया।

“जो आज्ञा महाराज।” सुर्जन और उपमन्यु आदेश का पालन करते हुए घुटनों के बल झुके। उग्रसेन प्रस्थान कर गये।

उपमन्यु सुर्जन की ओर मुड़ा, “तुम तो कुछ अधिक ही मुस्कुरा रहे हो।”

“वो... बस यँ ही, कुछ विशेष बात नहीं है।” सुर्जन ने हिचकिचाते हुए कहा।

“कुछ भी विशेष बात नहीं है?” उपमन्यु ने आश्चर्य भाव से प्रश्न किया।

“मेरे कहने का अर्थ है कि मैं बस थोड़े आश्चर्य में हूँ... जीवन में इतनी प्रसन्नता का अनुभव पहले कभी नहीं हुआ।” सुर्जन ने उतर दिया।

उपमन्यु मुस्कुराया, “ओह! यदि ऐसा है, तो उचित होगा कि जो कुछ भी तुम्हें प्राप्त हुआ है, उसका तुम जीवन भर संरक्षण करो।”

“अवश्य करूँगा।” सुर्जन मुस्कुराया।

उग्रसेन हस्तिनापुर के महल की ओर बढ़े चले जा रहे थे। वहीं सुर्जन और उपमन्यु हस्तिनापुर के वन में थे।

* * *

अगले दिन का एक सूर्य उदय हुआ। सुर्जन नदी के किनारे खड़ा था। उपमन्यु वहाँ आया। उपमन्यु उसके निकट आकर खड़ा हो गया और उससे प्रश्न किया, “तुम सदैव ऐसा ही करते हो क्या?”

“तुम्हारे कहने का अर्थ मैं समझा नहीं।” सुर्जन को उसकी बात अटपटी सी लगी।

“नहीं, मैं बस देखता हूँ, तुम हर सूर्योदय पर इस नदी के निकट आकर खड़े हो जाते हो।”

“तुम्हें अभी भी मुझ पर विश्वास नहीं है, है न?” सुर्जन मुस्कुराया।

“नहीं, मैं ऐसा नहीं कह रहा; किंतु जब महाराज उग्रसेन ने तुम्हारे और दुर्धरा के संबंध को सहमति दी थी, तब तुम्हारे नेत्रों से मैंने प्रसन्नता की कुछ बूँदें गिरते हुए देखी थीं... तुम वैसे नहीं हो जैसे दिखाई देते हो। मैं जानता हूँ तुम दुष्ट प्रवृत्ति के नहीं हो, किंतु तुम्हारा कोई न कोई अतीत अवश्य है।” उपमन्यु ने कहा।

सुर्जन ने उपमन्यु की ओर देखा। “हर किसी के जीवन में उसका कोई न कोई अतीत तो होता ही है; मेरा भी है, किंतु अतीत यदि सुखदायी न हो, तो उसे भुला देना ही उचित है और जो मेरे पास है, मैं बस वही चाहता हूँ। एक अंधकारमय अतीत के उपरांत अब मैं अपना जीवन शांतिपूर्वक व्यतीत करना चाहता हूँ।”

“एक विद्वान महापुरुष ने मुझसे कहा था, कि हमें उस मार्ग का चुनाव करना चाहिए, जो हमारी अंतर आत्मा को संतुष्टि प्रदान करे और मुझे प्रसन्नता है कि उन्होंने मुझे उचित मार्ग दिखलाया।” सुर्जन ने मुस्कुराते हुए कहा।

“हाँ, मैंने तुम्हारे इन शब्दों को पहले भी सुना है, तुम इन्हें बार-बार दोहराते रहते हो; प्रतीत होता है कि इन शब्दों से तुम्हें कुछ अधिक ही प्रेम है, है न?” उपमन्यु ने प्रश्न किया।

“हाँ, कदाचित् ऐसा ही है।” सुर्जन एक बार फिर मुस्कुराया।

वो दोनों उसकी इस बात पर हँस पड़े।

अकस्मात् ही पीछे की झाड़ियाँ तीव्रता से हिलीं। वो स्वर उन दोनों को सुनाई दिया।

“वो क्या था?” सुर्जन को संशय हुआ।

“कोई पशु होगा और क्या।” उपमन्यु ने अनुमान लगाया।

“हाँ, कदाचित् ऐसा ही हो।” सुर्जन ने साँस भरते हुए कहा।

“तो फिर चलो।”

“तुम जाओ, मैं थोड़े समय और इस नदी के पास रहना चाहता हूँ।” सुर्जन ने कहा।

“जैसी तुम्हारी इच्छा।” उपमन्यु वहाँ से प्रस्थान कर गया।

वन में कुछ दूर चलने के उपरांत अकस्मात् ही उपमन्यु को स्मरण हो आया। ‘अरे, दुर्धरा द्वारा दिया गया संदेश तो मैं उसे देना ही भूल गया।’

उपमन्यु पीछे मुड़कर नदी की ओर बढ़ा, किंतु वहाँ पहुँचने से पूर्व ही उसे कुछ आश्चर्यजनक दृश्य दिखाई दिया। वो वृक्ष के पीछे छुप गया। उसकी दृष्टि सुर्जन पर जमी थी।

सुर्जन, झाड़ियों में कुछ अधीरता से खोज रहा था।

‘यह इन झाड़ियों में क्या कर रहा है।’ उपमन्यु ने सुर्जन पर दृष्टि जमाये रखी।

शीघ्र ही सुर्जन को झाड़ियों में से एक बाण मिला। उसने उस बाण को उठाया। उस पर एक संदेश-पत्र बँधा हुआ था।

सुर्जन ने वह पत्र खोलकर पढ़ा।

उत्तर दिशा के वन में एक नदी है, मैं वहाँ आपकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

-जयवर्धन

‘मेरा यह प्रारब्ध मुझे कभी शांति से अपना जीवन व्यतीत नहीं करने देगा।’ सुर्जन ने क्रोध में वह पत्र भूमि पर फेंक दिया।

इसके उपरांत वह उस स्थान से निकल गया। उपमन्यु वृक्ष की ओट से बाहर आया। उसने

पहले उस पत्र को खोजा, जो पहले सुर्जन ने भूमि पर फेंका था। शीघ्र ही उसे वो पत्र मिल गया। उसने उन शब्दों को पढ़ा।

“जयवर्धन? कौन जयवर्धन... और वो सुर्जन को कैसे जानता है? मुझे ज्ञात करना होगा।” उपमन्यु ने सुर्जन का पीछा करना आरंभ किया।

शीघ्र ही सुर्जन, वन के उत्तरी भाग की नदी के निकट पहुँचा। जयवर्धन वहाँ उसकी प्रतीक्षा में था।

उपमन्यु निकट के ही एक वृक्ष के पीछे छिप गया। वहाँ से वो उनकी वार्ता स्पष्ट सुन सकता था।

“महान असुरेश्वर दुर्भीक्ष का स्वागत है।” राजा जयवर्धन ने सुर्जन का स्वागत करते हुए कहा।

यह नाम सुनकर उपमन्यु स्तब्ध रह गया।

“मैं अब असुरेश्वर नहीं रहा जयवर्धन, अब मैं केवल सुर्जन हूँ।”

“हाँ, आपके उस निर्णय के विषय में सुना है मैंने महामहिम। आपको सिंहासन का लोभ नहीं है; आप मैं किसी पर शासन करने की कोई इच्छा नहीं हैं। मैं इसमें हस्तक्षेप तो नहीं कर सकता, किंतु आप अभी भी मेरे लिए महामहिम हैं।” जयवर्धन ने कहा।

“तुम्हारा यहाँ आने का उद्देश्य क्या है?” सुर्जन ने प्रश्न किया।

“मैं बस यह जानना चाहता हूँ कि आपको अपनी सौगंध तो स्मरण है न?” जयवर्धन ने प्रश्न किया।

“मुझे अपना वचन भली-भाँति स्मरण है; जब भी तुम्हें आवश्यकता होगी, मैं तुम्हारा समर्थन करूँगा।” सुर्जन ने उत्तर दिया।

“मैं बस यही सुनना चाहता था।”

“तो फिर इस बार कौन से राज्य पर चढ़ाई करनी है?” सुर्जन ने प्रश्न किया।

जयवर्धन मुस्कराया, “आप तो मुझे भलीभाँति समझते हैं असुरेश्वर।”

“मैं तुमसे पहले भी कह चुका हूँ, कि मैं असुरेश्वर नहीं हूँ।” सुर्जन ने कठोर स्वर में कहा।

“हाँ, मैं क्षमा चाहता हूँ... इस बार पांचाल का राज्य।” जयवर्धन ने कहा।

“कब निकलना है?” सुर्जन ने प्रश्न किया।

“हमारी सेना तो सज्ज है, मैं तो बस आपको लेने आया हूँ।”

सुर्जन ने कुछ क्षण विचारकर कहा, “मुझे कुछ समय चाहिए... संध्या होते ही हमारी भेंट इसी स्थान पर होगी और आज के उपरांत, मैं जिस भी युद्ध में भाग लूँगा, अपना मुख ढक कर लूँगा, ताकि कोई कभी मेरा वास्तविक मुख न देख सके।”

“जैसी आपकी इच्छा महामहिम; मैं समझ रहा हूँ, आप ऐसा क्यों कह रहे हैं... मैं संध्या तक यहीं आपकी प्रतीक्षा करूँगा।” जयवर्धन ने कहा।

सुर्जन मुड़कर वहाँ से प्रस्थान कर गया।

उपमन्यु ने उनके मध्य हुआ पूरा संवाद सुन लिया था। ‘मुझे अभी भी विश्वास नहीं हो रहा।’ यह एक असुर है और केवल असुर नहीं, यह असुरों का नायक दुर्भीक्ष है। असुरों के जिस महानायक का नाम समग्र आर्यावर्त में प्रचलित है, वो यही है। अब मैं समझा, इसने उपनंद को कैसे परास्त कर दिया, क्योंकि इसके अतिरिक्त और कौन है जो उसके बल पर विजय पा सके।

मुझे सबको इस सत्य से अवगत कराना होगा, मैं दुर्धरा का विवाह इस असुर से नहीं होने दे सकता।”

उपमन्यु मन ही मन निर्णय लेकर गंधर्वों के शिविर में पहुँचा। सुर्जन वहाँ पहले से उपस्थित था।

“उपमन्यु, मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा में था।” सुर्जन उसकी ओर बढ़ा।

“वो किसलिए?” उपमन्यु ने शंतिभाव से पूछा।

“वो क्या है कि मेरे गुरुदेव महर्षि वसुधर ने मेरे लिए बुलावे का संदेश भेजा है, इसलिए मुझे जाना होगा और मैं चाहता हूँ कि जब तक महाराज उग्रसेन लौटकर नहीं आते, तुम गंधर्वों के संरक्षण के इस दायित्व को सँभालो।” सुर्जन ने एक और झूठी कथा रच डाली।

“हाँ हाँ, अवश्य; मैं अपना दायित्व निभाऊँगा, तुम बिना किसी चिंता के यहाँ से प्रस्थान कर सकते हो।” उपमन्यु ने उसे विश्वास दिलाया। उसे सत्य का भान हो गया था, किंतु उसका भेद खोलने का उसे यह उचित समय नहीं जान पड़ा।

सुर्जन उसके निकट आया और उसके कान में कहा, “मेरी होने वाली भार्या का विशेष ध्यान रखना।”

“हाँ अवश्य, तुम चिंतित मत हो, मैं उसका भी ध्यान रखूँगा।” उपमन्यु ने उसे विश्वास दिलाया।

सुर्जन अपने अश्व पर आरूढ़ हो चल पड़ा।

उपमन्यु उसे वन के मार्ग से जाता हुआ देखता रहा। उसे क्रोध आ रहा था। ‘कितनी सफाई से असत्य कथाएँ गढ़ता है यो’

उपमन्यु ने मुड़कर गंधर्वों की ओर देखा, “उसका भेद खोलने का यह समय सही नहीं है, मुझे महाराज उग्रसेन की प्रतीक्षा करनी होगी।

* * *

उपनंद एक स्थान पर अपनी सेना लिए सज्ज खड़ा था। एक संदेशवाहक शीघ्र ही वहाँ उपस्थित हुआ।

उस संदेशवाहक ने सूचना दी, “समय हो गया है महाराज, मैंने हस्तिनापुर में उनके निवास-स्थान का पता लगा लिया है।”

‘हम्म...।’ उपनंद ने उस संदेशवाहक को पीछे आने का संकेत किया।

“जो आज्ञा महाराज।” वो संदेशवाहक अपने अश्व सहित उपनंद के पीछे आकर खड़ा हो गया।

‘प्रस्थान!’ उपनंद ने अपनी सेना को आदेश दिया।

त्रिगर्ता की सेना हस्तिनापुर की ओर चल पड़ी।

कुछ दिनों का समय बीता। राजा उग्रसेन गंधर्वों के शिविर में लौट आये। उन्होंने गंधर्वों को शीघ्र ही एकत्र किया।

शीघ्र ही वन में सभी गंधर्व एकत्रित हुए।

महाराज उग्रसेन वहाँ पहुँचकर अपने सिंहासन पर आसीन हुए। उपमन्यु और दुर्धरा भी वहाँ उपस्थित थे। सभी उनके शब्दों की प्रतीक्षा में थे।

“शुभ सूचना है; महाराज दुष्यंत ने हमारा संधि-प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है।” उग्रसेन ने घोषणा की।

गंधर्वों ने जयकारे लगाकर उग्रसेन का अभिनंदन किया।

“अपने कुछ सैनिकों के साथ वह हमारे निवास-स्थान को देखने शीघ्र ही पधारेंगे।” उग्रसेन ने कहा।

अगले ही क्षण एक गंधर्व सैनिक दौड़ता हुआ आया और सूचना दी। “महाराज! एक विशाल सेना हमारी ओर बढ़ रही है।”

उग्रसेन आश्चर्यचकित होकर अपने आसन से उठे, “कौन हैं वो?”

“राजा उपनंद और उसकी सेना।” उस गंधर्व सैनिक ने सूचित किया।

उग्रसेन चिंतित हो गए। “कदाचित् उसे किसी प्रकार यह ज्ञात हो गया है, कि सृजन हमारे साथ नहीं है।”

“चिंतित मत होइये, मैं तो यहाँ उपस्थित हूँ।” पीछे से एक स्वर सुनाई दिया।

वो कोई और नहीं, अपने कुछ सैनिकों के साथ आये महाराज दुष्यंत थे।

“महाराज दुष्यंत की जय हो!” उग्रसेन ने उनका स्वागत किया।

“महाराज दुष्यंत की जय हो, महाराज दुष्यंत की जय हो...।” गंधर्वों ने भी जयकारे से उनका स्वागत किया।

महाराज दुष्यंत ने कहना आरंभ किया, “हम आपके सहयोगी हैं राजा उग्रसेन और हमें इस बात की प्रसन्नता है कि हम उस क्षण उपस्थित हुए, जब आपको हमारी आवश्यकता है।”

“वो तो है महाराज।” उग्रसेन सिंहासन से उतारकर महाराज दुष्यंत के निकट आये।

“हमारे निवास-स्थान पर पधारकर आपने इस स्थान को पवित्र कर दिया है महाराज, यह हमारे लिए बहुत सम्मान की बात है।” उग्रसेन ने एक बार फिर मुस्कुराकर उनका स्वागत किया।

अगले ही क्षण एक और गंधर्व सैनिक ने वहाँ आकर सूचित किया, “त्रिगर्ता की सेना बहुत निकट आ गयी है महाराज।”

उग्रसेन चिंतित हो उठे।

“चिंतित मत होइए, उग्रसेन, इस स्थिति को मुझे सँभालने दीजिये।” महाराज दुष्यंत ने उन्हें विश्वास दिलाया।

“धन्यवाद महाराज।” उग्रसेन मुस्कुराये।

“शीघ्र ही भेंट होगी।” दुष्यंत ने दृढ़ता से कहा।

इसके उपरान्त महाराज दुष्यंत अपने सैनिकों की ओर मुड़े और आदेशात्मक स्वर में कहा, “यह उपनंद का सामना करने का समय है, चलो हमारे साथ।”

महाराज दुष्यंत, उपनंद का सामना करने हेतु प्रस्थान कर गए।

वहीं उपनंद अपनी सेना के साथ चला आ रहा था। अपने समक्ष महाराज दुष्यंत को आते देख उसे थोड़ा आश्चर्य हुआ।

वो अपने अश्व से उतरकर महाराज दुष्यंत की ओर बढ़ा।

“महाराज, आप यहाँ कैसे...?” उपनंद ने निकट आकर प्रश्न किया।

“मैं यहाँ गंधर्वों की सुरक्षा के लिए आया हूँ।” दुष्यंत ने उसके प्रश्न पूर्ण होने से पूर्व ही उसका उत्तर दे दिया।

उपनंद स्तब्ध रह गया, “ये आप क्या कह रहे हैं? सहयोगी तो हम हैं और गंधर्व हमारे शत्रु हैं,

तो आप उनकी रक्षा क्यों कर रहे हैं?”

“वो कभी हमारे शत्रु थे ही नहीं; तुमने अपने दुष्कृत्यों से उन्हें अपना शत्रु बनाया है। उन्होंने कोई अपराध नहीं किया, इसलिए मैं उन्हीं का समर्थन करूँगा... मुझे पूरी कथा का ज्ञान है, भूल तुम्हारी है।” दुष्यंत ने कहा।

“उचित है; यदि आप गंधर्वों की रक्षा करना चाहते हैं, तो मैं आपको नहीं रोक्कूँगा। मैं सभी गंधर्वों को छोड़ दूँगा, किंतु मुझे वो दुर्धरा चाहिए। उसने मुझे अपमानित किया है, इसलिए मुझे उसका वध करना ही है।” उपनंद ने क्रोधपूर्वक कहा।

“मैंने अभी-अभी तुमसे कहा कि मैं गंधर्वों का रक्षक हूँ, मैं तुम्हें ऐसा करने नहीं दे सकता।”

“मैं भी आपका बहनोई हूँ महाराज दुष्यंत।” उपनंद अधीर हो रहा था।

“इस बात से कोई अंतर नहीं पड़ता।” दुष्यंत ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

“क्या, आपको इस बात से कोई अंतर नहीं पड़ता कि मैं आपका बहनोई हूँ?” उपनंद ने आश्चर्यपूर्वक प्रश्न किया।

“मेरे लिए केवल न्याय और धर्म का महत्व है।”

“तो क्या आप हमारे बीच की संधि भंग करना चाहते हैं?”

“यदि तुमने उन पर चढ़ाई की, तो हमारे बीच की संधि भंग हुई समझो।” दुष्यंत ने अपने दायीं ओर संकेत किया।

हस्तिनापुर की विशाल सेना उस दिशा से चली आ रही थी।

उपनंद स्तब्ध रह गया। “आप पहले से ही इस स्थिति के लिए सज्ज थे, है न?”

“तुम इस समय हस्तिनापुर में हो... हमारी सेना को यहाँ आने में भला कितना समय लगेगा और यह तो हमारी सेना का केवल एक चौथाई भाग है। किंतु तुम्हारी सेना के लिए इतने ही योद्धा पर्याप्त हैं।” दुष्यंत मुस्कुराये।

उपनंद कुछ कदम पीछे हटा! “मैं इस समय तो जा रहा हूँ, किंतु अपना प्रतिशोध लेने अवश्य लौटूँगा; मैं उस कन्या की हत्या अवश्य करूँगा।”

महाराज दुष्यंत ने उसे चेतावनी दी। “स्मरण रहे, मैं उसका रक्षक हूँ।”

उपनंद ने अपनी सेना की ओर मुड़कर आदेश दिया। “त्रिगर्ता की ओर लौट चलो!”

महाराज दुष्यंत भी मुड़कर गंधर्वों के शिविर की ओर प्रस्थान कर गए।

त्रिगर्ता की सेना पीछे हट रही थी। उसी स्थान पर वृक्ष की ओट में छुपा भैरवनाथ यह दृश्य देख स्तब्ध रह गया। वो उपनंद के मार्ग में आ खड़ा हुआ।

उपनंद ने अपनी सेना को रुकने का आदेश दिया। वो अपने अश्व से उतरा और भैरवनाथ की ओर बढ़ा।

“तुम लौटकर क्यों जा रहे हो?” भैरवनाथ आश्चर्य में था।

“योजना विफल हो गयी।” उपनंद ने निराशाजनक स्वर में कहा।

“योजना विफल हो गयी? किंतु कैसे?” भैरवनाथ को क्रोध आने लगा।

“उनकी रक्षा के लिए महाराज दुष्यंत सामने आ गए और उनसे शत्रुता मोल लेना मैंने उचित नहीं समझा। वो आर्यावर्त के महानतम योद्धाओं में से हैं और उनकी सेना भी मेरी सेना से कहीं अधिक शक्तिशाली है।” उपनंद ने कहा।

भैरवनाथ कुछ क्षण मौन रहा। “मैंने सोचा नहीं था कि ऐसा कुछ होगा... किंतु मेरे पास एक

दूसरी योजना भी है।”

“कहिये, क्या है आपकी वो दूसरी योजना?” उपनंद जानने को अधीर हो रहा था।

“कदाचित् यह तुम्हारी दुर्धरा-वध की इच्छा को पूर्ण न कर सके। यह योजना केवल दुर्भीक्ष और दुर्धरा को अलग करने के लिए है।” भैरवनाथ ने कहा।

“जैसा आपको उचित लगे कीजिये... क्या इस योजना में मेरे किसी योगदान की आवश्यकता है?” उपनंद ने प्रश्न किया।

“पहले मुझे गंधर्वों के शिविर में जाकर स्थिति की जाँच करनी होगी, तभी मैं कोई निर्णय लूँगा... इस समय तुम अपनी सेना अपने राज्य में वापस भेज दो, मुझे नहीं लगता कि अब इनकी कोई भी आवश्यकता है। तुम अपने कुछ सैनिकों के साथ यहीं रुक जाओ।”

“जैसी आपकी आज्ञा, मैं अपने कुछ सैनिकों के साथ यहीं छुपकर रहूँगा।” उपनंद ने सहमति जताई।

भैरवनाथ गंधर्वों के शिविर की ओर बढ़ चला।

* * *

वहीं महाराज दुष्यंत गंधर्वों के शिविर में एक बार फिर पधारे। महाराज उग्रसेन ने उनका स्वागत किया।

“बहुत बहुत धन्यवाद महाराज; आपने उस समय हमारी रक्षा की, जब हमारी सहायता के लिए कोई न था।” उग्रसेन ने आभार प्रकट किया।

“यह तो मेरा कर्तव्य था उग्रसेन, किंतु वो योद्धा कौन है जिसने उपनंद को दंड में परास्त किया था, जिसके विषय में आपने इतना कुछ बताया था?” दुष्यंत ने प्रश्न किया।

“हाँ, मैंने उसके विषय में बहुत कुछ कहा था... सत्य यह है कि वो अपने जन्म के रहस्य से अवगत नहीं है, किंतु निःसंदेह एक श्रेष्ठ योद्धा है। वो एकचक्रनगरी के राजगुरु महर्षि वसुधर का शिष्य है और उसके विषय में हमें इससे अधिक ज्ञात नहीं है।” उग्रसेन ने कहा।

“हस्तक्षेप के लिए क्षमा चाहता हूँ महाराज, किंतु मैं उसके विषय में कुछ कहना चाहता हूँ।” उपमन्यु ने हस्तक्षेप करते हुए कहा।

“ठीक है, हम भी सुनना चाहते हैं कि तुम उसके विषय में क्या कहना चाहते हो?” महाराज दुष्यंत ने जिज्ञासावश प्रश्न किया।

“महाऋषि शंकराचार्य यहाँ शीघ्र ही उपस्थित होंगे; अपने शब्दों को सिद्ध करने के लिए मुझे उनकी आवश्यकता होगी, क्योंकि मुझे विश्वास है कि आपमें से कोई भी मेरी कही बात पर विश्वास नहीं करेगा।” उपमन्यु ने कहा।

वहाँ खड़ी दुर्धरा को भी थोड़ा आश्चर्य हुआ। “तुम क्या कहना चाहते हो उपमन्यु?”

“तुम्हें शीघ्र ही ज्ञात हो जायेगा दुर्धरा।” उपमन्यु ने कहा।

दुर्धरा के मन में क्रोध जगने लगा। “ऐसा कोई दुस्साहस न करना...।”

“तुमने मुझे बुलाया था?” दुर्धरा के शब्द पूर्ण होने से पूर्व ही पीछे से एक स्वर सुनाई दिया। यह कोई और नहीं, महाऋषि शंकराचार्य थे।

“हाँ ऋषिवर; आपको कष्ट देने के लिए क्षमा चाहता हूँ, किंतु अपनी बात सिद्ध करने के लिए मुझे आपकी आवश्यकता थी।” उपमन्यु, शंकराचार्य की ओर बढ़ा।

“ऐसी कौन सी बात है, जिसे सिद्ध करने के लिए तुम्हें मेरी आवश्यकता आन पड़ी?”

शंकराचार्य ने प्रश्न किया।

“मैं उस योद्धा के विषय में बात कर रहा हूँ... मुझे विश्वास है कि जिस दिन आपने उसे प्रथम बार देखा था, आपने उसी दिन उसे पहचान लिया था, है न?” उपमन्यु ने प्रश्न किया।

“यह क्या प्रलाप कर रहे हो तुम उपमन्यु?” दुर्धरा ने हस्तक्षेप किया।

“बीच में मत बोलो दुर्धरा, मुझे सुनना है।” उग्रसेन ने उसे रोका।

“तुम किसके विषय में बात कर रहे हो उपमन्यु?” शंकराचार्य ने प्रश्न किया।

उपमन्यु ने कहना आरंभ किया, “मैं उस योद्धा के विषय में बात कर रहा हूँ, जिससे भयंकर, क्रूर और शक्तिशाली योद्धा आर्यावर्त की भूमि में आज तक नहीं जन्मा... जिसका नाम समग्र आर्यावर्त में प्रचलित है; किंतु हमने उसका मुख कभी पहले देखा ही नहीं था, इसलिए हम उसे पहचान न पाए।”

“तो क्या तुम सुरजन के विषय में बात कर रहे हो?” शंकराचार्य ने प्रश्न किया।

“सुरजन नहीं, असुरों का महानायक असुरेश्वर दुर्भीक्ष।” उपमन्यु ने सत्य उजागर किया।

सभी उपस्थित जन उस नाम को सुनकर स्तब्ध रह गए।

दुर्धरा क्रोधित हो गयी थी। उसने उपमन्यु का कंठ पकड़ लिया। “बस बहुत हुआ; मैं जानती थी, कि तुम कुछ इसी प्रकार का व्यर्थ प्रलाप करोगे, क्योंकि तुम सदैव ही उससे जलते आये हो?”

“उसे छोड़ो दुर्धरा।” राजा उग्रसेन ने आदेश दिया।

“किंतु पिताश्री...।”

“मैंने कहा उसे छोड़ो।” उग्रसेन ने एक बार फिर भारी स्वर में आदेश दिया।

दुर्धरा ने उसका कंठ छोड़ दिया। “उसने हमारी सहायता की है पिताश्री, तो इस बात से क्या अंतर पड़ता है कि उसका नाम क्या है... आप ऐसा कैसे कर सकते हैं, मैं...”

“तुम मौन रहो दुर्धरा; प्रेम ने तुम्हारे विचार करने की क्षमता को हर लिया।” राजा उग्रसेन ने उसे डपटा।

महाराज दुष्यंत ने दुर्धरा का समर्थन करते हुए उपमन्यु से प्रश्न किया, “तुम उस व्यक्ति पर आरोप क्यों लगा रहे हो, जिसने हर विकट परिस्थिति में तुम्हारी सहायता की है; उसने तुम्हारे महाराज की रक्षा की है।”

“मुझे इस बात का कोई अनुमान नहीं है कि उसने हमारी सहायता क्यों की, किंतु जो सत्य है उसे मैंने अपने नेत्रों से देखा है और अपने इन्हीं कानों से सुना है। वह विदर्भ के महाराज जयवर्धन से मिला था और उनकी योजना पांचाल पर आक्रमण करने की थी, मुझे बस इतना ही ज्ञात है।” उपमन्यु ने अपनी सफाई दी।

“तुमने जो भी कहा है, क्या तुम उसे सिद्ध कर सकते हो?” महाराज दुष्यंत ने उससे प्रश्न किया।

“जैसा कि हम सभी को ज्ञात है, कि वर्षों पूर्व दुर्भीक्ष ने जयवर्धन के साथ मिलकर विदर्भ पर चढ़ाई की थी, इसलिए मैं महाऋषि शंकराचार्य को अपने पक्ष में साक्षी के रूप में प्रस्तुत करना चाहूँगा... मुझे विश्वास है कि इन्होंने उसे देखते ही पहचान लिया था।” उपमन्यु ने कहा।

सभी की दृष्टि महाऋषि शंकराचार्य की ओर मुड़ी।

“हम आपके उत्तर की प्रतीक्षा में हैं ऋषिवर।” उग्रसेन ने शंकराचार्य की ओर देखा।

“शंकराचार्य धर्मसंकट में पड़ गये, किंतु उनके कुछ कहने से पूर्व ही हस्तिनापुर का एक संदेशवाहक वहाँ आ पहुँचा।

“कोई विशेष सूचना?” महाराज दुष्यंत ने उससे प्रश्न किया।

“हाँ महाराज, सूचना अत्यंत गंभीर है।” उस संदेशवाहक ने कहा।

“क्या सूचना है?” दुष्यंत ने प्रश्न किया।

“विदर्भ के राजा जयवर्धन ने पांचाल राज्य को नष्ट कर दिया है; उसने पांचाल के राजा और उसके सभी पुत्रों की हत्या कर दी है और तो और, उसने पांचाल के सैनिकों के साथ-साथ निर्दोष प्रजा की भी निर्ममता से हत्या की है।” संदेशवाहक ने कह सुनाया।

सभी उपस्थित जन यह सुनकर स्तब्ध रह गए।

“क्या तुम्हें इस सूचना पर पूर्ण विश्वास है?” महाराज दुष्यंत ने पुष्टि करने के लिए प्रश्न किया।

“हाँ महाराज।” उस संदेशवाहक ने कहा।

“मैं यही तो कहना चाहता था।” उपमन्यु बीच में बोल पड़ा।

वहीं दुर्धरा ने हस्तक्षेप करने का प्रयत्न किया, “नहीं, यह संभव नहीं है, सुर्जन ऐसा नहीं कर सकता, मैं उसे भली-भाँति जानती हूँ।”

“तुमने उसे कभी जाना ही नहीं; वह असत्य का एक वृक्ष है, उसने आज तक अपने विषय में केवल असत्य ही कहा है, वो कभी तुम्हारे योग्य था ही नहीं।” उपमन्यु ने उससे कहा।

“तुम अपना मुख बंद रखो, यही तुम्हारे लिए उचित होगा।” दुर्धरा ने क्रोध में उपमन्यु की ओर देखा।

“बस बहुत हुआ!” महर्षि शंकराचार्य चीख पड़े।

उनका स्वर सुन हर ओर शांति छा गयी।

महाऋषि शंकराचार्य के नेत्रों में क्रोध की ज्वाला धधक रही थी। “उसने मुझसे कहा था, कि वो धर्म के मार्ग पर चलेगा, किंतु फिर भी उसने पांचाल में निर्दोषों के नरसंहार में जयवर्धन का साथ दिया।”

“आप कहना क्या चाहते हैं मुनिवर?” दुर्धरा अधीर हो रही थी।

“उपमन्यु उचित कह रहा है पुत्री, वही है असुरों का महानायक, असुरेश्वर दुर्भीक्षा।” शंकराचार्य ने कहा।

महाराज दुष्यंत और उग्रसेन के लिए यह एक बहुत बड़ा झटका था। वहीं दुर्धरा को इस कठोर सत्य का ज्ञान पहले से ही था।

“आपने पहले हमें इस सत्य से अवगत क्यों नहीं कराया ऋषिवर?” उग्रसेन ने शंकराचार्य से प्रश्न किया।

“जिस दिन मैंने उसे देखा था, उसी दिन मैंने उससे वार्ता भी की थी। उसने मुझे विश्वास दिलाया था, कि वो दुर्धरा के साथ विवाह करके अपना जीवन शांतिपूर्वक व्यतीत करना चाहता है। किंतु मैं भूल कैसे गया कि उसने उस दुर्दांत राजा जयवर्धन के समर्थन की प्रतिज्ञा ले रखी है, इसलिए अब वो शांति के मार्ग में सबसे बड़ा अवरोध बन चुका है।” महर्षि शंकराचार्य को क्रोध आ रहा था।

दुर्धरा को अभी भी विश्वास नहीं हो पा रहा था। “कदाचित् आपसे कोई भूल हुई है ऋषिवर, वो

ऐसा नहीं कर सकता।”

“यह सत्य है पुत्री और तुम्हें इसे स्वीकार करना ही होगा।” महर्षि शंकराचार्य ने उसे विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया।

“तो फिर ठीक है; जो भी हुआ, जैसा भी हुआ, उसे लौटने दीजिये... मैं उससे सर्वप्रथम भेंट करूँगी और उसके मुख से उसका पूरा सत्य सुनना चाहूँगी।” दुर्धरा ने कहा।

“नहीं, तुम ऐसा कुछ नहीं करोगी; तुम अब उसके सामने नहीं जाओगी, अब इस स्थिति को हम सँभालेंगे। यह मेरी भूल थी, कि मैंने तुम्हारी बात सुनी, और बिना उसके विषय में जाँच-पड़ताल किये, मैंने उसके साथ तुम्हारा संबंध निश्चित कर दिया... किंतु इस भूल को मैं दोहराऊँगा नहीं।” महाराज उग्रसेन ने अपनी पुत्री को डपटा।

“किंतु पिताश्री...।” दुर्धरा के नेत्रों से अश्रु बहने आरंभ हो गए।

“इसे ले जाओ और एक गुफा में बंद करके रखो और ध्यान रहे, यह किसी से मिलने न पाए; तब तक हम उस असुरेश्वर दुर्भीक्ष से निपट लेंगे।” उग्रसेन ने अपने सैनिकों को दुर्धरा को ले जाने का आदेश दिया।

कई सैनिकों ने दुर्धरा को घेर लिया।

“नहीं पिताश्री, आप मेरे साथ ऐसा नहीं कर सकते... मुझे केवल एक बार उससे वार्ता करने का अवसर दे दीजिये...।” दुर्धरा चीखती रही। सैनिक उसे

8. विध्वंसक दुर्भीक्ष

“मुझे आपकी सहायता की आवश्यकता होगा महाराज” उग्रसेन, दुष्यंत की ओर मुड़े।

“अवश्य... आपकी सहायता के लिए उपस्थित हैं हम यहाँ” महाराज दुष्यंत ने कहा।

“उसे नियंत्रित करने के लिए हमें एक उचित योजना की आवश्यकता होगी; हम उस पर सामने से वार नहीं कर सकते।” उपमन्यु ने कहा।

महाऋषि शंकराचार्य ने उसका समर्थन किया। “उपमन्यु उचित कह रहा है, हममें से कोई उसे अकेले पराजित नहीं कर सकता।”

“तो आप उस पर एक साथ आक्रमण करने को कह रहे हैं ऋषिवर? एक धर्म परायण योद्धा के लिए यह संभव नहीं है; यह हम चंद्रवंशियों की यह परंपरा नहीं है, हम ऐसा नहीं कर सकते।” महाराज दुष्यंत ने स्पष्ट रूप से मना कर दिया।

“नहीं, मैं उससे युद्ध करने को नहीं कह रहा; मेरा सुझाव है कि हमें पहले उससे वार्ता करनी चाहिए” महर्षि शंकराचार्य ने सुझाव दिया।

“आप ऐसा कैसे कह सकते हैं; वह हर क्षण हमसे असत्य कहता रहा और अभी भी आप उससे वार्ता करने का सुझाव दे रहे हैं” उग्रसेन ने आश्चर्यपूर्वक प्रश्न किया।

“उसने असत्य कहा है, इसलिए मुझे विश्वास है कि वो अपनी वास्तविक शक्ति का प्रदर्शन नहीं करेगा। पहले हमें उसे बंदी बनाना होगा और इसमें केवल महाराज दुष्यंत के पास ही हमारी सहायता करने का सामर्थ्य है।” महर्षि शंकराचार्य ने सुझाव दिया।

“अवश्य मुनिवर, मैं आपकी सहायता के लिए यहाँ उपस्थित हूँ।” महाराज दुष्यंत ने सहमति जताई।

“तो फिर प्रतीक्षा करते हैं असुरेश्वर दुर्भीक्ष की... मैं अपनी पुत्री का हाथ उस असुर के हाथ में कदापि नहीं दूँगा।” उग्रसेन के नेत्र क्रोध से जल रहे थे।

“जब तक अंतिम गंधर्व योद्धा भी जीवित है, वो हमारी राजकुमारी को स्पर्श तक नहीं कर पायेगा।” उपमन्यु ने उनका समर्थन किया।

संयोगवश भैरवनाथ ने एक वृक्ष की ओट में छुपकर उन सबकी वार्ता सुन ली।

‘यह तो चमत्कार ही हो गया... मैंने तो दुर्भीक्ष और गंधर्वों में फूट डालने की कोई और ही योजना सोच रखी थी, किंतु यहाँ तो परिस्थिति ही मेरे पक्ष में है; अब उग्रसेन बनेगा मेरी योजना की सफलता की चाभी।’ भैरवनाथ के मुख पर शैतानियत भरी मुस्कराहट थी।

* * *

गंधर्व सुर्जन की प्रतीक्षा में था। भैरवनाथ भी उसकी प्रतीक्षा में था। कुछ दिनों के उपरांत भैरवनाथ को यह सूचना मिली कि सुर्जन गंधर्वों के शिविर की ओर बढ़ा चला आ रहा है।

प्रातः काल का समय था। राजा उग्रसेन नदी में खड़े होकर प्रातः काल के पूजन में लीन थे। अकस्मात् ही किसी ने उन्हें नदी के भीतर खींच लिया। वो अकस्मात् मिले इस झटके से स्तब्ध और अचंभित रह गए।

नदी के भीतर उन्हें खींचने वाला कोई और नहीं, रक्षगुरु भैरवनाथ था।

वह उन्हें नदी के बाहर खुली हवा में ले आया और उन्हें घूरकर देखा। उग्रसेन ने उसकी ओर क्रोध से देखा, “कौन हो...।”

“एक क्षण रुको, तनिक धैर्य धारण करो; मुझे नहीं लगता कि यदि तुम पीछे की ओर दृष्टि घुमाओगे तो मुझ पर आक्रमण करने का साहस जुटा पाओगे।” भैरवनाथ के क्रूर मुख पर शैतानियत भरी मुस्कराहट थी।

उग्रसेन ने पलटकर देखा। अपनी छोटी पुत्री सुनंदा की स्थिति देख वह स्तब्ध रह गये। वो मूर्छित थी, और भद्राक्ष की तलवार उसके कंठ पर थी।

“नहीं, उसे छोड़ दो! मैंने कहा, छोड़ो उसे।” उग्रसेन चीख पड़े।

भैरवनाथ ने अपने दायें हाथ से उसका जबड़ा पकड़ लिया, “चीखो मत मूर्ख, यदि कोई और यहाँ आ गया तो तुम्हारी पुत्री जीवित नहीं बचेगी।”

भैरवनाथ ने उनका सर फिर से नदी में डुबोया और खींचकर बाहर निकाला।

“ठीक है, ठीक है, क्या चाहते हो तुम?” उग्रसेन ने साँस भरते और खाँसते हुए कहा।

“देखो, मेरी तुमसे कोई निजी शत्रुता नहीं है, इसलिए मैं तुमसे केवल एक छोटी सी सहायता चाहता हूँ... मेरी एक सहायता करो और अपनी पुत्री के प्राण बचा लो।” भैरवनाथ मुस्कुराया।

“क्या करना होगा मुझे?” उग्रसेन ने खाँसते हुए प्रश्न किया।

“आज तुम्हारी भेंट असुरेश्वर दुर्भीक्ष से होगी और तुम उससे वही कहोगे, जैसा मैं तुमसे कहूँगा।” भैरवनाथ ने उसे समझाना आरंभ किया।

उग्रसेन ने उसकी बात ध्यानपूर्वक सुनी। उन्होंने प्रश्न किया, “कौन हो तुम और यह सब क्यों कर रहे हो?”

“प्रश्न मत करो, जैसा कहता हूँ, वैसा करो; जब तक कार्य संपन्न नहीं हो जाता, तुम्हारी यह पुत्री मेरे साथ रहेगी।” भैरवनाथ ने कठोर स्वर में कहा।

“और यदि तुमने अपने वचन का मान नहीं रखा तो?” उग्रसेन ने प्रश्न उठाया।

“मैं तुमसे पहले भी कह चुका हूँ कि मेरी तुमसे कोई निजी शत्रुता नहीं है; यदि मेरा कार्य हो गया, तो मैं उसे क्षति क्यों पहुँचाऊँगा?” भैरवनाथ मुस्कुराया।

“ठीक है, मैं यह कार्य करूँगा।” उग्रसेन ने सहमति जताई।

“तो फिर प्रतीक्षा किस बात की कर रहे हो? प्रस्थान करो।” भैरवनाथ ने कहा।

“हाँ, ठीक है।” उग्रसेन नदी के बाहर आये।

कुछ दूर चलने के उपरांत एक गंधर्व सैनिक ने आकर उन्हें सूचित किया। “दुर्भीक्ष निकट आ रहा है महाराज।”

‘हम्मा’ उग्रसेन ने उस सैनिक को जाने का संकेत दिया।

वह गंधर्व सैनिक वहाँ से प्रस्थान कर गया।

अश्व पर आरूढ़ हुआ सुर्जन तीव्र गति से वन मार्ग से चला आ रहा था। वो अपने प्रेम, दुर्धरा से भेंट करने को अति उत्साहित था। किंतु अगले ही क्षण उसके अश्व का पैर एक गड्ढे में फँस गया। वो गड्ढा घास से ढका हुआ था, इसलिए उसे दिखाई न दिया। अपना संतुलन खोकर वो अश्व से गिर पड़ा। सुर्जन क्षणभर में ही दोबारा उठ गया और अपने अश्व की ओर बढ़ा। उसने अपने अश्व का पैर खींचकर उस गड्ढे से निकाला।

उसने उस गड्ढे की जाँच की और साँस भरते हुए अनुमान लगाया, “वन्यपशु को पकड़ने

का एक जाल मात्र था यह तो।”

“उचित समझे, यह एक जाल एक पशु को बंदी बनाने के लिए बिछाया गया और वो कोई साधारण पशु नहीं है, अपितु एक भयंकर नरसंहारक है।” पीछे से एक स्वर सुनाई दिया। उपमन्यु वृक्ष की ओट से निकलकर आ रहा था।

सुर्जन पीछे मुड़ा, “उपमन्यु तुम... तुम किस नरसंहारक पशु के विषय में बात कर रहे हो।”

“तुम्हारे जैसा ही कोई नरसंहारक।” महाऋषि शंकराचार्य भी वृक्ष की ओट से बाहर आये। महाराज दुष्यंत ने अपना धनुष लिया और उग्रसेन अपनी तलवार लिए झाड़ियों के पीछे से बाहर आये।

सुर्जन कुछ क्षणों के लिए स्तब्ध सा रह गया। “नरसंहारक? यह आप क्या कह रहे हैं?”

“तुमने उचित ही सुना; यह जाल तुम्हारे लिए ही था असुरेश्वर दुर्भीक्ष।” महर्षि शंकराचार्य ने क्रोध में कहा।

सुर्जन स्तब्ध रह गया। उसने निराशाजनक भाव से शंकराचार्य की ओर देखा। “आपने अपने वचन का मान नहीं रखा ऋषिवर।”

महर्षि शंकराचार्य का क्रोध बढ़ता जा रहा था। “मैंने अपना वचन का मान नहीं रखा? मैंने तुमसे कहा था कि यदि तुम शांति के मार्ग में बाधा बनोगे तो मैं तुम्हारा मार्ग अवश्य अवरुद्ध करूँगा।”

“अब मैंने कौन सा अनुचित कार्य कर दिया?” सुर्जन ने प्रश्न किया।

“तुमने पांचाल में जो किया, क्या वो उचित था?” शंकराचार्य ने प्रश्न किया।

“वो तो एक चढ़ाई थी... एक राज्य को दूसरे राज्य पर विजय प्राप्त करने में सहायता की मैंने, इसमें अनुचित क्या है?” सुर्जन ने प्रश्न उठाया।

“ओह! तो तुम्हें यह अनुचित नहीं लगता... युद्ध में रणभूमि में शत्रु सैनिकों का वध किया जाता है, किंतु तुमने तो पांचाल के समस्त राजपरिवार का अंत कर दिया; तुमने युद्ध के उपरांत भी पांचाल के सैनिकों के साथ-साथ निर्दोष नगरजनों की भी हत्या की। तुम स्वयं को एक आदर्श योद्धा कहते हो, तो क्या आदर्श और धर्म-परायण योद्धा का यही कर्म है?” शंकराचार्य के नेत्र अभी भी क्रोध से जल रहे थे।

“नहीं ऋषिवर, यह सत्य नहीं है; मैं युद्ध को शीघ्र से शीघ्र समाप्त करना चाहता था। जैसे ही पांचाल नरेश बंदी बनाये गए, मैं युद्धभूमि से पलायन कर गया... उसके उपरांत क्या हुआ, इस बात की मुझे कोई जानकारी नहीं है।” सुर्जन ने अपनी सफाई में कहा।

यह सुनकर उपमन्यु ने हस्तक्षेप किया, “सदैव की भाँति आज भी तुम एक असत्य का सहारा ले रहे हो असुरेश्वर दुर्भीक्ष, किंतु इस बार तुम सफल नहीं होना।”

शंकराचार्य ने उपमन्यु का समर्थन करते हुए कहा, “इस बात से कोई अंतर नहीं पड़ता कि तुम्हें यह ज्ञात था कि नहीं; तुम जयवर्धन को इस नरसंहार से रोक भी तो सकते थे।”

“मैं... मैं क्षमा चाहता हूँ मुनिवर; मैं बस दुर्धरा से भेंट करने को उत्सुक था, इसलिए युद्ध में विजयी होते ही वहाँ से प्रस्थान कर गया।” सुर्जन ने अधीरता पूर्वक कहा।

“तुम्हारी इस भूल को क्षमा नहीं किया जा सकता दुर्भीक्ष... केवल जयवर्धन इस घटना के लिए उत्तरदायी नहीं हैं, तुम भी इसके लिए बराबर के उत्तरदायी हो। उसमें यह करने का साहस है, क्योंकि उसे तुम्हारा समर्थन प्राप्त है और तुम एक नेत्रहीन की भाँति उसका समर्थन करते हो।”

शंकराचार्य ने कटाक्ष करना जारी रखा।

“मैं क्षमा चाहता हूँ ऋषिवर” सुर्जन ने शंकराचार्य से क्षमा-याचना की।

उपमन्यु ने म्यान से तलवार खींच निकाली। “तुम्हारी कोई क्षमा-याचना स्वीकार नहीं की जाएगी असुरेश्वर दुर्भीक्ष्ण.. तुम्हारे कारण कई निर्दोषों ने अपने और अपने सगे संबंधियों के प्राण गवाँये हैं, इसलिए तुम्हें भी अपने प्रेम को पाने का कोई अधिकार नहीं है। हमें ज्ञात है कि हम तुम्हें पराजित नहीं कर सकते, किंतु यदि तुम्हें दुर्धरा चाहिए, तो तुम्हें सहस्रों गंधर्वों के शवों पर चढ़कर जाना होगा, क्योंकि तुम दुर्धरा के योग्य नहीं हो।”

“ऐसा मत कहो उपमन्यु... हम मित्र हैं, एक परिवार हैं; तुम लोगों के अतिरिक्त मेरा कोई परिवार नहीं है।” सुर्जन ने उसे समझाने का प्रयत्न किया।

“परिवार? जिससे तुमने सदैव असत्य कहा; जिनके साथ तुमने सदैव छल किया।” उपमन्यु ने क्रोध में भरकर कहा।

सुर्जन मौन हो गया। उसे सूझ ही नहीं रहा था कि वो क्या कहे।

वहीं महाराज दुष्यंत यह देख आश्चर्य में थे कि राजा उग्रसेन मौन क्यों खड़े थे।

“मैं आप सबसे विनती करता हूँ, मैं दुर्धरा से बहुत प्रेम करता हूँ और वो भी मुझसे उतना ही प्रेम करती है, कृपा करके हमें अलग न कीजिये।” सुर्जन ने विनती की।

“जिस दिन तुम्हारा सत्य उसे ज्ञात हुआ था, वो उसी दिन से तुमसे घृणा करने लगी।” अभी तक मौन खड़े रहने वाले उग्रसेन ने कहना आरंभ किया।

“नहीं, यह संभव नहीं है; मुझे एक अवसर दीजिये, मैं उससे एक बार वार्ता करना चाहता हूँ... मैं आपसे विनती करता हूँ महाराज।” सुर्जन ने एक बार फिर विनती की।

“दुर्धरा अब एक विवाहित स्त्री है... जिस दिन तुम्हारा सत्य हमें ज्ञात हुआ था, मैंने एक योग्य वर खोजकर उसका विवाह करा दिया।” भैरवनाथ की योजना अनुसार उग्रसेन को वो सब कहने पर विवश होना पड़ा।

सुर्जन के साथ वहाँ उपस्थित अन्य तीन जन भी उग्रसेन के वह शब्द सुन स्तब्ध रह गये।

सुर्जन एक मूर्ति की भाँति जड़ हो गया। महर्षि शंकराचार्य ने कुछ कहने का प्रयत्न किया, किंतु उग्रसेन ने उन्हें मौन रहने का संकेत दिया।

दुष्यंत ने सुर्जन के नेत्रों की ओर देखा। उन नेत्रों में स्पष्टता से क्रोध उठता हुआ दिख रहा था।

महाराज दुष्यंत ने तत्काल ही पाशास्त्र का आवाहन किया और सुर्जन को बंदी बनाने के लिए चला दिया।

सुर्जन भूमि पर गिर पड़ा। गहरे सदमे के कारण वो मूर्छावस्था में चला गया।

“अपने ऐसा क्यों किया?” शंकराचार्य, उग्रसेन पर चीखे।

“मुझे अपनी पुत्री की रक्षा करनी थी, मुझे कोई और मार्ग नहीं सूझा।” उग्रसेन ने अपनी सफाई में कहा।

“आपको अनुमान भी नहीं है आपने क्या किया है। दुर्धरा के लिए दुर्भीक्ष्ण, पातालपुरी के सिंहासन के साथ-साथ असुरेश्वर का पद तक त्यागने को सज्ज था; आपका यह असत्य आपके साथ-साथ आपने सम्पूर्ण गंधर्व प्रजाति के प्राण संकट में डाल सकता है।” शंकराचार्य ने चेतावनी भरे स्वर में कहा।

“मेरी पुत्री के जीवन के लिए क्या उचित है, यह मुझे भली-भाँति ज्ञात है, मुझे किसी के सुझाव की आवश्यकता नहीं... परिणाम जो भी होगा, मैं उसका सामना करने को सज्ज हूँ” कहकर उग्रसेन पीछे मुड़े और वहाँ से प्रस्थान कर गया।

शंकराचार्य ने मुड़कर मूर्छित हुए सुरजन की ओर देखा। वो महाराज दुष्यंत की ओर मुड़े। “हमें इसकी चेतना लौटने से पहले पलायन करना होगा महाराज।”

“मैं यहाँ उपस्थित हूँ ऋषिवर, आप चिंतित न होइये।” महाराज दुष्यंत ने उन्हें समझाने का प्रयत्न किया।

“क्षमा चाहता हूँ महाराज; मैं आपको कमतर नहीं आँक रहा, किंतु संसार का ऐसा कोई अस्त्र नहीं जो उसका वध कर सके। वह पंचतत्वों की शक्तियों का स्वामी है, हम उसका क्रोध नहीं झेल पायेंगे... इसलिए उचित यही होगा कि हम यहाँ से पलायन करें और हमें गंधर्वों का शिविर भी यहाँ से कहीं और स्थानांतरित करना होगा, क्योंकि मुझे तनिक भी अनुमान नहीं कि क्रोध में आकर यह क्या करेगा, इसलिए हम सबकी सुरक्षा के दृष्टिकोण से यह आवश्यक है।” शंकराचार्य ने सुझाव दिया।

“जैसा आप कहें। तो हमें इसके साथ क्या करना चाहिए?” महाराज दुष्यंत ने प्रश्न उठाया।

“हमें इसे यहीं छोड़ देना चाहिए, इससे उचित और कोई विकल्प नहीं है हमारे पास।” शंकराचार्य ने कहा।

“मुझे लगता है कि हमने यह उचित नहीं किया मुनिवर।” महाराज दुष्यंत ने मूर्छित दुर्भीक्ष की ओर देखकर कहा।

“इस विषय पर चर्चा करने का समय अभी नहीं है हमारे पास।” शंकराचार्य ने कहा।

“तो फिर प्रस्थान करते हैं... आप सभी के किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँचने तक, मैं सुरक्षा के लिए आपके साथ रहूँगा।” महाराज दुष्यंत ने अपने कदम आगे बढ़ाये।

शेष ने उनका अनुसरण किया।

सुरजन अभी भी भूमि पर मूर्छित पड़ा था।

भैरवनाथ और भद्राक्ष यह देख मुस्कराये। “योजना का पहला चरण पूर्ण हुआ।” भैरवनाथ ने कहा।

“किंतु अब इस बालिका का क्या करना है?” भद्राक्ष ने मूर्छित सुनंदा के विषय में प्रश्न किया।

“इसे वापस गंधर्वों के शिविर में छोड़ आओ। जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूँ, हमारी गंधर्वों से कोई निजी शत्रुता नहीं है, इसलिए शीघ्र से शीघ्र यह कार्य कर लौट आओ; योजना के अगले चरण को पूर्ण करने के लिए मुझे तुम्हारी आवश्यकता होगी।” भैरवनाथ ने आदेश दिया।

“जो आज्ञा गुरुदेव।” भद्राक्ष, सुनंदा को लेकर गंधर्वों के शिविर की ओर बढ़ चला।

* * *

एक प्रहर का समय बीता। सुरजन ने अपने नेत्र खोले। उसके नेत्र अश्रुओं से भरे हुए थे, वो भीतर से इतना टूट चुका था, कि उसने स्वयं को पाशास्त्र से मुक्त करने का प्रयत्न भी नहीं किया।

“हे ईश्वर, सदैव मैं ही तुम्हारा आखेट क्यों बनाता हूँ? क्यों? क्यों मुझे ही सदैव अपना सब कुछ खोना पड़ता है?” वो पीड़ा से चीख रहा था।

भैरवनाथ और भद्राक्ष की दृष्टि उस पर जमी हुई थी।

“हम यह उचित नहीं कर रहे गुरुदेव।” भद्राक्ष ने भैरवनाथ से कहा।

“असुरेश्वर के प्राणों की रक्षा का और उसे पातालपुरी के सिंहासन पर वापस बैठाने का, इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है। इसलिए जैसा मैं कहता हूँ, वैसा ही करो।” भैरवनाथ ने कठोर स्वर में कहा।

“जो आज्ञा गुरुदेव।” भद्राक्ष ने सहमति जताई।

“तो फिर जाओ, योजना में तुम्हारे योगदान का समय आ गया है।” भैरवनाथ ने आदेश दिया।

“अवश्य गुरुदेव।” भद्राक्ष ने स्वयं को एक गंधर्व का रूप देते हुए कहा।

इसके उपरांत भद्राक्ष, सुर्जन की ओर बढ़ा। जो कार्य वो करने जा रहा था, उसके विषय में विचार कर उसका हृदय और हाथ दोनों काँप रहे थे, किंतु अपनी शक्ति जुटाकर वो उसकी ओर बढ़ता चला गया।

“तो महान असुरेश्वर दुर्भीक्ष अपने घुटनों के बल झुका अपने प्रेम के लिए एक बालक की भाँति अश्रु बहा रहा है।” उसने हँसते हुए कटाक्ष किया।

“कौन हो तुम?” सुर्जन ने उससे प्रश्न किया।

“अपनी भार्या का पति हूँ मैं।” भद्राक्ष ने उत्तर दिया।

“क्या कहना चाहते हो?” सुर्जन ने एक बार फिर उससे प्रश्न किया।

“मैं तुम्हारी प्रेयसी दुर्धरा का पति हूँ।” उसने मुस्कुराते हुए कहा।

यह सुन सुर्जन को क्रोध आने लगा। “क्यों आये हो यहाँ? क्या चाहते हो?”

भद्राक्ष ने उसके निकट बैठकर कहा, “मैं बस तुम्हें यह बताने आया हूँ, कि तुमने क्या खोया है?”

सुर्जन ने उसकी ओर क्रोध से घूरते हुए देखा, “कहना क्या चाहते हो?”

“विवाह के उपरांत कल मेरी दुर्धरा के साथ प्रथम रात्रि थी; मैंने उसे नग्न देखा, उसके शरीर के हर अंग को चूमा। तुमने वास्तव में सौंदर्य का एक अद्भुत प्रसाद खोया है... उसके साथ शारीरिक संबंध बनाते ही मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, मानो मैं स्वर्ग में हूँ।” उसने हँसते हुए कटाक्ष किया।

सुर्जन के नेत्रों में क्रोध की ज्वाला धधकने लगी। वो पाशास्त्र का बंधन तोड़कर भूमि से उठ गया। उसने भद्राक्ष की गर्दन पकड़ी और उसे हवा में उठा दिया।

“बस... बहुत हुआ।” सुर्जन ने चीखते हुए उसे दूर फेंक दिया।

रक्त उगलते हुए भद्राक्ष भूमि पर गिर पड़ा। वह भूमि से उठा और बिना एक भी क्षण गवाँये घने वनों में भाग खड़ा हुआ।

सुर्जन ने उसका पीछा किया, किंतु लंबे समय के उपरांत भी वह उसे खोज न सका। झल्लाहट में उसने एक वृक्ष पर पैर से प्रहार किया। वो वृक्ष टूटकर भूमि पर गिर पड़ा। कुछ समय तक वह वृक्षों पर ही वार करता रहा।

शीघ्र ही भैरवनाथ वहाँ आ पहुँचा।

“रुक जाओ सुर्जन।” भैरवनाथ ने उसे पीछे से पुकार लगायी।

सुर्जन उसकी ओर मुड़ा। ‘गुरुदेव!’

भैरवनाथ ने उसका हाथ पकड़ लिया। “तुम इस प्रकार वन में उपद्रव क्यों मचा रहे हो? क्या

हुआ तुम्हें?”

सुर्जन ने भैरवनाथ की ओर देखा। “मुझे अकेला छोड़ दीजिये गुरुदेव, मुझे एकांत चाहिए।”

“किंतु क्यों? बताओ मुझे।” भैरवनाथ ने प्रश्न किया।

“मैं कुछ नहीं कहना चाहता गुरुदेव, मुझे बस एकांत चाहिए।” सुर्जन ने रुष्टता से उत्तर दिया।

“तुम मेरे शिष्य हो सुर्जन; तुमने उस कन्या के लिए पाताललोक का सिंहासन त्याग दिया, तुमने अपने जीवन में शांति प्राप्त करने हेतु असुरेश्वर का सम्मान त्याग दिया... तो क्या यही है तुम्हारा शांतिपूर्ण जीवन?” भैरवनाथ ने प्रश्न उठाया।

सुर्जन ने अपने अश्रु भरे नेत्र क्षण भर के लिए बंद किये। “आपने उचित ही कहा था गुरुदेव, शांति कभी स्थायी नहीं होती।”

“हुआ क्या सुर्जन, मुझे विस्तार से बताओ।” भैरवनाथ ने उससे प्रश्न किया।

“मैंने उसे भी खो दिया गुरुदेव।” सुर्जन ने अपने दृष्टिकोण से पूरी कथा कह डाली।

सब कुछ जानते हुए भी वह नीच भैरवनाथ उसकी बात ध्यान से सुनता रहा।

“तो तुम्हारा कहने का अर्थ है कि उन लोगों ने दुर्धरा को विवाह के लिए विवश कर दिया?” भैरवनाथ ने प्रश्न किया।

“हाँ, कदाचित् ऐसा हुआ हो।” सुर्जन ने निराशाजनक स्वर में उत्तर दिया।

भैरवनाथ ने मुस्कराते हुए कटाक्ष किया, “तुम मूर्ख हो सुर्जन, महामूर्ख हो तुम।”

“आप कहना क्या चाहते हैं?” सुर्जन ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“जब तुम्हें उनकी आवश्यकता थी, तो तुमने उनकी सहायता की... तब तुम उनके लिए एक नायक थे और केवल तुम्हारा वास्तविक नाम जानकर वो तुम्हारे शत्रु बन गए?” भैरवनाथ ने कटाक्षमय स्वर में प्रश्न किया।

“आप विस्तार से कहिये, क्या कहना चाहते हैं आप?” सुर्जन ने झल्लाहट में कहा।

“उनके लिए केवल उनकी आवश्यकता का महत्व था। जब तुमने सुर्जन के रूप में उन गंधर्वों को मुक्त कराने में सहायता की, तब तुम उनके लिए नायक थे और जब उनकी आवश्यकता पूर्ण हो गयी, तुम उनके लिए किसी योग्य नहीं रहे। तुम कहते हो उन्होंने दुर्धरा को विवाह करने के लिए विवश किया गया होगा... क्या तुम मान सकते हो कि वास्तव में ऐसा हो सकता है? वो भी तो एक योद्धा है; उसकी इच्छा के बिना कोई पुरुष उसे स्पर्श तक नहीं कर सकता। चलो मान लेते हैं कि उसने तुम्हारा वास्तविक नाम जाना, इसलिए उसने किसी और पुरुष से विवाह कर लिया; किंतु यदि उसने अपने जीवन में कभी भी तुमसे प्रेम किया होता, तो इतना बड़ा निर्णय लेने से पूर्व उसने तुम्हारी प्रतीक्षा की होती, तुमसे वार्ता की होती। वो एक गंधर्व कन्या है और गंधर्व जाति के नियमानुसार वो अपनी राजकुमारी को विवाह के लिए कदापि विवश नहीं कर सकती।” भैरवनाथ ने विस्तृत किया।

“आपके कहने का अर्थ है कि उसने मेरे साथ कपट किया? सुर्जन ने प्रश्न उठाया।

“हाँ, मैं यही कहना चाहता हूँ।” भैरवनाथ ने अपना मत रखा।

“नहीं नहीं, मैं ऐसा नहीं मान सकता; वो एक साधारण सी कन्या ही तो है, कदाचित् वह यह सुनकर भयभीत हो गयी हो कि मैं एक असुर हूँ।” सुर्जन ने अपना मत रखा।

“ओह! तो तुम ऐसा सोचते हो... किंतु तुमने तो कहा था कि वो तुमसे प्रेम करती थी। तुमने उसके चरित्र के विषय में भी बताया था, कि वो एक वीर स्त्री योद्धा है। यदि उसने तुमसे कभी प्रेम किया होता, तो वो तुम्हारे लौटने की प्रतीक्षा करती, किंतु उसने तो इतनी शीघ्र एक दूसरे पुरुष को अपने जीवन में स्वीकार कर लिया। इसका सीधा सा अर्थ यह है कि उसने केवल तुम्हारा उपयोग किया है।” भैरवनाथ, सुर्जन को भड़काने का भरसक प्रयत्न कर रहा था।

सुर्जन एक पत्थर पर बैठकर विचारों में खो गया।

“अब तुम क्या विचार करने लगे सुर्जन? मैं पूरे विश्वास से कह सकता हूँ कि उसने तुम्हारे साथ कपट किया है।” भैरवनाथ ने उसे भड़काने का अपना प्रयत्न जारी रखा।

“कदाचित् आपका मत उचित ही है गुरुदेव; उस स्त्री ने वाकई मेरे साथ कपट किया है। उसने कभी मुझसे प्रेम किया ही नहीं था अन्यथा वह किसी दूसरे पुरुष को स्वीकार नहीं करती... औ... और तो और उसने उसके साथ वैवाहिक संबंध भी बना लिये। मैंने उस पर विश्वास किया, उसके लिए अपना नाम, सिंहासन, सम्मान, सब कुछ त्यागने को सज्ज था, मैं अपना जीवन उसके साथ शांतिपूर्वक व्यतीत करना चाहता था, किंतु उसने मेरे साथ कपट किया... कैसे कर सकती है वो ऐसा?” सुर्जन झल्ला उठा।

“यह नश्वर संसार भद्र लोगों से भरा हुआ है, या कह लो कि ऐसे लोगों से भरा हुआ है जो स्वयं की भद्रता, सभ्यता और अनुशासन का मिथ्या प्रदर्शन करते हैं। ऐसे लोग अपनी आवश्यकतानुसार एक दूसरे का प्रयोग करते हैं... वैसे ही, जैसे उन लोगों ने अपनी आवश्यकतानुसार तुम्हारा उपयोग किया। तुमने उन्हें अपना परिवार माना और केवल तुम्हारे नाम का सहारा लेकर उन्होंने दूध में पड़ी मक्खी के समान अपने जीवन से निकाल फेंका। तुम अपने जीवन में अपने वचन धर्म का पालन करते हो, तुम्हारा जीवन जीने का एक आदर्श है; किंतु ऐसे लोगों का कोई धर्म, कोई आदर्श नहीं होता। उन्होंने बस यह जान लिया कि तुम असुरेश्वर हो... उनके मन में एक बार भी यह विचार नहीं आया कि आवश्यकता पड़ने पर तुमने सदैव उनकी सहायता की थी। तुम्हारी निःस्वार्थ रूप से की गयी उनकी सहायता को उन्होंने एक बार में ही भुला दिया। मैं नहीं जानता कि तुम्हारे और दुर्धरा के मध्य कैसा संबंध था, किंतु मैं पूरे विश्वास से कह सकता हूँ कि वो ऐसी कन्या है, जो सामने से कुछ और पीठ पीछे कुछ और है अर्थात् द्विचरित्र कन्या है, जिसने तुम्हारी शक्ति देख तुम्हारा उपयोग किया है। मैं जो भी कह रहा हूँ, वो केवल तुम्हारी बताई कथा का विश्लेषण करने के उपरांत मेरा एक अनुमान मात्र है।”

“और आपका अनुमान उचित ही प्रतीत होता है गुरुदेव।” सुर्जन ने क्रोधवश कहा।

सुर्जन ने कहना जारी रखा। “आप जानते हैं, जब मैं रीछराज जामवंत से मिला था, वो मेरे जीवन का सबसे स्वर्णिम समय था; उन्होंने ही मुझे एक गुरु मंत्र दिया कि हमें उस मार्ग का चुनाव करना चाहिए, जो हमारी अंतरात्मा को संतुष्ट करे... मैंने उनका अनुसरण करते हुए एक चुनाव किया।”

“किंतु तुम्हें छला गया।” भैरवनाथ ने कहा।

“हाँ, अंतरात्मा के स्वर को सुनने का चुनाव गलत सिद्ध हुआ... कदाचित् रीछराज को भी इन द्विचरित्रीय लोगों की मंशा का अनुमान नहीं रहा होगा।” सुर्जन ने निष्कर्ष निकाला।

भैरवनाथ ने कहना आरंभ किया, “यह संसार ऐसे द्विचरित्रीय लोगों से भरा पड़ा है सुर्जन, जो सामने से कुछ और होते हैं और पीठ पीछे कुछ और होते हैं... और वह सभी इसी प्रकार के लोग थे।

इस संसार में यदि कोई भी स्वयं को अच्छा राजा, भद्र मनुष्य कुछ भी मानता हो; उन सभी के मन में बुरे विचार होते ही हैं, वो केवल स्वयं को भद्र और उचित मार्ग पर चलने वाला प्रदर्शित करते हैं; ऐसे लोग बिना किसी निहित स्वार्थ के कोई कार्य नहीं करते। तुम्हें रक्षाराज मार्केश की कथा तो ज्ञात ही होगी... एक समय वो भी अपने वचन का पक्का और एक आदर्श योद्धा था, किंतु जब मानवों ने उसके साथ कपट किया, तब उसे उनके द्विचरित्र व्यक्तित्व के विषय में ज्ञात हुआ और उसने उनका नाश करने की शपथ ग्रहण की और यही कारण है कि हम असुर उन मानवों से कहीं अधिक श्रेष्ठ और योग्य हैं।”

“आप ऐसा कैसे कह सकते हैं कि असुर, मानवों से श्रेष्ठ हैं?” सुर्जन ने प्रश्न किया।

“क्योंकि हम दुष्ट प्रवृत्ति के माने जाते हैं और संसार के समक्ष हम अपनी उस छवि के अनुसार ही व्यवहार करते हैं और स्वयं को वैसे ही प्रस्तुत करते हैं जैसा संसार हमें मानता आया है। हम उनकी भाँति द्विचरित्र नहीं हैं और यही कारण है कि शासन के दृष्टिकोण से हम उनसे कहीं अधिक योग्य हैं।” भैरवनाथ ने विस्तृत किया।

सुर्जन पत्थर से उठा। उसके नेत्रों में प्रतिशोध की ज्वाला धधकने लगी। “आप उचित कह रहे हैं गुरुदेव; मेरी इच्छा थी कि मैं एक धर्मपरायण आदर्श योद्धा के रूप में जाना जाऊँ, जो कभी अपना वचन भंग नहीं करता, किंतु अब मैं धर्मपरायणता और आदर्शवाद की मिथक परिभाषा को ही परिवर्तित कर दूँगा।”

“तुम्हारे मन में क्या चल रहा है सुर्जन?” भैरवनाथ ने प्रश्न किया।

“सुर्जन नहीं, असुरों का नायक हूँ मैं। असुरेश्वर दुर्भीक्ष अब लौट आया है और अब वह द्विचरित्रिय मनुष्य अपने कपट का परिणाम भोगेंगे।” दुर्भीक्ष ने म्यान से तलवार खींच निकाली।

“नहीं नहीं दुर्भीक्ष, तुम ऐसा कुछ नहीं करोगे... मैंने तुम्हें जो भी कहा वो इसलिए कहा, ताकि तुम उस नीच कन्या को अपने मन मस्तिष्क से निकाल फेंको।” भैरवनाथ ने उसे रोकने का प्रयत्न किया।

“आपको उस श्राप से भय है, है न?” दुर्भीक्ष ने प्रश्न किया।

“हाँ, वो भी एक कारण है; तुम्हें वहाँ नहीं जाना चाहिए।” भैरवनाथ ने कहा।

“तो फिर भय का कोई कारण ही नहीं है गुरुदेव, क्योंकि अब मेरे मन में उसके लिए कोई प्रेम भाव नहीं है।” दुर्भीक्ष ने तलवार पर कसाव बढ़ाया।

“किंतु...।” भैरवनाथ ने एक बार प्रयत्न किया।

रक्षगुरु के कुछ भी कहने से पूर्व ही दुर्भीक्ष ने कहना आरंभ किया। “आप सदैव एक सच्चे मित्र की भाँति मेरे साथ रहे गुरुदेव; आपने बाल्यवस्था से मेरी सहायता की... जब भी मुझे आवश्यकता पड़ी, आप मेरे साथ थे, आपने मुझे मेरा जीवन लौटाया; मुझे आपकी बात सुननी चाहिए थी... किंतु यदि मैंने उन्हें दण्ड नहीं दिया, तो न मैं चैन की नींद सो पाऊँगा, न इस धरा पर जीवित रह पाऊँगा। यह मेरा प्रतिशोध है और जहाँ तक मृत्यु का प्रश्न है, तो मेरा यम के द्वार पहुँचने का समय अभी नहीं आया, क्योंकि मेरे मन में उस कपटी कन्या के लिए कोई प्रेम भाव नहीं बचा है।”

दुर्भीक्ष वहाँ से प्रस्थान कर गया। भैरवनाथ एक शब्द न कह पाया।

वहीं कुछ दूरी पर वृक्षों की ओट में छुपा भद्राक्ष, निकलकर भैरवनाथ के निकट आया, “तो क्या यही थी आपकी योजना?”

“नहीं, यह मेरी योजना का भाग तो नहीं था; मैं तो केवल दुर्भीक्ष और दुर्धरा को अलग करना चाहता था... किंतु वो जो करने जा रहा है, उससे उसके शत्रु की संख्या बढ़ने वाली है, क्योंकि महाराज दुष्यंत भी उन गंधर्वों के साथ हैं और दुष्यंत आर्यावर्त की भूमि के महानतम योद्धाओं में से हैं, इसीलिए मुझे गरुड़ों के दिए श्राप का भय सता रहा है।” भैरवनाथ ने भद्राक्ष से कहा।

“तो अब हमें क्या करना चाहिए?” भद्राक्ष ने प्रश्न किया।

“हम इस बार कुछ नहीं कर सकते, अब प्रकृति स्वयं ही उसके भाग्य का निर्णय करेगी।” भैरवनाथ ने कहा।

* * *

दुर्भीक्ष अपने अश्व पर आरुढ़ होकर वहाँ से प्रस्थान कर गया। शीघ्र ही वो गंधर्वों के शिविर में पहुँचा। वहाँ कोई भी उपस्थित नहीं था। वो अपने अश्व से नीचे उतरा।

“तो वो सब पलायन कर गए।” उसके मुख पर क्रूरता भरी मुस्कान छा गयी।

उसने उस पूरे स्थान का निरीक्षण किया। अगले ही क्षण उसे एक दिशा में झाड़ियों के हिलने का दृश्य दिखाई दिया।

“तो वो इस दिशा में निकले हैं।” दुर्भीक्ष ने अनुमान लगाने का प्रयत्न किया।

उसने अपनी तलवार की मूठ पर कसाव बढ़ाया और अपने उस अस्त्र को ध्यान से देखा। “उनमें से हर कोई इस महाकपट का परिणाम भोगेगा।” उसके नेत्र क्रोध से जल रहे थे।

“रुक जाओ दुर्भीक्ष!” पीछे से एक स्वर सुनाई दिया। यह कोई और नहीं, भैरवनाथ था।

दुर्भीक्ष उनकी ओर मुड़ा और स्पष्ट रूप से कहा, “मैं आपसे कह चुका हूँ, गुरुदेव, मुझे यह कार्य करना ही है।”

“मैं यहाँ तुम्हारा मार्ग रोकने नहीं आया।” भैरवनाथ ने कहा।

“तो फिर आप यहाँ किसलिए आये हैं?” दुर्भीक्ष ने प्रश्न किया।

“तुम एक महान धनुर्धर भी हो सुर्जन; तुम्हारे शत्रुओं की संख्या सहस्रों में है, तुम्हें इसकी आवश्यकता होगी।” भैरवनाथ ने उसके हाथ में धनुष सौंपते हुए कहा।

“आप कहना क्या कहते हैं गुरुदेव?” दुर्भीक्ष ने प्रश्न किया।

“मैं महाराज दुष्यंत के विषय में बात कर रहा हूँ... सावधान रहना और उन्हें हलके में मत लेना; वो गंधर्वों की रक्षा कर रहे हैं।” भैरवनाथ ने उसे चेतावनी दी।

“चिंतित मत होइए, गुरुदेव, आज मेरे समक्ष कोई नहीं टिक पायेगा, क्योंकि आज मैं अपनी पूरी शक्ति का प्रदर्शन करूँगा। अब मैं और प्रतीक्षा नहीं कर सकता, मैं प्रस्थान करता हूँ।” दुर्भीक्ष एक बार फिर अपने अश्व पर आरुढ़ हो गया।

‘आप गलत थे शीछराज जामवंत; मैंने आपके दिखाए मार्ग पर चलने का प्रयत्न किया, किंतु इस संसार में दुष्ट प्रवृत्ति के लोग ही प्रसन्नता से जी सकते हैं।’ विचार करते हुए दुर्भीक्ष ने अपने अश्व की लगाम खींची।

भैरवनाथ उसे पीछे से जाते देखता रहा। “आशा है तुम शीघ्र ही लौटोगे असुरेश्वर; क्योंकि मैं चाहता हूँ कि तुम स्वयं के मन के भीतर से उस कमजोर सुर्जन को सदैव के लिए मार दो।”

दुर्भीक्ष अश्व पर आरुढ़ हुआ, बिना रुके चलता रहा। सूर्योदय के उपरांत उसे वो दिखा, जिसे देखने की वो अधीरता से प्रतीक्षा में था।

एक खुले मैदान से होकर सहस्रों गंधर्व जा रहे थे। महाराज दुष्यंत और महर्षि शंकराचार्य

आने से उनका नेतृत्व कर रहे थे। वहीं उग्रसेन और उपमन्यु अपनी सेना के पीछे थे। दुर्धरा, उसकी बहन सुनंदा तथा अन्य स्त्रियाँ पालकियों में बैठकर गंधर्वसेना के मध्य से जा रही थीं।

“रुक जाओ!” दुर्भीक्ष चीखा।

गंधर्व उसकी ओर मुड़े। पीछे की ओर से नेतृत्व कर रहे राजा उग्रसेन और उपमन्यु भी उसकी ओर मुड़े।

वहीं महाराज दुष्यंत और महर्षि शंकराचार्य को वो स्वर ठीक से सुनाई नहीं दिया।

“मुझे लगता है कि मैंने कुछ सुना; हमें चलकर ज्ञात करना चाहिए।” महाराज दुष्यंत ने संदेह प्रकट किया।

“चिंतित होने का कोई विषय ही नहीं है महाराज, मैं जाँच करके आता हूँ।” महर्षि शंकराचार्य ने अपना अश्व घुमाया।

महाराज दुष्यंत वहीं खड़े रहे।

राजा उग्रसेन और उपमन्यु की दृष्टि दुर्भीक्ष पर पड़ी। उसके नेत्र क्रोध से जल रहे थे। उस क्रोध की ज्वाला को देख उन दोनों के मन में भय का संचार होने लगा।

“क... क्या चाहते हो तुम?” उग्रसेन ने प्रश्न किया।

“दुर्धरा को मेरे पास लेकर आओ, अभी इसी समय।” दुर्भीक्ष ने माँग की।

“हम अपनी राजकुमारी के लिए प्राण गँवाने को सज्ज हैं।” उपमन्यु भी म्यान से तलवार खींच उसकी ओर बढ़ा।

दुर्भीक्ष अपने अश्व से नीचे उतरा। उसने अपना धनुष अश्व की पीठ पर छोड़ा और तलवार लिए उपमन्यु की ओर बढ़ा।

“तो तुम अपने राजकुमारी के लिए अपने प्राण देने को सज्ज हो, है न?” दुर्भीक्ष ने उससे प्रश्न किया।

उपमन्यु ने तलवार पर अपनी पकड़ मजबूत करते हुए कहा, “हाँ, मैं हूँ।”

“एक सरल मृत्यु तुम्हारी निष्ठा का उपहार होगा।” दुर्भीक्ष ने बिजली की गति से तलवार चलाई। उपमन्यु को तलवार ऊपर उठाने का भी अवसर प्राप्त नहीं हुआ। वो भूमि पर गिर पड़ा और उसका मस्तक कटकर लगभग दस गज दूर जा गिरा।

उग्रसेन और अन्य गंधर्व यह दृश्य देख स्तब्ध रह गए। तब तक महाऋषि शंकराचार्य भी उस भयंकर दृश्य के साक्षी बनने हेतु वहाँ पहुँच आये थे।

दुर्भीक्ष दहाड़ा, “कोई और है, जो मेरे और दुर्धरा के मध्य आना चाहता है! यदि साहस है, तो आओ; यदि तुममें से कोई मेरे मार्ग में आया तो उसका यही परिणाम होगा।” उसने उपमन्यु के शव की ओर संकेत कर कहा।

उग्रसेन की आँखें क्रोध से जलने लगीं, “हमारा साहस अभी टूटा नहीं है... बंदी बना लो इसे।” उसने अपने सैनिकों को आदेश दिया।

गंधर्व सेना दुर्भीक्ष की ओर दौड़ पड़ी।

वहीं दुर्भीक्ष का दहाड़ता हुआ स्वर सुनकर महाराज दुष्यंत के धैर्य का बाँध टूट गया। उन्होंने अपना अश्व पीछे घुमाया।

दुर्भीक्ष की पकड़ उसकी तलवार पर मजबूत हो चली थी। “कोई दिव्य शक्ति नहीं, कोई दिव्यास्त्र नहीं; मैं तुम सबके शरीरों को अपनी इसी तलवार से छिन्न-भिन्न करूँगा।” उसने एक

और तलवार खींच निकाली।

दुर्भीक्ष एक निश्चित अवस्था में आया और एक तलवार को प्रत्यावर्ती बाण की भाँति घुमाकर फेंका। वो तलवार बीस शीश काटकर उसके हाथ में वापस आ गयी। शत्रु को भयभीत करने के लिए इतना ही पर्याप्त था।

किंतु फिर भी गंधर्व योद्धा पूरे साहस से उसकी ओर दौड़ा।

“दस सहस्र योद्धाओं के साथ एक का युद्ध; बहुत ही रुचिकर और आनंदमयी युद्ध होगा यहा” दुर्भीक्ष के भीतर का असुर जाग चुका था। अपने दोनों हाथों में तलवार लिए वह उनकी ओर दौड़ा।

यह वहाँ उपस्थित सभी जीवित प्राणियों के लिए एक भयावह दृश्य था। कुछ ही क्षणों में सैकड़ों गंधर्व योद्धा प्राणहीन हो गए। वह खुला मैदान, रक्त की नदी सा प्रतीत होने लगा।

गंधर्वों की चीख सुन दुर्धरा ने पालकी से निकलने का प्रयत्न किया, किंतु एक गंधर्व सैनिक ने उसे रोका, “आपको बाहर आने की आज्ञा नहीं है राजकुमारी।”

दुर्धरा ने उसकी छाती पर प्रहार किया और पालकी से बाहर आ गयी।

इसके उपरांत दुर्धरा ने पालकी में बैठी अपनी छोटी बहन सुनंदा से कहा, “तुम यहीं रुको, यह मेरा आदेश है।” यह कहकर वो बाहर चली गयी।

किंतु मासूम सुनंदा ने उसकी बात नहीं सुनी। वो भी पालकी से निकल आयी।

भूमि पर गिरे रक्त के बहते सागर को देख दुर्धरा स्तब्ध रह गयी। उसने उस योद्धा की ओर देखा, जिससे उसने कभी प्रेम किया था। आज वो दुर्दांत हत्यारा बना हुआ था।

“सुर्जन! तुम ऐसा कैसे कर सकते हो?” दुर्धरा स्तब्ध रह गयी।

दुर्भीक्ष गंधर्व योद्धाओं को काटता चला जा रहा था। महाराज दुष्यंत भी शीघ्र ही वहाँ पहुँच आये। मृत गंधर्वों को देख उन्हें भी झटका लगा।

उस दुर्दांत नरसंहारक के समक्ष खड़े होने का सामर्थ्य किसी में नहीं था। दुर्धरा मौन सी हो गयी। अपने प्रेमी की इस वास्तविकता पर उसे अभी भी विश्वास नहीं हो रहा था।

महाराज दुष्यंत ने अपना धनुष उठाया और दुर्भीक्ष की ओर लक्ष्य साधा।

महर्षि शंकराचार्य ने उन्हें रोका, “नहीं महाराज, आप ऐसा मत कीजिये।”

क्रोधित दुष्यंत ने आश्चर्यपूर्वक प्रश्न किया, “क्यों? क्यों आप मुझे उससे युद्ध नहीं करने देना चाहते?”

“वो अत्यंत क्रोध में है, पंचतत्वों की शक्ति का स्वामी है... मैं आपको कमतर नहीं आँक रहा, किंतु आपका यह कदम आत्मघाती सिद्ध हो सकता है महाराज। आप एक महान राष्ट्र के राजा हैं, आपका जीवन बहुत मूल्यवान है।” महर्षि शंकराचार्य ने कहा।

“मैं इस समय कोई राजा नहीं हूँ, इस समय मैं केवल गंधर्वों का रक्षक हूँ, इसलिए युद्ध तो मैं करूँगा।” दुष्यंत ने अपने अश्व की लगाम खींची और दुर्भीक्ष की ओर बढ़े।

वहीं दुर्भीक्ष की दृष्टि दुर्धरा पर पड़ी। वो उसकी ओर बढ़ा। जो भी उसके मार्ग में आया, वो उसे क्रूरता से काटकर गिराता गया।

अगले ही क्षण राजा उग्रसेन, उसके और दुर्धरा के मध्य आकर खड़े हो गए। “अपनी पुत्री की रक्षा के लिए उसका पिता अभी जीवित है।”

“अच्छा, किंतु कितने समय और?” दुर्भीक्ष के मुख पर शैतानियत भरी मुस्कराहट थी।

“एक क्षण रुको और मेरी बात सुनो....।” उग्रसेन ने कहने का प्रयत्न किया, किंतु अगले ही क्षण न जाने क्यों उनका शरीर काँपने और अकड़ने लगा।

दुर्भीक्ष हँस पड़ा। “तुम पर तो मेरे नाम का भय कुछ अधिक ही छा गया है उग्रसेन... देखो किस प्रकार भय से तुम्हारा पूरा शरीर काँप रहा है।”

“मैं...।” उग्रसेन के कंठ से शब्द नहीं फूट पा रहे थे। उनके नेत्र अकस्मात् ही लाल हो चले थे।

“पीड़ा में प्रतीत होते हो उग्रसेन; कदाचित् तुम्हारे साथियों की मृत्यु से तुम्हें गहरा सदमा लगा है, या फिर तुम्हारे मन में मेरा भय घर कर गया है। कोई बात नहीं, मैं तुम्हारी मृत्यु सरल बना देता हूँ।” कहकर दुर्भीक्ष ने अपनी तलवार उग्रसेन के उदर से ले जाते हुए उनकी पीठ से पार कर दी और क्षणभर में ही खींच निकाली।

घायल उग्रसेन भूमि पर गिर पड़े।

“नहीं...!” दुर्धरा चीखती हुई अपने पिता की ओर दौड़ी।

लगभग तीन सहस्र गंधर्व मृत्यु को प्राप्त हो चुके थे। शेष का मनोबल अपने राजा को मृत्यु-शय्या पर देख वैसे ही टूटने लगा था... फिर भी वो दुर्भीक्ष को मारने उसकी ओर दौड़े।

“इन कीड़ों के लिए मेरे पास समय नहीं है।” दुर्भीक्ष ने अपने नेत्र बंद किये और अपने हाथ उठाये।

उस महादुर्दात दुर्भीक्ष के हाथों से अग्नि की लपटें निकलीं। उस अग्नि ने केवल गंधर्व योद्धाओं को ही नहीं, अपितु कई निर्दोष स्त्रियों और बालकों को भी अपनी चपेट में ले लिया। उपमन्यु की पत्नी भी उसी अग्नि की चपेट में आकर जीवित ही जल गयी।

लगभग दो सहस्र गंधर्व योद्धा जीवित ही भस्म हो गये। दुर्भीक्ष अभी भी संतुष्ट नहीं था। उसकी आँखों में अभी भी ज्वाला धधक रही थी।

“सावधान दुर्भीक्ष!” दुष्यंत ने क्रोध में उसकी ओर एक बाण छोड़ा। वो बाण सीधा उसकी छाती में आ धँसा।

इसके उपरांत दुष्यंत ने बढ़ती अग्नि को बुझाने हेतु वरुणास्त्र नामक दिव्य अस्त्र का प्रयोग किया।

दुर्भीक्ष ने अपनी छाती में धँसा बाण निकाला और दुष्यंत की ओर देखा। “तुम राजा दुष्यंत हो, है न?”

“हाँ, मैं वही हूँ।” दुष्यंत ने दृढ़ता से कहा।

“और तुम्हारे बाणों की गति मुझे यह बता रही है कि तुम मुझे द्रुपद की चुनौती दे रहे हो।”

“उचित अनुमान लगाया तुमने नीच असुर।” दुष्यंत ने चुनौती भरे स्वर में कहा।

“तो फिर मुझे भी तो मेरा धनुष उठाने दो।”

“अवश्य... आप सभी हमारे मध्य से हट जाइये, यह हमारे द्रुपद का समय है।” दुष्यंत ने सहमति जताते हुए गंधर्वों को आदेश दिया। गंधर्व सेना एक ओर हट गयी।

दुर्धरा अपने पिता की पीड़ा से वैसे ही विक्षिप्त थी। वो अपनी बहन सुनंदा के साथ मृत्युशय्या पर पड़े अपने पिता को ढाँढ़स बँधा रही थी।

दुर्भीक्ष अपने अश्व की ओर बढ़ा और अपना धनुष उठा लिया।

अब दुष्यंत और दुर्भीक्ष अपना-अपना धनुष लिए एक दूसरे के समक्ष खड़े थे।

“तो आरंभ करते हैं महाराज दुष्यंत” दुर्भीक्ष ने अपना धनुष ऊपर किया।

महाराज दुष्यंत ने उस पर बाण चलाने आरंभ कर दिए।

“तुम्हारी गति वाकई अद्भुत है।” दुर्भीक्ष ने भी उतरस्वरूप अपने बाणों की वर्षा आरंभ की।

वो आर्यावर्त की भूमि के महानतम द्वंद्वों में से एक था। महाराज दुष्यंत, दुर्भीक्ष के लिए एक कठिन प्रतिद्वंद्वी सिद्ध हो रहे थे।

उग्रसेन अपनी मृत्यु के निकट थे। उनकी पुत्रियाँ दुर्धरा और सुनंदा उनके लिए अश्रु बहा रही थीं।

उग्रसेन का शरीर न जाने क्यों अभी तक अकड़ा हुआ था, वह कुछ भी बोलने में असमर्थ प्रतीत हो रहे थे। उन्होंने सांकेतिक भाषा में अपनी पुत्रियों को वहाँ से निकलने का निर्देश दिया।

दुर्धरा के नेत्रों से अश्रु बह उठे, “नहीं, मैं यहाँ से कहीं नहीं जाऊँगी पिताश्री; उससे प्रेम करने का अपराध मैंने किया है, मेरी भूल का दण्ड सहस्रों गंधर्वों ने झेला है। मैं अपनी मृत्यु से नहीं भाग सकती... यदि आज मेरी मृत्यु होनी है, तो वो होकर रहेगी, जीवित रहने की इच्छा वैसे भी नहीं बची है अब।”

“न... नहीं दुर्धरा” उग्रसेन ने बोलने का असफल प्रयत्न किया, किंतु उससे पूर्व ही उनकी श्वास बंद हो गयी।

“नहीं... पिताश्री!” दुर्धरा और सुनंदा पीड़ा से चीख पड़ीं।

उनकी पीड़ा से भरी चीख सुन, दुर्भीक्ष का ध्यान क्षणभर के लिए भंग हो गया। उसने दुर्धरा की ओर दृष्टि घुमायी। उन क्षणों ने उसके नेत्रों में भी अश्रु ला दिए।

दुष्यंत ने उस क्षण का लाभ उठाया और अपने प्रतिद्वंद्वी के धनुष पर प्रहार किया। दुर्भीक्ष निःशस्त्र हो गया। उसका धनुष भूमि पर गिर पड़ा।

“ओह! उस कपटी कन्या के लिए मुझे अपना ध्यान भंग नहीं करना चाहिए था।” वो दुष्यंत की ओर मुड़ा।

दुष्यंत ने उसके कंठ की ओर लक्ष्य कर बाण छोड़ा। वह बाण तीव्र गति से दुर्भीक्ष की ओर बढ़ा, किंतु उसने बड़ी सरलता से वो बाण पकड़कर तोड़ दिया। दुष्यंत ने उस पर बाणों की वर्षा आरंभ कर दी।

किंतु दुर्भीक्ष अपनी चपलता का अद्भुत प्रदर्शन करते हुए उनके सभी वारों से बच गया। उसने दुष्यंत की ओर घूरकर देखा और कटाक्ष किया, “मैं तुम्हारे जैसे कायरों के हर वार से स्वयं की रक्षा करने में सक्षम हूँ, जो एक निःशस्त्र योद्धा पर वार करते हैं।”

यह सुनकर दुष्यंत ने अपना धनुष नीचे किया। “मैं तुम्हें पराजित कर चुका हूँ दुर्भीक्ष... बाण तो मैं तुम पर एक योद्धा की भाँति नहीं, अपितु एक अपराधी समझकर दण्ड देने हेतु चला रहा था। किंतु यदि तुममें द्वंद्व की इच्छा बची है तो तुम्हारी यह इच्छा भी मैं अवश्य पूरी करूँगा; अब बिना किसी अस्त्र के द्वंद्व होगा।”

‘अवश्य’ दुर्भीक्ष की मुट्ठियाँ भिंच गयीं।

किंतु अगले ही क्षण उन दोनों के मध्य महाबली अखण्ड आ खड़े हुए। उन्होंने दुर्भीक्ष के समक्ष अपने मुख को ढका वस्त्र हटाया। उनके हाथ में दिव्य विजय धनुष भी था।

दुर्भीक्ष स्तब्ध होकर उनकी ओर देखने लगा।

“कौन हो तुम?” महाराज दुष्यंत ने अखण्ड से प्रश्न किया।

महर्षि शंकराचार्य ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, “मेरी आपसे विनती है महाराज। अब आगे का ढंढ इन्हें लड़ने दें।”

महाराज दुष्यंत ने सहमति जताई, “जैसी आपकी इच्छा ऋषिवर।”

दुर्भीक्ष ने अखण्ड की ओर घूरते हुए देखा, “महाबली अखण्ड, इस क्षण की तो मैंने चौदह वर्षों तक प्रतीक्षा की है; आपको ढंढ में पराजित करना मेरी जीवन की सबसे बड़ी इच्छा थी और आज आप मेरे समक्ष खड़े हैं।”

“पहले मुझे लगा कि तुम उस क्रूर राजा जयवर्धन के एक सहयोगी मात्र हो। मुझे लगा कि वो तुम्हारा पथभ्रष्ट कर रहा है... किंतु नहीं, तुम तो स्वयं ही एक दुर्दांत नरसंहारक हो, जो शांति की राह में सबसे बड़ी बाधा है।” अखण्ड ने उस पर कटाक्ष किया।

“हाँ, हूँ मैं एक दुर्दांत हत्यारा; मैं एक आसुरी प्रवृत्ति का मनुष्य हूँ और मैं चाहता भी यही हूँ कि यह संसार मुझे वैसा ही माने। मैं तुम सबकी भांति द्विवर्त्ति का व्यक्ति नहीं हूँ, मैं अभी भी अपने शब्दों पर अड़ा हूँ; यदि दुर्धरा और उसका पति मेरे समक्ष समर्पण कर दें, तो मैं सभी को जीवनदान दे दूँगा, अन्यथा निर्ममता से सबकी हत्या करूँगा।” दुर्भीक्ष ने दुर्धरा की ओर घूरते हुए कहा।

दुर्धरा को यह सुनकर आश्चर्य हुआ। वो उसके पति के विषय में क्या कह रहा था, उसे कुछ समझ नहीं आया।

अखण्ड ने उस पर कटाक्ष जारी रखा, “जानता हूँ तुम अपराजेय हो, तुम्हारा वध नहीं किया जा सकता; किंतु आज मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि संसार में बहुत कुछ मृत्यु से भी भयंकर होता है।”

महाबली अखण्ड ने विजयधनुष से बाण चलाया। दुर्भीक्ष ने स्वयं को सफलतापूर्वक बचाया। वो अपने अश्व की ओर दौड़ा और एक भाला उठा लिया।

इसके उपरांत वह अपने अश्व पर आरूढ़ हुआ और महाबली अखण्ड की ओर दौड़ा।

असुरेश्वर दुर्भीक्ष का भयंकर क्रोध महाबली अखण्ड पर भारी पड़ा। विजय धनुषधारी होने के उपरांत भी उसने अखण्ड को भूमि पर धकेल दिया।

अखण्ड भूमि से उठे। विजयधनुष धारी होने के कारण दुर्भीक्ष की ही भाँति उनके घाव भी स्वतः ही भर गए।

दुर्भीक्ष एक बार फिर अखण्ड की ओर दौड़ा। अखण्ड ने अपनी ओर आते हुए उसके भाले को पकड़ लिया।

उन्होंने दुर्भीक्ष के पाँव पर प्रहार कर उस अर्धअसुर को अश्व से गिरा दिया। इसके उपरांत अखण्ड ने विजयधनुष को अपने माथे से स्पर्श कराया, वो दिव्य धनुष अदृश्य हो गया।

दुर्भीक्ष भूमि से उठा। अब उन दोनों के हाथ में भाले थे।

दोनों अपराजेय महारथी एक बार फिर टकरा गए।

महाराज दुष्यंत ने मुस्कराते हुए कहा, “आज इन दोनों महारथियों के ढंढ के इस क्षण का साक्षी बनकर मैं स्वयं बहुत ही गर्वित अनुभव कर रहा हूँ।”

“यह ढंढ इतनी शीघ्र समाप्त नहीं होने वाला, क्योंकि इनमें से कोई पराजय स्वीकार तो नहीं करेगा।” महर्षि शंकराचार्य ने चिंतित स्वर में कहा।

दोनों योद्धाओं के पास एक-दूसरे के ऊपर भारी पड़ने जितना सामर्थ्य भी था और अनुभव भी। महाबली अखण्ड, वक्रबाहु के वरदान, रक्षराज दुशल के कौशल और विजयधनुष की दिव्यशक्ति

के साथ युद्ध कर रहे थे। वहीं दुर्भीक्ष पंचतत्वों की शक्ति का स्वामी था, जो उसे संसार के किसी भी जीव से अधिक शक्तिशाली बनाता था।

अगले ही क्षण महाबली अखण्ड का कंधा घायल हो गया। उनके घावों को स्वतः भरते देख दुर्भीक्ष स्तब्ध रह गया। यह देख दुर्भीक्ष ने अपना भाला भूमि पर गिराया।

“शस्त्र इस द्वंद्व का निर्णय नहीं कर सकते, कदाचित् मल्लयुद्ध कर पाए।” दुर्भीक्ष ने चुनौती दी।

महाबली अखण्ड ने भी भाला नीचे किया, और मुट्टियाँ भींची, “यही उचित होगा।”

दोनों महारथी एक-दूसरे की ओर दौड़ पड़े। एक महाभयंकर द्वंद्व फिर आरंभ हो गया।

दुर्भीक्ष ने छलाँग लगाकर अखण्ड की छाती पर मुष्टि प्रहार किया और उन्हें कुछ गज पीछे हटने पर विवश कर दिया। वो एक बार फिर उसकी ओर दौड़े और अगले एक प्रहर तक द्वंद्व जारी रहा।

दुर्भीक्ष ने एक बार फिर मुष्टि प्रहार का प्रयत्न किया, किंतु अखण्ड ने अपनी ओर बढ़ती हुई उसकी दायीं मुष्टि पकड़ी और उसके बायें पैर पर अपने पाँव से वार किया। वो अर्धअसुर भूमि पर गिर पड़ा। महाबली अखण्ड उसकी छाती पर सवार हो गए। उन्होंने उसके दोनों हाथों को अपने घुटनों से दबा दिया और उसके मुख पर मुष्टि प्रहार करने आरंभ कर दिये। दुर्भीक्ष के लिए उनके घुटनों के भार को सहन करना कठिन प्रतीत हो रहा था।

क्रोधित दुर्धरा कुछ कदम आगे आयी। उसने चीखकर कहा, “मार डालिए, वध कर दीजिये इस नीच असुर का; यह हिंसक पशु जीवित नहीं रहना चाहिए।”

उसके शब्दों को सुन दुर्भीक्ष का क्रोध बढ़ गया। महाबली अखण्ड उस पर मुष्टि से प्रहार करते रहे और दुर्भीक्ष ने उनके बल पर विजय पाने के लिए अपना सम्पूर्ण सामर्थ्य लगा दिया। उसने उनके घुटनों को पकड़कर पीछे धकेला और उनका वह दाँव काटकर भूमि से उठ गया।

महाबली अखण्ड और दुर्भीक्ष दोनों ही क्षण भर के लिए हँफ़े।

“आप निःसंदेह एक श्रेष्ठ योद्धा हैं महाबली अखण्ड, आपको पराजित करना सरल नहीं है।” दुर्भीक्ष ने साँस भरते हुए कहा।

“अपनी पंचतत्वों की शक्ति का प्रयोग कर तुम मुझे बड़ी सरलता से पराजित कर सकते हो।” अखण्ड ने हँफते हुए कहा।

“नहीं, आपके लिए नहीं; आपको उचित द्वंद्व में परास्त करना मेरा स्वप्न है, तो द्वंद्व भी उसी प्रकार होगा।” दुर्भीक्ष ने अपना शरीर सीधा करते हुए कहा।

अखण्ड ने साँस भरते हुए कहा, “किंतु मेरे पास इसके लिए पर्याप्त समय नहीं है।” यह कहकर महाबली अखण्ड कुछ कदम पीछे हटे और उस स्थान से भाग खड़े हुए।

“नहीं, आप यह द्वंद्व अधूरा छोड़कर नहीं जा सकते।” दुर्भीक्ष चीखा। किंतु अब इसका कोई महत्व नहीं था। अखण्ड वहाँ से जा चुके थे।

“यह क्या हुआ मुनिवर?” दुष्यंत ने शंकराचार्य से प्रश्न किया।

“इसके पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होगा महाराज; हमें बस प्रतीक्षा करनी होगी।” शंकराचार्य ने अनुमान लगाने का प्रयत्न किया।

“कायर...!” दुर्भीक्ष झल्लाहट में चीखा।

इसके उपरांत वह दुर्धरा की ओर मुड़ा। “तो अब तनिक तुम्हें देखा जाए दुर्धरा।”

किंतु महाराज दुष्यंत ने बीच में आकर दुर्भीक्ष का मार्ग रोका।

“यह दुस्साहस मत करो।” दुर्भीक्ष ने उन्हें धूरते हुए देखा।

इससे पूर्व कि दुष्यंत कुछ कहते, दुर्भीक्ष के दायीं ओर से एक बाण आया। असुरेश्वर ने वह बाण, चपलता का प्रदर्शन करते हुए पकड़ लिया। उसके भीतर का क्रोध जगने लगा।

वो कुछ कदम पीछे हटा और दहाड़ा, “यह मत कीजिये महाबली अखण्ड, आप एक उत्तम श्रेणी के योद्धा हैं, अपने सम्मान को कलंकित मत कीजिये। मैं जानता हूँ, यह बाण आपका ही है... क्या आप में मुझसे सामने से टुट कर देने का साहस ही नहीं बचा... कहाँ हैं आप?” दुर्भीक्ष ने चुनौती भरे स्वर में कहा।

अगले ही क्षण बिजली की गति से दो और बाण आये। दुर्भीक्ष इसके लिए पहले से ही सज्ज था। उसने अद्भुत चपलता का प्रदर्शन किया और वो दोनों बाण पकड़ लिए।

“कायरों की भाँति व्यवहार करना बंद कीजिये महाबली अखण्ड... छुपिये मत, क्योंकि यदि आप वन से बाहर नहीं आये तो मैं पूरे वन को ही भस्म कर दूँगा।” दुर्भीक्ष चेतावनी भरे स्वर में चीखा।

वहीं वृक्ष की ओट में छिपे महाबली अखण्ड ने अपना धनुष उठाया और कुछ मंत्रों का उच्चारण करते हुए सम्मोहिनी अस्त्र का आवाहन किया। इसके उपरांत उन्होंने दुर्भीक्ष की ओर लक्ष्य किया, “इस कपट के लिए मैं क्षमा चाहता हूँ असुरेश्वर दुर्भीक्ष।” बुदबुदाते हुए उन्होंने वो अस्त्र चला दिया।

दुर्भीक्ष हर दिशा में अपनी दृष्टि जमाये हुए था। उसने उस दिव्यास्त्र को अपनी ओर आते हुए देखा। अपने क्रोध और अहंकार में उसने उस दिव्यास्त्र को परखे बिना हाथ में पकड़ लिया। अगले ही क्षण, उस अस्त्र को देख वह स्तब्ध रह गया।

“सम्मोहिनी अस्त्र...।” दुर्भीक्ष अपने समक्ष धुंध बढ़ती देख स्तब्ध रह गया। उसका माथा घूमने लगा।

“यह उचित नहीं ...।” दुर्भीक्ष अपने शब्दों को पूर्ण करने से पूर्व ही भूमि पर गिरकर मूर्छित हो गया।

महाबली अखण्ड, वृक्ष की ओट से बाहर आये।

यह देख दुर्धरा ने तलवार उठाई और मूर्छित दुर्भीक्ष की ओर दौड़ी। उसके नेत्रों में प्रतिशोध की ज्वाला धधक रही थी, इसलिए किसी ने उसका मार्ग अवरुद्ध करने का प्रयत्न नहीं किया। उसने दुर्भीक्ष पर कई वार किये, किंतु उसके घाव स्वतः ही भर जाते थे।

“तुम्हारा प्रयास व्यर्थ है पुत्री; इस प्रकार इसका वध नहीं किया जा सकता।” महाबली अखण्ड ने उसे समझाने का प्रयत्न किया।

“नहीं, मैं ही इसका वध करूँगी।” दुर्धरा ने एक बार फिर उस पर वार किया।

“हमें यहाँ से निकलना चाहिए दुर्धरा; हमारे पास एक प्रहर से अधिक समय नहीं है... यह दिव्यास्त्र भी इतने समय से अधिक नियंत्रित नहीं कर पायेगा।” महर्षि शंकराचार्य ने सुझाव दिया।

“मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।” दुर्धरा उस पर वार करती रही।

महाराज दुष्यंत उसकी ओर बढ़े और उसकी तलवार पकड़ ली। उनके हाथ से रक्त बहने लगा, “बस बहुत हुआ दुर्धरा।” उन्होंने दुर्धरा के हाथ से तलवार खींच ली।

दुर्धरा को क्रोध आने लगा, “मेरी तलवार मुझे लौटाइये।”

“नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगा; संधि की शर्तों के अनुसार गंधर्वों की रक्षा का दायित्व मेरा है।” दुष्यंत ने कहा।

“किंतु आप तो विफल हुए।” दुर्धरा ने उनकी ओर घूरकर देखा।

“हाँ, कुछ हद तक... किंतु बचे खुचे गंधर्वों की रक्षा करनी है, इसलिए मेरे साथ आओ।” दुष्यंत ने कठोर स्वर में कहा।

“नहीं मैं नहीं आऊँगी; यह मुझे मारना चाहता था न, तो इसके जागते ही मैं इसके समक्ष समर्पण करूँगी, मुझे इससे वार्ता करनी ही है। मैंने किसी भी मनुष्य एवं वस्तु से अधिक प्रेम किया इससे, फिर इसने ऐसा क्यों किया? आप सभी यहाँ से प्रस्थान करें, क्योंकि मुझे इससे एकांत में वार्ता करनी है; और हाँ, कृपा करके मेरी बहन सुनंदा को अपने साथ ले जाइये।” दुर्धरा पीछे हटी।

“तुम्हें मेरे साथ चलना ही होगा हठी कन्या।” दुष्यंत आगे बढ़े और उसे विवश करने का प्रयत्न किया।

दुर्धरा ने एक कटार निकाली और अपनी गर्दन पर रख चेतावनी दी। “यदि आपने अपना एक कदम भी मेरी ओर बढ़ाया, तो मैं स्वयं के प्राण ले लूँगी।”

“नहीं नहीं, तुम वहीं रुको, मैं नहीं आऊँगा।” महाराज दुष्यंत ने अपने कदम रोक लिए।

“तो फिर जैसा मैं कहती हूँ वैसा कीजिये।” दुर्धरा ने कहा।

“ठीक है, क्या चाहती हो तुम?” दुष्यंत ने प्रश्न किया।

“मेरी बहन सुनंदा और अन्य गंधर्वों को अपने साथ ले जाइये, मैं यहीं रहूँगी, क्योंकि मुझे इससे वार्ता करनी ही है।” दुर्धरा ने माँग की।

“तो फिर हम सब भी यहीं रुकेंगे।” महाराज दुष्यंत ने कहा।

“नहीं, मुझे इससे एकांत में वार्ता करनी है और उसमें मुझे किसी का हस्तक्षेप नहीं चाहिए; मुझे पाँच सहस्र गंधर्वों की हत्या का कारण जानना है। आप सभी यहाँ से प्रस्थान कीजिये, अन्यथा मैं स्वयं के प्राण ले लूँगी।” दुर्धरा ने अपने कंठ पर हल्का वीर्य लगते हुए कहा।

“नहीं नहीं रुक जाओ, हम सभी यहाँ से प्रस्थान कर जायेंगे।” दुष्यंत कुछ कदम पीछे हटे।

महर्षि शंकराचार्य ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, “यदि हमें अन्य निर्दोषों के प्राणों की रक्षा करनी है, तो हमें प्रस्थान करना होगा महाराज, क्योंकि चेतना में लौटते ही यह अनियंत्रित हो जाएगा और इस बार यह सम्मोहिनी अस्त्र से भी सावधान हो जाएगा... यदि ऐसा हुआ तो उसे नियंत्रित करना असंभव होगा।”

दुर्धरा ने दुष्यंत की ओर देखा, “आप सभी को यहाँ से प्रस्थान करना चाहिए... यह सब मेरे कारण हुआ है, इसलिए इसका परिणाम भोगने का उत्तरदायित्व भी मेरा है। यदि नियति आज मेरी मृत्यु चाहती है, तो उसे कोई नहीं रोक सकता... मुझे मेरे प्रश्नों के उत्तर चाहिए, इसलिए मैं तो यहीं रुकूँगी।”

दुष्यंत भूमि पर बैठी शोकसंतप्त सुनंदा की ओर बढ़े। “चलो पुत्री, हमारे पास शोक के लिए अधिक समय नहीं है।”

“नहीं, मैं नहीं जाऊँगी।” सुनंदा ने स्पष्ट रूप से मना कर दिया।

“इनके साथ जाओ सुनंदा, यह मेरा आदेश है।” दुर्धरा ने अपनी बहन की ओर क्रोध से देखा।

सुनंदा उसकी ओर अधीरता पूर्वक देखने लगी।

“मैंने कहा जाओ!” दुर्धरा उस पर चीख पड़ी।

सुनंदा उठकर खड़ी हो गयी।

“चलो पुत्री, यह स्थान सुरक्षित नहीं” महाराज दुष्यंत ने सुनंदा को समझाने का प्रयत्न किया।

“ठीक है, मैं अपनी बड़ी बहन के आदेश का पालन करूँगी” सुनंदा महाराज दुष्यंत के पीछे जाकर खड़ी हो गयी।

“आप सभी को यहाँ से प्रस्थान करना चाहिए; यदि जीवन रहा तो भेंट अवश्य होगी” दुर्धरा, मूर्छित दुर्भीक्ष की ओर मुड़ी।

“तो फिर हमें प्रस्थान करना चाहिए” महर्षि शंकराचार्य ने सुझाव दिया।

प्रस्थान से पूर्व महाराज दुष्यंत ने दुर्धरा से कहा, “यदि तुम जीवित रही, तो हस्तिनापुर का महल तुम्हारी प्रतीक्षा करेगा, मैं तुम्हारी बहन को वहीं ले जा रहा हूँ, क्योंकि आज से यह मेरी पुत्री है।”

दुर्धरा ने अपना सर हिलाकर सहमति का संकेत दिया।

इसके उपरांत महाबली अखण्ड, महर्षि शंकराचार्य, महाराज दुष्यंत, सुनंदा और शेष सभी गंधर्व वहाँ से प्रस्थान कर गए।

दुर्धरा एक पत्थर पर बैठ गयी। उसके हाथ में तेज धार वाली तलवार थी। वो दुर्भीक्ष की मूर्छा टूटने की प्रतीक्षा करने लगी।

शीघ्र ही दुर्भीक्ष ने अपने नेत्र खोले। भूमि से उठते हुए उसके मस्तक में भीषण पीड़ा हो रही थी।

“तो क्या कहूँ तुम्हें, सुर्जन, या असुरों का महानायक दुर्भीक्ष?” दुर्धरा के नेत्र क्रोध से जल रहे थे।

उसे देख दुर्भीक्ष को भी क्रोध आ गया, “तुम मुझे सुर्जन बुलाने के योग्य नहीं हो; तुम्हारे जैसी कपटी स्त्री के लिए मैं भय का पर्याय असुरेश्वर दुर्भीक्ष ही हूँ।”

दुर्धरा पत्थर से उठकर उसकी ओर बढ़ी। “तुम कोई भी हो, मुझे कोई अंतर नहीं पड़ता, तुम्हें मेरे प्रश्नों के उत्तर देने ही होंगे।”

दुर्भीक्ष कटाक्षमय ढंग से मुस्कुराया, “तुम्हारे प्रश्न? उस स्त्री के प्रश्न, जिसने मेरे साथ इतना बड़ा कपट किया... मेरी शक्ति देख मुझसे प्रेम का अभिनय किया, ताकि अपनी आवश्यकतानुसार मेरा उपयोग कर सके?”

“मैंने तुम्हारे साथ कपट किया? तुम्हारी वास्तविकता जान लेने के उपरांत भी मैंने तुम्हारी प्रतीक्षा की... सत्य तो यह है कि कपट तो तुमने किया है मेरे साथ; तुम्हारा मन सदैव बुरे विचारों से भरा था, इसलिए जब तुम्हारा सत्य बाहर आया तो तुमने निर्दोषों की हत्या की।” दुर्धरा उस पर कटाक्ष करती रही।

दुर्भीक्ष क्रोधित हो उठा। “ओह! तो ऐसा विचार रखती हो तुम... मैंने कपट किया तुम्हारे साथ? मैं जानता हूँ, मेरी वास्तविकता किसी को भयभीत कर सकती है, किंतु तुमने तो मुझसे प्रेम किया था न; मैंने भी किया था... तुम्हें मेरी प्रतीक्षा करनी चाहिए थी, कम से कम मुझे अपना पक्ष समझाने का एक अवसर तो देना चाहिए था; किंतु तुमने ऐसा नहीं किया... मेरी प्रतीक्षा

करने के स्थान पर तुमने एक दूसरे पुरुष से विवाह किया और उसके साथ शारीरिक संबंध भी बनाये... कैसे कर सकती हो तुम ऐसा?" वो क्रोध में चीख पड़ा।

दुर्धरा ने दुर्भीक्ष के गाल पर तमाचा जड़ दिया। "मेरे चरित्र पर प्रश्न उठाने का दुस्साहस मत करना।"

दुर्भीक्ष कटाक्षमय ढंग से मुस्कुराया। "चरित्र? तुम चाहती हो कि मैं तुम्हारे चरित्र पर प्रश्न न उठाऊँ। तो तुमने मेरी प्रतीक्षा क्यों नहीं की... क.. क्यों किया किसी और पुरुष से विवाह?"

"किसने कहा कि मैंने किसी और पुरुष से विवाह किया?" दुर्धराने आश्चर्य से प्रश्न किया।

"मैंने संसार में तुमसे अधिक प्रेम किसी से नहीं किया; मैंने असुरेश्वर का सिंहासन और सम्मान तक त्याग दिया था तुम्हारे लिए; तुम्हारे पिता के समक्ष यह भिक्षा माँगी थी, कि बस एक बार तुमसे मेरी भेंट करा दें; किंतु जब उनके मुख से मैंने तुम्हारे विवाह के विषय में सुना, तो मैं पूरी तरह टूट गया और मेरी भेंट तो तुम्हारे पति से भी हुई थी, उसने बताया मुझे कि तुमने उसके साथ अपने विवाह की प्रथम-रात्रि कितने आनंद से बितायी।" दुर्भीक्ष उस पर कटाक्ष के बाण चलाता जा रहा था।

दुर्धरा उस पर चीख पड़ी, "कथायें रचना बंद करो असुरेश्वर दुर्भीक्ष; देखो मेरी ओर, क्या एक विवाहित स्त्री ऐसी दिखती है?"

दुर्भीक्ष ने क्षण भर दुर्धरा की ओर देखा। उसके माथे पर न कोई सिंदूर था, न गले में कोई मंगलसूत्र।

"यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त नहीं है कि तुम एक विवाहिता नहीं हो; कदाचित् अपने पति की रक्षा के लिए तुमने अपने विवाह के चिह्न मिटा दिए हों।" दुर्भीक्ष ने अनुमान लगाया।

दुर्धरा क्षण भर के लिए हँसी। अपने नेत्रों में अश्रु लिए उसने दुर्भीक्ष की ओर देखा। "भूल तुम्हारी नहीं है असुरेश्वर; भूल रीछराज जामवंत से हुई थी, जिन्होंने तुम्हारे चरित्र का गलत अनुमान लगाया था और मैंने उनकी बात मानी।"

वह नाम सुनकर दुर्भीक्ष स्तब्ध रह गया। उसने आश्चर्यपूर्वक दुर्धरा से प्रश्न किया, "तु..तुम कैसे जानती हो उन्हें?"

"मुझे तुम्हारी वास्तविकता पहले से ही ज्ञात थी असुरेश्वर दुर्भीक्ष... जो व्यापारी तुम्हारे साथ आये थे, वो वास्तव में रीछराज जामवंत थे और उन्होंने ही मुझे तुम्हारा सम्पूर्ण सत्य बताया था।" दुर्धरा ने कहा।

यह सुनकर दुर्भीक्ष को एक गहरा झटका लगा। "क... क्या कहा तुमने, तुम्हें ज्ञात था...?"

"हाँ, मुझे सब कुछ ज्ञात था, किंतु मैं यह अवश्य कहना चाहती हूँ कि उनका अनुमान गलत था। तुम्हें छोड़कर जाने से पूर्व की रात्रि में मेरी भेंट उनसे हुई थी; उन्हें विश्वास था कि तुम्हारा हृदय पवित्र है और मैं तुम्हें एक स्वर्णिम हृदय का पुरुष बना सकती हूँ। उन्होंने तुम्हारे विषय में पूरी जानकारी तो नहीं दी, किंतु उन्होंने यह अवश्य कहा कि तुम अपने जीवन में पूरी तरह से अकेले हो और तुम्हें अपने जीवन में मेरी आवश्यकता है, ताकि दुष्ट-प्रवृत्ति के लोग तुम्हें पथभ्रष्ट न कर सकें। उन्हें तुम पर विश्वास था और मैंने उन पर विश्वास किया; किंतु हम दोनों गलत सिद्ध हुए।" दुर्धरा ने विस्तृत किया।

अश्रु की कुछ बूँदें दुर्भीक्ष के नेत्रों से टपक पड़ीं। "तुम्हें ज्ञात था कि मैं कौन हूँ... इसका अर्थ यह...।"

“इसका अर्थ यही है कि तुम एक दूषित आत्मा वाले मनुष्य हो; तुम एक निर्दय असुर थे और सदैव असुर ही रहोगे।” दुर्धरा उस पर चीख पड़ी।

दुर्भीक्ष स्थिर खड़ा रहा।

एक क्षण उपरांत उसने दुर्धरा से प्रश्न किया। “तो फिर तुम्हारे पिता ने मुझ पर आक्रमण कर मुझे बंदी क्यों बनाया? मैंने उनसे विनती की, कि मुझे बस एक बार तुमसे वार्ता करने का अवसर दें, किंतु उन्होंने मेरी एक नहारा सुनी; इसके स्थान पर उन्होंने मुझसे असत्य कहा कि तुम्हारा विवाह किसी और से हो चुका है और तुम्हारा वो पति कौन था, जिससे मेरी भेंट हुई थी? उसी के कारण तो मैं यह सब...”

दुर्धरा उस पर चीख पड़ी, “कथायें रचना बंद करो असुरेश्वर दुर्भीक्ष... कभी व्यापारी का अंगरक्षक, कभी एक अनाथ और इस बार तो अपने किये पाप को छुपाने के लिए तुमने मेरे काल्पनिक पति को ही जन्म दे दिया, बस बहुत हुआ असुरेश्वर... मुझे सत्य चाहिए, क्यों किया तुमने यह सब?”

दुर्भीक्ष ने उसके निकट आकर उसे समझाने का प्रयत्न किया। “नहीं, दुर्धरा, इस बार मैं असत्य नहीं कह रहा, मेरी बात सुनो...”

दुर्धरा पीछे हटी! “दूर रहो। मैंने कहा दूर रहो मुझसे, अन्यथा मैं स्वयं के प्राण ले लूँगी।” उसने तलवार अपनी ही गर्दन पर रखकर कहा।

“नहीं नहीं, मैं तुमसे विनती करता हूँ ऐसा कुछ मत करना।” दुर्भीक्ष पीछे हट गया।

दुर्धरा ने अपने कंठ से तलवार हटाई और दुर्भीक्ष ओर देखा। “एक समय था, जब मेरे जीवन में मेरे पिता के उपरांत सबसे अधिक महत्व तुम्हारा था। मैंने तुमसे किसी भी जीव से अधिक प्रेम किया था और तुमने मेरे पूरे परिवार का ही नाश कर दिया; तुम्हारे कारण मैं कभी किसी से प्रेम नहीं कर पाऊँगी।”

दुर्भीक्ष मौन रहा।

कुछ क्षणों उपरांत वो उसके निकट आई, “अभी भी समय है तुम्हारे पास, बताओ मुझे, क्यों किया यह सब तुमने?”

“मैं असत्य नहीं कह रहा दुर्धरा...” दुर्भीक्ष ने उसे एक बार समझाने का प्रयत्न किया।

“तो फिर यह तलवार लो और मुझे भी दो भागों में विभाजित कर दो।” दुर्धरा ने तलवार उसकी ओर बढ़ायी।

“मैं..मैं ऐसा नहीं कर सकता दुर्धरा... मैं तुम पर शस्त्र कैसे उठा सकता हूँ।” दुर्भीक्ष के नेत्र अश्रुओं से भर गए।

दुर्धरा ने क्षण भर के लिए अपने नेत्र बंद किये, “मुझे भलीभाँति ज्ञात है असुरेश्वर, कि तुम्हें कोई नहीं मार सकता, किंतु तुम इस कटु सत्य से तो परिचित ही होगे कि मृत्यु तो एक दिन सभी की आती है और आज के उपरांत मेरे जीवन का केवल एक ही लक्ष्य है, तुम्हारी मृत्यु।”

वो कुछ कदम पीछे हटी और एक शेरनी की भाँति दहाड़ी।

“तुम्हें पराजित कर तुम्हारा वध करने का मार्ग कोई नहीं जानता... तुम आर्यावर्त की भूमि के सबसे शक्तिशाली योद्धा हो; किंतु आज मैं यह प्रण लेती हूँ, कि मैं ही तुम्हारी मृत्यु का कारण बनूँगी; किसी को तुम्हारी मृत्यु का रहस्य ज्ञात नहीं है, मैं उस रहस्य को खोज निकालूँगी।”

आर्यावर्त की भूमि के सबसे भयंकर और महान योद्धा के नेत्र लज्जा से झुके थे। वो विचारों में

खो गया। “एक पीड़ित प्रेमिका का श्राप कभी व्यर्थ नहीं जाता और आज यह सिद्ध हो गया... गरुड़राज की स्त्री का वो श्राप मेरे जीवन को निगल गया।”

दुर्भीक्ष ने दुर्धरा की ओर नम आँखों से देखा। “तुम्हें जैसा उचित लगे, तुम वैसा ही करो दुर्धरा, कदाचित, यही मेरा प्रारब्ध है।”

दुर्धरा कुछ कदम पीछे हटी। उसकी आँखें भी नम थीं। “आज अंतिम बार मेरे नेत्रों से अश्रु बहे हैं। मैं तुम्हारे लिए तड़पती रही... मैं इस आशा में थी कि कोई भी एक कारण मिल जाए और हम फिर से साथ हो जायें, किंतु नहीं; तुम इसके योग्य हो ही नहीं।”

दुर्धरा ने अपने कदम पीछे हटाये। और पीछे की ओर ही चलती गयी। “तुम्हारी मृत्यु अवश्य होगी असुरेश्वर और मैं स्वयं उसका मार्ग खोज निकालूँगी।”

वो अश्व पर आरुढ़ हुई और उसकी लगाम खींच वहाँ से प्रस्थान कर गयी। दुर्भीक्ष स्थिर खड़ा उसे जाते देखता रहा।

असुरों का महान नायक एक विक्षिप्त और लाचार मनुष्य की भाँति वन में घूमने लगा।

* * *

दुर्धरा अपने अश्व को दौड़ाती रही। शीघ्र ही वो हस्तिनापुर के महल में पहुँची।

महाराज दुष्यंत और महाऋषि शंकराचार्य, मुख्य द्वार पर उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

महाराज दुष्यंत उसे देख प्रसन्नचित हो उठे, “तो तुम सुरक्षित हो।”

“हाँ, मैं सुरक्षित हूँ।” दुर्धरा अपने अश्व से नीचे उतरी।

“मेरी बहन सुनंदा कहाँ हैं?” दुर्धरा ने प्रश्न किया।

“वो महल के भीतर सुरक्षित हैं, किंतु उससे भेंट करने से पूर्व मैं तुमसे कुछ प्रश्न करना चाहता हूँ।” महाराज दुष्यंत ने दुर्धरा से कहा।

“कैसे प्रश्न?”

“क्या तुम्हारी भेंट उससे हुई? क्या कहा उसने?” दुष्यंत ने प्रश्न किया।

“अब इन बातों पर चर्चा करके कोई लाभ नहीं होगा; मुझे मेरी बहन चाहिए, उसके साथ मैं यहाँ से प्रस्थान करना चाहती हूँ।” दुर्धरा आगे बढ़ी।

“नहीं, अब यह संभव नहीं है।” दुष्यंत उसके मार्ग में आकर खड़े हो गए।

“क्यों?” उसने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“मैंने उसकी सुरक्षा का प्रण लिया है... यदि तुम उसे साथ ले गयी, तो दुर्भीक्ष तुम दोनों को क्षति पहुँचा सकता है।” महाराज दुष्यंत ने अपना मत रखा।

“चिंतित मत होइये महाराज, वो मुझ पर कभी शस्त्र नहीं उठायेगा, क्योंकि उसने कभी मुझसे प्रेम किया था; यदि ऐसा नहीं होता तो आज मैं आपके समक्ष जीवित नहीं खड़ी होती।” दुर्धरा ने स्पष्टता से कहा।

महाराज दुष्यंत ने महर्षि शंकराचार्य की ओर दृष्टि घुमायी।

शंकराचार्य ने दुर्धरा से प्रश्न किया, “तो अब तुम कहाँ जाओगी?”

“मैं नहीं जानती; इसका निर्णय मैं बाद में करूँगी।” दुर्धरा ने कहा।

“तो फिर यहाँ निवास करने में समस्या क्या है?” महर्षि शंकराचार्य ने प्रश्न किया।

“मुझे किसी का आभार नहीं चाहिए... मैं नहीं चाहती कि मेरे मन पर कोई बोझ हो।” उसने स्पष्ट रूप से कहा।

महर्षि शंकराचार्य विचारों में खो गए।

महाराज दुष्यंत ने आगे आकर कहा, “तुम्हें यहाँ रोकने का मेरे पास एक उचित कारण है।”

“और वो क्या है?” दुर्धरा ने प्रश्न किया।

“तुम पर कोई एहसान नहीं किया जा रहा; हम तुम्हें शरण देंगे और इसके एवज में तुम हमारी रक्षा करोगी।” दुष्यंत ने कहा।

“मैं यह कैसे करूँगी?” दुर्धरा ने आश्चर्य भाव से प्रश्न किया।

महर्षि शंकराचार्य ने महाराज दुष्यंत के मन की बात का अनुमान लगा लिया। उन्होंने दुष्यंत के वाक्य को पूर्ण किया। “तुमने कहा कि वो दुर्भीक्ष तुम पर कभी शस्त्र नहीं उठायेगा; इसलिए आज के उपरांत जब भी वो इस राज्य पर आक्रमण करेगा, तब तुम इस राज्य की रक्षक बनकर उसके समक्ष उपस्थित हो जाओगी और इसके एवज में हस्तिनापुर तुम्हें और तुम्हारी बहन को शरण देगा।”

दुर्धरा ने कुछ क्षण विचार कर कहा, “मैं सहमत हूँ, किंतु शेष गंधर्वों का क्या होगा?”

“उनकी चिंता मत करो, महाबली अखण्ड उनका रक्षण करेंगे।” शंकराचार्य ने उसे विश्वास दिलाया।

“तो फिर उचित है; आज के उपरांत मैं इसी महल में निवास करूँगी।” दुर्धरा ने सहमति जताते हुए हस्तिनापुर के महल के भीतर अपने कदम बढ़ाये।

महाऋषि शंकराचार्य और महाराज दुष्यंत बाहर ही खड़े रहे।

“मुझे आपसे एक और महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा करनी है महाराज।” शंकराचार्य ने दुष्यंत की ओर देखते हुए कहा।

“कैसा विषय मुनिवर?” दुष्यंत ने प्रश्न किया।

“केवल दो लोग ऐसे हैं, जो यह सत्य जानते हैं कि दुर्भीक्ष ने पाँच सहस्र गंधर्वों की हत्या क्यों की। राजा उग्रसेन ने असत्य कहा कि दुर्धरा का विवाह किसी और से हुआ है और उन शब्दों ने विष का कार्य किया और हमें दुर्भीक्ष को सत्य बताकर समझाने का अवसर ही प्राप्त नहीं हुआ। मुझे कोई अनुमान नहीं कि उग्रसेन ने असत्य क्यों कहा और उसके उपरांत ऐसा क्या हुआ, जिसने उस अर्धअसुर के क्रोध को इतना भड़का दिया... किंतु मैं चाहता हूँ कि आप इस सत्य से किसी को अवगत न होने दें कि राजा उग्रसेन ने दुर्भीक्ष से असत्य कहा, जो इस विध्वंस का कारण बना और मैं भी यह भेद छुपाकर रखूँगा।” शंकराचार्य ने कहा।

“किंतु आप मुझसे ऐसा करने को क्यों कह रहे हैं?” दुष्यंत ने प्रश्न किया।

“यदि दुर्धरा को अपने पिता के कहे असत्य के विषय में ज्ञात हुआ, तो वो दुर्भीक्ष को क्षमा कर देगी और मैं यह नहीं चाहता। महाबली अखण्ड भी दो सशक्त योद्धाओं को दुर्भीक्ष के विरुद्ध खड़ा होने के लिए तैयार करने में जुटे हैं; मैं चाहता हूँ कि उन्हें भी इस सत्य का भान न हो। उन्हें यहाँ लाते समय मैंने बस उन्हें यह बताया था कि दुर्भीक्ष क्रोध में आकर गंधर्वों की हत्या करने लगा है, इसलिए अखण्ड बिना कोई विचार किये युद्ध के लिए कूद पड़े और मैं चाहता हूँ कि उनके मन में दुर्भीक्ष के प्रति जो क्रोध है वो बना रहे।”

“और दुर्धरा को यह क्यों ज्ञात नहीं होना चाहिए?” दुष्यंत ने प्रश्न किया।

“क्योंकि दुर्भीक्ष के मस्तक पर एक गरुड़ स्त्री का श्राप है, कि जिस व्यक्ति से वो सबसे अधिक प्रेम करेगा, वही उसकी मृत्यु का कारण बनेगा और अब उस दुर्दांत योद्धा का अंत

आवश्यक हैं, क्योंकि उस क्रूर राजा जयवर्धन को उसका समर्थन प्राप्त है, इसलिए यह रहस्य हम दोनों के मध्य ही रहना चाहिए” महर्षि शंकराचार्य ने विस्तृत किया।

“तो फिर उचित है; मैं आपको वचन देता हूँ कि राजा उग्रसेन द्वारा बोले गए इस असत्य का भेद मैं किसी के समक्ष नहीं खोलूँगा।” महाराज दुष्यंत ने प्रण लिया।

9. एक नया अभियान

असुरों का महान नायक वन में चला जा रहा था। वह एक पत्थर पर बैठ गया। उसने तलवार के सहारे अपना सर नीचे कर लिया। उसने स्वयं से प्रश्न किया।

“इससे अधिक पीड़ा भी मिलनी शेष है जीवन में? यह सब उस श्राप के कारण हुआ है; उसका कोई दोष नहीं है।”

वर्तमान

दुर्भीक्ष दस वर्ष पूर्व की ही भाँति पत्थर पर बैठा था। अतीत की समस्त पीड़ादायक स्मृतियाँ उसके नेत्रों के समक्ष घूम रही थीं। रात्रि के अंधकार ने उसे घेरा हुआ था। वह पत्थर से उठा। वर्षा अभी भी जारी थी।

“इस वर्षा का धन्यवाद अवश्य करूँगा, क्योंकि मेरे नेत्रों से बहते अश्रु को बहा ले जाने का बहुत उत्तम योगदान है इस वर्षा का।”

“वैसे भी यह पीड़ा, यह अश्रु कौन सी नई बात है; अपने पूरे जीवन में मुझे इसके अतिरिक्त और प्राप्त ही क्या हुआ है।” उसने साँस भरते हुए विचार किया।

उसने स्वयं को समझाने का प्रयत्न किया। “किंतु जीवन तो यँ ही चलता रहेगा... यदि यही मेरी नियति है, तो मुझे इसे स्वीकार करना ही होगा; देखते हैं कि किस प्रकार मेरे प्रेम के द्वारा मृत्यु मुझ तक पहुँचेगी। अपनी पीड़ा मुझे स्वयं दूर करनी होगी, क्योंकि इस कार्य को करने कोई और नहीं आयेगा।”

दुर्भीक्ष ने आकाश की ओर देखा। “हे ईश्वर! तुम बहुत निर्दयी हो... ऐसा प्रतीत होता है कि आपने मेरा भाग्य यह मानकर लिखा है, जैसे आपकी और मेरी कोई निजी शत्रुता हो।” वो कटाक्षमय स्वर में हँसा।

“जानता हूँ, आपके अतिरिक्त संसार में कोई मुझे पराजित नहीं कर सकता; किंतु दस वर्ष पूर्व मुझसे एक महाभयंकर अपराधी भी तो हुआ था... पाँच सहस्र निर्दोष और दुर्बल गंधर्वों की हत्या की थी मैंने और उसका दण्ड तो मुझे मिलना ही चाहिए, क्योंकि इसके अतिरिक्त आपके पास मुझे दण्डित करने का और कोई कारण तो है ही नहीं। मैं समझ रहा हूँ कि आपने मेरी मृत्यु का मार्ग मेरे प्रेम से होकर क्यों निकाला, क्योंकि मैं अधर्मियों के पक्ष में हूँ... और यदि यह सत्य है तो मैं अपने प्रेम द्वारा अपनी ओर आने वाली मृत्यु का स्वागत करूँगा।”

“किंतु मैं अपनी प्रतिज्ञा भंग नहीं करूँगा, क्योंकि उसके अतिरिक्त मेरे जीवन में और कुछ है ही नहीं, जिस पर मैं स्वयं को गर्वित अनुभव कर सकूँ। मैं आदर्श और धर्म परायण योद्धा हूँ, जो कभी अपना वचन नहीं तोड़ता, और एक दिन यह यथार्थ समस्त संसार को ज्ञात होगा। मृत्यु के दूत मुझ तक पहुँचे, इससे पूर्व मैं स्वयं धर्मपरायण योद्धा की परिभाषा बनूँगा। और हे ईश्वर, आज मैं तुम्हें चुनौती देता हूँ देखता हूँ, कि आप मेरा जीवन कितना कष्टमय बना सकते हैं। देखता हूँ मेरे जीवन में कितने दुःखद दिन, कितनी बाधाएँ, कितनी पीड़ाएँ भर सकते हैं। मैं उस हर पीड़ा, हर बाधा को पारकर जाऊँगा। यह संसार मुझे दुष्ट प्रवृत्ति का योद्धा मानता है, तो मैं स्वयं को वैसा ही प्रदर्शित करूँगा। क्योंकि मैंने भी एक बार भद्रता और सभ्यता का चुनाव किया था, किंतु

ऐसे लोगों के लिए यह संसार बहुत क्रूर है।” उसने साँस भरी।

दुर्भीक्ष ने अपने नेत्र बंद किये।

कुछ क्षणों उपरांत उसने अपने नेत्र खोले। उसके मुख पर मुस्कान छा गयी। “तो फिर अब मेघवर्ण और चंद्रकेतु से भेंट करने का समय है, जिन्हें महाबली अखण्ड मेरे विरुद्ध तैयार कर रहे हैं।”

दुर्भीक्ष अपने अश्व पर आरुढ़ हुआ और उसकी लगाम खींच अपने लक्ष्य की ओर बढ़ चला।

* * *

वहीं दूसरी ओर दुर्धरा ने अपने दृष्टिकोण से अतीत की कथा कह सुनाई।

“अब मुझे जाना होगा... मैं तभी बाहर आऊँगी, जब दुर्भीक्ष यहाँ आएगा।” दुर्धरा ने कहा।

“हाँ, अवश्य।” सर्वदमन एक ओर हट गया।

दुर्धरा हस्तिनापुर के महल के भीतर चली गयी।

सर्वदमन, मेघवर्ण, चंद्रकेतु और दिग्विजय कुछ क्षणों के लिए मौन रहे।

दिग्विजय, जिसने अपना मुख ढक रहा था, प्रस्थान की इच्छा जताई। “मुझे भी अब प्रस्थान करना होगा, आपके साथ मेरा निश्चित कार्य संपन्न हुआ।”

मेघवर्ण ने उसकी ओर घूरकर देखा। “उचित है, प्रस्थान करो; यदि तुम्हारा कार्य संपन्न हो गया है, तो यहाँ रुके क्यों हों?” उसने रुष्टता से कहा।

“हाँ, उचित ही है।” अपने अश्व पर आरुढ़ हो दिग्विजय वहाँ से प्रस्थान कर गया।

चंद्रकेतु ने क्षणभर मेघवर्ण की ओर देखा।

“अब क्या हुआ?” मेघवर्ण ने प्रश्न किया।

“वो... कुछ नहीं।” चंद्रकेतु ने उस समय अपने मन की बात कहना उचित नहीं समझा।

मेघवर्ण, सर्वदमन की ओर मुड़ा। “अब हमारे भी प्रस्थान का समय आ गया है।”

“किंतु मेरा सुझाव है कि अभी तुम दोनों यहीं रुक जाओ; जैसा कि हम देख सकते हैं, सूर्यास्त हो चुका है, सूर्योदय होते ही चले जाना।” सर्वदमन ने सुझाव दिया।

“हम योद्धा हैं मित्र और योद्धा अंधकार से भय नहीं खाते और तुम्हें तो यह ज्ञात ही है कि मैं एक उत्तम धनुर्धर हूँ, मैं गहन अंधकार में भी बाण चला सकता हूँ।” मेघवर्ण मुस्कुराया।

“मैं यह नहीं कह रहा कि तुम ऐसा नहीं कर सकते...।”

“डकैत समूह को हमारी आवश्यकता है सर्वदमन, इसीलिए हम प्रस्थान करना चाहते हैं, समझने का प्रयत्न करो और वैसे भी तुम्हारे घावों को उपचार की आवश्यकता है, इसलिए हमारी चिंता करना बंद करो, हमारी भेंट शीघ्र ही होगी।” मेघवर्ण ने मुस्कुराते हुए उसे समझाने का प्रयत्न किया।

सर्वदमन मुस्कुराया। “ठीक है, जैसी तुम्हारी इच्छा।”

इसके उपरांत, मेघवर्ण और चंद्रकेतु अपने-अपने अश्व पर आरुढ़ हुए और वहाँ से प्रस्थान कर गए।

* * *

मेघवर्ण और चंद्रकेतु वन मार्ग पर चले जा रहे थे। सुबह तक वो यात्रा करते रहे।

कुछ समय उपरांत उन्होंने अपने अश्वों की गति धीमी की।

मेघवर्ण ने चंद्रकेतु की ओर देख प्रश्न किया। “यदि मैं गलत नहीं हूँ तो तुम्हारे मन में बहुत

सारे प्रश्न उमड़ रहे हैं, है न?”

चंद्रकेतु ने मेघवर्ण की ओर अधीरतापूर्वक देखा। “मुझे समझ नहीं आ रहा कि तुम ऐसा कर क्यों रहे हो?”

“मैं क्या कर रहा हूँ?”

“तुम्हें भली-भाँति ज्ञात है कि मैं किस विषय में बात कर रहा हूँ; तुम अभी भी संतुष्ट नहीं हो।” चंद्रकेतु ने कहा।

“हाँ, मैं नहीं हूँ और मैं क्यों संतुष्ट हो जाऊँ?”

“तुम्हारे पिता द्रोही थे, क्या तुम्हें यह बात ज्ञात नहीं हुई?”

मेघवर्ण को क्रोध आ गया। “नहीं, ऐसा नहीं है; मैं नहीं मानता कि वो द्रोही थे... वो महाबली अखण्ड थे, जिन्होंने मेरे पिता को त्रिगर्ता का सेनापति बनने के लिए भेजा था; तो क्या अपने राजा की सुरक्षा की शपथ ग्रहण करना उनका अपराध था? और क्या अनुचित किया उन्होंने उस दुर्दांत दुर्भीक्ष पर वार करके?”

“हमें अभी भी सत्य का ज्ञान नहीं है मेघवर्ण, इसलिए हमें किसी के विषय में अपनी राय नहीं बनानी चाहिए।” चंद्रकेतु ने सुझाव दिया।

मेघवर्ण ने मुस्कराकर कटाक्ष किया, “ओह! तो तुम्हारे मन में उस दुर्दांत दुर्भीक्ष के लिए सहानुभूति उत्पन्न होने लगी है, जिसने तुम्हारे माता-पिता की हत्या की?”

“ऐसा कुछ भी नहीं है; मैं बस सत्य तक पहुँचना चाहता हूँ। यदि उसे गंधर्वों की हत्या ही करनी थी, तो उसने त्रिगर्ता के युद्ध में उनकी सहायता क्यों की? अपने हाथों से उस असुर का मस्तक कुचलना मेरे जीवन की सबसे बड़ी इच्छा है, किंतु उससे पूर्व मुझे सत्य जानना है।” चंद्रकेतु ने गंभीर स्वर में कहा।

“और मैं केवल महाबली अखण्ड के विषय में जिज्ञासु हूँ... कौन हैं वो? सत्य तो यह है, कि हम दोनों को कई रहस्य सुलझाने हैं।” मेघवर्ण ने मुस्कराते हुए कहा।

दोनों योद्धाओं ने अपने अश्व की लगाम खींची और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ चले।

* * *

डकैतों की गुफा में दुर्भीक्ष, मेघवर्ण और चंद्रकेतु से पहले ही पहुँच गया।

महाबली अखण्ड, गुफा में उपस्थित थे।

एक डकैत ने आकर उन्हें सूचित किया, “हमारे सबसे नये सदस्य सुर्जन यहाँ लौट चुके हैं गुरुदेव।”

अखण्ड ने कुछ क्षण विचार कर कहा, “ठीक है, तुम जाओ, यदि मुझे आवश्यकता होगी तो मैं बुलावा भेजूँगा।”

“जो आज्ञा गुरुदेव।” वह डकैत वहाँ से प्रस्थान कर गया।

“क्यों... क्यों आया है वो यहाँ पर? मैं कारण का अनुमान नहीं लगा पा रहा; क्या उसे यह ज्ञात है कि डकैतों के समूह का मार्गदर्शक मैं हूँ? नहीं, यह संभव नहीं है, क्योंकि उसके अनुसार तो पहले सुवर्मा डकैतों का सरदार था और अब मेघवर्ण है। कदाचित् उसे यह संदेह हो गया है कि मुद्गी भर डकैत और गंधर्व; विदर्भ की विशाल सेना को पराजित कैसे कर सकते हैं और वो हमारा सूत्र जानने आया है... हाँ, यह सत्य हो सकता है; अब मुझे उससे सीधे सीधे वार्ता करनी होगी।” महाबली अखण्ड ने अपने मुख को ढका और गुफा से बाहर आया।

एक डकैत सैनिक सुर्जन के पास आया, “हमारे गुरुदेव आपसे भेंट करने के इच्छुक हैं महामहिम; उन्होंने आपको इस वन के पश्चिमी भाग में बुलाया है।”

सुर्जन ने उस डकैत की ओर देखा, “ठीक है, उन्हें कह दो मैं वहाँ पहुँच जाऊँगा।” वो डकैत वहाँ से प्रस्थान कर गया।

सुर्जन ने गंभीरता से विचार किया, ‘अब मुझे उनका सामना करना ही होगा, मैं उनसे और नहीं भाग सकता।’

शीघ्र ही वन के पश्चिमी भाग में सुर्जन और अखण्ड एक दूसरे के समक्ष खड़े थे।

“कौन हो तुम और कहाँ से आये हो?” अखण्ड ने प्रश्न किया।

सुर्जन उन्हें देख मुस्कुराया, “महाबली अखण्ड, वर्षों के उपरांत भेंट होने का यह अर्थ तो नहीं कि आप मुझे भूल जायें।”

“तो तुम्हें ज्ञात है कि यह मैं ही हूँ।” अखण्ड ने अपने मुख को ढका वस्त्र हटाया।

“और नहीं तो क्या; आपके ही कारण तो मैं यहाँ आया हूँ।” सुर्जन ने कहा।

“ठीक है, यहाँ क्यों आये हो दुर्भीक्ष?” अखण्ड को क्रोध आने लगा।

“मुझे ज्ञात हुआ कि आप अपने योद्धाओं को मेरे विरुद्ध खड़ा होने के लिए तैयार कर रहे हैं और मैं तो बड़ा ही व्यग्र हो गया यह जानने के लिए, कि कौन है आपको वो नायक, जो मेरे जैसे खतनायक के विरुद्ध खड़ा होगा।” सुर्जन ने कहा।

“तो तुमने जान लिया उसके विषय में... तो क्या तुम यहाँ उससे युद्ध करने आये हो?” अखण्ड ने प्रश्न किया।

“ऐसा कुछ भी नहीं है; क्योंकि अभी वो इतना योग्य है ही नहीं कि मेरे विरुद्ध खड़ा हो सके। मैं नहीं जानता आपकी भविष्यवाणी के अनुसार कब, क्यों और कैसे वो दिन आयेगा, जब मेघवर्ण से मेरा टुट्ट होगा; किंतु मैं चाहता हूँ कि जिस दिन मेघवर्ण मेरे विरुद्ध खड़ा हो, वो अपने सम्पूर्ण सामर्थ्य से युद्ध करे, अन्यथा टुट्ट में न तो कोई रोमांच होगा और न ही आनंद आएगा। और यदि आपने उसे मेरे विरुद्ध खड़ा होने के लिए चुना है, तो निःसंदेह वो भविष्य में एक महान योद्धा बनेगा।” सुर्जन ने कहा।

अखण्ड ने मुस्कुराते हुए कटाक्ष किया, “तुम्हें मेघवर्ण के वास्तविक उद्देश्य का ज्ञान कभी नहीं होगा; वो तो स्वयं इससे अनभिज्ञ है और वैसे भी मैं कोई ज्योतिषी नहीं हूँ, जो भविष्यवाणी करूँ... मैं तो यह भी नहीं जानता कि भविष्य में तुम दोनों का सामना होगा भी या नहीं; किंतु मैं एक बात अवश्य समझ गया हूँ, कि तुम्हें केवल अपने जीवन में आनंद और रोमांच चाहिए, इसीलिए तुमने पाँच सहस्र गंधर्वों की हत्या की थी, है न? और यही करने तुम फिर यहाँ आये हो?”

दुर्भीक्ष (सुर्जन) क्रोधित हो उठा। “ओह! तो आपको लगता है कि मैंने उन्हें आनंद और रोमांच के लिए मारा। आपको सत्य का ज्ञान नहीं है, अथवा आप ऐसा अभिनय कर रहे हैं कि आपको कुछ ज्ञात नहीं कि मैंने उन पाँच सहस्र गंधर्वों की हत्या क्यों की... और यदि आपको सत्य का ज्ञान नहीं है तो जाइये और पूछिये महर्षि शंकराचार्य और महाराज दुष्यंत से, कि सत्य क्या है।”

अखण्ड ने आश्चर्य से प्रश्न किया। “मैं नहीं जानता कि तुम क्या कह रहे हो; मुझे कोई अनुमान नहीं है इस बात का... यदि तुम स्वयं को निर्दोष सिद्ध करना चाहते हो तो विस्तार से बताओ।”

सुर्जन ने अखण्ड की ओर देखा। “मैं आपको कोई सफाई नहीं देने वाला, क्योंकि जिस दुर्धरा को मैं विश्वास दिलाना चाहता था, उसने तो मुझ पर विश्वास किया नहीं, तो फिर किसी और से मुझे कोई आशा नहीं। यदि आपको सत्य जानने की इच्छा है, तो जाकर महाऋषि शंकराचार्य से प्रश्न कीजिये और जहाँ तक मेघवर्ण और चंद्रकेतु का विषय है, तो मेरा वचन है आपको, कि मैं उन्हें तब तक कोई क्षति नहीं पहुँचाऊँगा, जब तक वो मेरे विरुद्ध खड़े नहीं होते। इस समय वो मेरे मित्र हैं और मैं वैसा ही बनाकर रहना चाहता हूँ, इसलिए उचित यही होगा कि उनके समक्ष आप यह भेद न खोलें कि मैं कौन हूँ।”

यह कहकर सुर्जन वहाँ से प्रस्थान कर गया।

शीघ्र ही मेघवर्ण और चंद्रकेतु डकैतों की गुफाओं में पहुँचे। उन्होंने सुर्जन को तलवारबाजों के साथ अभ्यास करते हुए देखा।

मेघवर्ण अपने अश्व से उतरकर उसकी ओर बढ़ा।

“तुम लौटे कब सुर्जन?” मेघवर्ण ने प्रश्न किया।

सुर्जन उनकी ओर मुड़कर मुस्कुराया, ‘महामहिम’

मेघवर्ण मुस्कुराया। “मैं तुमसे कह चुका हूँ, कि हम मित्र हैं, तुम मुझे महामहिम न कहा करो।”

“हाँ, वो तो है।” सुर्जन मुस्कुराया।

“तो कब लौटे तुम?”

“यही कोई तीन प्रहर का समय बीता होगा।” सुर्जन ने उत्तर दिया।

“तुम्हारा समर्पण प्रशंसनीय है... इतनी शीघ्र तुमने कार्य आरंभ भी कर दिया।” मेघवर्ण ने प्रशंसनीय स्वर में कहा।

चंद्रकेतु ने उन दोनों के मध्य हस्तक्षेप किया। “तो अब हमें क्या करना है?”

मेघवर्ण ने कुछ क्षण विचार कर कहा। “पहले तनिक गुरुदेव से तो भेंट कर ली जाय।”

वो महाबली अखण्ड की गुफा की ओर बढ़ा।

अखण्ड अपनी गुफा में पत्थरों के बने आसन पर बैठे थे। मेघवर्ण और चंद्रकेतु के कदमों की आहट सुन उन्होंने अपना मुख ढक लिया।

“सफल हुए या विफल?” अखण्ड ने उन दोनों से प्रश्न किया।

“हमें उसका सामना करने का अवसर ही प्राप्त नहीं हुआ, वो रणभूमि से पलायन कर गया।” मेघवर्ण ने कहा।

अखण्ड आश्चर्य से उठ खड़े हुए। “वो पलायन कर गया! तुम परिहास तो नहीं कर रहे? तुम्हारे कहने का अर्थ है कि असुरों का महानायक, असुरेश्वर दुर्भीक्ष रणभूमि से पलायन कर गया?”

“हाँ गुरुदेव, क्योंकि जिस स्त्री से उसने कभी प्रेम किया था, वो उस पर शस्त्र नहीं उठा सका।” चंद्रकेतु ने अपने मित्र का समर्थन करते हुए कहा।

‘दुर्धरा?’ अखण्ड ने निष्कर्ष निकाला।

मेघवर्ण उनके निकट आया। “हाँ, यह सब उन्हीं के विषय में तो है। आपको उनके विषय में सबकुछ ज्ञात था, है न? आपने दुर्भीक्ष का सामना किया था और उसे कड़ी प्रतिस्पर्धा दी थी। दुर्धरा ने पूरी कथा बताई हमें, कि कैसे आपने मेरे पिता की हत्या की महाबली अखण्ड।”

अखण्ड यह सुनकर कुछ क्षण के लिए मौन हो गए फिर उन्होंने कहना आरंभ किया। “तो फिर तुम्हें तो ज्ञात हो ही गया होगा कि क्यों मैंने तुम्हारे पिता को मारा... वो एक द्रोही था।”

“नहीं, वो द्रोही नहीं थे; आपने ही तो उन्हें त्रिगर्ता का सेनापति बनने हेतु भेजा था, तो फिर यदि उन्होंने अपने राजा की सुरक्षा का प्रण लिया तो क्या अपराध किया उन्होंने?” मेघवर्ण ने क्रोध में प्रश्न किया।

“जबसे हमने डकैतों के इस दल का संगठन किया है, तबसे यह दल कुछ कठोर नियमों का पालन करता आया है और उन नियमों के अनुसार द्रोह का दण्ड केवल और केवल मृत्यु है।” अखण्ड ने कठोर स्वर में कहा।

मेघवर्ण ने मुस्कुराते हुए कटाक्ष किया। “ओह! तो आप नियमों के पालन का प्रलाप कर रहे हैं; तो मुझे एक बात बताइये, क्यों आपने अपना मुख छुपा रखा है? क्या यह भी उन नियमों में से एक है?”

“मैं तुम्हें पहले भी कह चुका हूँ, जब तक तुम मुझे पराजित करने के योग्य नहीं हो जाते, मैं तुम्हें अपना मुख नहीं दिखाऊँगा।” अखण्ड ने उत्तर दिया।

“अब किस बात का भेद; हमें पता तो चल ही गया है कि आप कौन हैं।” मेघवर्ण ने झल्लाते हुए कहा।

“तुम्हें केवल मेरा नाम ज्ञात है, अन्य कुछ भी नहीं... और यहाँ कोई नहीं जानता कि वास्तव में मैं कौन हूँ।” अखण्ड ने उसके नेत्रों की ओर देखा।

मेघवर्ण क्रोध से उन्हें घूरने लगा।

अखण्ड ने कहना जारी रखा। “मैंने तुमसे कहा था कि जिस दिन तुम मुझे पराजित करोगे, मैं अपने मुख को ढका यह वस्त्र हटा दूँगा और इसके साथ ही तुम्हें मेरा सम्पूर्ण सत्य ज्ञात हो जायेगा।

मेघवर्ण कुछ कदम पीछे हटा और चुनौती भरे स्वर में कहा, “उचित है; तो फिर समय आ गया है, द्रुह के लिए सज्ज हो जाइये।”

“मेघवर्ण...।” चंद्रकेतु ने हस्तक्षेप करने का प्रयत्न किया।

मेघवर्ण, चंद्रकेतु की ओर बढ़ा। “मेरी तुमसे विनती है चंद्रकेतु, तुम हस्तक्षेप नहीं करोगे।”

चंद्रकेतु पीछे हटने को विवश हो गया।

महाबली अखण्ड मुस्कुराये। “मुझे नहीं लगता कि तुम अभी इसके लिए तैयार हो।”

मेघवर्ण ने चुनौती भरे स्वर में कहा। “आपने दुर्भीक्ष का सामना किया, इसका अर्थ यह नहीं है कि आप मुझसे उच्च श्रेणी के योद्धा हो गए। आपने कहा था कि आपने मुझे दुर्भीक्ष को पराजित करने के लिए तैयार किया है, तो आपको नहीं लगता कि मेरे बल परीक्षण का समय आ गया है?”

“उचित है, तुम्हारे बल का परीक्षण भी कर लिया जायेगा; आज से सातवें दिन हमारी भेंट होगी।” अखण्ड ने सहमति जताई।

“सात दिवस... मुझसे इतनी प्रतीक्षा नहीं होगी।” मेघवर्ण ने कहा।

“तुम्हें इतनी प्रतीक्षा करनी ही होगी, क्योंकि मुझे एक यात्रा के लिए प्रस्थान करना है और इसके लिए मैं तुम लोगों की ही प्रतीक्षा कर रहा था।” अखण्ड ने कहा।

“ठीक है, मैं अधीरता से सातवें दिन की प्रतीक्षा करूँगा महाबली अखण्ड।” मेघवर्ण ने कहा।

* * *

वहीं दूसरी ओर दिग्विजय विदर्भ की ओर बढ़ा चला जा रहा था। वह एक अंधकारमय वन से होकर गुजर रहा था। हर दिशा में अंधकार छाया हुआ था।

उसने अपने अश्व की लगाम खींच उसे रोका। वो इधर-उधर दृष्टि घुमाकर कदाचित् किसी को खोज रहा था। ‘उस कन्या से मैं इसी स्थान पर मिला था, कदाचित् एक बार फिर उससे भेंट हो जाए।’

उसने अपने राज्य की ओर जाने वाला मार्ग नहीं चुन... उसके स्थान पर वह उस स्थान पर ही भटक रहा था। दो दिवस बीत गया। सुनंदा की खोज अभी भी जारी थी।

“कहाँ हो तुम सुनंदा?” दिग्विजय अधीरता से उसकी खोज में था।

“पकड़ो उसे, यही है वो!” पीछे से एक तीव्र स्वर सुनाई दिया।

दिग्विजय पीछे मुड़ा। चारों दिशाओं से बड़े-बड़े जाल उसकी ओर बढ़े। दिग्विजय ने अपने रक्षण के लिए म्यान से तलवार खींच निकाली, किंतु उन जालों में फँस ही गया।

कुछ क्षणों के उपरांत कई लोगों ने उसे घेर लिया। उन लोगों का मुख से लेकर पूरा शरीर काले वस्त्र से ढका हुआ था।

दिग्विजय उनकी ओर देख चीखा। “कौन हो तुम सब और यह सब क्यों कर रहे हो?”

“ले चलो इसे।” एक और स्वर सुनाई दिया।

काले वस्त्र धारण किये हुए वो लोग दिग्विजय की ओर बढ़े, किंतु शीघ्र ही कुछ बाणों ने उनकी पीठ को घायल किया। वह सभी पीछे मुड़े।

यह सुनंदा और उसके दल की स्त्री योद्धा थीं। उनकी संख्या सौ से भी अधिक थी।

काले वस्त्र धारण किये उन लोगों की संख्या महज बीस थी। उन्हें सुनंदा और उसके योद्धाओं से भिड़ना उचित नहीं लगा। उनमें से कई घायल हो गये थे, किंतु उन्नीस योद्धा सफलतापूर्वक भाग निकले... एक भूमि पर गिर पड़ा। एक बाण उसकी पीठ में धँसा हुआ था। उसे मृत समझकर शेष योद्धा वहाँ से पलायन कर गये।

सुनंदा, दिग्विजय की ओर दौड़कर आयी और उसे जाल के बंधन से मुक्त कर दिया। दिग्विजय, सुनंदा को देख प्रफुल्लित हो उठा।

उसे मुक्त कर सुनंदा पीछे हटी।

“एक क्षण रुको!” दिग्विजय ने उसे पीछे से आवाज लगायी।

सुनंदा उसकी ओर मुड़ी। “तुमने एक बार अपने सैनिकों से मेरी रक्षा की थी, आज मैंने तुम्हारी रक्षा की, अब हिसाब बराबर हुआ।”

“किंतु मैं तो तुम्हें ही खोज रहा था।” दिग्विजय ने कहा।

“मुझे खोज रहे थे! किसलिए?” सुनंदा ने आश्चर्यपूर्वक प्रश्न किया।

दिग्विजय ने हिचकिचाते हुए कहा, “वो... बस यूँ ही... वो क्या है कि कुछ दिनों पहले मैं हस्तिनापुर गया था और यदि तुम्हें स्मरण हो तो पहले भी हमारी भेंट यहीं हुई थी।”

“तो मैं क्या करूँ... जो कहना चाहते हो, सीधे सीधे कहो।” सुनंदा ने रुष्टता भरे स्वर में कहा।

दिग्विजय ने कहना आरंभ किया। “हाँ, तुमने मुझे एक रात्रि के लिए शरण दी, मेरे घावों का उपचार किया और मैं उस दिन बिना धन्यवाद कहे प्रस्थान कर गया और...”

“मैंने कहा, जो कहना है सीधे सीधे कहो, मेरे पास अधिक समय नहीं है।” सुनंदा ने कठोर स्वर में हस्तक्षेप करते हुए कहा।

“मैं बस तुम्हें आज के लिए और उस दिन के लिए भी धन्यवाद कहना चाहता हूँ।” दिग्विजय ने कहा।

“ठीक है मैंने सुन लिया, अब तुम जा सकते हो।” सुनंदा ने कहा।

“क्या तुम्हें पूरा विश्वास है कि मुझे चले जाना चाहिए? मेरा कहने का अर्थ है कि इस पर तुम एक बार और विचार कर सकती हो।” दिग्विजय ने प्रश्न किया।

“मुझे नहीं लगता कि इसमें विचार करने जैसा कुछ भी है।” सुनंदा ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

दिग्विजय इससे पूर्व कुछ और कहता, एक हाँफता हुआ स्वर सुनाई दिया। वो वही काला वस्त्र ओढ़े हुआ व्यक्ति था, जिसे उसके दल ने पीछे छोड़ दिया था।

“मुझे लगा इसकी मृत्यु हो गयी।” सुनंदा ने उसकी ओर देखा।

वह व्यक्ति एक बार फिर मूर्छित हो गया। दिग्विजय ने उसकी नाड़ी की जाँच की।

“यह अभी भी जीवित है, हमें क्या करना चाहिए?” दिग्विजय ने सुनंदा से प्रश्न किया।

“इसके घाव बहुत गहरे नहीं हैं, हमें इसका उपचार करना चाहिए और इसके उपरांत हम सत्य का पता लगा लेंगे कि इन्होंने तुम पर आक्रमण क्यों किया।” सुनंदा ने अपनी स्त्री योद्धाओं को आदेश दिया, “ले चलो इसे!”

उन स्त्रियों ने उस व्यक्ति को उठाया और अपने ग्राम की ओर बढ़ीं।

“मैं भी इस सत्य को जानना चाहता हूँ, कि इसने मुझ पर आक्रमण क्यों किया।” दिग्विजय ने कहा।

सुनंदा ने क्षण भर दिग्विजय की ओर देखा। “ठीक है, तुम हमारे साथ हमारे ग्राम में आ सकते हो।”

“हाँ, ठीक है।” दिग्विजय यह सुनकर मन ही मन प्रफुल्लित हो उठा।

वह दोनों भी ग्राम की ओर बढ़ चले।

चलते हुए दिग्विजय ने सुनंदा से प्रश्न किया, “तुम मेरी बहुत परवाह करने लगी हो, है न?”

“क्या? यह क्या व्यर्थ का प्रलाप कर रहे हो; मैं तुम्हारी परवाह क्यों करूँगी?” सुनंदा ने झल्लाकर कहा।

“तुमने मेरे प्राणों की रक्षा की और तुम बहुत अधिक जिज्ञासु हो रही थी कि वो कौन है जिसने मुझ पर आक्रमण किया, कहो क्या ऐसा नहीं है?” यह कहते हुए दिग्विजय मुस्कुराया।

“व्यर्थ का प्रयत्न है युवराज दिग्विजय, मुझ पर इसका प्रयोग मत करो।” कहकर सुनंदा आगे बढ़ गयी।

“एक क्षण सुनो तो... अच्छा ठीक है, तनिक धीरे चलो, मैं भी आ रहा हूँ।” दिग्विजय उसके पीछे चलता रहा।

शीघ्र ही वह दोनों ग्राम में पहुँच गये। वह उस अजनबी व्यक्ति की मूर्छा टूटने की प्रतीक्षा करने लगे।

प्रतीक्षा करते हुए दिग्विजय ने एक बार फिर सुनंदा से प्रश्न किया, “तुम यह सब कब से कर रही हो?”

“क्या कर रही हूँ मैं?” सुनंदा ने रुष्टता भरे स्वर में पूछा।

“मेरे कहने का अर्थ है कि तुम इन स्त्री योद्धाओं का दल कबसे चला रही हो?” दिग्विजय ने प्रश्न किया।

सुनंदा ने दिग्विजय की ओर घूरकर देखा, “इसके पीछे एक गुप्त अभियान है, मैं इसका भेद नहीं खोल सकती।”

“ठीक है, कदाचित् इस गुप्त अभियान से कोई उत्तम परिणाम मिले।” दिग्विजय ने साँस छोड़ते हुए कहा।

शीघ्र ही एक स्त्री ने वहाँ आकर सूचना दी, “उस व्यक्ति की चेतना लौट रही है।”

“चलो उसे देखते हैं।” दिग्विजय वहाँ उपस्थित एक शिविर की ओर बढ़ा।

उस व्यक्ति की चेतना लौट चुकी थी। दिग्विजय ने उसकी ओर घूरकर देखा, “कौन हो तुम?”

सुनंदा भी शिविर के भीतर आयी। उसे देख उस व्यक्ति ने दिग्विजय से कहा, “मैं आपसे एकांत में वार्ता करना चाहूँगा।”

सुनंदा ने वहाँ उपस्थित अन्य स्त्रियों को बाहर जाने का संकेत दिया। कुछ क्षणों के उपरांत उस शिविर में केवल तीन लोग उपस्थित थे... सुनंदा, दिग्विजय और वह व्यक्ति।

“तो अब बताओ मुझे।” दिग्विजय ने उस व्यक्ति से कहा।

वह व्यक्ति सुनंदा की ओर देखने लगा। दिग्विजय ने यह देख लिया। “यह बाहर नहीं जायेगी, तुम्हें जो कुछ कहना है, इसके समक्ष कहना होगा।”

उस व्यक्ति ने कहा, “ठीक है... मेरा नाम ‘चंद्रभान’ है और मैं एक नागवंशी हूँ।”

‘नागवंशी!’ दिग्विजय आश्चर्यचकित रह गया।

“हाँ, नागलोक से हम बीस योद्धा यहाँ केवल आपके रक्षण के लिए आये थे।” चंद्रभान ने कहा।

दिग्विजय कटाक्षमय स्वर में मुस्कुराया। “मेरा रक्षण करने आये थे या अपहरण करने और नागलोक से कोई मेरा रक्षण करने क्यों आयेगा?”

“हाँ, हम यहाँ आपका रक्षण करने आये थे और आपके रक्षण के लिए आपका अपहरण करना आवश्यक था।” चंद्रभान ने कहा।

दिग्विजय एक बार फिर मुस्कुराया। उसने सुनंदा की ओर देखा। “तुम बाहर जाओ, सुनंदा; मुझे लगता है, जब तक तुम यहाँ हो, ये सत्य नहीं बोलेगा।”

चंद्रभान ने हस्तक्षेप किया। “नहीं, ऐसा नहीं है; विश्वास कीजिये, हमारी दृष्टि आप पर तबसे है, जबसे आपका जन्म हुआ था।”

“ठीक है सुनंदा, तुम यहाँ रुक सकती हो।” दिग्विजय ने कहा।

सुनंदा भी जिज्ञासावश वहाँ रुक गयी।

इसके उपरांत वो चंद्रभान की ओर मुड़ा। “हाँ, तो तुम कह रहे थे कि मेरी रक्षा के लिए तुम मेरा अपहरण करना चाहते थे।”

चंद्रभान ने कहना आरंभ किया। “मैं ज्यादा कुछ तो नहीं बता सकता, किंतु पहले मैं स्वयं का परिचय तो दे दूँ... मैं नागों का सेनापति चंद्रभान हूँ; यह सब उस निष्कासित नाग तक्षक और उसके लोगों के कारण हो रहा है, जो पहले खाण्डवप्रस्थ में निवास करते थे। लगभग तीस वर्ष पूर्व तक्षक ने नागलोक पर चढ़ाई की और हमें अपनी भूमि छोड़ने पर विवश कर दिया था। हमें

नागलोक का सिंहासन वापस चाहिए और उस सिंहासन के उत्तराधिकारी होने के नाते हम चाहते हैं कि आप हमारा नेतृत्व करें।”

‘और?’ दिग्विजय ने पूछा।

“और क्या?” चंद्रभान ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“तुम कहना जारी रखो; ऐसी मनगढ़ंत कथायें सुनने में मैं बहुत रुचि हूँ मेरी।” दिग्विजय ने कटाक्ष किया।

“यह कोई मनगढ़ंत कथा नहीं है युवराज। यदि आपको पचास वर्ष पूर्व हुए पाँच दिन के महासमर का स्मरण हो; आपकी माता नागरानी कनिष्का उस दिन से आपकी प्रतीक्षा कर रही हैं।” चंद्रभान ने कहा।

वह नाम सुन दिग्विजय को थोड़ा आश्चर्य सा हुआ। “क्या कहा अभी तुमने?”

“मैं आपकी माता कनिष्का के विषय में कह रहा हूँ।” चंद्रभान ने कहा।

“मुझे ऐसा क्यों लग रहा है कि यह नाम मैंने पहले भी सुना है; उनके विषय में थोड़ा विस्तार से बताओ।” दिग्विजय अधीर हो रहा था।

“क्षमा कीजिये इससे अधिक मैं आपको कुछ नहीं बता सकता; यदि आपको विस्तृत जानकारी चाहिए तो आपको हमारे साथ चलना होगा।” चंद्रभान ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

“कहाँ जाना है हमें?” दिग्विजय ने प्रश्न किया।

“पहले हमें मलय पर्वत” पार करना होगा, इसके उपरांत हमें सागर पार करते हुए सिंघल की भूमि पर जाना होगा।” चंद्रभान ने कहा।

“सिंघल, जो पहले राक्षसराज रावण की नगरी लंका के नाम से जाना जाता था; किंतु वहाँ क्यों?” दिग्विजय ने आश्चर्यपूर्वक प्रश्न उठाया।

“क्योंकि वही एक स्थान था, जहाँ हम आपकी माता और अन्य नागों को सुरक्षित रख सकते थे... उन्हें हमारी सहायता की आवश्यकता है।” चंद्रभान ने कहा।

“मैं समझ नहीं पा रहा कि तुम पर विश्वास करूँ या नहीं, किंतु मुझे पूरा विश्वास है कि मैंने यह नाम कनिष्का कहीं तो सुना है।” दिग्विजय विचारों में खो गया।

“तो क्या निर्णय लिया है तुमने?” सुनंदा ने दिग्विजय से प्रश्न किया।

“मैं चंद्रभान के साथ जाऊँगा।” दिग्विजय ने अपना निर्णय सुनाया।

सुनंदा ने आश्चर्यपूर्वक प्रश्न किया, “तुम परिहास तो नहीं कर रहे; यह वही अजनबी है जिसने तुम्हारा अपहरण करने का प्रयत्न किया था और तुम इसी के साथ जाना चाहते हो, आखिर क्यों?”

चंद्रभान ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, “हाँ, हमने इनके अपहरण का प्रयत्न किया, क्योंकि हमें विश्वास था कि यह हमारे साथ कभी नहीं आयेंगे, क्योंकि उन्हें अपने पूर्व जन्म के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है।”

“पूर्व जन्म! तुम कहना क्या चाहते हो?” दिग्विजय यह सुनकर आश्चर्यचकित रह गया।

“मैं इससे अधिक आपको कुछ नहीं बता सकता; यदि आप सत्य जानना चाहते हैं तो आपको मेरे साथ आना होगा।” चंद्रभान ने कहा।

“उचित है, मैं तुम्हारे साथ आऊँगा।” दिग्विजय ने सहमति जताई।

सुनंदा ने उसका हाथ पकड़कर चेतावनी दी, “मैं अब भी कह रही हूँ ऐसा मत करो।”

“मुझे यह रहस्य सुलझाना ही है और उसके लिए मुझे जाना ही होगा” दिग्विजय ने कहा।

“तो फिर मैं भी तुम्हारे साथ आऊँगी।” सुनंदा ने उसके हाथ पर अपनी पकड़ मजबूत की।

“नहीं, आप वहाँ नहीं आ सकतीं।” चंद्रभान ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

दिग्विजय ने सुनंदा के नेत्रों की ओर देखकर कहा, “तुम तो मेरे विषय में कुछ अधिक ही चिंतित हो, मतलब मेरा अनुमान उचित ही था।”

सुनंदा ने उसका हाथ छोड़ दिया, “मैं बस यूँ ही..।” वो हिचकिचाने लगी।

“तुम्हें कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है, मैं शीघ्र ही लौटूँगा।” दिग्विजय मुस्कुराया।

सुनंदा ने उसकी बात का कोई उत्तर नहीं दिया।

दिग्विजय और चंद्रभान शिविर से बाहर आये।

बाहर निकलते ही वो दोनों अपने सामने का दृश्य देख स्तब्ध रह गये। चार से पाँच स्त्री योद्धा वहाँ मृत पड़ी थीं, शेष लुप्त हो गयी थीं। सुनंदा भी शिविर से बाहर आकर वह दृश्य देख स्तब्ध रह गयी।

“क्या हो रहा है ये और मेरी सभी सहयोगी कहाँ गयीं?” सुनंदा ने दिग्विजय से प्रश्न किया।

“मुझे इस बात का कोई अनुमान नहीं है।” दिग्विजय भी संशय में था।

“किंतु मुझे अनुमान है कि वो कहाँ गये होंगे।” चंद्रभान ने कहा।

“यदि तुम्हें अनुमान है तो बताओ हमें, प्रतीक्षा किस बात की कर रहे हो।” दिग्विजय ने कड़े स्वर में कहा।

“मुझे लगता है कि तक्षक और उसके लोग हमारा पीछा कर रहे थे, क्योंकि उस तक्षक को आपके विषय में सब कुछ ज्ञात है युवराज... ऐसा प्रतीत होता है कि उसी ने सभी स्त्री योद्धाओं का हरण किया है।” चंद्रभान ने अनुमान लगाया।

दिग्विजय क्रोधित हो उठा। “तुमने कहा था वो नागलोक में है, हम उस पर आक्रमण कर सभी स्त्री योद्धाओं को छुड़ा लायेंगे।”

“नहीं, हम ऐसा नहीं कर सकते।” चंद्रभान ने कहा।

“हम ऐसा क्यों नहीं कर सकते?” सुनंदा ने क्रोध में प्रश्न किया।

“क्योंकि तक्षक अकेला नहीं है, उसे असुरों के साथ-साथ राजा जयवर्धन का भी समर्थन प्राप्त है, हम उन्हें पराजित नहीं कर सकते।” चंद्रभान ने चिंतित स्वर में कहा।

“तो अब हमें क्या करना चाहिए?” सुनंदा ने प्रश्न उठाया।

“हमें शीघ्र से शीघ्र सागर पार पहुँचना होगा, नागलोक के पूर्व निवासी नाग वहाँ हमारी प्रतीक्षा में होंगे। हमारे नागों में से कुछ योद्धा हैं, जो नागलोक में प्रवेश करने के कई गुप्त मार्ग जानते हैं, जिसका प्रयोग कर हम उन स्त्री योद्धाओं को सरलता से मुक्त करा सकते हैं।” चंद्रभान ने विस्तृत किया।

“यह तुम क्या कह रहे हो चंद्रभान... इसमें तो कम से कम एक मास का समय लग जायेगा।” दिग्विजय यह सुनकर झट्टा उठा।

“हमारे पास और कोई विकल्प नहीं है; तक्षक और असुरों से युद्ध के लिए हमारे पास पर्याप्त सेना और शक्ति नहीं है।” चंद्रभान ने कहा।

“सेना तो है हमारे पास।” दिग्विजय ने कहा।

“आपके पास सेना है?” चंद्रभान ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

दिग्विजय, सुनंदा की ओर मुड़ा। “हमें एकांत कुछ वार्ता करनी है चंद्रभान; तुम यहीं शिविर के बाहर रहो, सुनंदा तुम मेरे साथ आओ।”

“जो आज्ञा।” चंद्रभान ने सहमति जताई।

दिग्विजय सुनंदा को शिविर के भीतर ले गया। इसके उपरांत उसने एक कागज का बड़ा टुकड़ा लिया और उस पर कुछ लिखना आरंभ किया।

“तुम कर क्या रहे हो?” सुनंदा ने प्रश्न किया।

“बस कुछ क्षण प्रतीक्षा करो।” दिग्विजय ने लिखना जारी रखा।

कुछ क्षणों के उपरांत उसने वह पत्र सुनंदा के हाथ में दिया। “मैं तुम्हें एक स्थान का पता बता रहा हूँ, तुम्हें यह पत्र वहाँ पहुँचाना है... स्मरण रहे, यह पत्र डकैतों के मार्गदर्शक महाबली अखण्ड के अतिरिक्त और किसी के हाथ न लगे।”

“महाबली अखण्ड... तुम उन्हें कैसे जानते हो?” सुनंदा ने प्रश्न किया।

“हाँ, मुझे ज्ञात है कि तुम भी उन्हें बालपन से ही जानती हो; वैसे सत्य कहूँ तो मैं तुम्हारे विषय में सब कुछ जानता हूँ सुनंदा।”

“किंतु कैसे?” सुनंदा ने फिर से प्रश्न उठाया।

“लौटकर सब बताऊँगा, अभी इस चर्चा का समय नहीं है; बस जैसा मैं कहता हूँ, वैसा करो। मैं चंद्रभान के साथ प्रस्थान कर रहा हूँ और मैं शीघ्र ही लौटूँगा।” यह कहकर दिग्विजय शिविर से बाहर चला गया।

शीघ्र ही चंद्रभान और दिग्विजय अपने अपने अश्वों पर आरुढ़ हुए और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ चले।

सुनंदा उन्हें जाते देखती रही।

* * *

शीघ्र ही सातवें दिन का सूर्य उदय हुआ। सूर्य की पहले किरण के साथ महाबली अखण्ड और मेघवर्ण द्रुत के लिए अखाड़े में पहुँच आये। चंद्रकेतु, सुरजन (दुर्भीक्ष) और अन्य कई डकैत सैनिक अपने मार्गदर्शक और सरदार के मध्य होने वाले उस द्रुत के साक्षी बनने को वहाँ उपस्थित थे।

“यह द्रुत बहुत आनंदमय होने वाला है, है न?” सुरजन ने चंद्रकेतु से प्रश्न किया।

“हाँ, कदाचित्” चंद्रकेतु ने सहमति जताई।

कुछ क्षणों उपरांत चंद्रकेतु ने एक लाल ध्वज उठाकर हवा में लहराया, “आरंभ हा!”

अखण्ड और मेघवर्ण भाला लिए एक-दूसरे की ओर दौड़े। उन दोनों भालों के टकराव ने भीषण ध्वनि उत्पन्न की। युवा मेघवर्ण की चपलता में भी वृद्ध और अनुभवी योद्धा अखण्ड को मात देने की क्षमता नहीं थी। कुछ क्षणों उपरांत अखण्ड ने मेघवर्ण के दायें पाँव पर वार किया। मेघवर्ण का संतुलन बिगड़ गया। अखण्ड ने उसकी छाती पर वार कर उसे भूमि पर धकेल दिया। क्रोधित मेघवर्ण भूमि से उठा। वो अभी तक निःशस्त्र नहीं हुआ था।

वो अखण्ड की ओर दौड़ा और एक बार फिर दोनों भालों का टकराव हुआ। मेघवर्ण ने उसी दाँव का प्रयोग किया, जो अखण्ड ने उस पर किया था। किंतु अखण्ड ने अपना दायें पाँव पीछे किया और मेघवर्ण के भाले को अपने बायें पाँव से दबा दिया। मेघवर्ण ने अपना भाला वापस खींचने का प्रयत्न किया। अखण्ड ने उसके मुख पर मुष्टि से प्रहार किया। मेघवर्ण निःशस्त्र होकर भूमि पर गिर पड़ा।

“तुम एक योग्य भालाधारी योद्धा नहीं हो, चलो किसी और अस्त्र से प्रयत्न करते हैं”
अखण्ड कटाक्षमय स्वर में मुस्कुराये।

मेघवर्ण भूमि से उठा। महाबली अखण्ड के उन शब्दों को सुन उसे झल्लाहट हुई।

“तलवारें लेकर आओ!” अखण्ड ने आदेश दिया।

दो तलवारें और दो ढाल मेघवर्ण और अखण्ड की ओर फेंके गए। दोनों ने अपने अपने अस्त्र पकड़े और तीव्र गति से एक-दूसरे की ओर दौड़े।

“वास्तव में इस द्वंद्व का साक्षी बनना बड़े सौभाग्य की बात है” सुर्जन ने कहा।

“हाँ, आशा करता हूँ यह द्वंद्व एक क्रीड़ा ही रहे” चंद्रकेतु ने चिंतित स्वर में कहा।

अखण्ड ने मेघवर्ण को तलवार गिराने पर विवश कर दिया।

“गदायुद्ध करना चाहोगे?” अखण्ड ने कटाक्षमय स्वर में चुनौती दी।

मेघवर्ण सिर हिलाकर सहमति जताई। कुछ ही क्षणों में मेघवर्ण और अखण्ड के हाथों में गदारें आ गयीं।

द्वंद्व एक बार फिर आरंभ हुआ। यह द्वंद्व अखण्ड के लिए सरल नहीं था। मेघवर्ण ने अपने प्रतिद्वंद्वी पर विजय पाने के लिए कड़ा संघर्ष किया, किंतु अंततः महाबली अखण्ड ने उसे निःशस्त्र कर दिया।

मेघवर्ण को पीछे हटने पर विवश होना पड़ा। झल्लाहट उसके मुख पर स्पष्ट दिख रही थी।

“कुछ और बचा है?” अखण्ड ने उससे प्रश्न किया।

“हाँ, मल्लयुद्ध अभी भी शेष है।” मेघवर्ण ने अपनी मुट्ठी भींची और अखण्ड की ओर दौड़ा।

“बस करो, बहुत हुआ मेघवर्ण।” चंद्रकेतु गुर्रसे में बुदबुदाया।

दोनों महारथी एक बार फिर भिड़ गए। मेघवर्ण का मस्तक क्रोध से जल रहा था। उसने अखण्ड को भूमि पर धकेल दिया और बिना कोई क्षण गवाँये उसने उनकी कमर पकड़ी और उन्हें उठाकर कुछ गज की दूरी पर फेंक दिया।

सभी उपस्थित योद्धा यह देख स्तब्ध रह गये। किसी को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

अखण्ड भूमि से उठे, “अच्छा प्रयत्न था।”

मेघवर्ण ने कोई उत्तर नहीं दिया। वो बस अखण्ड की ओर दोबारा दौड़ा।

इस बार अखण्ड ने हवा में ऊँची छलाँग लगायी और मेघवर्ण को पार कर गये। उन्होंने मेघवर्ण को पीछे से पकड़ा और उसके कंधे के पास की एक नस दबा दी। मेघवर्ण पीड़ा से चीख पड़ा। उसका दायाँ कंधा कुछ क्षणों के लिए जड़ हो गया। इसके उपरांत अखण्ड ने उसे भूमि पर धकेला और मेघवर्ण के दोनों हाथों को अपने घुटनों से दबा दिया।

सुर्जन (दुर्भीक्ष) अखण्ड के उस दाँव को देख पूरी तरह स्तब्ध रह गया। “यह दाँव... मैं इस दाँव को पहचानता हूँ; वैसे तो यह दाँव कई योद्धा सीख सकते हैं, किंतु यह पूर्ण रूप से रक्षराज दुशल का वही प्रमुख दाँव है। इसकी गति, चपलता, एकाग्रता सब कुछ वैसी ही है। जो भी योद्धा मेरे लिए कठिन प्रतिद्वंद्वी सिद्ध हुआ है, मैं उसके दाँवों को कभी भूल नहीं सकता, किंतु दुशल की तो मृत्यु हो चुकी है, तो फिर यह कैसे संभव है? अखण्ड ने कैसे उसके इस दाँव की पूरी तरह से नकल उतार ली जैसे दुशल ही लड़ रहा हो।”

“द्वंद्व समाप्त हुआ मेघवर्ण।” अखण्ड ने घोषणा की।

मेघवर्ण झल्लाहट में चीख पड़ा।

“तुम्हें अभी बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता है।” अखण्ड उसे छोड़ भूमि से उठे।

मेघवर्ण भी हाँफते हुए भूमि से उठा। चंद्रकेतु ने उसके निकट आकर उसके कंधे पर रखा, “मैंने कहा था कि उन्हें चुनौती मत दो।”

“मुझ पर व्यंग्य बाण मत चलाओ।” मेघवर्ण ने उसे पीछे धकेला। उसने चंद्रकेतु की ओर क्रोध से देखा और वहाँ से प्रस्थान कर गया।

“मेघवर्ण...।” चंद्रकेतु उसके पीछे चल पड़ा।

मेघवर्ण घने वन में जाने लगा। चंद्रकेतु उसके पीछे चल रहा था। “मेघवर्ण, मेघवर्ण, रुको तो...।” उसने अपने मित्र को पुकारा।

किंतु मेघवर्ण चलता रहा। कुछ क्षणों उपरांत वह चंद्रकेतु की ओर मुड़ा, “अब तुम यहीं रुक जाओ चंद्रकेतु।”

“तुम कहना क्या चाहते हो?” चंद्रकेतु ने प्रश्न किया।

“मैं कुछ समय एकांत में रहना चाहता हूँ, इसलिए मेरे पीछे आना बंद करो।”

“मैं ऐसा नहीं करने वाला।” चंद्रकेतु ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

अगले ही क्षण वहाँ एक डकैत सैनिक आया। “महामहिम चंद्रकेतु, गुरुदेव ने आपका स्मरण किया है।”

मेघवर्ण कटाक्षमय स्वर में मुस्कुराया, “जाओ, बुलावा आ गया है; प्रतीक्षा किस बात की कर रहे हो?”

“उनसे कहो मैं कुछ देर में आता हूँ।” चंद्रकेतु ने उस डकैत सैनिक से कहा।

“किंतु उन्होंने आपको तत्काल आने का निर्देश दिया है महामहिम।” डकैत सैनिक ने कहा।

मेघवर्ण ने फिर से मुस्कुराकर कटाक्ष किया, “यह दिखावा बंद करो चंद्रकेतु, इसके साथ जाओ।”

“मैं तुमसे शीघ्र ही मिलूँगा।” यह कहकर चंद्रकेतु वहाँ से प्रस्थान कर गया।

मेघवर्ण कुछ दूर चला और जाकर एक वृक्ष की छाँव में बैठ गया।

* * *

वहीं चंद्रकेतु उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ महाबली अखण्ड ने उसे बुलाया था। उसने अखण्ड के समक्ष झुककर प्रश्न किया, “आपने मुझे बुलाया गुरुदेव?”

“हाँ, कोई ऐसा यहाँ आया है, जिसकी प्रतीक्षा तुम वर्षों से कर रहे थे।” अखण्ड ने कहा।

“मैं... मैं समझा नहीं गुरुदेव।” चंद्रकेतु ने संशयपूर्वक कहा।

“मैं सुनंदा के विषय में बात कर रहा हूँ, वो यहाँ आ रही है।” अखण्ड ने कहा।

यह सुनकर चंद्रकेतु प्रफुल्लित हो उठा, “क्या यह सत्य है गुरुदेव? मुझे विश्वास नहीं हो रहा।”

“हमारे सैनिकों ने सूचित किया है कि उसे इसी दिशा में बढ़ते देखा गया है।” अखण्ड ने उसका भ्रम मिटाया।

चंद्रकेतु मुस्कुराया, “यदि आप आज्ञा दें तो क्या मैं उससे भेंट कर लूँ?”

“हम्म... जाओ और उसे ले आओ, वो यहाँ पहुँचती ही होगी।” अखण्ड ने आदेश दिया।

“जो आज्ञा गुरुदेव।” चंद्रकेतु, सुनंदा के स्वागत के लिए निकल पड़ा।

वो गुफा के बाहर सुनंदा की प्रतीक्षा करने लगा। उसकी प्रतीक्षा का शीघ्र ही अंत हुआ। अपने अश्व पर आरुढ़ सुनंदा वहाँ पहुँच आयी। वो अपने अश्व से उतरी और गुफा की ओर बढ़ी। उसने चंद्रकेतु की ओर मुड़कर भी नहीं देखा।

‘सुनंदा!’ चंद्रकेतु ने उसे पुकारा।

यह सुनकर सुनंदा उसकी ओर मुड़ी, “क्या मैं तुम्हें जानती हूँ?”

चंद्रकेतु मुस्कुराते हुए उसकी ओर बढ़ा, “क्या तुम्हें मेरा स्मरण भी नहीं है?”

सुनंदा ने उसे गंभीरता से नहीं लिया। उसने रुष्टता से कहा, “मुझे ऐसा नहीं लगता।”

यह सुनकर चंद्रकेतु को थोड़ा दुःख हुआ। “वैसे मेरा नाम चंद्रकेतु है....।” कहकर वो क्रोध में पीछे हट गया।

सुनंदा ने आश्चर्य में साँस भरी। वो उत्साह में उसकी ओर बढ़ी, “ओह! मुझसे क्षमा करना, मैं बस...।”

“हाँ, मैं समझ सकता हूँ; मुझे भूल जाना तो बहुत सरल था तुम्हारे लिए है न?” चंद्रकेतु ने नाराज होकर कहा।

“अब बस भी करो चंद्रकेतु; तुम्हें और मेघवर्ण को मैं कभी नहीं भूल सकती, तुम दोनों तो मेरे सबसे अभिन्न मित्र थे।” सुनंदा ने उसे समझाने का प्रयत्न किया।

“केवल मित्र? क्या तुम्हें स्मरण नहीं कि हमारे माता-पिता ने हमारा संबंध बाल्यकाल में ही निश्चित कर दिया था?” चंद्रकेतु ने उससे प्रश्न किया।

यह सुनकर सुनंदा स्तब्ध रह गयी। उसने अपने मुख के भावों को सफलतापूर्वक छुपा लिया। “हम इस विषय में बाद में चर्चा करेंगे चंद्रकेतु; मैं यहाँ एक विशेष कार्य के लिए आयी हूँ, पहले मुझे वो कार्य संपन्न करना है और उसके लिए मुझे पहले महाबली अखण्ड से भेंट करनी होगी।”

“ठीक है, मेरे साथ आओ, मैं तुम्हें वहाँ ले चलता हूँ।” चंद्रकेतु ने कहा।

“नहीं, मैं उनसे एकांत में वार्ता करना चाहती हूँ; उन्हें एक गुप्त सूचना देनी है मुझे।”

चंद्रकेतु ने कुछ क्षण विचार कर कहना आरंभ किया, “ठीक है; यहाँ इस दिशा से गुफा का मार्ग जाता है, तुम्हें कुछ दूर चलकर दायें मुड़ना है और उसके उपरांत...।”

“हाँ हाँ, मुझे वहाँ पहुँचने का मार्ग ज्ञात है।” सुनंदा गुफा की ओर बढ़ गयी।

गुफा के द्वार पर खड़े दो रक्षकों ने किनारे हटकर उसके लिए भीतर जाने का मार्ग खाली कर दिया।

चंद्रकेतु उनमें से एक द्वार-रक्षक की ओर बढ़ा। “मुझे तुमसे एक प्रश्न का उत्तर चाहिए।”

“कहिये महामहिम।” उस द्वार-रक्षक ने पूछा।

“जब वो गुफा के भीतर जा रही थी तो तुमने उसके मुख के भाव की ओर तो देखा होगा, क्या उसके मुख पर मुस्कान थी?” चंद्रकेतु ने उस द्वार-रक्षक से प्रश्न किया।

“क्षमा कीजिये महामहिम, मैंने तो उनके मुख की ओर देखा ही नहीं।” उस डकैत रक्षक ने उत्तर दिया।

चंद्रकेतु ने दूसरे द्वार-रक्षक की ओर देखा।

“मैंने भी ऐसा कुछ नहीं देखा महामहिम।” दूसरे रक्षक ने भी वही उत्तर दिया।

“अपने कार्य पर ध्यान दो मूर्खों।” कहकर चंद्रकेतु पीछे हट गया।

* * *

वहीं मेघवर्ण वृक्ष की छाया में बैठा था। वो अभी तक झुल्लाया हुआ था।

“क्या तुमने कभी अपनी पराजय के कारणों पर विश्लेषण किया है?” पीछे से एक स्वर सुनाई दिया।

मेघवर्ण पीछे मुड़ा। वो कोई और नहीं सुर्जन (दुर्भीक्ष) था।

“तुम जाओ सुर्जन, मैं कुछ समय एकांत में रहना चाहता हूँ।” मेघवर्ण ने निराशाजनक स्वर में कहा।

सुर्जन ने मुस्कराते हुए कहा, “अपनी पराजय का शोक मनाने से तुम्हें कुछ प्राप्त नहीं होगा; इसके स्थान पर तुम्हें अपनी गलतियों का विश्लेषण करना चाहिए मेघवर्ण... अगर तुम्हें उचित लगे तो क्या मैं तुम्हें मेघवर्ण कहकर पुकार सकता हूँ?”

“मैं तुमसे पहले भी कई बार कह चुका हूँ सुर्जन, कि हम मित्र हैं, तो जाहिर सी बात है कि तुम मुझे मेघवर्ण कहकर बुला सकते हो; किंतु तुम गलतियों के विषय में क्या कहना चाहते हो?” मेघवर्ण ने प्रश्न किया।

“क्या मैं तुम्हारे निकट बैठ सकता हूँ?” सुर्जन ने पूछा।

मेघवर्ण ने क्षणभर उसकी ओर देखा, “हाँ, आ जाओ।”

अब वो दोनों एक ही वृक्ष की छाँव में बैठे थे।

“तो तुम क्या कह रहे थे?” मेघवर्ण ने प्रश्न किया।

“किसी भी निष्कर्ष पर पहुँचने से पूर्व मैं तुमसे एक प्रश्न का उत्तर चाहता हूँ।” सुर्जन ने कहा।

“कैसा प्रश्न?” मेघवर्ण ने प्रश्न किया।

“तुम अपनी पराजय के विषय में क्या सोचते हो?” सुर्जन ने उससे प्रश्न किया।

मेघवर्ण ने शिथिल होते हुए कहा, “मुझे लगता है कि मुझे और प्रशिक्षण और अभ्यास की आवश्यकता है।”

“इस बार तुम्हारा अनुमान गलत है; तुम्हारी शस्त्र शिक्षा पूर्ण हो चुकी है।” सुर्जन ने कहा।

“तो तुम्हारे कहने का अर्थ है कि मैं उन्हें कभी पराजित नहीं कर पाऊँगा?” मेघवर्ण ने प्रश्न किया।

“वैसे ये भी तुम्हारी पराजय के मुख्य कारणों में से एक है; तुम्हें निष्कर्ष पर पहुँचने की कुछ अधिक ही शीघ्रता होती है।”

“तुम्हारे कहने का अर्थ क्या है?” मेघवर्ण ने प्रश्न किया।

“जहाँ तक मुझे लगता है, तुम्हारी पराजय के तीन कारण हैं... मैंने अखाड़े में तुम्हारे हर दाँव को देखा; तुम्हारी शक्ति का मुझे तब भान हुआ, जब तुमने अपने प्रतिद्वंद्वी की कमर पकड़कर उन्हें बड़ी सरलता से कुछ गज पीछे फेंक दिया और उस एकमात्र सफलता ने तुम्हें आवश्यकता से अधिक उत्साहित कर दिया, जो तुम्हारी पराजय का कारण बना।”

मेघवर्ण ने कुछ क्षण विचार कर प्रश्न किया, “दूसरा कारण?”

“तुम अपने प्रतिद्वंद्वी पर विजय पाने के लिए कुछ अधिक ही अधीर और व्यग्र दिख रहे थे... लड़ते हुए तुम्हारा व्यवहार बड़ा ही विचित्र था और मैंने इस पर भी गौर किया कि द्वंद्व के दौरान कई बार तुम्हारा ध्यान भंग हुआ था और मुझे लगता है कि हमारे गुरुदेव इतने अनुभवी हैं, जो तुम्हारी इन गलतियों का लाभ बड़ी सरलता से उठा सकते हैं।”

मेघवर्ण सहमति जताते हुए मुस्कराया, “तुम तो विश्लेषण में बड़े पारंगत हो सुर्जन, कैसे?”

“मैंने यह सब कुछ अपने गुरुदेव, एकचक्रनगरी के कुलगुरु महर्षि वसुधर से सीखा है।”
सुर्जन मुस्कुराया।

“हाँ, मेरे मन की इच्छा भी यही है कि मेरा भी गुरु उनके जैसा होता, उस हत्यारे जैसा नहीं।”
मेघवर्ण ने निराशाजनक स्वर में कहा।

“और यही तुम्हारी पराजय का तीसरा कारण था।” सुर्जन ने कहा।

“तुम्हारे कहने का अर्थ मैं समझा नहीं।” मेघवर्ण ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“यदि तुम्हारे मन में उस व्यक्ति के प्रति ही कोई सम्मान नहीं होगा, जिसने तुम्हें शिक्षा दी है, तो तुम अपने भीतर के योद्धा को कभी नहीं जगा पाओगे।” सुर्जन ने कहा।

मेघवर्ण कटाक्षमय स्वर में मुस्कुराया, “कदाचित् तुम्हें इस घृणा का कारण ज्ञात नहीं है सुर्जन, इसीलिए तुम ऐसा कह रह हो।”

“हाँ, मैं नहीं जानता कि वास्तव में तुम दोनों के मध्य क्या हुआ, किंतु मैंने सुना है कि उन्होंने तुम्हारे पिता की हत्या की थी और फिर भी तुमने उनके मार्गदर्शन में अपना शिक्षण आरंभ करने का प्रण लिया। मुझे सत्य का ज्ञान तो नहीं है, किंतु मैं बस एक बात कहना चाहता हूँ कि तुम्हारे गुरु एक अनुभवी और उत्तम श्रेणी के योद्धा हैं; तुम उनसे घृणा करो या नहीं, यह तुम्हारा चुनाव है, किंतु तुम्हें उन्हें अपना तो आदर्श मानना ही होगा।” सुर्जन ने सुझाव दिया।

“मैं उस व्यक्ति को अपना आदर्श कैसे मान लूँ, जिसने मेरे पिता की हत्या की हो?” मेघवर्ण ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“यदि तुम उनके व्यक्तित्व को आदर्श नहीं मानना चाहते, तो केवल उनके हर आदेश का पालन करो; उनके बल और दौंव का ध्यान से विश्लेषण करो। तुम्हें उनके सामर्थ्य और युद्धशैली का सम्मान करना होगा और मैंने तो यह भी सुना है कि तुम्हारे जीवन का लक्ष्य असुरों के महानायक दुर्भीक्ष को पराजित करना है और मैंने उसे देखा है, उसके जैसा कठिन प्रतिद्वंद्वी तुमने आज तक नहीं देखा होगा।” यह कहते हुए सुर्जन भूमि से उठा।

मेघवर्ण उठा और उससे प्रश्न किया, “इसका अर्थ है कि तुमने दुर्भीक्ष को देखा है, कैसे?”

सुर्जन ने कथायें रचनी आरंभ की, “क्योंकि वो भी एकचक्रनगरी के कुलगुरु महर्षि वसुधर का शिष्य रह चुका है... एक दिन वो हमारे गुरुकुल में आया था और अपने कुछ अद्भुत दौंवों का प्रदर्शन किया था; वो कदाचित् संसार का सबसे उत्तम योद्धा है।”

मेघवर्ण ने साँस छोड़ते हुए कहा, “हाँ, मैं जानता हूँ... बाल्यावस्था से सुनता आ रहा हूँ कि तुम्हारा जन्म दुर्भीक्ष को पराजित करने के लिए हुआ है, किंतु यदि यही मेरा प्रारब्ध है, तो इसके पीछे मेरा उद्देश्य क्या है? कुछ दिनों पूर्व हस्तिनापुर में मेरे मित्र सर्वदमन का सामना दुर्भीक्ष से हुआ था और वहाँ देवी दुर्धरा ने उसकी रक्षा की थी और इसके उपरांत उन्होंने हमें उस असुर दुर्भीक्ष की कथा अपने दृष्टिकोण से सुनाई थी।”

“और क्या बताया उन्होंने?” सुर्जन ने प्रश्न किया। उसका स्वर पीड़ा से भरा हुआ था, किंतु मेघवर्ण ने उस पर ध्यान नहीं दिया।

“उन्होंने बताया कि कैसे दुर्भीक्ष ने उनके साथ प्रेम में छल किया और उनके पूरे परिवार की हत्या कर दी... किंतु आज तक मुझे यह समझ नहीं आया, कि यदि उसे उन्हें मारना ही था, तो त्रिगर्ता के युद्ध में राजा उपनंद के विरुद्ध उसने गंधर्वों की सहायता क्यों की?” मेघवर्ण ने आश्चर्यपूर्वक कहा।

सुर्जन मौन रहा। मेघवर्ण, सुर्जन की ओर मुड़ा, “तुम ही बताओ सुर्जन, क्यों युद्ध करूँ मैं उस दुर्भीक्ष्ण से? मैं तो ये भी नहीं जानता कि वो अधर्मी है भी या नहीं।”

“प्रतीत होता है कि कुछ ऐसे सत्य हैं, जिनसे तुम अनभिज्ञ हो... तो तुम्हें उसके चरित्र पर ना कोई टिप्पणी करनी चाहिए और न ही किसी निष्कर्ष पर पहुँचना चाहिए।” सुर्जन ने कहा।

“हाँ, कदाचित् तुम्हारा कथन उचित ही है; पृथ्वी पर मेरे इस जन्म का मात्र यही एक उद्देश्य है, किंतु मैं तो संशय में हूँ कि मैं उचित मार्ग पर हूँ भी या नहीं।” मेघवर्ण ने कहा।

“इतने गहन विचारों में खोने की आवश्यकता नहीं है मेघवर्ण... लोगों का कहना है कि तुम इस संसार में उसका सामना करने आये हो, यदि यह सत्य है, तो यह प्रकृति उसका मार्ग भी खोजेगी और उचित कारण भी।” सुर्जन ने साँस भरते हुए कहा।

मेघवर्ण मुस्कुराया, “काश मेरा भी कोई तुम्हारे जैसा गुरु होता सुर्जन; तुम्हारा कहा गया एक-एक शब्द अद्भुत था और विचारणीय भी।”

सुर्जन ने मेघवर्ण की ओर देखा, “तुम भलीभाँति जानते हो कि गुरुदेव जितना सामर्थ्य मुझमें नहीं है।”

मेघवर्ण ने उसके कंधे पर हाथ रखा। “तुमने न केवल मेरा क्रोध शांत किया, अपितु मेरा दृष्टिकोण भी सुधारा... और मैं यह अवश्य कहना चाहूँगा कि यह सरल कार्य नहीं है मित्र; तुम्हारा अनुभव यह कहता है कि तुम्हारी आयु कम से कम पचास वर्ष तो होगी।”

“अरे! यह क्या कह रहे हो? मेरी आयु केवल पैंतालीस वर्ष है।” सुर्जन ने झेंपते हुए कहा।

मेघवर्ण स्तब्ध रह गया, “परिहास तो नहीं कर रहे? तुम इतने वर्ष के प्रतीत तो नहीं होते... इस आयु में भी तुम पचीस वर्ष के युवा दिखते हो, तनिक इसके पीछे का रहस्य तो बताओ।

“अब बस भी करो मेघवर्ण, मेरी टाँग खींचना बंद करो।” सुर्जन मुस्कुराया।

वो दोनों उन शब्दों पर हँस पड़े।

“तो तुम्हारा क्रोध शांत हो ही गया?” चंद्रकेतु भी वहाँ आ पहुँचा।

मेघवर्ण ने उसकी ओर देखा, “तो अंततः तुम्हें मेरे लिए समय मिल ही गया।”

“ऐसी बात नहीं है; गुरुदेव ने मुझे किसी आवश्यक कार्य से बुलाया था, मैं बस उन्हीं से वार्ता में व्यस्त था।” चंद्रकेतु ने कहा।

मेघवर्ण अपने मित्र के निकट गया, “अच्छा ठीक है, मैं क्षमा चाहता हूँ।”

“क्षमा किसलिए?” चंद्रकेतु ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“अपने व्यवहार के लिए।” मेघवर्ण ने कहा।

चंद्रकेतु आश्चर्यचकित रह गया, “तुम परिहास तो नहीं कर रहे?”

“बिलकुल नहीं, चलो अभ्यास करते हैं; तुम भी आ जाओ सुर्जन।” मेघवर्ण आगे बढ़ गया।

“हाँ, मैं शीघ्र ही आता हूँ।” सुर्जन ने कहा।

अगले ही क्षण सुर्जन आगे बढ़ा। महाबली अखण्ड भी वहीं उपस्थित थे। उन्होंने मेघवर्ण और सुर्जन के मध्य हुई सम्पूर्ण वार्ता सुनी थी।

‘रुको!’ अखण्ड ने सुर्जन को पीछे से पुकारा।

सुर्जन उनकी ओर मुड़ा।

अखण्ड उसकी ओर बढ़े और प्रश्न किया, “मैंने सुना तुम अपने ही शत्रु का उत्साह बढ़ा रहे थे।”

सुर्जन मुस्कुराया, “मुझे जहाँ तक स्मरण है, मैं आपको बता चुका हूँ कि मेरी यह प्रबल इच्छा है कि जब वह मुझसे टुट कर तो अपने सम्पूर्ण सामर्थ्य से करे और अभी वो मुझसे टुट करने योग्य नहीं हुआ।”

“सुर्जन अब चलो भी।” मेघवर्ण ने उसे फिर से पुकारा।

“हाँ, बस आया।” कहकर सुर्जन ने अखण्ड की ओर देखा। “मैं उस दिन की प्रतीक्षा करूँगा, जिस दिन मेरा टुट उससे होगा।” कहकर वह मेघवर्ण के पीछे चल दिया।

अखण्ड उसे जाता देखते रहे।

एक डकैत सैनिक ने वहाँ आकर अखण्ड को सूचित किया, “सुनंदा आपकी प्रतीक्षा में है गुरुदेवा।”

“उससे कहो मैं शीघ्र ही आता हूँ।” अखण्ड ने उस डकैत सैनिक से कहा।

वहीं पैदल चलते हुए चंद्रकेतु, मेघवर्ण की ओर आश्चर्य से देख रहा था। मेघवर्ण रुका और उससे प्रश्न किया, “अब क्या हुआ?”

“वो... बस कुछ नहीं, बस यह देख रहा था कि तुम ठीक हो या नहीं।” चंद्रकेतु ने उत्तर दिया।

“मैं बिल्कुल ठीक हूँ, भला मुझे कोई क्या क्षति पहुँचा सकता है।” मेघवर्ण ने गर्व से कहा।

“हम्म... ऐसा प्रतीत तो नहीं होता।” चंद्रकेतु बुदबुदाया।

“कुछ कहा तुमने?” मेघवर्ण ने उससे प्रश्न किया।

“नहीं, कुछ भी तो नहीं; मैं तो इस समय किसी और विषय में विचार कर रहा हूँ।”

“और वो क्या है?” मेघवर्ण ने प्रश्न किया।

“सुनंदा यहाँ आयी हुई है... मैं उससे मिला और मैं उसे... तुम समझ सकते हो...।”

“क्या सच में!? इसका अर्थ है कि तुम आज उससे भेंट कर चुके हो, है न? तो यही विशिष्ट कार्य था तुम्हारा, है न?” मेघवर्ण ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“हाँ, तुम्हारा अनुमान उचित ही है, किंतु मुझे नहीं लगता कि उसके मन में मेरे लिए वही भावनाएँ हैं जो मेरे मन में उसके लिए हैं।” चंद्रकेतु ने निराशाजनक स्वर में कहा।

“पहले से ही निराश होने का कोई अर्थ नहीं, चलो उससे भेंट कर आते हैं।” मेघवर्ण ने उत्साह में कहा।

* * *

गुफा के भीतर सुनंदा ने दिग्विजय द्वारा लिखा गया पत्र महाबली अखण्ड को दिया।

अखण्ड ने दिग्विजय का वह पढ़ना आरंभ किया। सुनंदा उनके निकट ही खड़ी थी।

महाबली अखण्ड, मेरी भेंट आज नागों के सेनापति चंद्रभान से हुई। उसका कहना है कि मैं नागलोक के सिंहासन का उत्तराधिकारी हूँ। मैं नहीं समझ पा रहा था कि उस पर विश्वास करूँ या नहीं। उसने कहा कि नागलोक के नागों को उनकी भूमि से निष्कासित कर दिया गया है और अब वो सागर पार सिंहल की भूमि पर निवास कर रहे हैं। खण्डवप्रस्थ के निर्वासित नाग तक्षक और उसके लोगों ने नागलोक पर अधिकार कर लिया है और मुझे उस पर विश्वास करने के लिए तब विवश होना पड़ा, जब मैंने कनिष्का नाम सुना। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि यह कनिष्का शब्द कहीं न कहीं मुझसे जुड़ा हुआ है और इसी रहस्य को सुलझाने हेतु मैं सागर पार सिंहल की भूमि की ओर जा रहा हूँ। और यहाँ प्रश्न केवल मेरा नहीं है, अपितु सुनंदा की उन सौ स्त्री योद्धाओं का भी है, जिनका तक्षक ने अपहरण किया है। मुझे उन्हें मुक्त कराना है और उसके लिए पहले

मुझे सिंघल की भूमि पर जाना होगा। इस रहस्य को सुलझाने के उपरांत, कदाचित् मुझे लौटकर तक्षक के विरुद्ध युद्ध छेड़ना पड़े। आशा करता हूँ कि मेरे सिंघल से लौटने के उपरांत आप अपने योद्धाओं को मेरी सहायता के लिए अवश्य भेजेंगे।

-दिग्विजय

“नहीं सुनंदा, यह संभव नहीं है।” अखण्ड ने पत्र पढ़ने के उपरांत कहा।

“क्या संभव नहीं है महामहिम?” सुनंदा ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“मेरे गुप्तचर नागलोक, विदर्भ, हस्तिनापुर जैसे कई राज्यों में फैले हैं, इसलिए यदि नागलोक पर कोई आक्रमण हुआ होता तो उसकी सूचना मुझे मिल गयी होती। कुछ दिनों पहले भी मुझे यही सूचना मिली थी कि देवी कनिष्का ही नागलोक पर शासन कर रहीं हैं, तो फिर यह कैसे संभव है?” अखण्ड ने कहा।

अखण्ड के उन शब्दों को सुन सुनंदा स्तब्ध रह गयी। “इसका अर्थ यह है कि जो व्यक्ति हमारे पास नागलोक का सेनापति बनकर आया था, वह एक धूर्त था, क्या आप यही कहना चाहते हैं?”

“कदाचित् यही सत्य हो; मुझे ऐसा लगता है कि उन सौ स्त्री योद्धाओं के अपहरण में भी उसी का हाथ है।” अखण्ड ने अनुमान लगाया।

सुनंदा ने साँस छोड़ते हुए कहा, “मुझे उसे जाने नहीं देना चाहिए था।”

“किंतु अभी सत्य यह है कि वो वहाँ जा चुका है और निःसंदेह वो एक गहरे संकट में है।” अखण्ड ने कहा।

“तो ऐसी स्थिति में हमें क्या करना चाहिए महाबली?” सुनंदा ने प्रश्न किया।

“तुम यहीं रुको, मैं मेघवर्ण और चंद्रकेतु को बुलाता हूँ... किंतु तुम्हें एक बात का विशेष ध्यान रखना होगा।” अखण्ड ने चेतावनी भरे स्वर में कहा।

“कैसी बात महामहिम?” सुनंदा ने प्रश्न किया।

“मेघवर्ण और चंद्रकेतु के समक्ष तुम दिग्विजय का उल्लेख नहीं करोगी।” कहकर अखण्ड ने बाहर की ओर प्रस्थान किया।

वहीं मेघवर्ण, चंद्रकेतु और सुर्जन पत्थरों पर बैठे वार्ता कर रहे थे। एक डकैत सैनिक ने वहाँ आकर सूचित किया, “गुरुदेव ने आप दोनों को बुलाया है।”

“ठीक है, उनसे कह दो कि हम आ रहे हैं।” चंद्रकेतु ने उत्तर दिया।

मेघवर्ण ने सुर्जन की ओर देखा, “चलो सुर्जन, तुम भी हमारे साथ आओ।”

“किंतु गुरुदेव ने तो केवल हम दोनों के लिए बुलावा भेजा है।” चंद्रकेतु ने हस्तक्षेप करते हुए कहा।

मेघवर्ण ने हल्की साँस भरते हुए कहा, “अब बस भी करो चंद्रकेतु; यह हममें से ही एक है, हमें इससे कुछ भी नहीं छुपाना चाहिए।

“किंतु यह हमारे गुरुदेव का आदेश है मेघवर्ण।” चंद्रकेतु ने अपना मत रखा।

मेघवर्ण के कुछ कहने से पूर्व ही सुर्जन ने हस्तक्षेप किया, “कदाचित् जो कुछ भी मैंने तुमसे कहा था, उन बातों का तुम्हें विस्मरण हो गया है मेघवर्ण।

कुछ क्षण विचार कर मेघवर्ण ने सहमति जताई, “हाँ, तुम्हारा कथन उचित ही है सुर्जन; चलो चंद्रकेतु।”

मेघवर्ण उठकर चंद्रकेतु के साथ गुफा के भीतर चला गया।

“तुम बदल गए हो मेघवर्ण।” चंद्रकेतु ने गुफा के भीतर चलते हुए कहा।

“मुझे तो ऐसा नहीं लगता... तुमने ऐसा क्यों कहा?” मेघवर्ण ने प्रश्न किया।

“वैसे मैं जानना चाहूँगा कि सुर्जन ने ऐसा क्या कहा तुमसे, जिससे तुम्हारा मन ही बदल गया।” चंद्रकेतु ने प्रश्न किया।

मेघवर्ण ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, “मैं विस्तृत नहीं कर सकता; तुम्हें मुझमें उन बातों की झलक दिख ही जायेगी।”

“तुम्हारे कहने का अर्थ क्या है?” चंद्रकेतु ने प्रश्न किया।

“कहा न, तुम मुझमें उन बातों की झलक देख लोगे।” मेघवर्ण चलता रहा।

वो दोनों चलते रहे। शीघ्र ही वो महाबली अखण्ड के समक्ष खड़े थे।

वो दोनों अखण्ड के समक्ष सम्मानपूर्वक झुके। चंद्रकेतु और अखण्ड दोनों ही मेघवर्ण के व्यवहार में यह अकस्मात् परिवर्तन देख आश्चर्य में पड़ गए, किंतु उन्होंने फिर भी कुछ कहा नहीं, क्योंकि सुनंदा भी वहाँ उपस्थित थी।

अगले ही क्षण अखण्ड उन दोनों के निकट आये, “तुम दोनों को एक अभियान पर निकलना है।”

“हम सुन रहे हैं गुरुदेव।” चंद्रकेतु ने कहा।

“पिछले दो वर्षों से सुनंदा के नेतृत्व में लगभग सौ स्त्री योद्धा कार्यरत थीं। किंतु उन सभी का अपहरण कर लिया गया है। तुम लोगों को उन्हें मुक्त कराना है। तुम्हारा सामना कैसे शत्रुओं से होगा, यह कहना कठिन है। केवल मनुष्य ही नहीं, सामने आने वाला शत्रु, गरुड़, असुर, नाग कोई भी हो सकता है। तुम्हें मलय पर्वत पार करते हुए सागर पार सिंघल की भूमि पर पहुँचना है।” अखण्ड ने कहा।

‘सिंघल!’ मेघवर्ण को यह सुनकर थोड़ा आश्चर्य हुआ।

“हाँ, सिंघल... तुम्हें बिना कोई प्रश्न उठाये सुनंदा के साथ जाना है; उसके शिविर में एक धूर्त आया था और उसके साथियों ने इसके शिविर से सभी स्त्री योद्धाओं का हरण कर लिया और इसके अनुसार वो उसे सिंघल की भूमि पर ले गए हैं; तुम्हें उन सबको मुक्त कराना है।” अखण्ड ने आदेश दिया।

“जो आज्ञा गुरुदेव।” चंद्रकेतु ने सहमति जताई।

“मेरी एक विनती है गुरुदेव।” मेघवर्ण ने हस्तक्षेप किया।

“कैसे विनती?” अखण्ड ने पूछा।

“इस अभियान में सुर्जन भी हमारे साथ आएगा।” मेघवर्ण ने कहा।

‘क्यों?’ अखण्ड ने पूछा।

“क्योंकि वो एक उत्तम श्रेणी का योद्धा है, निःसंदेह वो हमारे लिए सहायक सिद्ध होगा।” मेघवर्ण ने कहा।

कुछ क्षण विचार करने के उपरांत अखण्ड ने सहमति जताई, “ठीक है, तुम जिसे चाहो ले जा सकते हो। तुम सब कल सूर्योदय के साथ ही प्रस्थान करोगे; पंद्रह सौ डकैत और पंद्रह सौ गंधर्व सैनिक तुम्हारे साथ जायेंगे।” यह आदेश देकर अखण्ड अपने आसन से उठे।

“किंतु इतनी संख्या में लोग सागर पार करेंगे कैसे?” मेघवर्ण ने प्रश्न उठाया।

“उसकी चिंता मत करो... सागर के तट पर मेरे कुछ लोग तुम्हारे सहायता के लिए पहुँच जायेंगे, उनकी भेंट तुमसे वहीं होगी।” कहकर अखण्ड उस स्थान से बाहर चले गए।

उनके जाने के उपरांत चंद्रकेतु ने सुनंदा की ओर देखा, “तो तुम हमारा मार्गदर्शन करोगी?”

“हाँ, मैं ही करूँगी।” सुनंदा ने दृढ़ता से उत्तर दिया।

चंद्रकेतु मुस्कुराया, “उचित ही है... इसका अर्थ है कि कल हम एक लंबी यात्रा पर निकलने वाले हैं; अच्छा ही है, हमें एक दूसरे को जानने का अधिक अवसर प्राप्त होगा।”

सुनंदा ने कोई उत्तर नहीं दिया, क्योंकि चंद्रकेतु से विवाद करने की उसकी कोई इच्छा नहीं थी। मेघवर्ण ने उसके मुख के भाव को पढ़ लिया।

उसने अपने मित्र के कंधे पर हाथ रख कहा, “स्त्रियों की भाँति लजाना बंद करो चंद्रकेतु; स्थिति अभी वैसी नहीं है इसलिए तुम्हें ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहिए, हमारे पास करने को और भी कई कठिन और महत्वपूर्ण कार्य हैं।”

चंद्रकेतु ने मेघवर्ण की ओर देखा, और उससे धीमे स्वर में कहा, “मैं जिस कन्या से प्रेम करता हूँ, उसके समक्ष तो मुझे लज्जित न करो।”

“इन विषयों पर चर्चा बाद में भी हो जायेगी चंद्रकेतु, अभी हमें कल की यात्रा की तैयारी करने पर ध्यान देना चाहिए।” मेघवर्ण ने कहा।

“हाँ, तुमने उचित ही कहा; हमारे पास इन विषयों पर विचार विमर्श करने का अधिक समय नहीं है।” चंद्रकेतु सुनंदा की ओर मुड़ा, “उचित है सुनंदा, हम इस विषय पर बाद में चर्चा करेंगे।”

मेघवर्ण और चंद्रकेतु दोनों ही गुफा से बाहर की ओर प्रस्थान कर गये।

“बड़ा ही मूर्ख है ये।” झल्लाहट में सुनंदा के मुख से शब्द फूट पड़े।

मेघवर्ण और चंद्रकेतु गुफा से बाहर आ गए। सुर्जन एक पत्थर पर बैठा उनकी प्रतीक्षा में था।

“तुम्हारे लिए एक सूचना है सुर्जन।” मेघवर्ण ने उसके निकट आकर बैठते हुए कहा।

“और वो क्या है?” सुर्जन ने प्रश्न किया।

“हम कल एक लंबी यात्रा पर निकल रहे हैं और तुम हमारे साथ आ रहे हो।” मेघवर्ण ने कहा।

“तुम्हारे साथ आ रहा हूँ! किंतु हम जा कहाँ रहे हैं?” सुर्जन ने आश्चर्यपूर्वक प्रश्न किया।

“सागर पार; सिंधल की भूमि पर।” मेघवर्ण ने कहा।

“सागर पार। फिर तो हमें लौटने में दो मास से भी अधिक का समय लग जायेगा।” सुर्जन ने कहा।

“हाँ, किंतु यह अभियान बहुत ही महत्वपूर्ण है; हमें प्रस्थान तो करना ही होगा, इसलिए तैयारी कर लो, कल सूर्य की पहली किरण के साथ ही हम प्रस्थान करेंगे।” कहकर मेघवर्ण पत्थर से उठ गया और स्वयं की तैयारियाँ करने प्रस्थान कर गया।

“किंतु...।” सुर्जन ने बहाना बनाने का असफल प्रयत्न किया।

“तुम्हारा कोई बहाना नहीं चलेगा सुर्जन; तुम हमारे साथ आ रहे हो, हम अपनी तैयारी करने जा रहे हैं और तुम भी अपनी तैयारी कर लो।” कहकर मेघवर्ण पीछे हटा और चंद्रकेतु के साथ वहाँ से प्रस्थान कर गया।

सुर्जन (दुर्भीक्ष) झल्ला उठा। “और न जाने क्या क्या करना पड़ेगा... हठी बालक के समान व्यवहार करता है यहा।” विचार करते हुए उसके मुख पर मंद मुस्कान भी आ गयी, “चलो, इन

दोनों योद्धाओं का रहस्य ज्ञात करने के लिए इतना तो करना ही पड़ेगा।”

मध्यरात्रि का समय था। सुर्जन ने एक पत्र लिखा और एक उकाब के पाँव पर बाँध दिया।

“किसे भेज रहे हो यह पत्र?” पीछे से एक स्वर सुनाई दिया। वो कोई और नहीं महाबली अखण्ड थे, जो उसकी ओर बढ़े चले आ रहे थे।

सुर्जन उनकी ओर मुड़कर मुस्कुराया, “कुछ विशेष नहीं, बस अपने गुरुदेव को यह सूचित कर रहा था कि मैं दो मास उन्हें नहीं मिलूँगा।”

“क्यों कर रहे हो तुम यह सब? चले क्यों नहीं जाते यहाँ से?” अखण्ड ने उससे प्रश्न किया।

“जब तक मुझे मेघवर्ण के विषय में सबकुछ ज्ञात नहीं हो जाता, मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा... यदि आप चाहते हैं कि मैं यहाँ से चला जाऊँ, तो बताइये मुझे, कौन हैं मेघवर्ण का असली पिता? मैं जानता हूँ वो उस डकैत का पुत्र नहीं है, जिसकी आपने हत्या की... और कौन हैं वो व्यक्ति, जिसने यह भविष्यवाणी की, कि मेघवर्ण का जन्म मुझे रोकने के लिए हुआ है?” सुर्जन ने प्रश्न किये।

“तुम जानते भी हो कि कौन था वो डकैत, जिसने मेघवर्ण का पालन- पोषण किया?” अखण्ड ने पूछा।

“नहीं, मैं नहीं जानता; यदि विषय दिलचस्प हो तो अवश्य बताइये।”

“मैं उसी के विषय में बात कर रहा हूँ, जिसने उपनंद से युद्ध करते समय तुम्हारी पीठ पर वार किया था।”

सुर्जन को आश्चर्य हुआ, “ओह, तो आप उस द्रोही दुर्मुद या सुवर्मा, जो भी नाम था उसका, उसके विषय में बात कर रहे हैं; हाँ वाकई दिलचस्प कथा है, किंतु मेरा प्रश्न यह नहीं कुछ और था।”

“तुम्हारे उस प्रश्न का उत्तर तो मैं नहीं देने वाला।”

“तो फिर जब तक मुझे यह रहस्य ज्ञात नहीं हो जाते, मैं यहाँ से नहीं जाने वाला और चिंतित मत होइये, इस यात्रा में मैं मेघवर्ण और चंद्रकेतु को कोई क्षति नहीं पहुँचाऊँगा... वो दो योद्धा जिन्हें मेरे विरुद्ध खड़े होने के लिए चुना गया हो, ऐसे महारथी इतनी सरल मृत्यु के अधिकारी तो नहीं हो सकते, क्योंकि उनके बिना मैं भी अधूरा हूँ।” सुर्जन ने कहा।

अखण्ड कटाक्षमय स्वर में मुस्कुराये, “हाँ, तुम्हारे विरुद्ध खड़े होने के लिए विशेषतः दो योद्धाओं को चुना गया है, किंतु यदि सत्य कहूँ तो चंद्रकेतु वो दूसरा योद्धा नहीं हैं।”

“आपके कहने का अर्थ क्या है?” सुर्जन ने आश्चर्यपूर्वक प्रश्न किया।

“मुझे लगता है कि तुम तो चतुर हो ही, स्वयं ज्ञात कर लो।” अखण्ड पीछे हटे और वहाँ से प्रस्थान कर गये।

सुर्जन ने साँस भरते हुए विचार किया, ‘तो एक और ऐसा योद्धा है... चलो आनंद आएगा उसके विषय में ज्ञात करने में।’

शीघ्र ही मेघवर्ण, चंद्रकेतु, सुर्जन और सुनंदा तीन सहस्र योद्धाओं के साथ अपनी यात्रा आरंभ करने को सज्ज थे।

सूर्य की पहली किरण के साथ ही उन लोगों ने अपनी यात्रा आरंभ की।

10. सागर पार का छल

विदर्भ

विदर्भ का राजा जयवर्धन अपने उद्यान में टहल रहा था। एक सैनिक ने वहाँ आकर उसे सूचित किया, “रक्षगुरु भैरवनाथ पधारे हैं महाराज।”

जयवर्धन ने उस सैनिक की ओर मुड़कर आदेश दिया, “उन्हें मेरे कक्ष में ले आओ।”

“जो आज्ञा महाराज।” वह सैनिक वहाँ से प्रस्थान कर गया।

शीघ्र ही रक्षगुरु भैरवनाथ और जयवर्धन एक-दूसरे के समक्ष खड़े थे।

“हमने उस द्रोही को खोज निकाला, जिसकी खोज हम कई दिनों से कर रहे थे।” भैरवनाथ ने कहा।

“द्रोही? कहीं आपका संकेत उस द्रोही की ओर तो नहीं है, जिसने हमारी युद्ध की योजना शत्रुओं के समक्ष प्रकट की थी?” जयवर्धन ने प्रश्न किया।

“हाँ, मैं उसी द्रोही के विषय में बात कर रहा हूँ, जिसने डकैतों और गंधर्वों के विरुद्ध युद्ध में हमारी युद्ध की योजना शत्रुओं तक पहुँचायी थी।” भैरवनाथ ने स्पष्ट किया।

“क्या! यदि ऐसा है गुरुदेव, तो बताइये मुझे कौन है वो?” जयवर्धन ने जिज्ञासावश प्रश्न किया।

“असुरेश्वर दुर्भीक्ष ने तुम्हारे लिए यह पत्र भेजा है।” भैरवनाथ ने रुष्टता से वह पत्र उसे दिया।

जयवर्धन ने वह पत्र लिया और पढ़कर स्तब्ध रह गया, “नहीं नहीं, यह संभव नहीं है गुरुदेव, मेरा पुत्र मुझसे द्रोह नहीं कर सकता।”

“तो तुम क्या कहना चाहते हो, असुरेश्वर दुर्भीक्ष असत्य कह रहे हैं?” भैरवनाथ ने प्रश्न उठाया।

“उन्होंने तो बस इतना ही लिखा है कि दिग्विजय ही वह द्रोही है... उन्होंने इससे सिद्ध करने हेतु कोई साक्ष्य नहीं दिया है कि क्यों और कैसे उसने हमें छला। आपको वास्तव में लगता है कि यह पत्र मुझे विश्वास दिला देगा कि मेरा पुत्र द्रोही है?” जयवर्धन ने आश्चर्य से प्रश्न उठाया।

“तुम्हें उन पर विश्वास करना ही होगा, क्योंकि उनके पास असत्य कहने का कोई कारण नहीं है; मुझे नहीं लगता कि तुम्हारे पुत्र से उनकी कोई निजी शत्रुता है।”

“किंतु यह उनका भ्रम भी तो हो सकता है, मेरा ज्येष्ठ पुत्र मुझसे द्रोह नहीं कर सकता।” जयवर्धन ने तर्क दिया।

“वो तुम्हारा ज्येष्ठ पुत्र नहीं है और यह तुम भलीभाँति जानते हो।”

जयवर्धन ने साँस भरते हुए कहा, “हाँ मैं जानता हूँ कि मेरा एक और पुत्र था... किंतु जब मैंने असुरेश्वर के साथ मिलकर विदर्भ पर आक्रमण किया था, तब न जाने वो कहाँ लुप्त हो गया; मैं तो यह भी नहीं जानता कि वो जीवित है भी या नहीं, तो मैं उसका चिंतन क्यों करूँ? इस समय दिग्विजय ही मेरा ज्येष्ठ पुत्र है और मेरे इस सिंहासन का उत्तराधिकारी भी और इसीलिए मुझसे द्रोह करने का उसके पास कोई कारण नहीं है।” कहते हुए जयवर्धन झल्ला उठा।

“चिंतित मत हो, हम सत्य का शीघ्र ही पता लगा लेंगे।” भैरवनाथ ने कहा।

“आप करने क्या वाले हैं गुरुदेव?” जयवर्धन ने प्रश्न किया।

“चिंतित मत हो, यदि तुम्हारे पुत्र का अपराध सिद्ध भी हो गया, तो भी उसे मृत्युदण्ड नहीं दिया जायेगा।” यह कहकर भैरवनाथ उस कक्ष से बाहर चला गया।

जयवर्धन चिंतित था, ‘मुझे अपने तरीके से सत्य का पता लगाना होगा।’

* * *

नागलोक

वहीं नागलोक में कनिष्का को महाबली अखण्ड द्वारा भेजा गया पत्र प्राप्त हुआ। अपनी राजसभा में ही उन्होंने उसे पढ़ना आरंभ किया।

लगभग तेईस वर्ष पूर्व जब दिग्विजय का जन्म हुआ था, तब हमने उसके विषय में चर्चा की थी। वो इस समय संकट में है। मेरे तीन सहस्र योद्धा सागर तट की ओर बढ़ रहे हैं। दिग्विजय को सिंघल देश में बंदी बना लिया गया है और निःसंदेह उस पर एक बड़ा संकट मंडरा रहा है, इसलिए मेरी इच्छा है कि आप अपनी नौकाओं द्वारा हमारे योद्धाओं को सागर पार करने में सहायता करें।

- अखण्ड

‘सेनापति!’ कनिष्का ने अपनी सभा में पुकार लगाई।

“आज्ञा, महारानी।” नागों के सेनापति आगे आकर अपनी रानी के समक्ष घुटनों के बल झुके।

कनिष्का ने आदेश दिया, “हमारे युवराज संकट में हैं, हमें उनकी रक्षा करनी है। हमारे पास लगभग एक सहस्र ऐसी सशक्त नौकायें हैं, जो बड़ी सरलता से सागर पार कर सकती हैं, हमें उन सबको सिंघल राज्य पहुँचाने के लिए सागर के तट पर ले जाना होगा... आगे क्या करना है, यह आपको भलीभाँति ज्ञात है।”

“निःसंदेह महारानी।” सेनापति उचित व्यवस्था करने के लिए वहाँ से प्रस्थान कर गए।

कनिष्का अपने सिंहासन से उठीं और अपने कुलदेवता शेषनाग के मंदिर की ओर बढ़ चलीं। अपने कुलदेव की पवित्र मूर्त के समक्ष वह झुकीं और मूर्ति के सामने गड़े फरसे की ओर देखा।

“आशा है तुम शीघ्र ही लौटकर इस फरसे को भूमि से निकालोगे मेरे पुत्र, उस दिन तुम्हें अपने जीवन की वास्तविकता का ज्ञान होगा।” कनिष्का ने साँस छोड़ते हुए विचार किया।

* * *

हरितनापुर

महाबली अखण्ड और महर्षि शंकराचार्य हरितनापुर के ही ग्राम में गुप्त रूप से मिले।

शंकराचार्य ने अखण्ड से प्रश्न किया, “आप ऐसा कैसे कर सकते हैं महाबली अखण्ड? आपको भलीभाँति ज्ञात है कि मेघवर्ण और चंद्रकेतु अभी भी दुर्भीक्ष का सामना करने योग्य नहीं हुए हैं, तो फिर आपने उन्हें दुर्भीक्ष के साथ क्यों भेजा?”

“दुर्भीक्ष ने मुझे वचन दिया है कि इस यात्रा में वो मेघवर्ण और चंद्रकेतु को कोई क्षति नहीं पहुँचायेगा और मैं जानता हूँ कि वो अपना वचन कभी नहीं तोड़ेगा।” अखण्ड ने तर्क दिया।

“आपको भलीभाँति ज्ञात है कि वो कितना बड़ा दुर्दांत है... दस वर्ष पूर्व की घटना का विस्मरण तो नहीं हुआ आपको?” शंकराचार्य ने प्रश्न किया।

“मुझे वो सबकुछ भलीभाँति स्मरण है। उस समय आपने मुझे संदेश भेजा था, कि दुर्भीक्ष विक्षिप्त हो गया है, जिसके कारण गंधर्वों के प्राण संकट में हैं... और जब मैंने वहाँ आकर उसे

बर्बरता से गंधर्वों की हत्या करते हुए देखा तो मुझे भी यह सत्य ही प्रतीत हुआ, किंतु क्या यह सत्य था?” अखण्ड ने प्रश्न किया।

“आ..आप कहना क्या चाहते हैं?” शंकराचार्य हिचकिचाने लगे।

“आपकी हिचकिचाहट यह स्पष्ट कर देती है कि आपने मुझसे असत्य कहा था ऋषिवर; मुझे सत्य बताइये।” अखण्ड ने उन पर दबाव डाला।

शंकराचार्य ने साँस भरते हुए कहा, “ठीक है, मैं आपको सत्य से अवगत कराऊँगा, किंतु आपको वचन देना होगा कि यह सत्य हमारे बीच ही रहेगा।”

“ठीक है, दिया वचन।” अखण्ड ने उन्हें विश्वास दिलाया।

“सम्पूर्ण सत्य का ज्ञान तो मुझे भी नहीं है... जब दुर्भीक्ष पांचाल पर विजय पाने के उपरांत लौट रहा था, तो वो राजा उग्रसेन थे जिन्होंने उससे असत्य कहा। उन्होंने उससे कहा कि दुर्धरा का विवाह किसी और से हो चुका है; इस असत्य ने दुर्भीक्ष के क्रोध को भड़का दिया। मुझे आज तक समझ नहीं आया, कि राजा उग्रसेन ने उस समय ऐसा असत्य क्यों कहा।” शंकराचार्य ने विस्तृत किया।

“तो आपने यह भेद अब तक किसी के समक्ष खोला क्यों नहीं? कदाचित् सत्य जानकर दुर्धरा उसे क्षमा कर दे और मुझे विश्वास है कि इससे वो शांत हो जायेगा। मैंने दुर्भीक्ष के नेत्रों की वो पीड़ा देखी है। बालपन से उसने केवल पीड़ा ही तो सही है और मुझे लगता है कि दुर्धरा उसके जीवन में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। यदि दुर्धरा उसके जीवन में लौट आती है तो उसकी समस्त पीड़ा और क्रोध का कारण ही नष्ट हो जायेंगे; जो उसके भीतर की दुष्टता को भी समाप्त कर देगा और वो दुर्भीक्ष से एक बार फिर सुर्जन बन जायेगा।” अखण्ड ने अपना मत रखा।

“कदाचित् आपको विस्मरण हो गया है महाबली अखण्ड, कि कैसे उसने आपके पुत्र विक्रांत की निर्ममता से हत्या की थी।” शंकराचार्य ने कहा।

“इतना लंबा जीवन व्यतीत कर अनुभव प्राप्त कर चुका हूँ; यहाँ मेरा उद्देश्य आर्यावर्त की भूमि पर शांति की स्थापना करना है। यदि हर कोई निजी प्रतिशोध को ध्यान में रख अपने जीवन के मार्ग चुनता रहा, तो धर्म का तो कोई अर्थ ही नहीं बचेगा। मेरे पुत्र विक्रांत ने एक युद्ध में भाग लिया था और उसमें वीरगति प्राप्त करके मुझे गौरवान्वित किया था। उसका एक अंश चंद्रकेतु अभी भी जीवित है, इसलिए उसकी मृत्यु का मुझे कोई दुःख नहीं है।” अखण्ड ने तर्क दिया।

“आपका तर्क विचारणीय है, किंतु फिर भी मैं यह भेद दुर्धरा के समक्ष नहीं खोल सकता।” शंकराचार्य ने स्पष्ट रूप से कहा।

“किंतु क्यों?” अखण्ड ने आश्चर्यपूर्वक प्रश्न किया।

“आपको भलीभाँति ज्ञात है अखण्ड; यदि उसके भीतर का असुर मर भी गया, फिर भी वो उस दुर्दांत राजा जयवर्धन का समर्थन करता ही रहेगा, इसलिए दुर्भीक्ष का अंत आवश्यक है और दुर्धरा वही स्त्री है जो उसे मृत्यु शय्या तक ले जायेगी, क्योंकि गरुड़ों के श्राप के अनुसार उसकी मृत्यु का कारण वही बन सकता है जिससे वो सबसे अधिक प्रेम करता हो... इसलिए मैं चाहता हूँ कि दुर्धरा के मन में उसके लिए घृणा बनी रहे।” शंकराचार्य ने तर्क दिया।

“और यही कारण है कि आप उसे सत्य नहीं बताना चाहते?” अखण्ड ने प्रश्न उठाया।

“हाँ, यही कारण है और स्मरण रखियेगा कि आपने मुझे वचन दिया है कि आप इस भेद को किसी के समक्ष प्रकट नहीं करेंगे।” शंकराचार्य ने कहा।

“उचित है... मेरे पास दो योजनायें हैं, जिसके लिए मैं यहाँ आया था।” अखण्ड ने समझाना आरंभ किया।

सब कुछ सुनने के बाद शंकराचार्य ने निष्कर्ष निकाला, “यह दोनों योजनायें एक-दूसरे के विपरीत हैं; पहली योजना विश्वशांति की स्थापना करेगी...”

“और दूसरी पूरे विश्व में युद्ध छेड़ देगी; किंतु आपको एक वचन देना होगा।” अखण्ड ने माँग की।

“कैसा वचन?” शंकराचार्य ने प्रश्न किया।

“यदि हम अपनी पहली योजना में सफल हो गये, तो आप दुर्धरा के समक्ष उस असत्य का सम्पूर्ण भेद खोल देंगे।” अखण्ड ने माँग की।

“मैं आपको वचन देता हूँ अखण्ड, यदि आप अपनी पहली योजना में सफल हो गये, तो इस सत्य को छुपाने का कोई कारण ही नहीं रह जायेगा। किंतु आपसे एक भारी भूल हुई है... हमारे पास चार प्रमुख योद्धा हैं और आपने एक शत्रु के समक्ष उनमें से एक योद्धा का भेद खोल दिया।” शंकराचार्य ने चिंता जताई।

“मेरे पास कोई और मार्ग नहीं था ऋषिवरा मैं जानता हूँ वो विश्वास के योग्य नहीं हैं, किंतु फिर भी मुझे यह संकट उठाना ही पड़ा, इसलिए अब मुझे सर्वदमन से वार्ता करनी होगी, क्योंकि अपनी योजना के अगले चरण को पूर्ण करने के लिए मुझसे उसकी आवश्यकता है... शीघ्र ही भेंट होगी ऋषिवरा।” अखण्ड ने कहा।

अखण्ड वहाँ से प्रस्थान कर गये। शंकराचार्य विचारों में खो गये। “आपकी माता ‘वैशाली’ ने यह श्राप दिया था कि महाराज तेजस्वी का पुत्र ही विदर्भ साम्राज्य के विनाश का कारण बनेगा। दुर्भीक्ष को भी यह श्राप मिला हुआ है कि उसका प्रेम उसे मृत्यु के द्वार तक ले जायेगा; देखते हैं कि आप यह प्रारब्ध बदल पाते हैं या नहीं महाबली अखण्ड।”

महाबली अखण्ड हस्तिनापुर के महल की ओर बढ़े चले जा रहे थे। उन्होंने मुख्य-द्वार पर पहुँचकर अपना अश्व रोका।

“अपने युवराज को जाकर सूचित करो, डकैतों के गुरुदेव उनसे भेंट करना चाहते हैं।” अखण्ड ने द्वार-रक्षक से कहा।

“आपको ऐसा कुछ करने की आवश्यकता है?” पीछे से एक स्वर सुनाई दिया।

महाबली अखण्ड उस स्वर की ओर मुड़े, “ब्रह्मऋषि विश्वामित्र।” अपने समक्ष उन्हें देख वो घुटनों के बल झुक गये।

“हमें आपसे वार्ता करनी है महाबली अखण्ड।” महर्षि विश्वामित्र ने कहा।

अखण्ड ने उनकी ओर देखा, “मैं सुन रहा हूँ ऋषिवरा।”

“ठीक है, हमारे साथ आइये।” विश्वामित्र एक निश्चित दिशा की ओर बढ़ चले।

अखण्ड उनके साथ चल पड़े।

“वैसे आप यहाँ किस उद्देश्य से आये हैं?” विश्वामित्र ने चलते हुए प्रश्न किया।

“मैं यहाँ सर्वदमन से भेंट करने आया हूँ।” अखण्ड ने कहा।

“वो किसलिए?”

“उसे विश्वशांति के इस अभियान में एक अहम योगदान देना है।” अखण्ड ने कहा।

विश्वामित्र मुस्कुराये, “आप एक विद्वान पुरुष हैं महाबली अखण्ड और आपको इस बात का

अनुमान तो होगा ही कि जिस शांति स्थापना का प्रयत्न आप कर रहे हैं, उसकी राह सरल नहीं होगी।”

“किंतु फिर भी मैं अपना प्रयत्न जारी रखूँगा।” अखण्ड भी उनके साथ चलते रहे।

शीघ्र ही वह वन के एक स्थान पर पहुँचे। हस्तिनापुर का युवराज सर्वदमन कुछ ग्रामीणों के साथ लकड़ियाँ काटने में व्यस्त था।

सर्वदमन की ओर देखते हुए विश्वामित्र ने अखण्ड से कहा, “आप तो जानते ही हैं कि एक बालक अपनी माता के गर्भ से जन्म लेकर इस संसार में अपने नेत्र खोलने के लिए नौ मास का समय लेता है; किंतु सर्वदमन भिन्न है।”

“मुझे ज्ञात है ऋषिवर... देवी शकुंतला ने इस बालक को जन्म देने के लिए केवल नौ सप्ताह का समय लिया था।” अखण्ड ने सहमति जताई।

“जब इसका जन्म हुआ था, हमने और महर्षि कानव (वो ऋषि जिन्होंने विश्वामित्र की अनुपस्थिति में शकुंतला का पालन-पोषण किया था) ने सर्वदमन की जन्म पत्री बनायी थी। हमने उसके जन्म के समय और स्थान को ध्यान में रखकर उसकी जन्मपत्री में ग्रहों और राशियाँ अंकित की थी और हमारे विश्लेषण का जो निष्कर्ष निकला, उससे हम स्तब्ध रह गये।”

“हाँ ऋषिवर, आपने इसके विषय में यह सब पहले ही बताया था... आपने बताया था कि मंगल और बुद्ध के साथ मेष राशि का उपस्थित होना उसके महापुरुष योग को दर्शाता है, जो उसे एक अतुल्य और अपराजेय योद्धा बनायेगा। बृहस्पति के साथ मिथुन का उपस्थित होना उसके सौभाग्य का सूचक है और ऋषभ राशि में शनि का उपस्थित होना ख्याति योग का सूचक है, जिससे उसे संसार में प्रसिद्धि मिलेगी। सर्वदमन की कुण्डली के सभी सितारों ने यह संकेत दिया था कि एक दिन वह इस समग्र आर्यावर्त की भूमि का सम्राट बनेगा; किंतु मैं यह अवश्य कहना चाहूँगा कि उसका मार्ग सरल नहीं होगा और उसे अपनी संघर्ष-यात्रा अभी से आरंभ करनी होगी।” अखण्ड ने कहा।

क्षणभर विचार के उपरांत विश्वामित्र ने कहा, “हाँ, यह तो सत्य है कि इस बालक का जन्म पृथ्वी पर किसी महान उद्देश्य को पूर्ण करने हेतु हुआ है, इसीलिए तो यह इस संसार में आने को इतना अधीर था कि नौ माह के स्थान पर केवल नौ सप्ताह में ही जन्म ले लिया।”

“आपने भविष्यवाणी की थी कि यह एक अतुल्य और अपराजेय योद्धा होगा ब्रह्मऋषि; किंतु जब तक वो असुरेश्वर दुर्भीक्ष जीवित है, इस युग का कोई भी योद्धा अपराजेय नहीं है और इस यथार्थ से आप भलीभाँति परिचित हैं।” अखण्ड ने कहा।

सर्वदमन स्वयं ही लकड़ियाँ काट रहा था। उसकी दृष्टि शीघ्र ही विश्वामित्र और सर्वदमन पर पड़ी।

‘गुरुदेव’ वो विश्वामित्र की ओर बढ़ा।

महाबली अखण्ड ने अपने मुख को ढका वस्त्र हटा दिया। सर्वदमन ने विश्वामित्र से प्रश्न किया, “यह कौन हैं गुरुदेव?”

“मुझे तो लगा था कि तुम इनसे परिचित होगे। जिस डकैत दल के विषय में तुम इतनी चर्चा करते रहते हो, यह उसी दल के संगठनकर्ता भी हैं और उनके मार्गदर्शक भी।” विश्वामित्र ने अखण्ड का परिचय दिया।

“ओह! मैं समझ गया; मैंने इनके विषय में केवल सुना था, आज प्रथम बार भेंट हो रही है

इनसे।” सर्वदमन ने अखण्ड के समक्ष हाथ जोड़कर उनका सम्मान किया।

अखण्ड मुस्कुराये, “हाँ, भेंट तो हमारी प्रथम बार ही हो रही है।”

कुछ क्षण वह सभी मौन रहे। अखण्ड ने कुछ क्षण उपरांत प्रश्न उठाया, “मैं तुमसे एक प्रश्न का उत्तर चाहता हूँ सर्वदमन।”

“आपके प्रश्न की प्रतीक्षा है मुझे।” सर्वदमन ने विनम्रता से कहा।

“तुम एक महान राष्ट्र के युवराज हो, तो तुम इन लोगों के साथ लकड़ियाँ काटने जैसा तुच्छ कार्य क्यों कर रहे हो?” अखण्ड ने प्रश्न किया।

सर्वदमन मुस्कुराया, “तो आपको क्या ऐसा लगता है कि यह नीची जाति के लोग अछूत हैं?”

अखण्ड ने मुस्कुराकर कहा, “मेरे विचारों का यहाँ कोई महत्व नहीं है, विचार तो मैं तुम्हारे जानना चाहता हूँ।”

“इन लोगों की जाति से मुझे कोई अंतर नहीं पड़ता, क्योंकि संसार में किसी भी व्यक्ति का अपने जन्म पर नियंत्रण नहीं होता; यह उसके हाथ में नहीं होता कि वह ऊँची जाति में जन्म लेगा, या नीची जाति में। मेरे अनुसार हम सभी बराबर हैं, जिन्हें अपने अपने कार्य अनुसार सम्मान मिलना ही चाहिए। हस्तिनापुर के सिंहासन का उत्तराधिकारी होने के नाते मेरा यह कर्तव्य है कि मैं अपनी प्रजा को यह विश्वास दिलाऊँ, कि संसार कोई भी कार्य ऐसा नहीं है जिसे करके उनमें हीन भावना उत्पन्न हो, या वो स्वयं को छोटा महसूस करें और यही कारण है कि मैं इनके साथ लकड़ियाँ काट रहा हूँ।”

सर्वदमन ने साँस भरी और अपनी बात समाप्त की, “वैसे भी इन लकड़ियों को काटने से मेरी भुजाओं के बल में काफी वृद्धि हुई है, अब तो मैं कुल्हाड़ी या तलवार के एक ही वार से पूरा वृक्ष काट देता हूँ।”

अखण्ड मुस्कुराये, “तुम्हारे उत्तर ने मुझे संतुष्ट किया... जिस उद्देश्य के लिए तुम्हारा चुनाव किया गया है, तुम उसके लिए सर्वाधिक योग्य हो। मैं यहाँ तुम्हें एक विशेष अभियान के लिए अपने साथ ले जाने आया हूँ, आशा है कि तुम इंकार नहीं करोगे।”

सर्वदमन ने विश्वामित्र की ओर देखा। उन्होंने मुस्कुराकर सहमति का संकेत दिया।

“उचित है; कैसा अभियान है यह?” सर्वदमन ने प्रश्न किया।

“यात्रा के दौरान मैं तुम्हें सब कुछ बता दूँगा, तैयारी कर लो।” अखण्ड ने कहा।

* * *

कुछ दिनों का समय बीता। दिग्विजय और चंद्रभान सागर तट के निकट पहुँचे।

“हम यह सागर पार कैसे करेंगे?” दिग्विजय ने प्रश्न किया।

“आपको शीघ्र ही ज्ञात हो जायेगा युवराज।” चंद्रभान ने मुस्कुराकर उत्तर दिया।

शीघ्र ही सागर की ऊँची लहरों के बीच से एक विशाल नौका आती दिखाई दी।

दिग्विजय उस नौका को देख आश्चर्यचकित रह गया। “वाह! ऐसी नौकायें हमारे पास तो नहीं हैं।”

“हाँ, किंतु हम नावों के पास ऐसी नौकायें हैं; हर एक नौका लगभग तीस मनुष्यों को बड़ी ही सरलता से सागर पार पहुँचा सकती है।” चंद्रभान ने गर्व से कहा।

वह नौका निकट आयी। उसमें दो व्यक्ति पहले से सवार थे। उनके मुख से लेकर सम्पूर्ण शरीर

काले वस्त्र से ढके हुए थे।

“यह लोग कौन हैं और इन्होंने अपना मुख क्यों ढक रखा है?” दिग्विजय ने प्रश्न किया।

“यही लोग हमें सागर पार ले जायेंगे और इनके मुख के विषय में क्या चिंतित होना, यह केवल नाविक ही तो हैं; चलिए प्रस्थान करते हैं।” चंद्रभान नौका की ओर बढ़ा। दिग्विजय ने उसका अनुसरण किया।

कुछ दिन और यात्रा करने के उपरान्त दिग्विजय और चंद्रभान सिंघल के तट पर पहुँचे।

“तो अंततः हम यहाँ पहुँच ही गये युवराज।” कहकर चंद्रभान ने नौका से बाहर कदम बढ़ाये।

वह दोनों एक निश्चित दिशा की ओर चल पड़े। वो दोनों काले वस्त्रधारी नाविक भी उनके पीछे पीछे चल रहे थे।

शीघ्र ही उन्हें अपने समक्ष एक पुरानी इमारत दिखाई दी।

“प्रतीत होता है कि इस स्थान पर वर्षों से कोई नहीं आया।” दिग्विजय ने अनुमान लगाने का प्रयत्न किया।

“हाँ, आपको बंदी बनाकर रखने के लिए सबसे उपयुक्त स्थान है यहाँ।” चंद्रभान ने कहा।

“क्या? क्या कहा तुमने?” दिग्विजय ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

चंद्रभान मुस्कराया, “जो भी तुमने सुना है, उचित ही सुना है दिग्विजय।”

अगले ही क्षण दिग्विजय को लगभग पाँच सौ योद्धाओं ने घेर लिया। उन सभी के हाथों में भाले थे और उनका सम्पूर्ण शरीर काले वस्त्र से ढका हुआ था।

“तुमने छल किया मेरे साथ!” दिग्विजय ने आश्चर्य से चंद्रभान की ओर देखा।

“हाँ, ऐसा ही कुछ किया है मैंने।” चंद्रभान कटाक्षमय स्वर में मुस्कराया।

दिग्विजय ने म्यान से अपनी तलवार खींच निकाली।

चंद्रभान ने साँस भरते हुए दिग्विजय की ओर देखा, “तुम तनिक अपने चारों ओर दृष्टि तो घुमाकर देख लो; इनकी संख्या पाँच सौ है, इसलिए मुझे लगता है कि तुम्हें शस्त्र रख देना चाहिए।”

यह देख दिग्विजय ने चंद्रभान की गर्दन पकड़ अपनी दायीं काँख में दबा ली। उसकी तलवार अब चंद्रभान के कंठ पर थी, “अब मुझे ऐसा नहीं लगता कि तुम्हारे सैनिक मुझे कोई क्षति पहुँचायेंगे।”

चंद्रभान खाँसते हुए बोला, “तुम्हें वाकई लगता है कि उन्हें मेरे प्राणों की परवाह है? मेरे जीवन से कहीं अधिक महत्वपूर्ण उनके लिए उनका अभियान है, उनकी दृष्टि में मेरे जीवन की कोई कीमत नहीं है।”

चंद्रभान ने उचित ही कहा था। काले वस्त्र धारण किये उन योद्धाओं में से एक ने भाले की लकड़ी से दिग्विजय के सर पर पीछे से वार किया। दिग्विजय चंद्रभान की गर्दन छोड़कर पीछे मुड़ा और उस योद्धा को भूमि पर ढकेल दिया।

वो भालाधारी योद्धा भूमि पर गिर पड़ा। उसके मुख को ढका वस्त्र हट गया। दिग्विजय उसका मुख देख स्तब्ध रह गया। यह एक गरुड़ का मुख था। वो भालाधारी भूमि से उठा और फिर से अपना मुख ढक लिया।

इस अवसर का लाभ उठाकर चंद्रभान ने पीछे से दिग्विजय के कंठ में सुई चुभो दी।

दिग्विजय ने मुड़कर चंद्रभान की गर्दन कसकर पकड़ ली, “कौन हो तुम लोग?”

“निःसंदेह चंद्रभान तो नहीं।” चंद्रभान ने खाँसते हुए उत्तर दिया।

अगले ही क्षण दिग्विजय के हाथ काँपने लगे। कदाचित् यह उस सुई का प्रभाव था। चंद्रभान ने उसे पीछे ढकेल दिया।

दिग्विजय अपने घुटनों के बल आ गया। उसने चंद्रभान की ओर देखा, “कौन हो तुम और मुझे यहाँ क्यों लाये हो?”

“जैसा कि मैं कह चुका हूँ, मैं चंद्रभान नहीं हूँ, मेरा नाम तक्षक है, जिसे वर्षों पूर्व नागलोक से निष्कासित कर दिया गया था।” चंद्रभान(तक्षक) ने अपना भेद खोला।

दिग्विजय भूमि पर गिर पड़ा। मूर्छित होने से पूर्व उसकी आँखें आश्चर्य से भरी हुई थीं।

तक्षक गरुड़ों की ओर मुड़ा, “मेरा कार्य संपन्न हुआ; जो राजकुमार नागलोक का उत्तराधिकारी है, अब तुम्हारे समक्ष है, अब तुम सबको नागलोक पर विजय पाने में मेरी सहायता करनी होगी।”

काले वस्त्र धारण किया हुआ एक व्यक्ति आगे आया। उसने तक्षक से प्रश्न किया, “तुम कहना क्या चाहते हो?”

“तुम कौन हो?” तक्षक ने पूछा।

“मेरा नाम जम्बाल है और मैं गरुड़ों का राजा हूँ और मुझे तो स्मरण नहीं कि मैंने ऐसा कोई वचन दिया था कि मैं नागों के विरुद्ध युद्ध में तुम्हारी सहायता करूँगा।” गरुड़ों के राजा ‘जम्बाल’ ने कहा।

“मैंने तुम्हारा प्रधान शत्रु तुम्हारे सुपुर्द किया है और इसके एवज में तुम्हारी सहायता चाहता हूँ... उन्होंने कहा था कि तुम मेरी सहायता करोगे।” तक्षक ने आश्चर्यभाव से कहा।

“तुम किसके विषय में बात कर रहे हो?” जम्बाल ने प्रश्न किया।

“मैं उनके विषय में बात कर रहा हूँ, जिन्होंने यह योजना बनायी है।” तक्षक ने कहा।

“तो बताओ, उनके बोले हुए शब्द थे क्या?” जम्बाल ने मुस्कुराते हुए प्रश्न किया।

“उन्होंने कहा कि नाग और गरुड़ शत्रु हैं, यदि मैं नागों के उत्तराधिकारी को उन्हें सौंप दूँ, तो मुझे उनकी सहायता प्राप्त हो सकती है।” तक्षक ने कहा।

जम्बाल कटाक्षमय स्वर में मुस्कुराया, “उन्होंने बस यही कहा न कि तुम्हें हमारी सहायता प्राप्त हो सकती है; किंतु इसका अर्थ यह तो नहीं कि हम नागों पर आक्रमण कर दें। गरुड़ होने का यह अर्थ नहीं है कि नाग हमारे शत्रु ही हैं... हमारी उनसे कोई शत्रुता नहीं है, उन्होंने कभी हमें कोई क्षति नहीं पहुँचाई, तो हम उन्हें क्यों कष्ट पहुँचायें?”

यह सुनकर तक्षक स्तब्ध रह गया, “तुम लोगों की नागों से कोई शत्रुता नहीं है, तो फिर नागों के उत्तराधिकारी को तुमने यहाँ लाने को क्यों कहा?”

जम्बाल तक्षक के निकट आया, “यह रहस्य तुम्हें कभी ज्ञात नहीं होगा।”

जम्बाल कुछ कदम पीछे हटा और अपने सैनिकों को आदेश दिया, “बंदी बना लो इसे।”

तक्षक कई भालों से घिर गया। वो चीखा, “नहीं नहीं, तुम मेरे साथ ऐसा नहीं कर सकते, यह छल है; मैंने तुम्हारी सहायता की है।”

“मुझे भलीभाँति ज्ञात है कि तुम किसका समर्थन करते हो तक्षक; हमारे वास्तविक शत्रु वहीं हैं।” जम्बाल ने तक्षक को घूरते हुए कहा।

तक्षक अपने घुटनों के बल झुक गया। उसने समर्पण के लिए अपने हाथ ऊपर कर लिए।

“तुम्हें और उस व्यक्ति को, दोनों को इस छल का परिणाम भोगना होगा।”

जम्बाल ने अपने एक सैनिक को संकेत किया। उस सैनिक ने तक्षक के सर पर वार कर उसे मूर्छित कर दिया।

“इसे ले जाकर कारागार में फेंक दो।” जम्बाल ने तक्षक के लिए आदेश सुनाया।

एक गरुड़ सैनिक जम्बाल के निकट आया, “इसका क्या करना है महामहिम?” वो दिग्विजय के विषय में बात कर रहा था।

“कुछ योद्धा शीघ्र ही इसे मुक्त कराने आयेंगे; हमारी संख्या केवल पाँच सौ है, निःसंदेह हम अधिक समय तक इसे नहीं रख सकते, इसलिए इस राजकुमार की मूर्छा टूटने से पूर्व, इसे भारी लोहे की बेड़ियों से बाँध दो... हमें भी छुपना होगा, ताकि कोई हम तक न पहुँच सके, मैं सहायता प्राप्त करने हेतु प्रस्थान कर रहा हूँ।” जम्बाल वहाँ से प्रस्थान कर गया।

शीघ्र ही वह एक घने वन में पहुँचा। उस वन में उसने स्वयं को ढका... काला वस्त्र उतारा और एक निश्चित दिशा की ओर पंख फैलाये उड़ चला।

11. द्रविड़ समाज

जम्बाल कई कोस तक उड़ता रहा। शीघ्र ही वह एक कबीले के निकट पहुँचा।

उस कबीले में एक हष्ट-पुष्ट शरीर वाला मनुष्य लकड़ी के सिंहासन पर बैठा था। उसके समक्ष सैकड़ों लोग खड़े थे। कदाचित् वो उस कबीले का सरदार था।

जम्बाल वहाँ पहुँचा और उस मनुष्य के समक्ष घुटनों के बल झुक गया। महाराज अलम्बुष की जय हो।”

वो मनुष्य अपने लकड़ी के सिंहासन से उठा और आदेश सुनाया, ‘एकांता’

कुछ क्षणों के उपरांत केवल दो ही लोग वहाँ उपस्थित थे, जम्बाल और राजा अलम्बुष।

“क्या सूचना है जम्बाल?” अलम्बुष ने प्रश्न किया।

“हमने अपनी योजना का प्रथम चरण पार कर लिया।” जम्बाल ने कहा।

“तो विदर्भ के युवराज को बंदी बनाने में सफल हुए तुम?” अलम्बुष ने पूछा।

“हाँ महामहिम, किंतु उसके विषय में एक और रहस्य ज्ञात हुआ है।”

“कैसा रहस्य?”

“तक्षक का कहना था कि वो नागलोक के सिंहासन का उत्तराधिकारी है... उसे ऐसा लगता था कि गरुड़ और नाग एक दूसरे के प्रधान शत्रु हैं और उस युवराज को यहाँ लाकर उसे गरुड़ों का समर्थन मिल जायेगा।” कहते हुए जम्बाल मुस्कुराया।

अलम्बुष ने सौंस भरते हुए कहा, “इन सब बातों का कोई महत्व नहीं है; हमें तक्षक को कमतर नहीं आँकना चाहिए, किंतु इस समय हमारे पास उससे कहीं अधिक महत्व के कार्य हैं।”

“मुझे ज्ञात है महामहिम, आपको अपना सम्मान वापस चाहिए, इसीलिए तो आप यह सब कर रहे हैं।” जम्बाल ने कहा।

“हाँ जम्बाल; तीन सौ वर्ष पूर्व आर्यावर्त के योद्धाओं ने हमें हमारी मातृभूमि छोड़ने पर ार्विवश किया था, अन्यथा गोदावरी नदी के पार का सम्पूर्ण दक्षिण आर्यावर्त हमारे नियंत्रण में था। किंतु हम द्रविड़ों ने भी अपनी मातृभूमि वापस लेने की सौगंध खायी थी। पिछले तीन सौ वर्ष से हमारे पूर्वज इस अवसर की प्रतीक्षा में थे और मैं उनका वो भाग्यवान वंशज हूँ, जिसे उनके स्वप्न को पूर्ण करने का अवसर प्राप्त हुआ है।” अलम्बुष ने विस्तार से कहा।

“और धीरे-धीरे हम आपके उस स्वप्न की ओर बढ़ रहे हैं।” जम्बाल मुस्कुराया।

“न हमने और न ही हमारे पूर्वजों में से ने किसी राजसी महल में निवास किया, उसके स्थान पर हमने अपना सम्पूर्ण अर्जित धन अपनी सेना बढ़ाने में लगाया और आज तीन सदियों से अधिक संघर्ष करने के उपरांत हमारे पास पूरी दो अक्षौहिणी सेना है, जिसे मैं सम्पूर्ण शस्त्र शिक्षण और भोजन की सुविधा प्रदान कर सकता हूँ; किंतु मैं फिर भी जानना चाहता हूँ कि क्या जिस योजना पर हम कार्य कर रहे हैं, वो उचित है?” अलम्बुष ने प्रश्न किया।

“आप चिंतित न हों महामहिम, जिस व्यक्ति ने यह योजना बनाई है, वो अपने वचन के पक्के हैं; यदि उन्होंने कहा है कि यह योजना कार्य करेगी, तो यह योजना अवश्य कार्य करेगी और यथोचित परिणाम भी देगी।” जम्बाल ने अलम्बुष को समझाने का प्रयत्न किया।

“ठीक है; हमारा अगला कदम क्या होगा?” अलम्बुष ने प्रश्न किया।

“उस युवराज दिग्विजय को मुक्त कराने के लिए तीन सहस्र योद्धाओं का दल सिंघल के लिए निकल चुका है।” जम्बाल ने कहा।

“हम्म... सागर को पार तो वह बड़ी सरलता से कर लेंगे, किंतु उससे पूर्व उन्हें मलय पर्वत की शृंखला पार करना होगा और यह उनके लिए सरल कार्य नहीं होगा, क्योंकि हमारे कुछ मित्र वहाँ उनकी प्रतीक्षा में होंगे।” अलम्बुष ने कहा।

“निःसंदेह महामहिम।” जम्बाल मुस्कुराया।

“तो अब हमें बस प्रतीक्षा करनी है... और हाँ, उस धूर्त नाग तक्षक पर अपनी दृष्टि बनाये रखना, वो यहाँ यदि यहाँ से निकल भागा तो हमारी योजना विफल कर सकता है।” अलम्बुष ने चेतावनी भरे स्वर में कहा।

“चिंतित मत होइये महामहिम, हम उसका ध्यान रखेंगे और उसके लिए मुझे यहाँ से प्रस्थान करना होगा।”

“ठीक है, तुम जा सकते हो, हम तुम्हारी सहायता के लिए शीघ्र ही कुछ सैनिक भेजते हैं।” अलम्बुष ने कहा।

जम्बाल वहाँ से प्रस्थान कर गया।

* * *

मेघवर्ण, चंद्रकेतु, सुर्जन और सुनंदा अपने तीन सहस्र योद्धाओं के साथ मलय पर्वत की शृंखला में पहुँच आये थे। वह सभी दो पहाड़ों के बीच के मार्ग से होकर गुजर रहे थे। अकस्मात् ही उनके मार्ग में तीन बड़े-बड़े पत्थर आ गये।

मेघवर्ण को यह देख आश्चर्य हुआ। “इतने दिनों से मौसम में तो कोई बदलाव नहीं आया, तो फिर यह कैसे हुआ?”

“इसका अर्थ है कि हमारा मार्ग अवरुद्ध करने हेतु किसी ने जानबूझकर इन पत्थरों को यहाँ पर फेंका है।” सुर्जन ने अनुमान लगाया।

“किंतु ऐसा कर कौन सकता है?” चंद्रकेतु ने उन पत्थरों की ओर देखा।

मेघवर्ण ने कुछ क्षण विचार कर अनुमान लगाया, “कदाचित् यहाँ के मूल निवासी।”

“किंतु हमें अपना समय व्यर्थ नहीं करना चाहिए और वैसे भी यहाँ के मूल निवासियों से झड़प करने का कोई कारण नहीं है हमारे पास।” सुर्जन ने सुझाव दिया।

मेघवर्ण ने क्षणभर सुनंदा की ओर देखा।

“तुमने उचित ही कहा सुर्जन, हमारे पास नष्ट करने को समय नहीं है; चंद्रकेतु, प्रदर्शन का समय है।” मेघवर्ण ने मुस्कुराकर उसकी ओर देखा।

चंद्रकेतु ने मेघवर्ण की ओर देखा। वो समझ गया कि मेघवर्ण उसे सुनंदा के मन पर प्रभाव छोड़ने का अवसर दे रहा है। हाथ में गदा उठाये वो अपने अश्व से उतरा। वह उन पत्थरों की ओर बढ़ा और उन पर भीषण वार किया।

वो बड़े-बड़े पत्थर, टुकड़ों में परिवर्तित हो गए। चंद्रकेतु ने मुड़कर सुनंदा की ओर देखा और मुस्कुराया।

“मैं तंग आ गयी हूँ इससे।” सुनंदा भी दिखावे के लिए मुस्कुरा दी।

किंतु अगले ही क्षण किसी ने चंद्रकेतु की पीठ पर भीषण वार किया। वो दस गज दूर जा

गिरा। उसने उठकर आपने सामने खड़े जीव की ओर देखा।

वह जीव सामान्य मानव से डेढ़ गुना आकर का था। उसके नेत्रों में लालिमा छाई हुई थी, उसका मुख एक वानर के समान था, उसके लंबे एवं नुकीले दाँत थे, हाथों के नाखून लंबे थे और बड़े बड़े गजनुमा पाँव भी थे। मुख, हथेली और पाँव के पंजों को छोड़कर उस विशालकाय जीव का सम्पूर्ण शरीर श्वेत केशों से ढका हुआ था। वह जीव चंद्रकेतु पर दहाड़ पड़ा।

चंद्रकेतु उठ खड़ा हुआ और सावधानी से उस जीव की ओर देखा।

“यह तो एक यति है, हिमालय की पहाड़ियों में निवास करने वाले हिममानव; यह यहाँ कैसे आ गए?” सुर्जन ने आश्चर्य से कहा।

मेघवर्ण मुस्कुराया। “चिंतित मत हो सुर्जन, हमने इन हिममानवों के विषय में सुन रखा है, चंद्रकेतु उसे अकेला ही सँभाल लेगा।”

उस हिममानव ने एक विशाल पत्थर उठाया और चंद्रकेतु की ओर फेंका। चंद्रकेतु ने अपनी गदा उठाई और एक ही वार से उस पत्थर को टुकड़ों में विभाजित कर दिया। वह हिममानव झल्लाहट में चंद्रकेतु पर चीखा।

उस यति ने चंद्रकेतु की ओर लम्बी छलाँग लगायी। स्वयं को बचाने के लिए वह एक ओर हट गया। चंद्रकेतु और यति, दोनों ही एक बार फिर एक-दूसरे की ओर दौड़े। इस बार चंद्रकेतु ने अद्भुत चपलता का प्रदर्शन किया और उस हिममानव की छाती पर वारकर उसे भूमि पर गिरा दिया। वह यति भूमि से उठा, क्रोध से चंद्रकेतु पर दहाड़ा और उसकी ओर दौड़ा। चंद्रकेतु ने एक बार फिर गदा से उस पर वार करने का प्रयत्न किया, किंतु उस यती ने उसकी गदा के हथके को पकड़ा और उसे पीछे धकेल दिया। चंद्रकेतु भूमि पर गिर पड़ा, उसकी गदा छिटककर दूर जा गिरी। यती उस पर कूदा, चंद्रकेतु ने एक ओर हटकर स्वयं को बचाया।

“मुझे लगता है कि उसे सहायता की आवश्यकता है।” सुर्जन ने कहा।

मेघवर्ण मुस्कुराया, “तुम अभी उसके बल से अपरिचित हो सुर्जन; वो केवल एक गदाधारी नहीं है। बस देखते जाओ।”

उस यति ने चंद्रकेतु के मुख पर वार करने का प्रयत्न किया, किंतु उसने सफलतापूर्वक उन पैने नाखूनों से अपना बचाव किया और उस यति का दायाँ हाथ कसकर पकड़ लिया। बिना कोई क्षण गवाँये चंद्रकेतु ने अद्भुत चपलता का प्रदर्शन किया और उस यति का दायाँ हाथ मरोड़ते हुए उसके पीछे गया। वह हिममानव पीड़ा से चीख पड़ा।

अगला दृश्य सभी उपस्थित जनों के लिए आश्चर्यजनक था। चंद्रकेतु के लिए भी यह पहला ही अनुभव था। उसने अपने सम्पूर्ण बल का प्रयोग कर उस यति को पूरा उठा दिया। इसके उपरांत उसने उस यति को स्वयं से लगभग बीस गज की दूरी पर फेंक दिया। उस दृश्य के साक्षी बने सभी उपस्थित-जन विस्मित रह गये।

“महाबली चंद्रकेतु।” मेघवर्ण ने गर्व से कहा।

वह यति उठकर चंद्रकेतु पर चीख पड़ा। इसके उपरांत वह जीव वहाँ से पलायन कर गया।

“अद्भुत बल का प्रदर्शन।” सुर्जन ने उसकी प्रशंसा की।

चंद्रकेतु कुछ कदम पीछे हटकर अपने अश्व पर आरूढ़ हो गया, “अब हमें प्रस्थान करना चाहिए।” उसने सुनंदा की ओर देखते हुए कहा।

सुनंदा भी उसकी ओर देख झूठ-मूठ का मुस्कुरा दी।

मेघवर्ण ने आकाश की ओर देखा, “सूर्यास्त होने को है, हमने अभी-अभी एक हिममानव का सामना किया है, उनकी संख्या अधिक भी हो सकती है, इसलिए रात्रि में यात्रा करना उचित नहीं है।”

“मैं सहमत हूँ।” सुर्जन ने कहा।

“हम यहाँ से दो कोस पीछे जायेंगे और वहीं अपना शिविर लगायेंगे।” मेघवर्ण ने आदेश देते हुए अपना अश्व घुमाया।

* * *

रात्रि का समय था। सुर्जन जलती हुई लकड़ियों के निकट बैठा था। अग्नि की ओर देखते हुए वह गहन विचारों में खोया हुआ था।

मेघवर्ण आकर उसके निकट बैठ गया। “इस समय तुम क्या विचार करने लग गए?”

“कुछ विशेष नहीं, किंतु कुछ बातें आश्चर्य में डालती हैं।” सुर्जन ने कहा।

“कहना क्या चाहते हो?”

“मैं यतियों के विषय में कह रहा हूँ।”

“वह तो केवल एक वन्य-जीव था, उसके विषय में चिंतित क्या होना?” मेघवर्ण ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“मैं तुमसे अभी भी कह रहा हूँ मेघवर्ण, यह चिंता का ही विषय है, क्योंकि यति हिमालय की पहाड़ियों में देखे जाते हैं, और इस क्षेत्र में उनका पाया जाना आश्चर्यजनक तो है ही, क्योंकि यहाँ हिमालय जितनी ठण्ड तो नहीं है।” सुर्जन ने चेतावनी भरे स्वर में कहा।

“किंतु यहाँ इतनी ठण्ड तो है ही कि ऐसे हिममानव सरलता से जीवित रह सकते हैं।” मेघवर्ण ने अनुमान लगाया।

“हाँ, संभावनायें तो बहुत सारी हैं... जानते हो, इन हिममानवों ने मुझे एक पौराणिक कथा का स्मरण करा दिया।” सुर्जन ने कहा।

“कैसी पौराणिक कथा?” मेघवर्ण ने प्रश्न किया।

“तुमने द्रविड़ों के विषय में सुना है?” सुर्जन ने प्रश्न किया।

“हाँ, सुना है मैंने उनके विषय में; उनके विषय में यह भी सुन रखा है, कि गोदावरी नदी के पार का सम्पूर्ण दक्षिणी आर्यावर्त उनके अधिकार में था, किंतु आर्यों ने तीन सौ वर्ष पूर्व उन पर चढ़ाई की और उन्हें उनकी मातृभूमि से पलायन को विवश कर दिया, तबसे किसी ने न उन्हें देखा, न उनके विषय में सुना।” मेघवर्ण ने कहा।

“एक और तथ्य है उनके विषय में जानने को... यह हिममानव उन द्रविड़ों के दास भी थे और रक्षक भी।” सुर्जन ने कहा।

मेघवर्ण ने कुछ क्षण विचार कर कहा, “तो तुम्हारा कहने का अर्थ यह है कि तीन सौ वर्षों के उपरांत द्रविड़ लौट आये हैं?”

“कदाचित् हाँ... मैं तो बस संभावनाओं पर विचार कर रहा था, क्योंकि मातृभूमि से प्रिय तो कुछ होता ही नहीं।” सुर्जन ने अनुमान लगाया।

मेघवर्ण ने चिंताजनक स्वर में कहा, “तुम एक विद्वान हो सुर्जन और मैं तुम्हारे इस तर्क से सहमत हूँ; इस क्षेत्र में एक यति से मुठभेड़ होना महज एक संयोग नहीं हो सकता।”

“प्रश्न तो बहुत सारे हैं, कि इस वन्य जीव को यहाँ लाया कौन? हम तो यह भी नहीं जानते

कि वह एकमात्र यति था या उनकी संख्या और भी है। यदि हम आगे बढ़ें और ऐसे और भी हिममानवों ने हमारा मार्ग रोका, तो परिस्थिति हमारे विरुद्ध हो सकती है। सागर पार करने से पूर्व हमें अपने योद्धाओं को खोना नहीं चाहिए, इसलिए इस विषय में हमें कुछ न कुछ करना ही होगा।” सुर्जन ने सुझाव दिया।

मेघवर्ण उठ खड़ा हुआ। “हमारे पास दूसरा मार्ग चुनने का समय और विकल्प नहीं है सुर्जन; हमें आने वाले संभावित संकट का सामना करना ही पड़ेगा।”

“किंतु क्यों? गुरुदेव ने हमें मलय पर्वत पार करने को ही क्यों कहा? सागर तट पर पहुँचने के तो और भी मार्ग थे।” सुर्जन ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“हाँ, मैंने इस विषय पर गुरुदेव से विचार-विमर्श किया था। उन्होंने कहा था कि यदि हमने दूसरा मार्ग चुना, तो तीन सहस्र योद्धाओं के इस दल की सूचना बड़ी ही सरलता से विदर्भ तक पहुँच जायेगी, क्योंकि जो भी राज्य हमारे मार्ग में आता, उन सभी ने विदर्भ राज्य से संधि की हुई है और तुम तो जानते ही हो कि वो राजा जयवर्धन हमारी खोज में हैं, इसलिए मलय पर्वत पार करना सागर तट पर पहुँचने का एकमात्र सुरक्षित मार्ग है।” मेघवर्ण ने विस्तार से कहा।

सुर्जन ने हल्की साँस भरी, “तो फिर ठीक है, हमें आने वाले संभावित संकट के लिये सज्ज रहना होगा।”

“हाँ, वो तो है।” मेघवर्ण मुस्कुराया।

* * *

अगले दिन का सूर्य शीघ्र ही उदय हुआ। तीनों योद्धाओं ने सुनंदा और तीन सहस्र योद्धाओं के साथ अपनी यात्रा पुनः आरंभ की। वह सभी मलय पर्वत शृंखला से होकर गुजर रहे थे। उनके मार्ग के दायें और बायें भाग में केवल पर्वत ही पर्वत थे।

कदाचित् सुर्जन का अनुमान उचित ही था। शीघ्र ही एक विशालकाय पत्थर आकाश मार्ग से उनकी ओर आता दिखा... किंतु इस बार वे सभी सजग थे। मेघवर्ण ने अपना धनुष उठाया और बाण संधान किया।

वो बाण आकाश में वायु वेग से उड़ा और उस बाधा को क्षणभर में दूर कर दिया। वो विशालकाय पत्थर छोटे-छोटे टुकड़ों में बँटकर भूमि पर गिर गया।

“मुझे लगता है कि केवल हम तीनों को ही आगे बढ़ना चाहिए, जब आगे का मार्ग सुरक्षित दिखेगा, तो सुनंदा और हमारे अन्य योद्धा हमारे पीछे आरेंगे।” मेघवर्ण ने अपने अश्व की लगाम खींची। सुर्जन और चंद्रकेतु उसके पीछे हो लिए। सुनंदा और तीन सहस्र योद्धाओं को पीछे छोड़ वो तीनों लगभग सौ गज आगे-आगे आये।

अगले ही क्षण दायें और बायें पहाड़ से दो विशाल पत्थर आये। उनकी गति पहले से कहीं अधिक तीव्र थी। सुर्जन और चंद्रकेतु अपना बचाव करते हुए अपने अश्वों से गिर गये, जिससे उन्हें हल्के घाव लगे। मेघवर्ण उन दोनों के मध्य में में खड़ा था। उसने अपने अश्व से छलाँग लगायी और सफलतापूर्वक सुरक्षित भूमि पर आ गया। उसने पहाड़ों की ओर देखा। यतियों की गतिविधियाँ आश्चर्यजनक थीं। दायें पहाड़ पर उसने दो वृक्षों को देखा, जो एक-दूसरे से मोटी रस्सी द्वारा बाँधे गए थे। उन दोनों वृक्षों को एक-एक यति ने मजबूती से पकड़ रखा था, और तीसरे यति ने एक विशालकाय पत्थर उन दो पेड़ों को जोड़ने वाली रस्सी के सामने रखा। उन दो वृक्षों का उपयोग गुलेल की भाँति हो रहा था। बायें पहाड़ पर भी तीन यतियों को दल कुछ ऐसा ही कर रहा था।

दो और विशालकाय पत्थर मेघवर्ण के दायीं और बायीं पहाड़ी से एक बार फिर आकाश में उठे। उन पत्थरों की गति बहुत अधिक तीव्र थी, किंतु मेघवर्ण ऐसी बाधाओं का सामना करने हेतु चपल और सामर्थ्यवान था। उसने दायीं और बायीं, दोनों दिशा में एक-एक बाण छोड़े, जिन्होंने उन पत्थरों को नष्ट कर दिया।

भूमि पर गिरे सुर्जन के मन में विचार आया, “काश इसकी भाँति मैं भी यहाँ अपने पूर्ण बल का उपयोग कर पाता।”

यह देख यति दहाड़ पड़े। उन्होंने कई और पत्थर उठाये और मेघवर्ण के स्थान पर दायीं और बायीं पहाड़ी से यात्रा मार्ग पर फेंकने आरंभ किये। इससे उन तीन योद्धाओं और उनके तीन सहस्र सैनिकों के मध्य एक बड़ा अवरोध उत्पन्न हो गया। तब तक सुर्जन और चंद्रकेतु भी स्थिर खड़े हो चुके थे।

“अब ये लोग क्या करने वाले हैं?” सुर्जन ने अनुमान लगाने का प्रयत्न किया।

उसके प्रश्न का उत्तर शीघ्र ही सामने आया। उनके और उनके सैनिकों के मध्य का मार्ग अवरुद्ध करने के उपरांत, दायीं और बायीं पहाड़ी से सौ से भी अधिक यति, सुनंदा और उन तीन सहस्र योद्धाओं की ओर दौड़े।

सुर्जन को अपने नेत्रों पर विश्वास ही नहीं हुआ। “हे ईश्वर! यह तो प्रशिक्षित योद्धाओं की भाँति लड़ रहे हैं।”

“सुनंदा...!” चीखते हुए चंद्रकेतु ने अपनी गदा उठाई और उन पत्थरों के बने अवरोध की ओर दौड़ा। उसके कुछ ही भयंकर वारों ने उन पत्थरों के अवरोध को तहस-नहस कर दिया।

मेघवर्ण और चंद्रकेतु अपने लोगों की रक्षा को दौड़े। वहीं सुर्जन की आँखें किसी को खोज रही थीं, ‘इनका नेतृत्व कौन कर रहा है?’

उसे अपने प्रश्न का उत्तर शीघ्र ही प्राप्त हुआ। उसने दायें पहाड़ पर एक सामान्य मनुष्य के आकार वाली छाया देखी। उस छाया का पीछा करते हुए वह उस पहाड़ पर चढ़ गया।

वहीं मेघवर्ण और चंद्रकेतु अपने लोगों की रक्षा हेतु, यतियों से युद्ध में व्यस्त हो गये। उन हिममानवों ने कुछ ही क्षणों में कई डकैत और गंधर्व सैनिकों के प्राण हर लिए। एक-एक यति अपने लंबे पैने नाखूनों से कुछ ही क्षणों में तीन से चार सैनिकों के सर काट ले रहा था। उन सबने डकैत सेना में भगदड़ सी मचा दी।

मेघवर्ण ने यतियों के वध हेतु भयंकर बाणों की वर्षा आरंभ की। अकस्मात् ही एक यति ने सुनंदा पर वार करने का प्रयत्न किया। वो अपने बचाव के लिए अश्व से कूद गयी। यह देख चंद्रकेतु का क्रोध सीमा पार कर गया। उसने आकाश में एक ऊँची छलाँग लगायी और उस यति के मस्तक पर भीषण वार किया। उस यति का मस्तक एक तरबूज की भाँति फट पड़ा।

मेघवर्ण भी अपने भयंकर बाणों का लक्ष्य केवल यतियों के मस्तक पर कर रहा था। अपने साथियों को गिरते देख उन हिममानवों के मन में भय व्याप्त होने लगा। वो अपने प्राण बचाने के लिए वापस पहाड़ों पर चढ़ने लगे। पचास से भी अधिक यतियों के शव मार्ग में पड़े थे।

चंद्रकेतु, सुनंदा की ओर बढ़ा और उसे उठाया, “तुम ठीक हो?”

“हाँ, मैं स्वस्थ हूँ।” उसने कहा, किंतु उसका कंधा स्पष्ट रूप से घायल दिखाई दे रहा था।

“तुम घायल हो, मेरे साथ आओ।” चंद्रकेतु ने उसका हाथ पकड़ा।

“नहीं नहीं, मैं स्वस्थ हूँ।” सुनंदा ने अपना हाथ उससे वापस खींचने का प्रयत्न किया।

“अब बस भी करो, इस बार मैं तुम्हारी एक नहीं सुनने वाला” चंद्रकेतु उसे अपने साथ ले गया। उसने उसे एक सुरक्षित स्थान पर बिठाया और अपने एक सैनिक को आदेश दिया, “पहले इसके घावों का उपचार करो।”

इसके उपरांत चंद्रकेतु मेघवर्ण की ओर बढ़ा।

मेघवर्ण अपने योद्धाओं की ओर देख रहा था, “हमने अपने बहुत सारे योद्धाओं को खो दिया।”

“हाँ, हानि तो हमें ही अधिक हुई।” चंद्रकेतु ने हाँफते हुए उसका समर्थन किया। उसने इधर-उधर अपनी दृष्टि घुमाई, “सुर्जन, वो कहाँ हैं?”

मेघवर्ण ने भी चारों दिशाओं में दृष्टि घुमाई, “नहीं नहीं, हम उसे खो नहीं सकते; तुम जाओ और उसकी खोज करो चंद्रकेतु, वो संकट में हो सकता है, मैं अपने योद्धाओं का ध्यान रखूँगा।”

वहीं सुर्जन उस परछाई का पीछा करते हुए पर्वत पर चढ़ा जा रहा था और शीघ्र ही वह उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ वो व्यक्ति खड़ा था। काले वस्त्र धारण किये उस व्यक्ति के समक्ष दस यति झुके हुए थे। उसका मुख, ढके होने के कारण दिखाई नहीं दे रहा था।

“तो यह तुम हो, जिसने हमारा मार्ग अवरुद्ध किया?” सुर्जन अगाध वन के वनराज की भाँति दहाड़ा। उसने म्यान से तलवार खींच निकाली।

उस व्यक्ति के साथ-साथ यतियों की दृष्टि भी उसकी ओर गयी। सुर्जन अपने हाथ में नंगी तलवार लिए उनकी ओर दौड़ा। उस व्यक्ति ने अपने नेत्रों से यतियों को संकेत किया। वह सभी दस यति सुर्जन की ओर दौड़ पड़े। सुर्जन भी उनकी ओर दौड़ा चला आ रहा था, किंतु उन पर वार करने के स्थान पर वो एक यति के बड़े-बड़े पैरों के बीच से निकल गया, ताकि वो यति उसे घेर न सकें। किंतु जिस उद्देश्य से उसने यह किया, उसमें वह सफल न हो सका, क्योंकि जब उसने उठकर सामने देखा, तो वह व्यक्ति वहाँ उपस्थित नहीं था।

“वो व्यक्ति कहाँ गया?” सुर्जन झल्लाहट में चीख पड़ा।

अगले ही क्षण उसकी पीठ पर पैने नाखूनों का वार हुआ। वो भूमि पर गिर पड़ा। उसके घाव स्वतः ही भर गए।

“मेघवर्ण और चंद्रकेतु तो यहाँ हैं नहीं, फिर अपनी वास्तविक शक्ति के प्रदर्शन में कोई हानि नहीं है।” विचार करते हुए सुर्जन भूमि से उठा।

उन दसों यतियों ने सुर्जन को चारों दिशाओं से घेर लिया।

“बहुत समय के उपरांत ऐसा दुर्लभ अवसर प्राप्त हुआ है।” सुर्जन मुस्कराया। उसने अपनी ओर आने वाले पैने नाखूनों के प्रहार से बचने के लिए हवा में छलाँग लगायी।

छलाँग लगाते हुए उसने हवा में ही तलवार एक प्रत्यावर्ती बाण की भाँति घुमाकर फेंकी, जो तीन यतियों का शीश काटते हुए उसके हाथ में लौट आयी। तीन यतियों के गिरने से घेरे में जो रिक्त स्थान बना, उससे सुर्जन घेरे से बाहर आ गया।

शेष यति सुर्जन पर दहाड़े। एक यति ने सुर्जन की ओर एक लंबी छलाँग लगायी। सुर्जन उसके नीचे अपनी ओर आने की प्रतीक्षा में था। जब वो यति भूमि से एक हाथ ऊपर था, सुर्जन झुककर उस यति की टाँगों के बीच के स्थान का प्रयोग करते हुए उस विशालकाय जंतु के पीछे गया और जैसे ही उस महाकाय जंतु के कदम भूमि पर पड़े, सुर्जन ने अद्भुत चपलता का प्रदर्शन करते हुए पीछे से तलवार उस यति के कंठ से पार कर दी। अपने कंठ से रक्त का फव्वारा छोड़ते हुए वो

यति भूमि पर गिर पड़ा।

यह देख शेष हिममानव सुर्जन की ओर दौड़े, किंतु जो उनके समक्ष खड़ा था, वो असुरों का महानायक असुरेश्वर दुर्भीक्ष था, जिससे भयंकर योद्धा समस्त आर्यावर्त में नहीं था। शीघ्र ही सारे के सारे यति भूमि पर गिरे हुए थे। छह कटे मस्तक भूमि पर पड़े थे, साथ ही साथ दुर्भीक्ष ने शेष यतियों के शरीर से दो कलेजे और दो हृदय खींचकर भूमि पर फेंक दिए थे।

सुर्जन की ओर देख कोई भी केवल एक ही अनुमान लगा सकता था, जैसे वो किसी रक्त के कुण्ड में स्नान करके आया हो।

‘इन जंतुओं का यही अंत होना था, अब मुझे नीचे जाना होगा... वो लोग मुझे खोज रहे होंगे’ सुर्जन पर्वत से नीचे उतरने लगा।

वहीं चंद्रकेतु, जो सुर्जन की खोज में था, उसे अपनी ओर आते देख स्तब्ध रह गया। उसका पूरा शरीर रक्त से सना हुआ था।

सुर्जन के निकट आते ही चंद्रकेतु ने उससे चिंताजनक स्वर में प्रश्न किया, “यह तुम्हें क्या हुआ सुर्जन?”

सुर्जन मुस्कुराया, “चिंता का कोई विषय नहीं है। यह रक्त उन यतियों का है।”

“ओह! वाह क्या बात है?” चंद्रकेतु ने आश्चर्य में उसकी प्रशंसा की।

वो दोनों मेघवर्ण की ओर बढ़ चले, जो अपने योद्धाओं की सुरक्षा में लीन था। सुर्जन के शरीर को रक्त से सना देख मेघवर्ण को भी आश्चर्य हुआ।

“कुछ विशेष नहीं, मैंने उनमें से तीन जंतुओं को मार गिराया।” सुर्जन हाँफते हुए पत्थर पर बैठ गया।

“तुम थे कहाँ?” मेघवर्ण ने प्रश्न किया।

सुर्जन पत्थर से उठा और कहना आरंभ किया, “तुमने यह तो देखा ही होगा कि यतियों ने किस परिपक्व योजना के साथ हम पर वार किया... वन्य जीव जंतु ऐसा कैसे कर सकते हैं; मैं उस व्यक्ति की खोज में था, जो उन्हें नियंत्रित कर रहा था। और मेरा अनुमान सही ही था; मैंने उस परछाई का पीछा किया जो हिममानवों को नियंत्रित कर रही थी। किंतु जब मैं वहाँ पहुँचा तो उस व्यक्ति ने कुछ यतियों को मेरी ओर भेजा और स्वयं पलायन कर गया। मैं उसका मुख तक नहीं देख पाया।”

“वाह! सुर्जन तो बड़े वीर निकलो।” चंद्रकेतु ने उसकी प्रशंसा की।

सुर्जन ने सामने पड़े यतियों के शव की ओर संकेत कर कहा, “तुम दोनों जब इतने सारे यतियों का वध कर सकते हो, तो क्या मैं तीन यतियों को भी नहीं गिरा सकता?”

“हाँ, वो भी है....।”

मेघवर्ण ने साँस भरते अपने योद्धाओं की ओर देखा, “तुमने संतोषजनक प्रयत्न किया सुर्जन, किंतु फिर भी हमने अपने बहुत साथियों को खोया है।”

‘कितने?’ सुर्जन में प्रश्न किया।

“कदाचित् तीन सौ से भी अधिका।” मेघवर्ण ने कहा।

“मेरा सुझाव है कि हमें यह स्थान शीघ्र से शीघ्र छोड़ देना चाहिए।” सुर्जन ने कहा।

यह सुनकर मेघवर्ण ने आश्चर्य से प्रश्न किया, “यह क्या कह रहे हो, सुर्जन! हमारे कई योद्धा घायल हैं और यदि हम उनके घावों को भूल भी जायें, तो हमारे जिन योद्धाओं ने वीरगति प्राप्त की

हैं, उनकी अंत्येष्टि पर उनका अधिकार भी तो है।”

“हमारे पास शोक का समय नहीं है मेघवर्ण; जितनी शीघ्र हो सके, हमें यहाँ से निकलना होगा, क्योंकि हमें इन हिममानवों की वास्तविक संख्या का ज्ञान नहीं है। वो लौट भी सकते हैं। हम नहीं जानते कि कब और कैसे वो हम पर आक्रमण करेंगे... रात्रि में आक्रमण करेंगे या फिर दिन में आक्रमण करेंगे, इसलिए आज संध्या से पूर्व हमें मलय पर्वत के पार जाना होगा और अब हम अपने और साथियों को खोने की स्थिति में नहीं हैं... आशा है तुम समझ रहे होगे।” सुर्जन ने अपना मत रखा।

यह सुनकर मेघवर्ण ने तत्काल ही एक निर्णय लिया, “तुम उचित कह रहे हो सुर्जन; हमारे पास शोक मनाने का अधिक समय नहीं है, इसलिए जो भी करना है शीघ्रता से करना होगा... तुम दोनों मेरे साथ आओ।”

शीघ्र ही लगभग तीन सौ चिताओं की व्यवस्था की गयी और डकैत और गंधर्व योद्धाओं को शीघ्रता से चिता पर लिटाकर जला दिया गया।

इसके उपरांत मेघवर्ण, चंद्रकेतु, सुर्जन और सुनंदा शेष डकैत और गंधर्व योद्धाओं के साथ आगे बढ़ चले।

12. रहस्य बाहर आये

सागर पार सिंघल की भूमि

दिग्विजय की चेतना लौटी। उसने स्वयं को मजबूत भारी बेड़ियों में जकड़ा हुआ पाया। उसे एक कक्ष में रखा गया था, जहाँ प्रकाश के लिए मात्र एक छोटा सा रेशनदान था।

दिग्विजय ने उन बेड़ियों को तोड़ने का प्रयत्न किया, किंतु विफल हुआ। काफी समय प्रयत्न करने के उपरांत उसने गहरी साँस ली और हाँफते हुए थककर बैठ गया।

कुछ क्षणों उपरांत उस कक्ष का द्वार खुला। एक गरुड़ उस कक्ष में भोजन की थाल लेकर आया। उसने दिग्विजय के समक्ष भोजन की थाल रखी और जाने लगा।

‘रुको!’ दिग्विजय चीखा।

वह गरुड़ दिग्विजय की ओर मुड़ा।

“क्यों लाये हो तुम लोग मुझे यहाँ?” दिग्विजय ने झल्लाहट में प्रश्न किया।

उस गरुड़ ने क्षणभर दिग्विजय की ओर देखा और बिना कुछ कहे वहाँ से प्रस्थान कर गया।

“रुको! मुझे मेरे प्रश्नों के उत्तर चाहिए!” दिग्विजय चीखा।

“चीखो मत, मैं विश्राम कर रहा हूँ।” उसके दायीं ओर से एक स्वर सुनाई दिया।

दिग्विजय ने अपनी दायीं ओर देखा। एक व्यक्ति कमबल ओढ़े लेटा हुआ था। उसके दायें पाँव से बँधी बेड़ियाँ दायीं ओर की दीवार के कोने से बँधी हुई थीं।

‘मैंने तो पहले इस बार ध्यान ही नहीं दिया।’ विचार करते हुए दिग्विजय ने उससे प्रश्न किया, “कौन हो तुम?”

उस व्यक्ति ने कोई उत्तर नहीं दिया। दिग्विजय उस पर चीख पड़ा, “मैंने पूछा कौन हो तुम?”

वह व्यक्ति अपना कमबल हटाकर उठा और दिग्विजय को क्रोध से घूरा। यह कोई और नहीं, तक्षक ही था।

‘चंद्रभाना’ दिग्विजय ने क्रोध में भारी बेड़ियों को तोड़ने का प्रयत्न किया।

“चंद्रभान? मुझे जहाँ तक स्मरण है, मैं तुम्हें बता चुका हूँ कि मैं तक्षक हूँ।” तक्षक ने क्रोध में कहा।

“तुमने छल किया मेरे साथ और इसके दण्ड स्वरूप मैं तुम्हारे प्राण ले लूँगा।” दिग्विजय उस पर चीखा।

“हाँ, मैंने तुम्हारे साथ छल किया; किंतु वो तुम ही हो, जिसके कारण मैं यहाँ फँसकर रह गया हूँ।” तक्षक ने भी क्रोध में कहा।

दिग्विजय लगातार उन बेड़ियों को तोड़ने का प्रयत्न कर रहा था।

“यह व्यर्थ का प्रयत्न करना बंद करो, मूर्ख... इन भारी लोहे की बेड़ियों को तोड़ना संभव नहीं है, इसलिए शांत हो जाओ... वैसे भी मेरी तुमसे कोई निजी शत्रुता नहीं है।” तक्षक ने झल्लाहट भरे स्वर में कहा।

“तो तुमने यह सब किया क्यों?” दिग्विजय अभी भी क्रोधित था।

“अच्छा ठीक है, शांत हो जाओ... इसका भी एक कारण है; वैसे भी केवल तुम्हीं नहीं, मैं भी

आखेट ही बना हूँ इन लोगों का” तक्षक ने कहा।

दिग्विजय ने अपने क्रोध को नियंत्रित करने का प्रयत्न किया, “तुम विश्वास के योग्य तो नहीं हो, किंतु मेरे पास और कोई विकल्प भी तो नहीं है; बताओ, क्यों लाये हो मुझे यहाँ और वो सौ स्त्री योद्धा कहाँ हैं?”

“उनका तो कभी अपहरण हुआ ही नहीं था।” तक्षक ने कहा।

“अपहरण नहीं हुआ था! तुम कहना क्या चाहते हो?” दिग्विजय ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“हाँ, उस समय वो सभी बस उस स्थान से चली गयी थीं... हमने बस तीन चार मृत शव लिए और उन्हें सुनंदा की स्त्री योद्धाओं की भाँति वस्त्र पहनाकर तुम्हारे सामने फेंक दिया; वह एक चाल थी तुम्हें यहाँ लाने की।” तक्षक ने कहा।

“और यह पूरी योजना थी किसकी?”

“उनका नाम अखण्ड था।” तक्षक ने कहा।

दिग्विजय वह नाम सुनकर स्तब्ध रह गया, किंतु अगले ही क्षण उसे भान हुआ, “ओह! मैं समझा, तुम मुझे उनके विरुद्ध भड़काने का प्रयत्न कर रहे हो।”

“मैं ऐसा क्यों करूँगा? मैं तो यह भी नहीं जानता कि तुम उन्हें जानते भी हो या नहीं और यदि इस योजना में वो सम्मिलित नहीं होते तो मुझे यह कैसे ज्ञात होता कि तुम नागलोक के सिंहासन के उत्तराधिकारी हो और अपने पूर्व जन्म में तुम नागों की रानी कनिष्का के पुत्र थे।” तक्षक ने दिग्विजय की ओर देखकर कहा।

“क्या पता यह सब भी तुम्हारा बुना गया एक झूठ हो... मुझे अपने पूर्व जन्म की कोई बात स्मरण नहीं, किंतु इस कनिष्का शब्द ने मुझे तुम पर विश्वास करने को विवश कर दिया और तुमने इसका भरपूर लाभ उठाया।”

“मैं यहाँ तुम्हारे साथ बंदी बना हुआ हूँ, मुझे तो इसमें अपना कोई लाभ दिखाई नहीं देता।” तक्षक कटाक्षमय स्वर में हँसा।

दिग्विजय ने साँस भरी। कुछ क्षण विचार किया और तक्षक की ओर देखा, “अच्छा ठीक है, बताओ मुझे पूरी कथा।”

तक्षक ने कहना आरंभ किया, “मेरा नाम तक्षक है; दो सौ वर्ष पूर्व मैं नागलोक का अधिपति था।”

“एक क्षण... क्या कहा तुमने? दो सौ वर्ष पूर्व?” दिग्विजय ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“हम इच्छाधारी नाग हैं; यदि हमारा वध न किया जाए तो हम सहस्रों वर्षों तक जीवित रह सकते हैं।” तक्षक ने कहा।

“ओह! हाँ, तुम जैसे जंतुओं के विषय में सुना है मैंने।”

तक्षक को क्रोध आ गया। “हम जंतु नहीं हैं, हम मानवों से बेहतर कार्य और विचार करने की क्षमता रखते हैं।”

“हाँ ठीक है, तुम अपनी कथा जारी रखो।”

तक्षक ने क्षण भर के लिए अपने माथे पर हाथ रखा, “तुमने तो बहाव ही बिगाड़ दिया; तो कहाँ था मैं?”

“तुम कह रहे थे कि दो सौ वर्ष पूर्व तुम नागलोक के राजा थे।” दिग्विजय ने उसे स्मरण कराया।

“हाँ, वो तो सत्य है ही कि दो सौ वर्ष पूर्व नागलोक का राजा मैं था, किंतु तभी एक द्रोही विषंधर सामने आया... ये विषंधर कोई और नहीं तुम्हारी माता कनिष्का का पिता था। उसने मेरी प्रजा को मेरे विरुद्ध भड़काना आरंभ कर दिया। उसने कई नाग योद्धाओं के साथ मिलकर विद्रोह कर दिया और मुझे सिंहासन छोड़ने पर विवश होना पड़ा। मैंने नागलोक छोड़ दिया और अपने परिवार के साथ खाण्डवप्रस्थ के घने वनों में शरण ली, किंतु उस द्रोही विषंधर को तब भी चैन न मिला। जब उसे यह ज्ञात हुआ कि मैं खाण्डवप्रस्थ में हूँ, तो केवल मेरा अपमान करने के लिए उसने नागलोक में एक नियम बनाया कि जिन अपराधियों को नागलोक से निष्काशित किया जायेगा, उन्हें खाण्डवप्रस्थ में शरण लेनी होगी। कुछ ही वर्षों में उसने सहस्रों नागों को खाण्डवप्रस्थ के वनों में भेज दिया। वह मेरे जीवन के सबसे कठिन क्षणों में से एक था। हम अपने भोजन के लिए वन्य पशुओं का आखेट करते थे, किंतु नागों की संख्या बढ़ने से आये दिन झगड़े होने लगे और इन झगड़ों का उद्देश्य केवल जीवित रहना था। जिन पशुओं का हम भोजन के लिए आखेट करते थे, उन्हीं का आखेट उस क्षेत्र में निवास करने वाले मनुष्य भी करते थे, इसलिए उन पशुओं की संख्या घटती चली जा रही थी... हमारे लिए प्रतिदिन का भोजन मिलना कठिन होता जा रहा था।”

तक्षक ने साँस छोड़ी और कहना जारी रखा, “नागों का नेतृत्व करने वाला कोई न था, तब मैंने भूतपूर्व राजा होने के नाते कमान सँभाली। मैंने नागों की बढ़ती जनसंख्या का भरपूर लाभ उठाया। हम खाण्डवप्रस्थ के वनों से बाहर आये और आस-पास के मनुष्यों पर आक्रमण करना आरंभ कर दिया और अपने भोजन के लिए आये दिन उनके पालतू जानवर चुराने लगे। मैंने सोचा कि परिस्थिति अब हमारे नियंत्रण में है, किंतु मेरा विचार गलत था। खाण्डवप्रस्थ हस्तिनापुर के नियंत्रण में था। कुछ दिनों के पश्चात हस्तिनापुर नरेश महाराज रीछ ने हम पर आक्रमण कर दिया। उन्हें पराजित करने का सामर्थ्य हममें नहीं था। हमने समर्पण कर दिया और अपनी वेदना कही, कि यह सब हम जीवित रहने के लिए कर रहे हैं। महाराज रीछ ने दया दिखाते हुए हमें क्षमा कर दिया। उन्होंने खाण्डवप्रस्थ की भूमि का एक निश्चित भाग हमें दे दिया और कड़ा नियम बनाया कि कोई भी मनुष्य उस भूमि पर कदम नहीं रखेगा। उस दिन से हमारे पास जीवित रहने का पर्याप्त साधन हो गया।”

“उसके उपरांत क्या हुआ?” दिग्विजय ने प्रश्न किया।

“हमें अभी भी कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था, किंतु फिर भी हम किसी प्रकार स्वयं को जीवित रखने में सफल हो रहे थे। किंतु हम ऐसा जीवन जी रहे थे जिसका कोई उद्देश्य ही नहीं था। लगभग पचास वर्ष पूर्व मुझे यह ज्ञात हुआ कि विषंधर एक युद्ध में मारा गया। वो युद्ध पाँच दिन के महासंग्राम के नाम से प्रसिद्ध है, तुम्हें भी तो उस युद्ध के विषय में ज्ञात ही होगा।”

“हाँ, वो विदर्भ राज्य का एक गृह-युद्ध था।” दिग्विजय ने साँस भरते हुए कहा।

“हाँ, मुझे ज्ञात है और विषंधर की मृत्यु का समाचार सुन मेरी तो प्रसन्नता का ठिकाना ही न रहा। किंतु नागलोक का सिंहासन मुझसे अभी भी दूर था और उस सिंहासन को वापस प्राप्त करने हेतु मेरे पास पर्याप्त सेना नहीं थी... किंतु एक मास पूर्व महाबली अखण्ड मुझसे भेंट करने खाण्डवप्रस्थ आये और मेरे समक्ष एक प्रस्ताव रखा।”

“कैसा प्रस्ताव?” दिग्विजय ने प्रश्न किया।

“मैंने यह सुन रखा था कि महाबली अखण्ड वो योद्धा हैं, जिन्होंने आर्यावर्त के सर्वश्रेष्ठ योद्धा

असुरेश्वर दुर्भीक्ष को कड़ी टक्कर दी थी, इसलिए उनकी बात काटने का साहस मैं नहीं जुटा पाया। उन्होंने मुझे बताया कि तुम नागलोक के सिंहासन के उत्तराधिकारी हो और सिंहासन के लिए ही तुमने दोबारा जन्म लिया है। उन्होंने मुझे अपनी योजना समझाई कि किस प्रकार मैं सुनंदा की स्त्री योद्धाओं के अपहरण का भ्रम फैलाकर तुम्हें मूर्ख बनाऊँगा। उन्होंने मुझे कहा था कि गरुड़ और नाग शत्रु प्रजातियाँ हैं और यदि मैंने तुम्हें गरुड़ों को सौंप दिया तो वो मुझे नागलोक का सिंहासन प्राप्त करने में सहायता कर सकते हैं। किंतु जब मैं यहाँ आया, तो मुझे ज्ञात हुआ कि गरुड़ों और नागों में तो कोई शत्रुता है ही नहीं। इसका अर्थ यह है कि उन्होंने मुझसे असत्य कहा। तो अभी का यथार्थ यह है कि मैं भी नहीं जानता कि तुम्हें यहाँ बंदी बनने के लिए क्यों भेजा गया है।” तक्षक ने विस्तृत किया।

दिग्विजय ने कुछ क्षण विचार किया और भोजन से भरे थाल की ओर देखा। उसने वह थाल उठाई और भोजन का एक कौर अपने मुँह में डालते हुए बोला, “हम्म... यह बंदियों को देने जैसा भोजन तो प्रतीत नहीं होता, काफी लजीज है।”

तक्षक ने दिग्विजय की ओर आश्चर्य से देखा, “तुम उनके कारण यहाँ बंदी बने हुए हो और तुम्हें कुछ नहीं कहना?”

‘नहीं’ दिग्विजय ने बेपरवाही से कहा।

“किंतु क्यों?” तक्षक ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“क्योंकि मुझे उन पर पूर्ण विश्वास है... यदि उन्होंने यह कार्य किया है, तो इसके पीछे निश्चित ही कोई बड़ा उद्देश्य छिपा होगा।” दिग्विजय ने भोजन करना जारी रखा।

“कौन जाने किसके मन में क्या चल रहा है।” तक्षक ने साँस भरते हुए अपने नेत्र विश्राम के लिए बंद कर लिए।

* * *

शीघ्र ही सुर्जन, मेघवर्ण, चंद्रकेतु और सुनंदा सागर के तट पर पहुँचे।

मेघवर्ण ने इधर-उधर दृष्टि घुमायी, “उन्होंने कहा था कि वो हमारे लिए सहायता भेजेंगे, जिससे कि हम सागर पार कर सकें, किंतु मुझे तो यहाँ कोई नहीं दिखाई दे रहा।”

“वो हमारे मार्गदर्शक हैं, उन पर विश्वास करना सीखो; मैं पूरे विश्वास से कह सकता हूँ सहायता शीघ्र ही हमारे पास आयेगी।” चंद्रकेतु ने गर्व से कहा।

“हाँ, चलो देखते हैं।” मेघवर्ण अपने अश्व से उतरा। उसने तत्काल ही आदेश दिया, “यहाँ से एक कोस पीछे हम अपना शिविर लगायेंगे।”

दो प्रहर का समय बीता। मेघवर्ण, चंद्रकेतु, सुनंदा और सुर्जन सागर तट पर खड़े प्रतीक्षा में थे। कोई भी सहायता अब तक नहीं पहुँची थी।

“अब तुम क्या कहोगे चंद्रकेतु? हम यहाँ लगभग एक दिन विलम्ब से आये हैं और अभी तक सागर पार करने हेतु कोई भी हमारी सहायता के लिए नहीं आया।” मेघवर्ण ने चंद्रकेतु को घूरकर देखा।

चंद्रकेतु ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। मेघवर्ण, सुर्जन की ओर मुड़ा, “तुम्हारे विचार से हमें क्या करना चाहिए सुर्जन?”

“अपना धैर्य मत खोओ मेघवर्ण... मुझे लगता है कि हमें प्रतीक्षा कर लेनी चाहिए, क्योंकि इसके अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं है हमारे पास।”

“मुझे तो ऐसा नहीं लगता; तनिक वहाँ देखो।” चंद्रकेतु ने सागर की बायीं ओर संकेत किया।

कई नौकारें उनकी ओर बढ़ रही थीं।

“तो अंततः वो लोग आ ही गए।” मेघवर्ण ने साँस भरी।

लगभग एक सहस्र नौकारें उनकी सहायता के लिए आ चुकी थीं। हर नौका पर दो नाविक थे। वह सभी तट पर पहुँचकर नौका से बाहर आये और मेघवर्ण के निकट आकर उसके सम्मान में झुके।

“हम आपकी सेवा में उपस्थित हैं महामहिम।” एक नाविक ने मेघवर्ण के सम्मान में कहा।

“आप सब लोग खड़े हो सकते हैं।” मेघवर्ण ने विनम्रता से कहा।

वह सभी खड़े हो गये। मेघवर्ण ने ध्यान से उन सबकी ओर देखा। “आपमें से हर कोई साधारण मनुष्य से कुछ भिन्न सा प्रतीत हो रहा है।”

उनमें से एक नाविक मुस्कुराया, “हाँ, आपका अनुमान उचित ही है महामहिम; हम नागलोक के वो इच्छाधारी नाग हैं, जो किसी का भी रूप धर सकते हैं।”

“नागलोक के नाग!” मेघवर्ण के साथ-साथ उसके शेष तीन साथी भी यह सुनकर स्तब्ध रह गए।

कुछ क्षणों तक उन सभी ने आश्चर्य से एक दूसरे की ओर देखा। कुछ क्षणों के उपरांत मेघवर्ण ने एक नाविक की ओर देखा। “हमारी सहायता करने के पीछे क्या उद्देश्य है तुम्हारा?”

“हमारा कोई उद्देश्य नहीं है महामहिम, हमें तो बस महाबली अखण्ड ने आपकी सहायता हेतु भेजा है।” उस नाविक ने कहा।

“और क्या मैं जान सकता हूँ कि तुम उन सौ स्त्री योद्धाओं को मुक्त कराने में हमारी सहायता क्यों कर रहे हो? तुम्हें इससे कोई न कोई लाभ तो अवश्य होगा, है न?” मेघवर्ण ने प्रश्न किया।

“मैं क्षमा चाहता हूँ महामहिम, वो भेद हम आपके समक्ष नहीं खोल सकते।” नाविक ने स्पष्ट रूप से कहा।

“तो फिर तुम पर विश्वास करने का मेरे पास कोई कारण नहीं है।” मेघवर्ण ने भी अपना निर्णय सुना दिया।

यह सुनकर चंद्रकेतु स्तब्ध रह गया। “तुम ऐसा कैसे कर सकते हो मेघवर्ण? तुम हमारे कठिन परिश्रम पर पानी फेर रहे हो।”

“कोई भी एक कारण बताओ चंद्रकेतु, कि हम इन पर विश्वास क्यों करें?” मेघवर्ण ने चंद्रकेतु से प्रश्न किया।

“क्योंकि हमारे गुरुदेव ने इन्हें भेजा है।” चंद्रकेतु ने सीधा सा उत्तर दिया।

“इस बात का क्या साक्ष्य है कि महाबली अखण्ड ने ही भेजा है इन्हें?” मेघवर्ण कटाक्षमय स्वर में मुस्कुराया।

वहीं सुर्जन ने सुनंदा के झोले से एक पत्र गिरता हुआ देखा। वह पत्र भूमि पर गिरा और क्षण भर के लिए खुला। सुनंदा ने जैसे ही यह देखा, वो तत्काल ही अपने घुटनों के बल झुकी और वह पत्र उठा लिया... किंतु इन बीच के क्षणों में सुर्जन ने उस पत्र का अंतिम शब्द देख लिया।

‘दिग्विजय...।’ सुर्जन वह नाम देख स्तब्ध रह गया।

सुनंदा ने उठकर वह पत्र वापस अपने थैले में रख लिया।

“वो... क्या तुम मुझे वो पत्र दिखा सकती हो, जो अभी अभी तुम्हारे थैले से गिरा था?” सुर्जन ने विनम्रतापूर्वक सुनंदा से प्रश्न किया।

“ओह! नहीं, मैं नहीं दिखा सकती।” सुनंदा ने हकलाते हुए मना कर दिया।

“तनिक विश्राम अवस्था में रहो... मैं तो बस यह जानना चाहता हूँ कि उस पत्र में ऐसा क्या है, जिसके गिरने पर तुम इतनी अधीर हो गयी थी।” सुर्जन ने कहा।

“मौन रहो, मुझे आदेश देने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं!” सुनंदा उस पर चीख पड़ी।

सुनंदा की उस चीख ने सबका ध्यान खींचा। नागों से विचार-विमर्श करना छोड़, मेघवर्ण और चंद्रकेतु सुनंदा की ओर बढ़े, “क्या हुआ सुनंदा?” चंद्रकेतु ने उससे प्रश्न किया।

“नहीं, कुछ विशेष नहीं...।” सुनंदा सोच नहीं पा रही थी कि वो क्या बोले।

“क्या किया तुमने?” चंद्रकेतु ने क्रोध से सुर्जन की ओर देखा।

मेघवर्ण ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, “रुक जाओ चंद्रकेतु, मैं बात करता हूँ।”

इसके उपरांत मेघवर्ण ने सुर्जन से प्रश्न किया, “क्या हुआ सुर्जन, ये तुम पर चीखी क्यों?”

“इसके थैले में से एक पत्र गिरा था; मैंने गौर किया कि उस पत्र को उठाते हुए ये काफी अधीर हो गयी थी। मैं तो बस यही पूछ रहा था कि उस पत्र में ऐसा क्या है जिसने इसे इतना अधीर कर दिया था।” सुर्जन ने अपना पक्ष रखा।

“किंतु मुझे नहीं लगता कि उसके निजी पत्र पर दृष्टि डालने का तुम्हें कोई अधिकार है।” चंद्रकेतु ने सुनंदा के समर्थन में कहा।

“हाँ यह सत्य है कि मुझे कोई अधिकार नहीं; किंतु जब वह पत्र भूमि पर गिरा, तो मैंने एक शब्द पढ़ा, जिस पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। वो तुम्हारे शत्रु युवराज का नाम था... दिग्विजया।” सुर्जन ने कहा।

मेघवर्ण और चंद्रकेतु दोनों ही यह नाम सुनकर स्तब्ध रह गये। मेघवर्ण सुनंदा की ओर मुड़ा, “सुनंदा, वो पत्र हमें दो।”

“ये असत्य कह रहा है; मैं तुम लोगों से कोई पत्र क्यों छुपाऊँगी? मैं ऐसे किसी भी पत्र के विषय में नहीं जानती।” सुनंदा ने स्वयं के बचाव में कहा।

“मैं असत्य क्यों कहूँगा? मेरे पास भी ऐसा करने का कोई कारण नहीं है।” सुर्जन ने कहा।

चंद्रकेतु, सुनंदा की ओर बढ़ा, “वो पत्र दे दो सुनंदा।”

“तुम मेरा विश्वास क्यों नहीं कर रहे, मेरे पास ऐसा कोई पत्र नहीं है।” सुनंदा ने चंद्रकेतु के नेत्रों में देखकर कहा।

चंद्रकेतु क्षणभर के लिए मौन हो गया।

मेघवर्ण आगे बढ़ा, “तो फिर मुझे तुम्हारे इस थैले को टटोलना होगा।”

चंद्रकेतु ने मेघवर्ण की ओर आश्चर्य से देखा, “तुम ऐसा कैसे कर सकते हो मेघवर्ण, ये हमारी बचपन की मित्र है।”

मेघवर्ण क्रोधित स्वर में बोला, “हम सागर पार के एक अभियान पर निकले हैं; हमने अपने तीन सौ योद्धाओं को खोया है; इसलिए यदि कोई ऐसी बात है जो मुझसे छिपी है, तो वो मुझे जाननी है।”

सुनंदा को यह एहसास हो गया कि वो अब और नहीं छुपा सकती। उसने पत्र निकाला और मेघवर्ण को दे दिया।

मेघवर्ण ने क्षणभर चंद्रकेतु की ओर देखा और पत्र पढ़ना आरंभ किया।

महाबली अखण्ड, मेरी भेंट आज नागों के सेनापति चंद्रभान से हुई। उसका कहना है कि मैं नागलोक के सिंहासन का उत्तराधिकारी हूँ। मैं नहीं समझ पा रहा था कि उस पर विश्वास करूँ या नहीं। उसने कहा कि नागलोक के नागों को उनकी भूमि से निष्कासित कर दिया गया है और अब वो सागर पार सिंघल की भूमि पर निवास कर रहे हैं। खाण्डवप्रस्थ के निर्वासित नाग तक्षक और उसके लोगों ने नागलोक पर अधिकार कर लिया है और मुझे उस पर विश्वास करने के लिए तब विवश होना पड़ा, जब मैंने कनिष्का नाम सुना। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि यह कनिष्का शब्द कहीं न कहीं मुझसे जुड़ा हुआ है और इसी रहस्य को सुलझाने हेतु मैं सागर पार सिंघल की भूमि की ओर जा रहा हूँ... और यहाँ प्रश्न केवल मेरा नहीं है, अपितु सुनंदा की उन सौ स्त्री योद्धाओं का भी है, जिनका तक्षक ने अपहरण किया है... मुझे उन्हें मुक्त कराना है और उसके लिए पहले मुझे सिंघल की भूमि पर जाना होगा। इस रहस्य को सुलझाने के उपरांत कदाचित् मुझे लौटकर तक्षक के विरुद्ध युद्ध छेड़ना पड़े। आशा करता हूँ कि मेरे सिंघल से लौटने के उपरांत आप अपने योद्धाओं को मेरी सहायता के लिए अवश्य भेजेंगे।

- दिग्विजय

मेघवर्ण उन शब्दों को पढ़कर चकित रह गया। “इस पत्र को ध्यान से देखो चंद्रकेतु, यह है हमारे गुरुदेव की वास्तविकता।”

चंद्रकेतु ने भी वह पत्र लिया और ध्यानपूर्वक पढ़ा। सूर्जन ने भी उस पत्र को देखा।

मेघवर्ण का क्रोध सीमा पार करने लगा था, “तो यह है हमारे पूजनीय गुरुदेव की वास्तविकता... मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि वो हमसे चाहते क्या हैं। पहले उन्होंने हमें विदर्भ की सेना से युद्ध करने को भेजा और अब उन्होंने हमारे शत्रु की ही सहायक सेना बनने को यहाँ भेज दिया और हमने इस अभियान में अपने तीन सौ साथियों के प्राण भी गवाँ दिए।”

“नहीं, यह सत्य नहीं है।” सुनंदा ने हस्तक्षेप किया।

“तो तुम्हीं बताओ सुनंदा, क्या है सत्य?” चंद्रकेतु ने प्रश्न उठाया। उसके मन में भी अब क्रोध उमड़ रहा था।

“मैं जानती हूँ, यह सब कैसा दिख रहा है... किंतु जो दिख रहा है वो सत्य नहीं है।” सुनंदा ने बताना आरंभ किया कि किस प्रकार उसकी भेंट दिग्विजय से हुई और कैसे वो धूर्त नाग चंद्रभान असत्य कहकर दिग्विजय को अपने साथ ले गया।

“तो तुम कहना चाहती हो कि इस समय नागलोक की महारानी देवी कनिष्का हैं और यह सब दिग्विजय को फँसाने के लिए रचा गया जाल था? हाँ, यही तो हो सकता है; तभी तो यह नाग हमारी सहायता को आये हैं, है न?” मेघवर्ण ने प्रश्न किया।

“मुझे सम्पूर्ण सत्य का ज्ञान नहीं है... महाबली अखण्ड ने यह अनुमान लगाया, कि जो सौ स्त्री योद्धा मेरे नेतृत्व में कार्य कर रहीं थीं, वो भी सिंघल राज्य में ही बंदी बनी हुई हैं। हमारा प्रमुख उद्देश्य उन्हें मुक्त कराना है और उसके लिए पहले हमें दिग्विजय को मुक्त कराना होगा।” सुनंदा ने कहा।

“किंतु अभी बहुत सारे प्रश्न शेष हैं कि विदर्भ के उस युवराज ने महाबली अखण्ड को पत्र क्यों भेजा? हमारे गुरुदेव का उससे क्या संबंध है?” मेघवर्ण ने प्रश्न उठाये।

“मुझे लगता है कि न सभी प्रश्नों के उत्तर हमें सागर पार सिंघल राज्य में ही मिलेंगे।”

चंद्रकेतु ने कहा।

“हाँ, मेरा भी यही विचार है; तुम्हारा क्या मत है सुर्जन?” मेघवर्ण ने सुर्जन से प्रश्न किया।

“मैं सहमत हूँ” कहते हुए सुर्जन विचारों में खो सा गया। “मैं भी जानने को उत्सुक हूँ, कि आखिर यह सब हो क्या रहा है। महाबली अखण्ड ने कहा था कि चंद्रकेतु वो दूसरा योद्धा नहीं है, तो क्या इस बात की संभावना है कि दिग्विजय ही वो दूसरा योद्धा है?”

“तो फिर तय रहा, हम शीघ्र ही यहाँ से प्रस्थान करेंगे, किंतु उससे पूर्व हमें अपने योद्धाओं को शिविर से यहाँ लाना होगा।” मेघवर्ण और अन्य तीन, अपने योद्धाओं को सागर तट पर लाने के लिए अपने शिविर की ओर बढ़े।

शीघ्र ही मेघवर्ण, चंद्रकेतु, सुर्जन, सुनंदा और अन्य डकैत और गंधर्व योद्धा नौकाओं पर सवार हुए और सिंघल के लिए अपनी यात्रा आरंभ की।

* * *

वहीं अखण्ड, सर्वदमन को डकैतों के शिविर में ले आये। महाऋषि शंकराचार्य भी वहाँ उपस्थित थे।

“हमें प्रस्थान कब करना है महाबली अखण्ड?” सर्वदमन ने प्रश्न किया।

“मैं संदेशवाहक उकाब की प्रतीक्षा में हूँ; उसका संदेश मिले बिना हम कोई कदम नहीं उठा सकते।” अखण्ड ने कहा।

“हाँ, मुझे ज्ञात है; हमारा एक भी गलत कदम शत्रु को सजग कर देगा।” सर्वदमन ने सहमति जताई।

शीघ्र ही डकैत योद्धा ने आकर सूचित किया, “संदेशवाहक उकाब आ गया है गुरुदेव।”

“वो पत्र मुझे दो।” अखण्ड ने डकैत सैनिक से पत्र माँगा।

उस डकैत ने पत्र उन्हें दिया। अखण्ड ने वह पत्र लिया और उसे पढ़ना आरंभ किया।

पत्र पढ़ने के उपरांत वह मुस्कुराये, “समय आ गया है सर्वदमन।”

“उचित है... हस्तिनापुर की सेना भी आपके लिए सज्ज है।” सर्वदमन ने कहा।

“तो फिर मेरे साथ आओ।” अखण्ड उठ खड़े हुए।

* * *

कुछ दिनों की यात्रा के उपरांत चारों योद्धा अपने दल के साथ सागर पार पहुँचे। दो सहस्र नाग जो उनके साथ नाविक बनकर चल रहे थे, उनके साथ ही नौकाओं से उतरे।

“आप लोग हमारे साथ आना चाहते हैं?” मेघवर्ण ने उनमें से एक नाग से प्रश्न किया।

“आपको सत्य का भान तो हो ही गया है महामहिम; वो हमारे युवराज हैं, इसलिए हम तो आर्येण ही।” एक नाग ने उत्तर दिया।

“ठीक है, अब हमारे पास लगभग पाँच सहस्र योद्धाओं का बल है... तुम सब भी मेरे निर्देश पर ही कोई भी कार्य करोगे।” मेघवर्ण आगे बढ़ा।

“जो आज्ञा महामहिम।” चलते हुए उस नाग ने सहमति जताई।

शेष सभी उसके पीछे चल दिए। कुछ कोस की दूरी तय करने के उपरांत वो एक स्थान पर पहुँचे। उस स्थान से एक-दूसरे को काटते हुए दो मार्ग निकल रहे थे, जो विपरीत दिशाओं में जा रहे थे।

मेघवर्ण दुविधा में पड़ गया कि वो किस मार्ग का चुनाव करे। वो इधर-उधर दृष्टि घुमाकर

देखने लगा।

“तुम रुक क्यों गए?” चंद्रकेतु ने उसके निकट आकर प्रश्न किया।

“यह कोई छोटा-मोटा टापू नहीं है, इसलिए मुझे समझ नहीं आ रहा कि हमें किस दिशा की ओर बढ़ना चाहिए।” मेघवर्ण ने साँस भरते हुए कहा।

सुर्जन ने भी आगे बढ़ते हुए सहमति जताई, “निःसंदेह यहाँ मार्ग का चुनाव करना सरल नहीं है।”

“हाँ, हमारे सामने दो मार्ग हैं और इस बात का कोई भी संकेत प्राप्त नहीं हो रहा कि हम किस मार्ग का चुनाव करें।” मेघवर्ण इधर-उधर दृष्टि घुमाकर देखता रहा।

सुर्जन मुस्कुराया, “यह शत्रु का क्षेत्र है, भला हमें यहाँ कोई भी सहायक संकेत क्यों प्राप्त होगा?”

मेघवर्ण अभी भी इधर-उधर दृष्टि घुमाकर देख रहा था। “तो फिर हमें स्वयं ही मार्ग खोजना होगा।”

“हम्म... बड़ी ही रोचक यात्रा है यह और इस यात्रा का प्रथम रोचक कार्य है मार्ग का चुनाव।” सुर्जन ने कहा।

“हाँ वो तो है।” मेघवर्ण ने सहमति जताई।

उन सभी की दृष्टि चारों दिशाओं में घूम रही थी। कुछ क्षणों के उपरांत सुर्जन ने कुछ उड़ते हुए पक्षियों को देखा।

“इस मार्ग पर लगभग एक कोस दूर कुछ पक्षी उड़ते हुए दिखे।” सुर्जन ने प्रथम मार्ग की ओर संकेत कर कहा।

मेघवर्ण ने भी उस मार्ग की ओर देखा, “तुम उचित कह रहे हो सुर्जन, किंतु मुझे नहीं लगता कि मार्ग का चुनाव करने के लिए यह पर्याप्त है।”

“हाँ, यह चुनाव के लिए कदाचित् पर्याप्त नहीं है, यह तो केवल वहाँ वृक्षों और जल की उपस्थिति का सूचक मात्र है।” सुर्जन ने साँस भरी और एक बार फिर चारों दिशाओं में दृष्टि घुमाना आरंभ किया।

“मुझे ऐसा नहीं लगता कि इस मार्ग के चुनाव से हमें कोई हानि होगी... हमें वहीं चलना चाहिए, कुछ कोस की ही तो बात है और वैसे भी जिस मार्ग पर कोई संकेत नहीं, उस मार्ग को चुनने से तो उचित ही है यह।” मेघवर्ण ने निर्णय ले लिया।

“किंतु मुझे ऐसा नहीं लगता मेघवर्ण... यह हमारा क्षेत्र नहीं है, यह शत्रु का फैलाया जाल भी हो सकता है।” सुर्जन ने कहा।

“यदि मार्ग में शत्रु मिलता रहे तो हम उचित मार्ग पर हैं; किसी विद्वान मनुष्य के मुख से इन स्वर्णिम शब्दों को सुना था मैंने।” कहते हुए मेघवर्ण मुस्कुराया।

“हाँ, बात में वजन तो है, कुछ नहीं से कुछ सही।” सुर्जन ने सहमति जताई।

इसके उपरांत उन सबने प्रथम मार्ग का चुनाव किया और बढ़ चले। उनका अनुमान उचित ही था। वहाँ वृक्षों से घिरा हुआ एक जलाशय था।

“अह और अब हम क्या करें?” चंद्रकेतु ने इधर-उधर देखते हुए प्रश्न किया।

“फैल जाओ और यहाँ के जीवित लोगों के चिह्नों को खोजो।” मेघवर्ण ने आदेश दिया।

मेघवर्ण और सुर्जन साथ चल रहे थे। चंद्रकेतु और सुनंदा दूसरे स्थान पर खोज कर रहे थे।

शेष योद्धा भी इधर-उधर फैलकर जीवन-चिह्न की खोज रहे थे।

अकस्मात् ही वृक्ष की पतियों के हिलने का एक मद्धिम स्वर सुनाई दिया। मेघवर्ण और सुर्जन दोनों ने वह स्वर सुना और वृक्ष की ओर मुड़े। मेघवर्ण उस वृक्ष की ओर बढ़ा, किंतु सुर्जन ने उसका मार्ग रोक लिया, “हमें उन्हें यह ज्ञात नहीं होने देना है कि हमने उनका यह स्वर सुन लिया है... मुझे विश्वास है कि कोई न कोई मनुष्य ही है वहाँ पर। मुझे लगता है कि हमें ऐसा व्यवहार करना चाहिए जैसे हमने कुछ सुना ही न हो, क्योंकि मुझे लगता है कि हम दोनों के अतिरिक्त किसी ने यह स्वर नहीं सुना।”

मेघवर्ण ने सुर्जन की ओर आश्चर्य से देखा और उससे धीमे स्वर में प्रश्न किया, “तुम्हारी सुनने की शक्ति तो बहुत उत्तम है सुर्जन, पत्तों के हिलने का इतना धीमा स्वर तो कोई उच्च श्रेणी का धनुर्धारी ही सुन सकता है।”

सुर्जन ने मुस्कुराकर मेघवर्ण की ओर देखा, “तो तुम्हें क्या लगता है, बाण केवल तुम्हीं चला सकते हो?”

“नहीं, किंतु ऐसा प्रतीत होता है जैसे तुम्हारे गुरु ने तुम्हें उच्च श्रेणी की शिक्षा दी है।” मेघवर्ण ने कहा।

अगले ही क्षण पतियों के हिलने का एक और स्वर दूसरे वृक्ष से सुनाई दिया।

“क्या तुमने उस दूसरे स्वर पर ध्यान दिया?” मेघवर्ण ने सुर्जन से प्रश्न करते हुए कहा।

‘निःसंदेह’ सुर्जन ने उत्तर दिया। वो दोनों बातें करते हुए ऐसे चल रहे थे, मानों उन्होंने कुछ सुना ही न हो।

मेघवर्ण ने कुछ क्षण विचार कर कहा, “हमने दो वृक्षों से पत्तों के हिलने का स्वर सुना, निःसंदेह वहाँ शत्रु बैठा है, जो हम दृष्टि जमाये हुए है।”

“तुम ऐसा कैसे कह सकते हो? यह स्वर उत्पन्न करने वाले वानर या अन्य वन्य पशु भी तो हो सकते हैं।” सुर्जन ने मुस्कुराते हुए प्रश्न किया।

“तुम्हें इस प्रश्न का उत्तर ज्ञात है, फिर भी मेरा परीक्षण ले रहे हो?” मेघवर्ण ने सुर्जन की ओर देखा।

‘कदाचित्’ सुर्जन मुस्कुराया।

मेघवर्ण ने अपना मत रखना आरंभ किया, “नहीं, वो कोई वन्य पशु नहीं हो सकते। पशु या वानर इतनी सावधानी से पतियों को हिलाने का इतना धीमा स्वर उत्पन्न नहीं करते... इसके स्थान पर पाँच सहस्र का दल देख वो हड़बड़ी में भागते। यदि तुम अपने चारों ओर दृष्टि घुमाओ, तो पत्तों के हिलने के कई स्वर सुनाई दे रहे हैं, जो पशु और पक्षियों के कारण उत्पन्न हो रहा है... किंतु जिस स्वर पर हमारा ध्यान गया है, उस स्वर को सुनकर यह स्पष्ट ज्ञात हो जाता है कि कोई बड़ी सावधानी से हम पर दृष्टि जमाये हुए है और यह कार्य केवल कोई मनुष्य या उस जैसा विचार करने की क्षमता रखने वाला जीव ही ऐसा कर सकता है और वो दोनों जीव बड़ी ही चतुरता से स्वयं को छिपाये हुए हैं।”

“उन्हें बस यह भ्रम है कि वो चतुर हैं।” सुर्जन ने कहा।

मेघवर्ण मुस्कुराया। “तो क्यों न एक प्रतियोगिता हो जाये?” वो दोनों अभी भी ऐसे ही चल रहे थे, जैसे उन्होंने कुछ सुना ही न हो।

“प्रतियोगिता? कैसी प्रतियोगिता?” सुर्जन ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

मेघवर्ण ने एक छोटी से छुरी निकाली। “हमने दो वृक्षों से पतियों के हिलने का स्वर सुना है... तो मैं तुम्हें चुनौती देता हूँ; मैं पहले वृक्ष से बीस गज की दूरी पर खड़ा हो जाऊँगा और तुम दूसरे वृक्ष से बीस गज की दूरी पर खड़े हो जाना। हम इन छोटी छुरियों का प्रयोग करेंगे और उन मूसों को नीचे गिरायेंगे, जो हम पर दृष्टि जमाये हुए हैं; देखते हैं कि पहले किसका आखेट नीचे आता है।”

सुर्जन ने भी छुरी निकाली, “हाँ, आशा करता हूँ यह छोटी छुरी उनके प्राण नहीं लेगी।”

“वो तो इस पर निर्भर करेगा कि तुम्हारा लक्ष्य कैसा है।” मेघवर्ण अपने निर्धारित स्थान की ओर बढ़ चला। सुर्जन ने भी वही किया।

उन दोनों ने अपने नेत्र बंद किये और स्वर को सुनने का प्रयत्न करने लगे, जो वहाँ के गुप्तचरों के पूर्ण सावधान होते हुए भी पतियों से निकल रहे थे।

“यह दोनों कर क्या कर रहे हैं?” चंद्रकेतु ने उनकी ओर आश्चर्य से देखा।

शीघ्र ही उन दोनों को वह स्वर सुनाई दिये, जिनकी वो प्रतीक्षा में थे। मेघवर्ण ने पहले वृक्ष की ओर देखते हुए सीधी छुरी फेंक दी, वहीं सुर्जन दूसरे वृक्ष की विपरीत दिशा में मुड़ा और छुरी अपने पीछे की दिशा में फेंकी।

जैसा कि पूर्वानुमानित था, दो व्यक्ति उन दो वृक्षों से गिरे। सभी उपस्थित जन उन्हें देख स्तब्ध रह गए। उनमें से एक की मृत्यु हो गयी, क्योंकि मेघवर्ण का फेंका हुआ छुरा उस व्यक्ति के कंठ में धँस गया था, जबकि दूसरा केवल घायल हुआ था... सुर्जन का फेंका हुआ छुरा उसके पाँव में लगा था।

“तुम्हारा आखेट मारा गया मेघवर्ण, अब इसका कोई उपयोग नहीं है; इसकी आवश्यकता से अधिक सावधानी ने इसके प्राण ले लिए।” सुर्जन मुस्कुराया।

दूसरे व्यक्ति ने भागने का प्रयत्न किया, किंतु चंद्रकेतु ने उसे पकड़ लिया।

“इसकी आवश्यकता से अधिक सावधानी ने इसके प्राण हर लिए; तुम्हारे इस कथन का अर्थ मैं समझा नहीं।” मेघवर्ण ने सुर्जन से प्रश्न किया।

“हाँ, कदाचित् तुमने ध्यान नहीं दिया... छुरा फेंकने से पूर्व तुमने वृक्ष की ओर कुछ क्षण क्रोध से देखा, जिसने इस मृत व्यक्ति को सावधान कर दिया। तुमने अपने अनुमान अनुसार इसके पाँव पर प्रहार किया था और छुरा फेंकने से पूर्व तुम्हारी क्रोध से भरी दृष्टि देख यह व्यक्ति वृक्ष से कूद पड़ा, इसलिए तुम्हारा लक्ष्य चूक गया, पाँव के स्थान पर छुरा इसकी गर्दन में जा घुसा।” सुर्जन ने विस्तृत किया।

मेघवर्ण मुस्कुराया, “क्या विश्लेषण है... और तुमने यह कैसे किया?”

“मैं दूसरे वृक्ष की विपरीत दिशा में मुड़कर खड़ा हो गया और छुरी मैंने अपने पीछे की दिशा में फेंकी। यह जीवित व्यक्ति सावधान नहीं था, इसलिए मेरा लक्ष्य वहीं पहुँचा, जहाँ उसे पहुँचना चाहिए था।” सुर्जन ने समझाया।

“तर्क विचारणीय है; एक और विषय सीखने को मिला।” मेघवर्ण ने साँस भरते हुए कहा।

“क्या मैं जान सकता हूँ कि तुम दोनों क्या वार्तालाप कर रहे हो?” चंद्रकेतु ने हस्तक्षेप किया।

“वो, कुछ विशेष नहीं; बस स्वयं की कमजोरियों का विश्लेषण कर रहा था... चलो तनिक उस घायल गुप्तचर से भी भेंट कर लें।” मेघवर्ण कहते हुए आगे बढ़ा।

मेघवर्ण ने उस घायल व्यक्ति की ओर देखा। उसके शरीर का तीन चौथाई भाग हरी पतियों से ढका हुआ था।

“वृक्ष की ओट में छिपने का बहुत अच्छा तरीका है; अब तुम अपना मुख स्वयं खोलोगे या तुम पर दबाव डालना पड़ेगा?” मेघवर्ण ने उस व्यक्ति से प्रश्न किया।

उस व्यक्ति ने कोई उत्तर नहीं दिया। चंद्रकेतु ने उसका कंठ पकड़कर उसे हवा में उठा दिया, “बताओगे या तुम्हें भी मृत्यु के मुख में भेजूँ?”

“तुम्हें अपने बायीं पहाड़ी की ओर दृष्टि घुमाकर देखना चाहिए।” उस व्यक्ति ने खाँसते हुए कहा।

चारों ओर योद्धाओं की दृष्टि बायीं ओर की पहाड़ी की ओर घूमी, जो उनसे लगभग एक कोस की दूरी पर थी। सहस्रों मनुष्य वहाँ से आते दिखाई दे रहे थे।

“हमें आगे बढ़ना चाहिए।” मेघवर्ण उस पहाड़ी की ओर बढ़ा। लगभग 2700 सौ डकैत और गंधर्व सैनिक और 2000 नाग उनके पीछे चल दिए।

पहाड़ों से होते हुए सहस्रों की संख्या में मनुष्य उनकी ओर बढ़े चले जा रहे थे।

अब उन दोनों दलों के मध्य केवल पचास गज की दूरी शेष रह गयी थी। मेघवर्ण ने उन लोगों की ओर ध्यान से देखा। उन सभी के वस्त्र कबीलेवासियों जैसे थे, किंतु उनके शस्त्र अत्याधुनिक प्रतीत हो रहे थे।

“वस्त्र तो पुराने हैं, किंतु अस्त्र-शस्त्र उच्चकोटि के प्रतीत होते हैं।” मेघवर्ण अनुमान लगाने का प्रयत्न कर रहा था।

उनमें से एक, जिसने अपने सर पर लकड़ी का ताज पहन रखा था, आगे आया और प्रश्न किया, “कौन हो तुम लोग और यहाँ क्या करने आये हो?” यह कोई और नहीं, द्रविड़ों के राजा अलम्बुष था।

मेघवर्ण ने आगे बढ़कर उत्तर दिया, “हमारे कुछ लोगों को यहाँ बंदी बनाकर लाया गया है, हम उन्हें मुक्त कराने आये हैं।”

“यह क्षेत्र हमारा है, तुम्हें यहाँ नहीं आना चाहिए था, क्योंकि यहाँ से वापस कोई नहीं लौट सकता।” अलम्बुष ने मेघवर्ण को घूरते हुए कहा।

मेघवर्ण मुस्कुराया। “तो तुम कबीलेवासी हमें भयभीत करने का प्रयत्न कर रहे हो?”

अलम्बुष को क्रोध आ गया। “हम कोई कबीलेवासी नहीं हैं, हम द्रविड़ हैं; दक्षिणी आर्यावर्त के वास्तविक शासक हैं हम और मैं द्रविड़ों का राजा अलम्बुष हूँ। हम साधारण वस्त्रों में अवश्य हैं, किंतु हमारे पास ऐसे आधुनिक अस्त्र-शस्त्र हैं, जो आर्यों के पास कभी नहीं होंगे, क्योंकि हम अपना पूरा अर्जित धन इन महारथों के विकास में लगाते हैं।”

कुछ क्षण विचार करने के उपरांत मेघवर्ण ने प्रश्न किया, “तो यदि मेरा अनुमान गलत नहीं है, तो तुमने ही यतियों को भेजकर हमारा मार्ग अवरुद्ध किया था, है न?”

“निःसंदेह... जब हमें यह सूचना मिली कि कोई सिंघल की भूमि की ओर बढ़ रहा है, तो मैंने ही अपने दासों या कहो रक्षकों को तुम्हें रोकने के लिए भेजा था और तुम सबका सामर्थ्य प्रशंसनीय है, जो तुम उस बाधा को पार कर आये... किंतु मैं इतना अवश्य कहना चाहूँगा कि मलय पर्वत के क्षेत्र में उनमें से कुछ ही की भेंट तुमसे हुई थी; उनकी वास्तविक संख्या उससे कहीं अधिक है।” अलम्बुष ने कहा।

मेघवर्ण मुस्कुराया। “तो तुम्हें लगता है कि तुम्हारे यह आधुनिक शस्त्र और यति तुम्हें इस युद्ध में विजय दिला देंगे?”

“युद्ध? तुम यहाँ युद्ध के लिए आये हो? तुम हमसे यह भूमि भी छीनना चाहते हो? किंतु मैं तुम्हें एक सत्य से अवगत करा दूँ युवान्... हमें अपनी भूमि की रक्षा करना आता है और अपने पीछे दृष्टि घुमाकर देख लो, तुम्हारा संख्याबल हमारी सेना के दसवें भाग के बराबर भी नहीं है।” अलम्बुष ने क्रोध में कहा।

“तुम्हें पराजित करने के लिए हमें सेना की आवश्यकता नहीं है, (सुर्जन और चंद्रकेतु की ओर संकेत करते हुए कहा) हम तीन ही तुम्हें समर्पण करने को विवश कर देंगे... किंतु हम यहाँ तुमसे तुम्हारी भूमि छीनने नहीं आये। जैसा कि मैंने पहले भी कहा था, हम यहाँ उन सौ स्त्री योद्धाओं को मुक्त कराने आये हैं, जिनका हरण कर तुम यहाँ ले आये हो।” मेघवर्ण ने कहा।

“ओह! यदि ऐसा है तो हम अपने सभी बंदियों को मुक्त करने के लिये सज्ज हैं, युद्ध की कोई आवश्यकता ही नहीं है; किंतु आप लोगों को बस कुछ परीक्षाएँ देनी होंगी।” अलम्बुष ने कहा।

“कैसी परीक्षाएँ?” मेघवर्ण ने प्रश्न किया।

“उन परीक्षाओं के विषय मैं आप लोगों को कल प्रातः बताऊँगा, तब तक आप सभी हमारे अतिथि बनकर रहिये।” अलम्बुष मुस्कुराया।

“आप पर विश्वास करने का हमारे पास कोई कारण नहीं है।” मेघवर्ण ने अलम्बुष को संदेहजनक दृष्टि से देखा।

“किंतु आपके पास और कोई विकल्प भी तो नहीं है।” अलम्बुष मुस्कुराये।

मेघवर्ण ने अलम्बुष की ओर क्रोध से देखा। अलम्बुष ने मुस्कुराते हुए कहा, “विश्वास रखिये, हम आपमें से किसी को कोई क्षति नहीं पहुँचायेंगे, यह वचन है हमारा।”

मेघवर्ण, सुर्जन और चंद्रकेतु की ओर मुड़े, “तुम दोनों का क्या सुझाव है?”

“मैं सहमत हूँ।” चंद्रकेतु ने कहा।

“हाँ, हिंसा से उत्तम एक दिन की प्रतीक्षा ही है हमारे पास।” सुर्जन ने भी सहमति जताई।

मेघवर्ण, अलम्बुष की ओर मुड़ा, “ठीक है, हम कल प्रातः की प्रतीक्षा करेंगे।”

“अवश्य, हम शीघ्र ही आप लोगों के लिए शिविरों का प्रबंध करवाते हैं।” अलम्बुष ने पीछे हटकर अपने सैनिकों को संकेत दिया, जैसे कि सब कुछ पूर्वनिर्धारित हो।

* * *

रात्रि का समय था। मेघवर्ण, सुर्जन और चंद्रकेतु एक ही शिविर में विश्राम कर रहे थे, जो काफी बड़ा था। मध्य-रात्रि में एक स्वर सुनाई दिया, जिसने मेघवर्ण और सुर्जन दोनों के कान खड़े कर दिए। उन दोनों ने नेत्र खोले और एक-दूसरे की ओर देखा।

“क्या तुमने वह स्वर सुना?” सुर्जन ने शर्या पर लेटे हुए ही मेघवर्ण से प्रश्न किया, जो उसकी बगल की शर्या पर लेटा था।

“हाँ मैंने भी सुना।” मेघवर्ण शर्या से उठा। सुर्जन ने भी वही किया।

चंद्रकेतु ने भी उन दोनों की गतिविधियों को देखा, “तुम दोनों कर क्या रहे हो?”

“उठो और हमारे साथ चलो।” मेघवर्ण ने कहा।

तीनों योद्धा शिविर से बाहर आये। सुर्जन ने ध्यान लगाने का प्रयत्न किया, “यह स्वर काफी दूर से आ रहा है, कदाचित् एक कोस से भी अधिक दूरी से।”

“हाँ सुर्जन, उसे मैं भी सुन पा रहा हूँ।” मेघवर्ण ने सहमति जताई।

“कैसा स्वर? मुझे तो सुनाई नहीं दे रहा।” चंद्रकेतु ने प्रश्न किया।

“क्योंकि तुम एक उत्तम धनुर्धर नहीं हो चंद्रकेतु; हमारे साथ आओ।” मेघवर्ण आगे बढ़ा।
चंद्रकेतु ने जम्हाई लेते हुए सहमति जताई, “ठीक है।”

वो तीनों उस स्वर के पीछे जाने लगे। आगे बढ़ते-बढ़ते वो स्वर तीव्र होता गया। लगभग एक कोस चलने के उपरांत चंद्रकेतु को भी वह स्वर स्पष्ट सुनाई देने लगा। अब उसमें भी उस स्वर के प्रति जिज्ञासा जाग उठी। घने वन में वो तीनों एक और कोस चले।

घने वृक्षों की ओट में छिपकर उन लोगों ने एक खुले मैदान की ओर देखा। वो एक विशाल सेना थी, जो गोलाकार दिशा में चक्कर लगा रही थी।

मेघवर्ण ने आश्चर्य से कहा, “इन द्रविड़ों के पास इतनी विशाल सेना होगी, यह न सोचा था। अभी तक तो हमने इनके कुछ सहस्र सैनिकों को ही देखा था, किंतु वो उनकी सेना का एक छोटा सा भाग मात्र था।”

सुर्जन ने द्रविड़ सैनिकों की चालों को ध्यान से देखा, “कदाचित् यह लोग किसी व्यूह का निर्माण कर रहे हैं।”

“हाँ तुम उचित कह रहे हो।” चंद्रकेतु ने सहमति जताई।

मेघवर्ण ने भी उनके पदचार्जों और चालों का ध्यान से विश्लेषण किया और निष्कर्ष पर पहुँचकर स्तब्ध रह गया। “यह किसी साधारण व्यूह का निर्माण नहीं कर रहे, यह संसार का सबसे भयंकर व्यूह है, चक्रव्यूह है यह... किंतु यह लोग ऐसा क्यों कर रहे हैं?”

चंद्रकेतु ने जम्हाई लेते हुए अनुमान लगाया, “अभ्यास कर रहे होंगे और क्या।”

“मध्यरात्रि में कौन अभ्यास करता है?” सुर्जन ने असहमति जताई।

“संभावनायें तो बहुत सारी हैं... हमें सज्ज रहना होगा, क्योंकि यह हमारे लिए फैलाया गया कोई जाल भी हो सकता है और भूलो मत कि द्रविड़ों के राजा ने क्या कहा था, कल सूर्योदय के उपरांत ही हमें इनके वास्तविक उद्देश्य का ज्ञान होगा।” मेघवर्ण ने अनुमान लगाया।

“क्या तुम इस व्यूह को तोड़ना जानते हो?” सुर्जन ने मेघवर्ण से प्रश्न किया।

“हाँ, सौभाग्य से मैं इस व्यूह के विषय में सब कुछ जानता हूँ।” मेघवर्ण ने उत्तर दिया।

“फिर तो भय का कोई प्रश्न ही नहीं है, हमें शिविर लौट जाना चाहिए।” सुर्जन ने कहा।

“मैं सहमत हूँ, वैसे भी मुझे बहुत निद्रा आ रही है।” चंद्रकेतु ने जम्हाई लेते हुए कहा।

मेघवर्ण, चंद्रकेतु को घूरने लगा।

“क्या? इसने अभी तो कहा कि भय का कोई प्रश्न ही नहीं है।” चंद्रकेतु ने कहा।

“ठीक है, हमें चलना चाहिए।” वह सभी अपने अपने शिविर की ओर प्रस्थान कर गए।

वह तीनों शिविर में विश्राम करने लगे। सुर्जन/दुर्भीक्ष गहन विचारों में था। ‘कल दिग्विजय को मुक्त करा लिया जाएगा। कदाचित्, अपना भेद प्रकट करने का समय आ गया है। किंतु एक प्रश्न अभी भी मेरे मन को कचोट रहा है, कि सुनंदा ने अभी तक मुझे क्यों नहीं पहचाना।’

* * *

अगले दिन का सूर्य शीघ्र ही उदय हुआ। मेघवर्ण, चंद्रकेतु, सुर्जन और सुनंदा अपने शिविर के बाहर टहल रहे थे।

एक द्रविड़ सैनिक ने उनके शिविर में आकर मेघवर्ण को सूचित किया, “महामहिम! महाराज

ने आप सभी के लिए बुलावा भेजा है।”

“कहाँ?” मेघवर्ण ने उससे प्रश्न किया।

“आप मेरे साथ आइये, मैं आप लोगों को वहाँ ले चलता हूँ।” उस सैनिक ने कहा।

“हमें कुछ समय की आवश्यकता है।” मेघवर्ण ने कहा।

“जैसी आपकी इच्छा महामहिम, मैं प्रतीक्षा करूँगा।” उस सैनिक ने कहा।

“तैयारी करो, हमें अभी के अभी प्रस्थान करना है।” मेघवर्ण ने ऊँचे स्वर में आदेश दिया।

सभी डकैत, गंधर्व और नाग अपनी-अपनी तैयारियों में जुट गए। शीघ्र ही वह सभी तीन अलग-अलग दलों में बँटकर खड़े हो गये।

“प्रस्थान!” मेघवर्ण ने उन्हें आदेश दिया।

शीघ्र ही वह सभी उस खुले मैदान में पहुँचे, जहाँ राजा अलम्बुष उनकी प्रतीक्षा में थे। पृथ्वी के उस विशाल भाग पर संसार के सबसे भयंकर व्यूह का निर्माण किया गया था।

राजा अलम्बुष मेघवर्ण की ओर बढ़े, “तो अंततः आप यहाँ आ ही गये।”

“मैं आपके शब्दों की प्रतीक्षा में हूँ।” मेघवर्ण ने अलम्बुष की ओर देखा।

“हाँ अवश्य।” राजा अलम्बुष कुछ कदम पीछे हटे और संसार के सबसे भयंकर व्यूह, चक्रव्यूह की ओर संकेत किया।

“यदि आप अपने बंदियों को मुक्त करना चाहते हैं, तो आपको दो बाधाएँ पार करनी होंगी।” अलम्बुष ने कहा।

“कैसी बाधाएँ?” मेघवर्ण ने प्रश्न किया।

“आपकी प्रथम बाधा यह व्यूह है, जिसे आपको तोड़ना है; दूसरी बाधा मैं स्वयं हूँ, आप में से किसी एक को मुझे दंड में पराजित करना है... इन दो बाधाओं को पार कीजिये, आपको बंदी बनाये हुए लोग मिल जायेंगे।” अलम्बुष ने कहा।

“तो अपरोक्ष रूप से आप हमें युद्ध के लिए ही ललकार रहे हैं?” मेघवर्ण ने अलम्बुष को घूरते हुए कहा।

“नहीं, ऐसा नहीं है... आपको यदि हमारे अस्त्र, अश्व या रथ की आवश्यकता हो तो वो हम आपको दे सकते हैं।” अलम्बुष ने कहा।

“क्यों कर रहे हैं आप यह सब?” मेघवर्ण ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“ये दो बाधाएँ पार कीजिये, आपको आपके प्रश्नों के उत्तर मिल जायेंगे।” अलम्बुष ने उत्तर दिया।

“आप अपने कई योद्धाओं को खो देंगे।” मेघवर्ण ने उन्हें चेतावनी दी।

“मुझे उससे कोई अंतर नहीं पड़ेगा, किंतु स्मरण रहे, यदि आप विफल हुए तो आप तीनों जीवन-पर्यंत हमारे बंदी बनकर रहेंगे।” अलम्बुष ने भी चेतावनी भरे स्वर में कहा।

“तो फिर उचित है... हमारे पास शस्त्र हैं, हमें केवल अश्वों की आवश्यकता है।” मेघवर्ण ने अपनी तलवार पर पकड़ मजबूत करते हुए कहा।

“अवश्य, आप जितने चाहें आपको उतने अश्व मिलेंगे।” अलम्बुष अपने अश्व की ओर बढ़े। उस पर आरुढ़ हुए और चक्रव्यूह की ओर बढ़ चले।

द्रविड़ सैनिकों ने अपने राजा के लिए मार्ग रिक्त करना आरंभ कर दिया, ताकि वो सरलता से व्यूह के मध्य से गुजर सकें।

सुर्जन ने आगे बढ़ते हुए प्रश्न किया, “तो क्या प्रस्थान करें?”

“केवल हम तीन जायेंगे; हम अपने और योद्धाओं को खोने की स्थिति में नहीं हैं” मेघवर्ण ने निर्णय लिया।

“उचित है, मैं सज्ज हूँ” चंद्रकेतु ने अपनी गदा उठाते हुए कहा।

“मैं भी” सुर्जन ने भी तलवार खींच निकाली।

शीघ्र ही तीन अश्वों को वहाँ लाया गया। तीनों योद्धा अपने-अपने शस्त्रों से सुसज्जित होकर अश्वों पर आरूढ़ हुए। उन सभी के अश्व एक दूसरे की समानांतर दिशा में खड़े थे।

सुनंदा, डकैत, गंधर्व और नाग उन तीनों योद्धाओं के इस पराक्रम के साक्षी बनने को सज्ज थे।

मेघवर्ण ने समझाना आरंभ किया, “हमारे अश्व एक दूसरे की समानांतर दिशा में हैं... स्मरण रहे कि पहले तीन द्वारों तक ऐसा ही रहना चाहिए। हमें सामने से इस व्यूह में प्रवेश करने हेतु स्पष्ट रूप से एक द्वार खुला दिखाई दे रहा है, किंतु हमें उस मार्ग से प्रवेश नहीं करना; ऐसा करके हम व्यूह के भीतर फँसकर रह जायेंगे। स्मरण रखना, कि तुम दोनों को प्रथम तीन द्वारों तक मेरी समानांतर दिशा में दौड़ते रहना है। पहले तीन द्वारों पर केवल पैदल सैनिक होंगे, हमें उनमें से कुछ ही सैनिकों को गिराना है, जिससे क्षण भर के लिए एक रिक्त स्थान उत्पन्न हो जायेगा, हमें उन्हीं क्षणों में उन द्वारों को पार करना है। पहले तीन द्वारों को पार करने के उपरांत यह अलम्बुष पर निर्भर करता है, कि उसने किस प्रकार के योद्धाओं को वहाँ नियुक्त किया है; वो रथी भी सकते हैं, युद्धक हाथी भी हो सकते हैं और अश्वारोही सैनिक भी हो सकते हैं, इसलिए मेरा तुम्हें सुझाव है सुर्जन, तुम्हें भी अपना धनुष उठा ही लेना चाहिए, क्योंकि जैसे-जैसे हम व्यूह के भीतर प्रवेश करेंगे, सैनिकों का घनत्व बढ़ता चला जायेगा।”

“अवश्य” सुर्जन ने अपना धनुष उठा लिया।

“तुम्हारी गदा और बल, युद्धक हाथियों के विरुद्ध एक प्रबल अस्त्र होगा चंद्रकेतु, सज्ज रहना” मेघवर्ण ने उसे सावधान करते हुए कहा।

“अवश्य ध्यान रखूँगा” चंद्रकेतु ने गदा पर अपना कसाव बढ़ाया।

“अब हमें आरंभ के संकेत की प्रतीक्षा करनी होगी” मेघवर्ण ने साँस खींचते हुए कहा।

सुर्जन ने भी गहरी साँस लेते हुए विचार किया, ‘पंचतत्वों की शक्ति का स्वामी होने के कारण, मैंने कभी साधारण अस्त्रों से इस व्यूह को भंग करना नहीं सीखा, आज एक नया अनुभव प्राप्त होने वाला है।’

“तुम क्या विचार करने लगे सुर्जन?” मेघवर्ण ने उसके मुख के भावों को देख प्रश्न किया।

“कुछ विशेष नहीं, बस इस अभियान के लिए मन कुछ अधिक ही व्यग्र हो रहा है।” सुर्जन ने मुस्कुराकर कहा।

“वाह! क्या बात है।” मेघवर्ण ने अपना शंख निकाला।

शीघ्र ही अलम्बुष ने अपना शंख बजाया और ताल ध्वज लहराया। मेघवर्ण उसके इसी संकेत की प्रतीक्षा में था। उसने भी अपना शंख बजाया।

‘चलो!’ मेघवर्ण और अन्य दो ने अपने-अपने अश्वों की लगाम खींची।

चक्रव्यूह की ओर वो तीनों योद्धा समानांतर पंक्ति में अपने अश्वों को दौड़ा रहे थे। सामने से चक्रव्यूह की केवल प्रथम पंक्ति ही दिखाई दे रही थी। पहले द्वार पर पैदल सैनिक बिना रुके,

गोलाकार दिशा में दौड़ रहे थे।

वो तीनों अपने अश्वों को लगातार उनकी ओर दौड़ाते रहे। जैसे ही मेघवर्ण को वो भेदन सीमा के भीतर दिखे, उसने सुर्जन को संकेत दिया। उन दोनों ने अपने-अपने धनुषों पर दस दस बाण एक साथ चढ़ाये और चक्रव्यूह की पहली पंक्ति की ओर छोड़ दिया।

वो बीस बाण सीधा चक्रव्यूह की पहली पंक्ति के बीस पैदल सैनिकों के मस्तक भेद गए। बीस सैनिक भूमि पर गिर गए, किंतु उत्पन्न हुआ रिक्त स्थान शीघ्र ही भर गया, क्योंकि वो तीनों योद्धा, व्यूह से अभी भी दूर थे।

“यह केवल अभ्यास के लिए था, अब दस बाण और सुर्जन, किंतु इस बार हमें अपने सामने दिख रहे सैनिकों पर वार नहीं करना है, तुम बायीं ओर के सैनिकों को मारोगे और मैं दायीं ओर के सैनिकों को; इसका लाभ यह होगा कि जैसे ही हम व्यूह के निकट पहुँचेंगे, इन सैनिकों के लगातार गोलाकार दिशा में भागने के कारण एक बड़ा रिक्त स्थान उत्पन्न हो जायेगा, जो हमें भीतर प्रवेश करने में सहायक होगा।” मेघवर्ण ने अश्वारोहण करते हुए ही निर्देश दिए।

जैसे ही वह तीनों चक्रव्यूह की प्रथम पंक्ति के निकट पहुँचे, मेघवर्ण ने आदेश दिया, “सुर्जन, संधान!”

बीस बाण एक साथ आकाश में उड़े और चक्रव्यूह की प्रथम पंक्ति के बीस पैदल सैनिकों को एक साथ गिरा दिया। बिना कोई क्षण गवाँये तीनों योद्धाओं ने बने हुए रिक्त स्थान का लाभ उठाया और पहला द्वार पार करते हुए व्यूह के भीतर प्रवेश कर गए। पहले द्वार का रिक्त स्थान शीघ्र ही भर गया।

मेघवर्ण ने चक्रव्यूह की दूसरी पंक्ति में सैनिकों के बढ़ते घनत्व की ओर देखा। यह देख अन्य सैनिकों का वध करते हुए उसने सुर्जन को आदेश दिया, “इस बार पंद्रह बाण एक साथ सुर्जन, रणनीति वही रहेगी, दायीं और बायीं ओर के सैनिक ही हमारा लक्ष्य रहेंगे।”

मेघवर्ण और सुर्जन दोनों ने ही एक साथ पंद्रह बाण चढ़ाये और तीस सैनिकों के मस्तक एक साथ उड़ा दिए।

उत्पन्न हुए रिक्त स्थान का लाभ उठाकर उन तीनों ने सफलतापूर्वक चक्रव्यूह का दूसरा द्वार भी पार कर लिया।

तीसरी पंक्ति पार करने के लिए भी उन्होंने यही नीति अपनाई। इस बार मेघवर्ण और सुर्जन ने चालीस पैदल सैनिकों को बीस बीस बाण चलाकर एक साथ मार गिराया।

अब मेघवर्ण, चंद्रकेतु और सुर्जन तीसरी पंक्ति के आगे थे।

चौथी पंक्ति में कई पैदल सैनिक बड़ी-बड़ी ढालें लिए गोलाकार दिशा में लगातार दौड़ रहे थे।

मेघवर्ण ने आदेश दिया, “रुको मत, युद्ध करने के साथ-साथ अपना रक्षण भी करते रहो, तब तक मैं इस द्वार की सबसे कमजोर कड़ी को खोज निकालूँगा।”

मेघवर्ण ने चौथे द्वार को तोड़ने के लिये भयंकर बाण चलाये। कई योद्धा गिरे, किंतु बना हुआ रिक्त स्थान शीघ्र ही भर जाता था।

“जब तक मैं कोई अन्य निर्देश न दूँ, शत्रुओं को मारते रहो।” मेघवर्ण ने अपने बाण चलाने जारी रखे।

पीछे के तीन द्वारों के सैनिक भी सुर्जन और चंद्रकेतु की ओर बढ़े। सुर्जन अपने भयंकर बाणों से उनका नाश कर रहा था, वहीं चंद्रकेतु भी अपने अश्व से कूदा और अपनी गदा के भयंकर वारों

से शत्रुओं का नाश करने लगा।

चौथे द्वार का घनत्व घटने लगा। अंततः मेघवर्ण ने एक कमजोर भाग खोज निकाला, “मेरे बाण चलाते ही मेरे पीछे आना।”

चंद्रकेतु दौड़कर एक बार फिर अश्व पर आरूढ़ हो गया।

मेघवर्ण ने एक साथ अपने धनुष पर तीस बाण चढ़ाये और चौथे द्वार के योद्धाओं की ओर चलाये। तीनों योद्धा रिक्त हुए स्थान का लाभ उठाकर चौथे द्वार के भीतर प्रवेश कर गए।

पाँचवें द्वार पर रथ पर आरूढ़ हुए सैनिक थे।

“हमें एक साथ कई योद्धाओं को मारना होगा, किंतु इन्हें मारना पहले के योद्धाओं को मारने जितना सरल नहीं होगा।” मेघवर्ण ने बाण चलाया, किंतु उसे उसका यथोचित उत्तर भी मिला। सुर्जन ने भी वही किया।

कुछ क्षण विचार करने के उपरांत सुर्जन ने रथी योद्धाओं पर वार करने के स्थान पर उनके रथ तोड़ने आरंभ कर दिए।

“बहुत अच्छे सुर्जन, चंद्रकेतु तुम भी यही करो।” मेघवर्ण ने आदेश दिया।

चंद्रकेतु भी रथी योद्धाओं की ओर दौड़ा और उनके रथ तोड़ने लगा।

अंततः मेघवर्ण ने उस व्यूह के पाँचवें द्वार का कमजोर भाग भी खोज ही लिया, “मेरे समानांतर आओ!” उसने सुर्जन और चंद्रकेतु को पुकार लगायी।

अब तीनों योद्धा एक दूसरे के समानांतर आ गए थे। मेघवर्ण ने भयंकर बाणों की वर्षा से पाँचवें द्वार को तोड़कर एक रिक्त स्थान बना दिया। उन तीनों ने वह द्वार भी सफलतापूर्वक पार कर लिया।

छठवें द्वार पर पहले से भी कहीं अधिक उत्तम श्रेणी के योद्धाओं से उनका सामना हुआ। उनका घनत्व भी पहले से अधिक था। किंतु मेघवर्ण ने कड़े संघर्ष के उपरांत उस द्वार को भी तोड़ा और सुर्जन और चंद्रकेतु को लेकर अंतिम द्वार तक पहुँचा।

अंतिम द्वार पर पहुँचकर सुर्जन ने लड़ते हुए प्रश्न किया, “अब हमें क्या करना है?”

मेघवर्ण ने लड़ते हुए कहा, “यह इस व्यूह का अंतिम द्वार भी है और केंद्र भी। हमें बिना रुके अपने शत्रुओं को मारते रहना होगा, ताकि इस अंतिम द्वार में सेना का घनत्व घटता जाये। इस अंतिम द्वार के घनत्व को बरकरार रखने के लिए दूसरी पंक्तियों से सैनिकों को इस अंतिम पंक्ति में जुड़ने के लिए भेजा जायेगा, इससे अन्य पंक्तियों का सैन्य घनत्व कम हो जायेगा। इसके उपरांत हम इस व्यूह में एक बड़ा रिक्त स्थान बनायेंगे और इस व्यूह को पार कर जायेंगे, किंतु कम से दो प्रहर तक हमें इन्हें मारते रहना होगा।”

“यह तो हमें थका सकता है।” चंद्रकेतु ने एक सैनिक का मस्तक फोड़ते हुए कहा।

“किंतु हमें यह करना ही होगा।” मेघवर्ण ने एक साथ बीस योद्धाओं का मस्तक काटते हुए कहा।

“निःसंदेह हम ही विजयी होंगे।” सुर्जन ने भी भयंकर बाण वर्षा से तीस योद्धाओं का सर धड़विहीन करते हुए सहमति जताई।

कुछ क्षणों के उपरांत पैदल सैनिक और अन्य योद्धा पीछे हटने लगे। उन्होंने हटकर भूमि का एक विशाल भाग रिक्त कर दिया। अब एक सहस्र से भी अधिक युद्धक हाथी उन तीन योद्धाओं की ओर बढ़े।

मेघवर्ण ने हाँफते हुए कहा, “चंद्रकेतु, तुम्हारे कार्य का समय है।”

‘अवश्या’ चंद्रकेतु ने गदा पर अपनी पकड़ मजबूत की और एक लम्बी छलाँग लगाते हुए एक युद्धक हाथी के मस्तक पर भीषण वार किया। वो गज चिंघाड़ता हुआ भूमि पर गिर पड़ा।

सभी युद्धक हाथियों ने मेघवर्ण और सुर्जन को छोड़ चंद्रकेतु को घेरना आरंभ कर दिया। राजा अलम्बुष भी उनमें से एक हाथी पर सवार थे। उन्होंने भाला फेंककर चंद्रकेतु को निःशस्त्र कर दिया।

“वो उसे लक्ष्य बना रहे हैं, मेरे साथ आओ सुर्जन!” मेघवर्ण उस घेरे की ओर भागा। सुर्जन भी उसके पीछे भागा।

चंद्रकेतु अब भूमि पर निःशस्त्र खड़ा था। एक गज ने उस पर सँड से वार करने का प्रयत्न किया, किंतु चंद्रकेतु ने उस हाथी की सँड पकड़कर उसे भूमि पर बैठने पर विवश कर दिया। अगले ही क्षण चार और हाथियों ने चंद्रकेतु को चारों दिशाओं से घेर लिया। वो इतना चपल नहीं था, कि एक साथ चार सँडों को पकड़ सके, परिणामस्वरूप वह भूमि पर गिर पड़ा।

मेघवर्ण यह देख क्रोधित हो उठा। वो चंद्रकेतु की रक्षा को दौड़ा, किंतु उसका मार्ग भी कुछ युद्धक हाथियों ने अवरुद्ध कर दिया। राजा अलम्बुष ने भाला फेंक उसका मार्ग रोक दिया।

चंद्रकेतु ने उठने का प्रयत्न किया, किंतु दो और सँडों ने उसे भूमि पर गिरा दिया। इसके उपरांत दो और गज उसका मस्तक कुचलने दौड़े।

किंतु तभी दो सशक्त भुजाओं ने उन विशालकाय जीवों के पाँव रोक लिये। यह कोई और नहीं, सुर्जन ही था। उसने अपने सम्पूर्ण बल का प्रयोग किया और उन हाथियों को पीछे धकेल दिया। चंद्रकेतु ने भूमि से उठकर सुर्जन की ओर आश्चर्य से देखा। मेघवर्ण भी उस आश्चर्यजनक दृश्य का साक्षी था।

राजा अलम्बुष ने युद्ध के समापन का शंखनाद किया। उन्होंने मेघवर्ण की ओर देखा, “आप लोगों ने व्यूह के द्वारों को पारकर पहली बाधा सफलतापूर्वक पार की, अब दूसरी बाधा पार करने का समय है; खुले मैदान में आइये।”

मेघवर्ण ने क्षण भर सुर्जन की ओर संदेहजनक दृष्टि से देखा। इसके उपरांत वह खुले मैदान की ओर बढ़ चला।

‘कौन है वो? महर्षि वसुधर का एक साधारण सा शिष्य या कोई और?’ मेघवर्ण, खुले मैदान की ओर चलते हुए विचार कर रहा था।

चंद्रकेतु, सुर्जन की ओर बढ़ा और कहा, “मुझे नहीं पता था कि तुम्हारी भुजाओं में इतना बल है।”

सुर्जन ने साँस भरते हुए कहा, “शीघ्र ही तुम्हें और भी कई रहस्य ज्ञात होंगे।” वो मेघवर्ण के पीछे बढ़ा।

अलम्बुष और मेघवर्ण दोनों ने ही ढाल और भाले उठाये।

‘आरंभ!’ कहते हुए अलम्बुष मेघवर्ण की ओर दौड़े।

मेघवर्ण उनसे युद्ध करते समय भी सुर्जन के विषय में ही सोच रहा था, ‘वो एक उत्त्व कोटि का धनुर्धारी है।’ अलम्बुष ने उसके ध्यान भंग होने का लाभ उठाया और उसके पाँव पर वार किया। मेघवर्ण भूमि पर गिर पड़ा।

अलम्बुष ने मेघवर्ण की छाती पर वार करने का प्रयत्न किया, किंतु मेघवर्ण ने उनका भाला

पकड़ा और उन्हें पीछे धकेल दिया।

‘उसकी भुजाओं में चंद्रकेतु जितना बल है।’ विचार करते हुए मेघवर्ण भूमि से उठा।

अलम्बुष एक बार फिर उसकी ओर दौड़ा। दोनों भाले एक बार फिर टकराये। मेघवर्ण अभी भी विचारों में खोया था, ‘उसका नाम सुरजन है और जहाँ तक कथाएँ कहती हैं, उस दुर्दांत योद्धा की आयु भी उसके जितनी ही है।’

अलम्बुष ने एक बार फिर मेघवर्ण को पीछे धकेल दिया।

‘और उस दुर्दांत योद्धा को भी सुरजन के नाम से ही जाना जाता है। यह विचार मेरे मन में पहले क्यों नहीं आया।’ मेघवर्ण ने अपने प्रतिद्वंद्वी के अगले वार से स्वयं का रक्षण करते हुए विचार किया।

मेघवर्ण का क्रोध बढ़ने लगा। उसने अद्भुत चपलता का प्रदर्शन किया और अलम्बुष को निःशस्त्र कर उन्हें भूमि पर धकेल दिया। इसके उपरांत उसने सुरजन की ओर दृष्टि घुमाई, जो चंद्रकेतु के साथ उसकी ओर बढ़ा चला आ रहा था।

किंतु उसके शांत और तेजस्वी मुख को देख मेघवर्ण का क्रोध शांत हो गया। ‘नहीं, यह नहीं हो सकता; वो हमारा मित्र है, उसने चंद्रकेतु के प्राणों की रक्षा की है, भला वो नीच असुरेश्वर दुर्भीक्ष ऐसा क्यों करेगा?’

वहीं द्रविड़ों के राजा अलम्बुष भूमि से उठा।

उन्हें देखते हुए मेघवर्ण ने घोषणा की, “तो जैसा कि निर्धारित हुआ था, मेरी विजय के उपरांत आपको बंदियों को मुक्त करना होगा।”

“निःसंदेह मुझे तो यह करना ही था।” अलम्बुष ने हाँफते हुए कहा। उसने अपने एक सैनिक को संकेत दिया।

मेघवर्ण उनके निकट गया, “आपको मेरे कुछ प्रश्नों के उत्तर भी देने होंगे।”

“कैसे प्रश्न?” अलम्बुष ने पूछा।

“यह सब कुछ आपने क्यों किया? मुझे आपका वास्तविक उद्देश्य जानना है।” मेघवर्ण ने उनकी ओर घूरते हुए प्रश्न किया।

अलम्बुष मुस्कराये, “मैंने अपने दस सहस्र से भी अधिक योद्धाओं को खोया है, निःसंदेह इसके पीछे कोई बड़ा उद्देश्य ही होगा।”

“और मैं आपका वही उद्देश्य जानना चाहता हूँ।” मेघवर्ण ने प्रश्न किया।

अलम्बुष ने कहना आरंभ किया, “हम द्रविड़ हैं; दक्षिणी आर्यावर्त के वास्तविक शासक। आर्यावर्त की भूमि पहले जम्बूद्वीप के नाम से जानी जाती थी। इस भूमि पर गोदावरी नदी के पार का सम्पूर्ण दक्षिणी भाग सदियों से हमारे नियंत्रण में था, किंतु लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व उन दुष्ट आर्यों ने हम पर आक्रमण किया और हमें हमारी मातृभूमि छोड़ने पर विवश कर दिया। उस समय केवल हमारे पास ही सागर पार करने हेतु विकसित नौकायें थीं, इसलिए हमारे पूर्वजों ने सिंधल राज्य में शरण ली। हमारे जीवन जीने के सभी संसाधन लगभग समाप्त हो चुके थे, किंतु फिर भी हमारे हृदय में प्रतिशोध की ज्वाला धधकती रही। हमने कई वन्य जीवों का आखेट किया और स्वयं जीवित रहने के लिए सिंधल के कई निर्दोष लोगों की हत्याएँ भी कीं। सिंधल की भूमि का राजा इतना शक्तिशाली नहीं था जो अपनी प्रजा की रक्षा कर सके। कुछ वर्षों के उपरांत हमारे पूर्वजों ने एक सेना का संगठन किया और सिंधल राज्य के मुख्य महल पर आक्रमण कर उसे

जीत लिया। उस युद्ध में, हमने भी अपने कई योद्धाओं को खोया। अंततः हम सिंधल की भूमि पर पूर्ण रूप से अधिकार करने में सफल रहे। किंतु अपनी मातृभूमि को वापस पाने की इच्छा अभी भी हमारे हृदय में थी। किंतु हमारे पास न सैन्यबल था, न रसद, न शस्त्र और न ही पर्याप्त धन। उस दिन से हमने धन अर्जित करने हेतु सागर पार का व्यापार आरंभ किया। अपनी मूल पहचान छुपाकर हमने आर्यों से व्यापार किया। वो यही सोचते रहे कि हम सिंधल की भूमि के भूतपूर्व राजा के व्यापारी हैं। हमारे पूर्वजों ने धन अर्जित करने हेतु मुख्य महल की हर एक ईंट तक बेच दी और आज तीन सौ वर्षों के उपरांत हम इतने धनी हो चुके हैं कि बड़ी सरलता से दो अक्षौहिणी सेना का संचालन भी कर सकते हैं और उनके लिए आधुनिक से आधुनिक अस्त्र-शस्त्र भी विकसित कर सकते हैं।”

अलम्बुष ने कहना जारी रखा, “अब हमें अपनी मातृभूमि वापस पाने के लिए अवसर की प्रतीक्षा थी, किंतु हमें ज्ञात हुआ कि आर्य अभी भी हमसे कहीं अधिक शक्तिशाली हैं, यह सुनकर हमारा मनोबल टूटने लगा। आज से लगभग तीन वर्ष पूर्व हम अपने दासों या कहो रक्षक यतियों से भेंट करने मलय पर्वत पहुँचे। वहाँ हमारी भेंट महाबली अखण्ड नाम के योद्धा से हुई। उन्होंने हमारे समक्ष एक ऐसा प्रस्ताव रखा, जिसे हम ठुकरा न सके।”

“कैसा प्रस्ताव?” मेघवर्ण ने अधीरतापूर्वक प्रश्न किया।

“उन्होंने बताया कि वो ऐसे दो योद्धाओं को तैयार कर रहे हैं, जो विश्व की बड़ी से बड़ी सेना को परास्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि यदि हम उनकी सहायता करेंगे, तो उनके वो दो योद्धा हमें हमारी मातृभूमि वापस दिलवाने में सहायता करेंगे। उन पर विश्वास करना कठिन था, किंतु वो एकमात्र आशा की किरण प्रतीत हो रहे थे, इसलिए हम उनके समर्थन के लिए तैयार हो गये। उन्होंने कहा कि उन्हें अपने योद्धाओं को तैयार करने के लिए तीन वर्ष का समय और चाहिए और कुछ मास पूर्व उन्होंने मुझे संदेश भेजा, कि उनके योद्धा हमारी सहायता करने जितने योग्य हो गए हैं। मैंने उन्हें उत्तर भेजा कि मैं कोई संकट मोल नहीं ले सकता। तब विदर्भ के वनों में गुप्त रूप से हमारी भेंट हुई, वहाँ हमने एक योजना निश्चित की।”

“कैसी योजना?”

अलम्बुष ने कहना जारी रखा, “मैं बिना आप लोगों की परीक्षा लिए अपने योद्धाओं के प्राण संकट में नहीं डाल सकता था, इसलिए यह योजना आप सभी के बल और सामर्थ्य के परीक्षण के लिए बनायी गयी थी, इसलिए मैंने अपने एक योद्धा को मलय पर्वत भेजा था, जो यतियों को नियंत्रित करना जानता था। यतियों का सामना करना आप लोगों की प्रथम परीक्षा थी। संसार के सबसे विकट व्यूह चक्रव्यूह को भंग करना आपकी दूसरी परीक्षा थी और मुझसे टुट करना अंतिम परीक्षा थी, क्योंकि मैं स्वयं आपके बल का परीक्षण करना चाहता था।”

यह सब सुनकर मेघवर्ण झल्ला उठा, “केवल परीक्षण के लिए तुमने सौ स्त्री योद्धाओं का अपहरण किया? तुम्हारे यतियों ने हमारे तीन सौ योद्धाओं को मार डाला, केवल परीक्षण के लिए?”

अलम्बुष ने भी क्रोध से कहा, “हमने भी आप लोगों के बल परीक्षण के लिए अपने दस सहस्र योद्धाओं के प्राणों की बलि चढ़ायी है और जहाँ तक उन स्त्री योद्धाओं के अपहरण का विषय है, तो मैं बताना चाहूँगा कि उनका अपहरण कभी हुआ ही नहीं था, हमने केवल दिग्विजय का अपहरण किया था। महाबली अखण्ड ने कहा था कि यदि आप लोगों को यह सत्य ज्ञात हो गया कि उन

स्त्री योद्धाओं का हरण हुआ ही नहीं है, तो आप सागर पार कर यहाँ इस अभियान पर कभी आयेंगे ही नहीं; वो रहा आपका बंदी।”

अलम्बुष ने कुछ सैनिकों के साथ आते हुए दिग्विजय की ओर संकेत किया। तक्षक भी उनके साथ था।

सुनंदा भी कुछ सैनिकों के साथ उस स्थान पर आ पहुँची। उसने दिग्विजय के हाथ की ओर देखा, जिससे रक्त बह रहा था। वह उसकी ओर दौड़ी और उसका रक्तंजित हाथ पकड़ लिया। चंद्रकेतु यह दृश्य देख आश्चर्य और क्रोध से भर गया, किंतु शीघ्र ही उसे यह एहसास हुआ कि यह वार्ता छेड़ने के लिए समय और स्थान उचित नहीं है।

मेघवर्ण ने अपने नेत्र बंद किये और क्रोध से चीखा, “इस बार मैं उस व्यक्ति को क्षमा नहीं करूँगा; वो स्वयं को हमारा मार्गदर्शक कहता है, हम उसे अपना गुरु मानते रहे और उसने हमारा क्रीड़ा की वस्तु की भाँति उपयोग किया। मनुष्य के जीवन का तो उसकी दृष्टि में कोई मोल ही नहीं है; अब उसे हमारे बीच होने वाले अंतिम द्वंद्व की चुनौती स्वीकार करनी ही होगी।”

अलम्बुष ने हस्तक्षेप किया, “ऐसे मैले विचारों को अपने मन में मत लाइये, मेघवर्ण, आप लोगों को यहाँ केवल परीक्षण हेतु नहीं बुलाया गया है।”

मेघवर्ण ने अपने नेत्र खोले और क्रोध से अलम्बुष की ओर देखा, “तो और क्या उद्देश्य था हमारे यहाँ आने का?”

“यहाँ हमारा एक सहयोगी दल भी है; उनके निजी प्रतिशोध का भी विषय है यहाँ।” अलम्बुष ने उजागर किया।

‘प्रतिशोध?’ मेघवर्ण को यह सुनकर तनिक आश्चर्य हुआ।

‘हाँ’ कहकर अलम्बुष ने अपने एक सैनिक को संकेत दिया। उस सैनिक ने आकाश में लाल ध्वज लहराया।

वहीं दिग्विजय की दृष्टि सुर्जन की ओर गयी, जो एकटक उसकी ओर घूरे जा रहा था।

“आप? आप यहाँ क्या कर रहे हैं?” दिग्विजय ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“कदाचित्, नियति ही मुझे यहाँ खींचकर लायी है, ताकि मैं तुम जैसे द्रोही को दण्ड दे सकूँ, जिसने अपने पिता के साथ ही कपट किया।” सुर्जन ने कहा।

मेघवर्ण ने उसके इन शब्दों को सुना। वह सुर्जन की ओर बढ़ा और उससे आश्चर्यपूर्वक प्रश्न किया, “तुम इसे जानते हो? कैसे? और तुम दोनों किस विषय में बात कर रहे हो?”

सुर्जन ने आकाश की ओर देखा। उसे कई गरुड़ उड़ते दिखाई दिए। मेघवर्ण की ओर वापस देखते हुए वह मुस्कुराया, “तुम्हें शीघ्र ही सब कुछ ज्ञात हो जायेगा।”

मेघवर्ण ने आश्चर्य से सुर्जन की ओर देखा। वह कुछ कदम पीछे हटा और एक बड़े पत्थर पर बैठ गया। चंद्रकेतु ने उसके निकट आकर उसके कंधे पर हाथ रख प्रश्न किया, “क्या हुआ मेघवर्ण?”

“मेरा अनुमान उचित ही था चंद्रकेतु; यह व्यक्ति जो इतने मास से हमारे साथ कार्य कर रहा है, वास्तव में हम अभी तक इसकी वास्तविकता से अनभिज्ञ थे।” मेघवर्ण ने कहा।

“तुम क्या सुर्जन के विषय में बात कर रहे हो?” चंद्रकेतु ने प्रश्न किया।

“हाँ मैं इसी के विषय में बात कर रहा हूँ और तुम्हें भी शीघ्र ही सत्य का भान हो जायेगा।” मेघवर्ण ने उत्तर दिया।

उड़ते हुए गरुड़ भूमि पर आये। उनकी संख्या लगभग पाँच सौ थी। राजा अलम्बुष गरुड़राज जम्बाल की ओर बढ़े। उन दोनों ने हाथ मिलाये। “मैंने अपना वचन पूर्ण किया... तुम्हारे पिता का हत्यारा, असुरेश्वर दुर्भीक्ष तुम्हारे समक्ष खड़ा है।” अलम्बुष ने सुर्जन की ओर संकेत करते हुए कहा।

चंद्रकेतु, अन्य डकैत, गंधर्व और नाग वो शब्द सुन स्तब्ध रह गए। सुनंदा के मन में छुपा क्रोध भी उसके मुख पर दिखाई देने लगा। मेघवर्ण पत्थर से उठा और सुर्जन की ओर देखने लगा, जो वास्तव में असुरों का महानायक था।

गरुड़राज जम्बाल ने भाला उठाया और दुर्भीक्ष की ओर बढ़ा। उसने दुर्भीक्ष पर वार करने का प्रयत्न किया, किंतु दुर्भीक्ष ने उसका भाला पकड़ उसे भूमि पर धकेल दिया। सारे गरुड़ योद्धा एक साथ उसकी ओर दौड़े।

तभी चंद्रकेतु उनके बीच आ खड़ा हुआ और गदा से भूमि पर एक शक्तिशाली वार किया। कई गरुड़ योद्धा अपना संतुलन खोकर भूमि पर गिर पड़े।

वह गरुड़ों पर चीखा, “कोई बीच में नहीं आयेगा! इसने मेरे पूरे परिवार को नष्ट किया है, इसलिए इसका वध करने का प्रथम अधिकार मेरा है।”

इसके उपरांत चंद्रकेतु पलटकर दुर्भीक्ष की ओर दौड़ा और उसकी छाती पर भीषण वार किया। दुर्भीक्ष ने बचाव का प्रयत्न नहीं किया और दस गज की दूरी पर जा गिरा। चंद्रकेतु एक बार फिर उसकी ओर दौड़ा, किंतु इस बार मेघवर्ण ने उसकी गदा पकड़ ली।

“मेरे मार्ग में न आओ मेघवर्ण, मैं इसे जीवित नहीं छोड़ूंगा।” चंद्रकेतु क्रोध में था।

“क्यों? तुमने ही तो कहा था न कि सम्पूर्ण सत्य जाने बिना हमें किसी के चरित्र के विषय में किसी भी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचना चाहिए, तो फिर इस क्रोध का कारण क्या है? भूलो मत, इसने तुम्हारे प्राणों की रक्षा की है।” मेघवर्ण ने चंद्रकेतु को घूरते हुए कहा।

चंद्रकेतु झल्लाहट में पीछे हट गया। दुर्भीक्ष भूमि से उठा, “यह तुम्हारा सौभाग्य है जो मैंने इस यात्रा पर तुम दोनों को क्षति न पहुँचाने की सौगंध ली हुई है, अन्यथा तुम्हें अब तक अपने किये इस अपराध का गंभीर दण्ड प्राप्त हो गया होता।”

मेघवर्ण उसके निकट आया, “कैसी सौगंध ली तुमने और क्यों ली?”

“हाँ, मैंने महाबली अखण्ड को वचन दिया था कि इस यात्रा के दौरान मैं तुम लोगों को कोई क्षति नहीं पहुँचाऊँगा... किंतु इस वचन की सीमा इस यात्रा पर ही समाप्त हो जाती है।” दुर्भीक्ष ने कहा।

मेघवर्ण ने क्षणभर साँस भरी और कहा, “हाँ, मैं समझ सकता हूँ... उन्होंने तो तुम्हें बहुत पहले ही पहचान लिया होगा, किंतु इस बात की ग्लानि अवश्य है कि मैंने तुम्हें एक मित्र की दृष्टि से देखा।”

“सुर्जन के रूप में मैंने भी कभी मित्रता में कोई छल नहीं किया।” दुर्भीक्ष ने अपना पक्ष रखा।

“कौन जाने तुम्हारी मंशा क्या थी, क्यों आये थे तुम हमारे जीवन में?” मेघवर्ण ने प्रश्न किया।

दुर्भीक्ष ने दिग्विजय की ओर संकेत कर कहा, “मेरी कोई बुरी मंशा नहीं थी; यह द्रोही युवराज जब महाबली अखण्ड से भेंट करने पहुँचा, तब मैंने इसका पीछा किया। अखण्ड को देख मैंने उनका पीछा करना आरंभ कर दिया और मुझे यह ज्ञात हुआ कि वो मेरे विरुद्ध दो योद्धाओं

को तैयार कर रहे हैं। उन दो योद्धाओं के विषय में जानने को मेरा मन जिज्ञासु हो उठा और यही कारण था जो मैं तुम्हारे दल में सम्मिलित हुआ ताकि मैं उन योद्धाओं की वास्तविकता जान सकूँ।”

“ओह! तो मुझे तो लगता है कि अब तक तुम्हें अपने सारे प्रश्नों के उत्तर तो प्राप्त हो ही गए होंगे?” मेघवर्ण ने क्रोध से उसे देखा।

“न मेरे पास और न ही तुम्हारे पास ऐसा कोई कारण है, जिससे विवश होकर मैं तुम्हारे सारे प्रश्नों के उत्तर दूँ, क्योंकि प्रश्न करने की बारी अब मेरी है।” दुर्भीक्ष, अलम्बुष की ओर बढ़ा।

“तो महाबली अखण्ड और तुमने मिलकर मुझे यहाँ फँसाने की योजना बनायी?” दुर्भीक्ष ने अलम्बुष से प्रश्न किया।

“हाँ, यह इन योद्धाओं का परीक्षण था और तुम्हारे लिए फैलाया गया एक जाल।” राजा अलम्बुष ने कहा।

दुर्भीक्ष ने क्रोध में भरकर उनके मुख पर मुष्टि से वार किया। गरुड़ों के राजा जम्बाल ने हस्तक्षेप का प्रयत्न किया, किंतु असुरेश्वर की मुष्टि के एक ही वार ने उसे कई गज दूर फेंक दिया। इसके उपरांत उसने अलम्बुष की गर्दन पकड़ी और प्रश्न किया, “तुम मुझे मूर्ख समझते हो? सत्य बताओ।”

“वो हमारे सहयोगी हैं मेघवर्ण, हमें उनकी रक्षा करनी चाहिए।” चंद्रकेतु ने आगे बढ़ते हुए मेघवर्ण से कहा।

मेघवर्ण ने उसका मार्ग रोककर कहा, “मुझे विश्वास है कि वो उनका वध नहीं करेगा; मैं भी उस सत्य को जानने का इच्छुक हूँ, जिससे हम अभी तक अनभिज्ञ हैं।”

वहीं दुर्भीक्ष ने अलम्बुष को भूमि पर पड़े एक पत्थर से सटा दिया, “मैं मूर्ख नहीं हूँ अलम्बुष... वो तुम्हारे सैनिक हों या गरुड़ योद्धा, किसी में इतना सामर्थ्य नहीं जो मेरा मार्ग रोक सके और मुझे विश्वास है कि इस यथार्थ से तुम भलीभाँति परिचित रहे होंगे, इसलिए सत्य बताओ।”

“ठीक है, ठी...क है, मैं सत्य बताता हूँ।” अलम्बुष ने खाँसते हुए कहा।

दुर्भीक्ष उसे ऊपर ले आया। अलम्बुष ने हाँफते हुए दुर्भीक्ष की ओर देखा, जो अभी भी उसे क्रोध भरी दृष्टि से देख रहा था।

“यह सब केवल तुम्हारा समय नष्ट करने के लिए था दुर्भीक्ष।” अलम्बुष ने कहा।

“मेरा समय नष्ट करने के लिए?” दुर्भीक्ष ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“हाँ, केवल तुम्हारा समय नष्ट करने के लिए। जिस दिन से राजा जयवर्धन ने विदर्भ का सिंहासन सँभाला है, समग्र आर्यावर्त की भूमि पर दुष्ट प्रवृत्ति के आर्यों की संख्या बहुत अधिक बढ़ गयी है और आर्यावर्त के दक्षिणी भाग में तो लगभग नब्बे प्रतिशत भूमि उन दुष्ट आर्य राजाओं के अधिकार में है, जिन्होंने राजा जयवर्धन के साथ संधि की हुई है और तुम जयवर्धन के सबसे प्रमुख रक्षक हो और अपरोक्ष रूप से तुम उन सभी दुष्ट प्रवृत्ति के आर्यों के रक्षक हो, जिन्होंने जयवर्धन के साथ संधि की है।”

“और तुम लोगों ने मुझे यहाँ उलझाया, ताकि महाबली अखण्ड, जयवर्धन को क्षति पहुँचा सके, है न?” दुर्भीक्ष ने अनुमान लगाने का प्रयत्न किया।

“हाँ और हमारी योजना अनुसार तो अब तक उन्होंने जयवर्धन का अपहरण भी कर ही लिया होगा; आर्यावर्त के सबसे शक्तिशाली राज्य का राजा इस समय बंदी बना हुआ होगा।” अलम्बुष ने

मुस्कुराते हुए उत्तर दिया।

मेघवर्ण और चंद्रकेतु भी यह सुनकर स्तब्ध रह गए।

चंद्रकेतु ने मेघवर्ण की ओर देखा और कटाक्षमय स्वर में कहा, “तो ये थी हमारे गुरुदेव की वास्तविक योजना और तुम उन पर संदेह कर रहे थे।”

मेघवर्ण ने उसके इस कटाक्ष का कोई उत्तर नहीं दिया।

दुर्भीक्ष ने अपना मस्तक पकड़ा और झल्लाहट में चीखा, “मुझे उसे अकेले नहीं छोड़ना चाहिए था... उस नीच अखण्ड ने बहुत बड़ा छल किया है मेरे साथ। क्या योजना बनायी उसने; किंतु मैंने भी जयवर्धन की रक्षा का प्रण लिया हुआ है, इसलिए मैं तो उसे मुक्त करा ही लूँगा और जो भी मेरे मार्ग में आया, निःसंदेह मृत्यु को प्राप्त होगा।” कहते हुए वो अपने अश्व की ओर बढ़ा।

जम्बाल वहाँ आया और खुले शब्दों में दुर्भीक्ष को चुनौती दी, “यह राह तुम्हारे लिए सरल नहीं होगी असुरेश्वर दुर्भीक्ष।”

गरुड़राज के अगले संकेत पर सभी पाँच सौ गरुड़ योद्धा दुर्भीक्ष की ओर दौड़ पड़े।

दुर्भीक्ष ने जम्बाल को क्रोध से देखा, “तुम मूर्खों के साथ क्रीड़ा करने का समय नहीं मेरे पास।” कहते हुए उसने अपने नेत्र बंद कर हाथ वायु में लहराये।

अगले ही क्षण उस क्षेत्र में भयंकर आँधी आ गयी। उस क्षेत्र में उपस्थित सभी जनों को उस आँधी ने प्रभावित किया, चाहे वो गरुड़ हों, द्रविड़ हों, नाग हों, डकैत हों या गंधर्व, कोई भी उस आँधी का सामना नहीं कर पा रहा था। तीव्र गति से चलने वाली वह वायु अपने साथ कई लोगों को उड़ा ले गयी।

दुर्भीक्ष क्रोध में दहाड़ा, “मैं अजेय दुर्भीक्ष हूँ, संसार में ऐसा कोई योद्धा जन्मा ही नहीं जो मेरे समक्ष खड़ा हो सके।

किंतु अगले ही क्षण दुर्भीक्ष का ध्यान मेघवर्ण की ओर गया। उसे देख वह स्तब्ध रह गया, क्योंकि उस पर उस पर तीव्र गति से चलने वाली वायु का कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा था। मेघवर्ण भी स्वयं की ओर देख आश्चर्य में था।

कुछ क्षणों के उपरांत वह दुर्भीक्ष की ओर बढ़ा, “यह सब रोक दो दुर्भीक्ष, मैं वचन देता हूँ, कोई तुम्हारा मार्ग नहीं रोकेगा, इस आँधी को रोक दो।”

दुर्भीक्ष ने अपने हाथ लहराकर उस आँधी को रुकने का संकेत दिया। उस आँधी के रुकने के उपरांत सामने का दृश्य भयावह था। कई योद्धा एक दूसरे पर गिरे हुए थे, कई घायल हो गये थे।

“तुम इस भयंकर आँधी में स्थिर खड़े रहे, कैसे?” दुर्भीक्ष ने मेघवर्ण से आश्चर्यपूर्वक प्रश्न किया।

“मैं इसका कारण नहीं जानता।” मेघवर्ण ने संशय से भरे स्वर में उत्तर दिया।

गरुड़राज जम्बाल एक बार फिर दुर्भीक्ष की ओर दौड़ा। मेघवर्ण ने मुड़कर उसे रोका और चेतावनी भरे स्वर में घोषणा की, “यदि कोई भी बीच में आया, तो उसे मेरे भयंकर बाणों का सामना करना होगा।”

जम्बाल झल्लाते हुए पीछे हट गया।

मेघवर्ण दुर्भीक्ष की ओर मुड़ा, “तुमने यह प्रण लिया था कि इस यात्रा पर तुम हमें क्षति नहीं पहुँचाओगे, इसलिए मैं भी आज तुम पर शस्त्र नहीं उठाऊँगा... किंतु मैं तुम्हारे ही कहे शब्दों का तुम्हें स्मरण कराना चाहता हूँ; यदि नियति ने हमें एक दूसरे के विरुद्ध खड़ा होने के लिए चुना

है, तो यह प्रकृति इस टकराव का एक बड़ा उद्देश्य भी खोज निकालेगी और अभी भी तुमसे युद्ध करने का मेरे पास कोई विशेष कारण नहीं है, इसलिए तुम अपने उस दुर्दांत राजा के रक्षण हेतु प्रस्थान कर सकते हो।”

चंद्रकेतु ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, “तुम ऐसा कैसे कर सकते हो मेघवर्ण? तुम हमारे गुरुदेव की बनायी योजना पर पानी फेर रहे हो... मत भूलो, कि हमारे तीन सौ योद्धाओं और दस सहस्र द्रविड़ों ने इस योजना के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया है।”

“और तुम्हें यह विस्मरण नहीं होना चाहिए कि इसने तुम्हारे प्राणों की रक्षा की है।” मेघवर्ण ने चंद्रकेतु से कहा।

अलम्बुष ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, “नहीं, इसने आप लोगों पर कोई उपकार नहीं किया; यदि ये इनके प्राण नहीं भी बचाता, तो भी आपके इस साथी की हत्या की मंशा नहीं थी हमारी।”

मेघवर्ण दुर्भीक्ष की ओर मुड़ा और उसकी प्रशंसा में कहा, “किंतु इसे तो यह ज्ञात नहीं था न; इसने आज तक हमसे अपनी वास्तविकता अवश्य छुपाये रखी, किंतु फिर भी अब तक यह हमारा मित्र था और इसने मित्रता में कोई कपट नहीं किया। किंतु मैं अपने एक प्रश्न का उत्तर चाहता हूँ तुमसे दुर्भीक्ष, तुम्हें तो यह ज्ञात ही था कि हमें तुम्हारे विरुद्ध खड़ा होने के लिए तैयार किया जा रहा है, तो जब मैं अपने गुरु से द्वंद्व में पराजित हुआ था, तब तुमने आकर मेरा साहस क्यों बढ़ाया?”

दुर्भीक्ष मुस्कुराया, “क्योंकि मैं प्रकृति के नियमों से भलीभाँति परिचित हूँ... इस प्रकृति ने तुम्हें मेरे विरुद्ध खड़े होने के लिए चुना है और आज तो मैंने उसका साक्ष्य भी देख लिया। एक पीड़ित स्त्री का श्राप कभी मिथ्या नहीं हो सकता, इसका मैं अपने प्रारब्ध से भलीभाँति परिचित हूँ... निःसंदेह वह दिन अवश्य आयेगा, जब हमारा निर्णायक द्वंद्व होगा, इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम पूरी तैयारी के साथ वो द्वंद्व करो, ताकि तुम्हारे पास कोई बहाना न बचे। मैंने तुम्हारा मनोबल बढ़ाया, क्योंकि मैं चाहता था कि तुम अपने भीतर के सम्पूर्ण योद्धा को जागृत करो। अमर तो हममें से कोई नहीं है, एक दिन सभी को काल के गाल में समा ही जाना है, इसलिए मेरी इच्छा है कि आने वाला हमारा वो द्वंद्व सदियों तक स्मरण रखा जाये।”

मेघवर्ण ने मुस्कुराकर दुर्भीक्ष की प्रशंसा की, “तुम एक महान योद्धा हो असुरेश्वर दुर्भीक्ष, जाओ और यदि कर सको तो अपने राजा का रक्षण करो। वैसे एक यथार्थ से तो मैं भी परिचित हूँ कि राजा जयवर्धन को मुक्त कराना सरल कार्य नहीं होगा तुम्हारे लिए, क्योंकि हमारे गुरुदेव ऐसी चालों में निपुण हैं।”

“किंतु....।” अलम्बुष ने हस्तक्षेप का प्रयत्न किया।

“यदि किसी ने हस्तक्षेप किया, तो उसे मेरे साथ द्वंद्व की चुनौती स्वीकार करनी होगी।” मेघवर्ण ने चेतावनी भरे स्वर में कहा। अलम्बुष मौन रह गये।

प्रस्थान से पूर्व दुर्भीक्ष ने भी मेघवर्ण की प्रशंसा में कुछ शब्द कहे, “तुम उस भयंकर आँधी में स्थिर खड़े रहे; तुम अपने वचन के पक्के हो, निःसंदेह तुमसे उपयुक्त प्रतिद्वंद्वी नहीं हो सकता मेरे लिए।”

“मैंने भी तुमसे बहुत कुछ सीखा है असुरेश्वर दुर्भीक्ष और इस शिक्षा का प्रयोग मैं तुम्हारे विरुद्ध ही करूँगा।” मेघवर्ण ने चुनौती भरे स्वर में कहा।

“और मैंने भी चक्रव्यूह का भेद जाना है तुमसे, इसलिए अब सब कुछ बराबर हुआ... आज इस

मित्रता का अंत होता है और हमारे बीच की प्रतिस्पर्धा का आरंभ होता है” दुर्भीक्ष ने भी चुनौती भरे स्वर में कहा।

“निःसंदेह... इस अस्थायी मित्रता का अंत हुआ आज।” मेघवर्ण ने कहा।

दुर्भीक्ष ने मुस्कुराते हुए दिग्विजय की ओर देखा, “तुमसे भी शीघ्र ही भेंट करूँगा द्रोही युवराज।”

इसके उपरांत वो एक अश्व की ओर दौड़ा, उस पर आरूढ़ हुआ और वहाँ से प्रस्थान कर गया।

अश्व को दौड़ते हुए देखकर दुर्भीक्ष के मन में केवल एक ही विचार बार-बार आ रहा था, ‘मेघवर्ण वो पहला योद्धा है, किंतु न चंद्रकेतु, न दिग्विजय, दोनों में से कोई वो दूसरा योद्धा नहीं है; तो कौन है महाबली अखण्ड का वो दूसरा अस्त्र, जिसे वो मेरे विरुद्ध खड़ा करने वाले हैं?’

13. दूसरी योजना

मेघवर्ण, चंद्रकेतु की ओर मुड़ा। वो क्रोध में भरकर सुनंदा और दिग्विजय की ओर देख रहा था। वो दोनों पत्थरों पर बैठे वार्ता में लीन थे।

मेघवर्ण ने उसके कंधे पर हाथ रखा, “मेरे साथ आओ।” वो दोनों दिग्विजय की ओर बढ़े।

दिग्विजय उन्हें देख उठ खड़ा हुआ। मेघवर्ण ने उसके निकट आकर प्रश्न किया, “अब तुम्हें मेरे प्रश्नों के उत्तर देने होंगे युवराज दिग्विजय... तुम अपने पिता के साथ द्रोह करके महाबली अखण्ड का समर्थन क्यों कर रहे हो?”

“क्योंकि मुझे भलीभाँति ज्ञात है कि मेरे पिता अनुचित मार्ग पर हैं और मैं ही हूँ जिसने गंधर्व और डकैतों से युद्ध में आप लोगों के समक्ष विदर्भ की युद्ध योजना का भेद खोला था।” दिग्विजय ने दृढ़ता से उत्तर दिया।

“उचित है; तुम्हारा उत्तर कुछ हद तक संतोषजनक प्रतीत होता है और तुम सुनंदा, तुमने तो बाल्यावस्था में ही दुर्भीक्ष को विनाश फैलाते हुए देखा था... तुम्हें यह सदैव से ही ज्ञात रहा होगा कि वो हमारे साथ चल रहा है, तो तुमने मुझे सत्य क्यों नहीं बताया?” मेघवर्ण ने सुनंदा से प्रश्न किया।

“हाँ, मैं दुर्भीक्ष के सत्य से भलीभाँति परिचित थी। जब मैं युवराज दिग्विजय द्वारा लिखा हुआ पत्र लेकर महाबली अखण्ड के पास गयी थी, तब उन्होंने दुर्भीक्ष को फँसाने की पूरी योजना मुझे समझा दी थी। उन्होंने मुझे स्पष्ट आदेश दे रखे थे कि इस रहस्य को मैं किसी के समक्ष प्रकट न करूँ; मैं तो बस उनके आदेश का पालन कर रही थी।” सुनंदा ने कहा।

मेघवर्ण कुछ क्षण मौन रहा। यह अवसर देख चंद्रकेतु ने सुनंदा से प्रश्न किया, “यह सब तो ठीक है, किंतु यह बताओ कि तुम दोनों के बीच क्या चल रहा है?” उसका संकेत दिग्विजय की ओर था।

सुनंदा मौन रह गयी। उसे सूझ ही नहीं रहा था कि वो क्या बोले।

तभी एक नाग योद्धा ने वहाँ आकर हस्तक्षेप किया, “हस्तक्षेप के लिए क्षमा चाहता हूँ महामहिम, किंतु मैं कुछ कहना चाहता हूँ।”

“हाँ, क्यों नहीं, अंततः यह तुम्हारे युवराज हैं।” मेघवर्ण पीछे हट गया।

“पहले मेरे प्रश्नों के उत्तर....।” चंद्रकेतु ने हस्तक्षेप का प्रयत्न किया, किंतु मेघवर्ण ने उसे रोक लिया।

“कौन हो तुम?” दिग्विजय ने उस नाग को देख प्रश्न किया।

“मैं नागलोक की महारानी का अंगरक्षक हूँ, अर्थात् आपकी माता का प्रमुख सुरक्षा अधिकारी।” उस नाग ने उत्तर दिया।

“तुम पर विश्वास करने का कोई कारण नहीं है मेरे पास; तुमसे पूर्व भी तक्षक नाग ने मुझे यही सब बताकर मूर्ख बनाया था।” दिग्विजय, तक्षक की ओर मुड़ा, किंतु वह यह देख स्तब्ध रह गया कि वहाँ कोई नहीं था।

“तक्षक... वो कहाँ गया?” दिग्विजय ने इधर-उधर दृष्टि घुमाकर उसे खोजने का प्रयत्न

किया।

उस पूरे क्षेत्र में अब तक्षक का कोई चिह्न नहीं था।

“उसने आँधी का लाभ उठाया और पलायन कर गया।” दिग्विजय इस निष्कर्ष पर पहुँचकर झल्ला उठा।

“आप उसकी चिंता मत कीजिये युवराज; समय आ गया है कि आप अपनी माता से भेंट करें, नागलोक की रानी कनिष्का अपने पुत्र की प्रतीक्षा पिछले पचास वर्षों से कर रही हैं।” उस नाग ने कहा।

“केवल कनिष्का नाम के प्रयोग से मैं तुम पर विश्वास नहीं करने वाला।” दिग्विजय ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

सुनंदा ने उसे समझाने का प्रयत्न किया, “विश्वास करो युवराज, यह सभी विश्वास के योग्य हैं; इन्हीं के पास तो वह आधुनिक नौकायें थीं, जिनके द्वारा हम सागर पार कर यहाँ तुम्हारी सहायता के लिए पहुँच पाये।”

“तो तुम चाहती क्या हो?” दिग्विजय ने सुनंदा से प्रश्न किया।

“तुम्हें इनके साथ जाना चाहिए, मुझे विश्वास है कि यह असत्य नहीं बोल रहे; तुम वास्तव में नागलोक के उत्तराधिकारी हो।” सुनंदा ने कहा।

“ठीक है, जैसा तुम उचित समझो; अब मैं तुम्हारी बात तो नहीं काट सकता ना।” दिग्विजय सुनंदा की ओर देखते हुए मुस्कुराया।

दिग्विजय मेघवर्ण की ओर बढ़ा, “प्रणाम डकैत सरदार, आशा है कि हमारी अगली भेंट शीघ्र ही हो।”

“हाँ, ठीक है।” मेघवर्ण ने उससे वार्ता करने में कोई विशेष रुचि नहीं दिखाई।

दिग्विजय ने साँस भरी और नागलोक के नागों की ओर बढ़ा, “प्रस्थान करते हैं।”

“हम आप लोगों की सागर तट पर प्रतीक्षा करेंगे महामहिम।” कनिष्का के प्रमुख सुरक्षा अधिकारी नाग ने मेघवर्ण और चंद्रकेतु से विनम्रतापूर्वक कहा।

“हाँ, हम शीघ्र ही आते हैं।” मेघवर्ण ने उत्तर दिया।

सुनंदा, दिग्विजय को जाते देख मुस्कुरा रही थी। यह देख चंद्रकेतु झल्ला उठा। मेघवर्ण ने उसके कंधे पर हाथ रख उसे समझाने का प्रयत्न किया, “तो यह है तुम्हारे क्रोध का वास्तविक कारण?”

चंद्रकेतु ने मेघवर्ण की ओर देखा और वहाँ से प्रस्थान करने का प्रयत्न किया, किंतु मेघवर्ण ने उसका हाथ पकड़ा और उसे अपने निकट खींचा, “हमारे पास करने को और भी कई महत्वपूर्ण कार्य हैं चंद्रकेतु।”

चंद्रकेतु ने मुस्कुराते हुए कटाक्ष किया, “हाँ, क्यों नहीं, अब तो तुम्हारे और भी कई मित्र बन गए हैं, है न? तुम मेरी परवाह क्यों करोगे?”

“हमारे गुरुदेव ने जयवर्धन का अपहरण किया है; हमें इस बात का ध्यान रखना है कि दुर्भीक्षा उन्हें मुक्त न करवा पाये। इसके उपरांत हम सुनंदा से विषय में चर्चा करेंगे! और भूलो मत, देवी दुर्धरा ने तुम्हारे और सुनंदा का संबंध जोड़ने का वचन दिया हुआ है।” मेघवर्ण ने कहा।

चंद्रकेतु ने मेघवर्ण की ओर देखकर कहा, “मैं सुनंदा पर कोई दबाव नहीं डालना चाहता।”

“इस विषय पर हम बाद में चर्चा कर लेंगे, इस समय हमें यहाँ से निकलना होगा।” मेघवर्ण ने

कहा।

“तो फिर ठीक है, चलो चलते हैं।” चंद्रकेतु ने सहमति जताई।

मेघवर्ण ने घोषणा की, “हम अभी इसी समय यहाँ से प्रस्थान करेंगे, नागों का दल सागर तट पर हमारी प्रतीक्षा कर रहा है।”

यह घोषणा करने के उपरांत मेघवर्ण अलम्बुष की ओर मुड़ा, “अब हम सहयोगी हैं महाराज अलम्बुष, शीघ्र ही भेंट होगी।”

“अवश्य युवान्, आज तो मैंने साक्ष्य सहित देखा, कि क्यों आपको दुर्भीक्ष के विरुद्ध खड़ा होने के लिए चुना गया है।” अलम्बुष ने मेघवर्ण की प्रशंसा करते हुए कहा।

“विदा महाराज अलम्बुष, संदेश वाहकों द्वारा हमारी वार्ता होती रहेगी।” मेघवर्ण ने अलम्बुष को प्रणाम किया।

“अवश्य महावीरों, आशा है, अपने-अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए शीघ्र ही हमारी भेंट होगी।” अलम्बुष ने भी मेघवर्ण को विदा किया।

इसके उपरांत मेघवर्ण, चंद्रकेतु, सुनंदा के साथ सभी डकैत और गंधर्व योद्धा सागर तट की ओर चल पड़े।

उनके प्रस्थान के उपरांत एक द्रविड़ सैनिक ने अलम्बुष के निकट आकर प्रश्न किया, “मेरे मन में एक प्रश्न है महाराज।”

“मैं सुन रहा हूँ।” राजा अलम्बुष ने कहा।

“इन परीक्षाओं में आपने अपने आधुनिक अस्त्रों का प्रयोग क्यों नहीं किया?” उस द्रविड़ सैनिक ने प्रश्न उठाया।

राजा अलम्बुष उस सैनिक की ओर देख मुस्कुराये, “क्योंकि उनके साथ असुरेश्वर दुर्भीक्ष भी था और इन आधुनिक अस्त्रों का रहस्य मैं उसके समक्ष नहीं खोल सकता था।”

* * *

वो त्रिगर्ता राज्य का एक वन था। त्रिगर्ता का राजा उपनंद घने वनों से होता हुआ चला जा रहा था। शीघ्र ही वो एक गुफा के निकट पहुँचा।

दो सैनिक उस गुफा के बाहर खड़े पहरा दे रहे थे। उपनंद के गुफा में प्रवेश के दौरान वह सैनिक उसके सम्मान में झुके। कुछ समय तक वो गुफा के भीतर ही चलता रहा।

शीघ्र ही वह गुफा में एक निर्धारित स्थान पर पहुँचा। वो एक विशाल कारागार के समक्ष खड़ा था। उस कारागार के भीतर एक विशालकाय असुर, भारी बेड़ियों में बँधा मूर्छित पड़ा हुआ था। उसका आकार सामान्य मानव से लगभग डेढ़ गुना था, उसकी भुजायें सुदृढ़ और सशक्त प्रतीत हो रही थीं।

उपनंद ने एक जल का पात्र उठाया और उस महाकाय असुर के मुख पर वह पूरा जल उड़ेल दिया। उस महाकाय असुर की चेतना लौटने लगी। धीरे- धीरे उसने अपने नेत्र खोले।

उपनंद ने उस महाकाय असुर की ओर ध्यान से देखा, “तो कैसे हैं आप महाबली वक्रबाहु?”

वक्रबाहु ने क्रोध से उपनंद को घूरा, “क्यों आये हो तुम यहाँ?”

उपनंद मुस्कुराया, “अब इस प्रकार व्यवहार न कीजिये; आपकी एकमात्र संतान हूँ मैं, आपका ध्यान रखना मेरा कर्तव्य है, क्योंकि मुझे आपको हर हाल में जीवित रखना है।”

“तुम संतान नहीं श्राप हो मेरे लिए!” वक्रबाहु क्रोध से चीख पड़ा, उसने अपनी बेड़ियों को

तोड़ने का प्रयत्न किया।

उपनंद एक बार फिर मुस्कुराया, “अब यह व्यर्थ का प्रयत्न आप बंद करेंगे; यह बेड़ियाँ अभिमंत्रित हैं, आपको अब तक समझ जाना चाहिए था कि आपकी भुजाओं का यह असीमित बल इस पर कार्य नहीं करेगा।”

वक्रबाहु झल्लाहट में चीख पड़ा, “सारा दोष मेरा है, कि तुम जैसी दुष्ट प्रवृत्ति की संतान को जन्म दिया मैंने।”

“हाँ, मैं मानता हूँ, किंतु वो तो केवल आपका दृष्टिकोण मात्र है; किंतु वास्तव में तो मैं आपका धन्यवाद करना चाहता हूँ। आपने एक मानव कन्या से विवाह किया, जिसके कारण ही तो मैंने मानव रूप में ही जन्म लिया और भला हो गुरु भैरवनाथ का, जिन्होंने मुझे उस सत्य से अवगत कराया कि आप हैं मेरे वास्तविक पिता... और परिणाम देखिये, आज आप मेरे बंदी बने हुए हैं।” उपनंद मुस्कुराया।

वक्रबाहु कटाक्षमय स्वर में मुस्कुराया, “जितना प्रयत्न करना है कर लो, तुम्हें वो कभी प्राप्त नहीं होगा, जिसकी इच्छा तुम्हारे मन में है।”

उपनंद क्रोधित हो उठा। उसने क्रोध से वक्रबाहु की ओर देखा, “मुझे वो सबकुछ प्राप्त होगा, जिसकी मुझे इच्छा है। आप समझते क्यों नहीं, मैं आपका पुत्र हूँ, आपको पीड़ा नहीं पहुँचाना चाहता मैं, इसलिए अपने इस अमरत्व का रहस्य बता दीजिये मुझे।”

“मैं तुमसे सहस्रों बार कह चुका हूँ उपनंद, कि मैं अमर नहीं हूँ।” वक्रबाहु ने साँस भरते हुए कहा।

“अपनी ओर देखिये... कितने वृद्ध हो चुके हैं आप, इसके उपरांत भी आपका बल असीमित है; आप न कोई सिद्ध ब्राह्मण हैं और न ही कोई इच्छाधारी नाग, तो आप इतने वर्षों तक जीवित कैसे रह सकते हैं?” उपनंद ने सदैव की भाँति प्रश्न उठाये।

“जैसे कि मैं पहले भी कह चुका हूँ, मैं यह भेद तुम्हारे समक्ष नहीं खोल सकता; किंतु मेरी एक बात गाँठ बाँध लो, जिस अमरत्व के पीछे तुम भाग रहे हो, उसकी अपनी एक अलग ही पीड़ा है, मत भागो उसके पीछे।” वक्रबाहु ने उसे सावधान करने का प्रयत्न किया।

“तो फिर ठीक है, सदैव की भाँति मैं प्रस्थान करता हूँ, आप यूँ ही पड़े रहिये, दास आपके भोजन का ध्यान रखेंगे।” उपनंद पीछे हटा।

“तुम मेरा बल लेकर जन्मे थे और मेरे जीवन की सबसे बड़ी भूल थी कि तुम्हारे जैसी दुष्ट प्रवृत्ति की संतान को मैंने त्रिगर्ता के राजा सत्व को दे दिया।” वक्रबाहु उपनंद पर दहाड़ा।

उपनंद कटाक्षमय ढंग से मुस्कुराया, “निःसंदेह, आपने बहुत बड़ी भूल की और आपकी इस भूल का परिणाम अब त्रिगर्ता की प्रजा को भोगना पड़ रहा है।” वो मुड़कर गुफा से बाहर चला गया।

वक्रबाहु उसे जाते देखता रहा। वो विचारों में खो गया “मैं अमर नहीं हूँ उपनंद, मैं तो बस उस व्यक्ति की प्रतीक्षा में हूँ जो मेरे इस शरीर को मेरी दूषित और पापी आत्मा से मुक्त करायेंगा। कहाँ हैं आप गुरुदेव, आपने सौगंध ली थी कि आप लौटकर आयेंगे; आपका यह शिष्य आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।”

वहीं उपनंद जैसे ही गुफा के बाहर आया, रक्षगुरु भैरवनाथ उसे अपने समक्ष खड़ा दिखाई दिया।

‘गुरुदेव?’ उपनंद उसकी ओर बढ़ा और अपने गुरु के सम्मान में झुका। अगले ही क्षण उसने उठकर भैरवनाथ के चिंतित मुख की ओर देखा।

“आप चिंतित दिखाई दे रहे हैं गुरुदेव; इसका कारण क्या है?” उपनंद ने प्रश्न किया।

“तुम्हारा अनुमान उचित है; एक आपातकालीन स्थिति आ गयी है, मुझे तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है।” भैरवनाथ ने कहा।

“अवश्य गुरुदेव, बताइये मुझे क्या सहायता करूँ मैं आपकी?” उपनंद ने प्रश्न किया।

“कुछ दिन पूर्व हस्तिनापुर की सेना और मुट्ठी भर डकैतों ने मिलकर विदर्भ राज्य पर चढ़ाई की थी... असुरेश्वर दृभीक्ष यहाँ उपस्थित नहीं थे, इसका उन्होंने लाभ उठाया और राजा जयवर्धन को बंदी बना ले गये और अब मैंने उस स्थान का पता लगा लिया है, जहाँ उन्होंने जयवर्धन को रखा है, उसे मुक्त कराने के लिए मुझे तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है।” भैरवनाथ ने कहा।

“अवश्य गुरुदेव, कहिये क्या करना होगा मुझे?” उपनंद ने प्रश्न किया।

“मेरे पास एक योजना तो है, किंतु उसके लिए तुम्हें कुछ दिनों के लिए अपनी स्वतंत्रता की आहुति देनी होगी।” भैरवनाथ ने अपनी योजना समझानी आरंभ की।

योजना सुनने के उपरान्त उपनंद विचारों में खो गया। भैरवनाथ ने उसे समझाने का प्रयत्न किया, “तुम्हें यह करना ही होगा उपनंद; जयवर्धन आर्यावर्त का स्तंभ है; आर्यावर्त के सत्तर प्रतिशत से भी अधिक राज्यों ने उसके साथ संधि की हुई है। वैसे तो अभी इस समय विदर्भ राज्य की देख-रेख उसका छोटा पुत्र श्रुतायुध कर रहा है, किंतु यथार्थ यही है कि न जयवर्धन न ही उसका ज्येष्ठ पुत्र इस समय राज्य में उपस्थित हैं और श्रुतायुध इस उत्तरदायित्व का वहन अधिक समय तक नहीं कर पायेगा और इसका परिणाम यह होगा कि आर्यावर्त के सबसे शक्तिशाली राज्य के विरुद्ध कई विद्रोह भड़क सकते हैं और चिंतित मत हो, जिस दिन असुरेश्वर दुर्भीक्ष लौट आये, हम तुम्हें भी मुक्त करा लेंगे।”

उपनंद ने सहमति जताते हुए कहा, “ठीक है, मैं आपकी इस योजना के लिए सज्ज हूँ।”

“तो फिर मेरे साथ आओ।” भैरवनाथ ने कहा।

* * *

जयवर्धन को एक कक्ष में बेड़ियों से बाँधकर रखा गया था। वो मूर्छित था। उसके समक्ष लगभग सौ से अधिक ब्राह्मण बैठे थे, जो मंत्रों का जाप कर रहे थे। सर्वदमन, महर्षि शंकराचार्य और महाबली अखण्ड उस कक्ष के बाहर प्रतीक्षा कर रहे थे।

सर्वदमन ने अखण्ड से प्रश्न किया, “यह ठीक है कि हमने राजा जयवर्धन का हरण किया, किंतु यह सब आप क्या करवा रहे हैं?”

“जयवर्धन दुष्ट प्रवृत्ति का नहीं है सर्वदमन; उसके शरीर और मन को एक दुष्ट आसुरी आत्मा सुबाहु ने अपने नियंत्रण में कर रखा है; यह सब कुछ हम उसके शरीर को उस दुष्ट आसुरी आत्मा से मुक्ति दिलाने के लिए कर रहे हैं।” अखण्ड ने कहा।

सर्वदमन को आश्चर्य हुआ, “तो यह था वो वास्तविक उद्देश्य, जिसके लिए आपने इतनी सारी योजनाएँ बनायीं?”

“सही समझे सर्वदमन; जब मेरा अनुज तेजस्वी मृत्युशय्या पर था, तब मैंने उसे वचन दिया था कि मैं उसके पुत्र को सुबाहु की दुष्टात्मा से मुक्त कराऊँगा और तब तक मैं किसी को भी उसे क्षति नहीं पहुँचाने दूँगा। दुर्भीक्ष ने जयवर्धन की रक्षा की सौगंध ली थी, इसलिए यह कार्य दुर्भीक्ष

की अनुपस्थिति में ही संभव था और इस समय वो हमसे सहस्रों कोस दूर है। किंतु मेरा अनुमान है कि फिर भी हमारे पास बहुत सीमित समय है।” अखण्ड ने विस्तृत किया।

“तो जो कुछ मैंने सुना था, वो सत्य ही था, कि आप केवल डकैतों के मार्गदर्शक नहीं हैं, आप महाराज तेजस्वी के ज्येष्ठ भ्राता हैं, रक्षराज दुशल के वंशज हैं, जिन्हें विदर्भ के सिंहासन का उत्तराधिकारी घोषित किया गया था। महाबली अखण्ड, वो एकमात्र योद्धा जो पाँच दिन के महासमर में विदर्भ के पक्ष से जीवित बचे थे।” सर्वदमन ने अखण्ड की ओर ध्यान से देखा।

“हाँ, मुझे विदर्भ के सिंहासन का उत्तराधिकारी घोषित किया गया था, किंतु मैं असुरवंश से था, इसलिए मैंने वो सिंहासन तेजस्वी को समर्पित कर दिया, क्योंकि मैं उस सिंहासन का वास्तविक उत्तराधिकारी था ही नहीं।” अखण्ड ने वह कथा कह सुनाई, जब दुर्भीक्ष ने जयवर्धन के साथ मिलकर विदर्भ पर आक्रमण किया था।

“लोगों को लगता है कि तेजस्वी अभी भी जीवित हो सकता है और एक दिन वह वापस आयेगा... किंतु हममें से कुछ को ही ज्ञात है कि ऐसा कभी नहीं होगा।” अखण्ड ने अपनी कथा का अंत किया।

“तो इसका अर्थ यह है कि मेघवर्ण, जयवर्धन का पुत्र है और चंद्रकेतु आपका पौत्र?” सर्वदमन ने प्रश्न किया।

“हाँ यही सत्य है, किंतु उन्हें यह रहस्य ज्ञात नहीं है और यदि मैं जयवर्धन के शरीर को उस दुष्ट सुबाहु की आत्मा से मुक्त कराने में सफल हो गया, तो इस रहस्य को उन दोनों के समक्ष खोल दूँगा... मुझे विश्वास है कि इसके उपरांत जयवर्धन एक न्यायप्रिय राजा होगा और दुर्भीक्ष ने भी तो उसका समर्थन करने का प्रण लिया ही हुआ है, तो वो भी किसी को क्षति नहीं पहुँचायेगा, परिणामस्वरूप समग्र आर्यावर्त में शांति की स्थापना होगी।” अखण्ड ने विस्तार से अपनी योजना कही।

“योजना तो अति उत्तम थी।” सर्वदमन ने साँस भरते हुए कहा।

अगले ही क्षण एक डकैत सैनिक ने वहाँ आकर सूचित किया, “संदेशवाहक बाज आ चुका है गुरुदेव।”

“संदेश क्या है?” अखण्ड ने प्रश्न किया।

“सागर पार कर असुरेश्वर दुर्भीक्ष आर्यावर्त की भूमि पर लौट आया है।” उस डकैत ने सूचना दी।

“ठीक है तुम जा सकते हो।” अखण्ड ने उस डकैत को भेज दिया। इसके उपरांत उन्होंने कुछ क्षण विचार किया और एक निर्णय लिया, ‘मुझे उन ब्राह्मणों से वार्ता करनी होगी।’

अखण्डने उस कक्ष के भीतर प्रवेश किया, जहाँ वो ब्राह्मण मंत्रों का जाप कर रहे थे। अखण्ड ने एक ब्राह्मण को अपने निकट बुलाया। वो ब्राह्मण उनकी ओर बढ़ा।

“यह क्या हो रहा है? पिछले सात दिवस से आप लोग इस कार्य में संलग्न हैं और अभी तक हमें कोई परिणाम क्यों नहीं मिला? कितना समय और लगेगा इस कार्य में?” अखण्ड ने उस ब्राह्मण से प्रश्न किया।

“हमने आपसे पहले भी कहा था, कि बंद कक्ष में हमारे मंत्रों का प्रभाव उतना अधिक नहीं होगा, किंतु आपने हमें खुले मैदान में यह क्रिया करने की अनुमति नहीं दी... हमें इन्हें खुले मैदान में लाना होगा, ताकि मंत्रों का प्रभाव बढ़ सके।” उस ब्राह्मण ने कहा।

“खुला स्थान सुरक्षित नहीं होगा, किंतु कदाचित् हमारे पास अधिक समय और विकल्प नहीं हैं; मैं शीघ्र ही व्यवस्था करवाता हूँ।” अखण्ड, कक्ष से बाहर चले गए।

शीघ्र ही जयवर्धन को एक खुले मैदान में लाया गया। उसे एक आसन के साथ बेड़ियों से बाँधा गया था और अभी भी वह मूर्छित ही था। लगभग सौ ब्राह्मण उस खुले मैदान की ओर बढ़े चले जा रहे थे। भैरवनाथ और उपनंद घने वनों के वृक्षों के पीछे से उन पर दृष्टि जमाये हुए थे। अगले ही क्षण भैरवनाथ ने स्वयं को एक ब्राह्मण का रूप दे दिया और उपनंद को निर्देश दिया, “तुम्हें भलीभाँति ज्ञात है कि तुम्हें क्या करना है, मेरे संकेत की प्रतीक्षा करना।”

“अवश्य गुरुदेव, आपके संकेत पर मैं अपना कार्य आरंभ करूँगा।” उपनंद ने सहमति जताते हुए कहा।

इसके उपरांत भैरवनाथ ने ब्राह्मणों की भीड़ का लाभ उठाया और बड़ी सावधानी से उस भीड़ का भाग बन गया।

शीघ्र ही सभी ब्राह्मण भूमि पर बैठे और मंत्रों का उच्चारण आरंभ किया। भैरवनाथ भी उन ब्राह्मणों में से एक था और उन्हीं के दल के साथ वो भी मंत्रों का उच्चारण करने लगा।

तभी जयवर्धन की चेतना लौट आयी। उसने अखण्ड की ओर देख प्रश्न किया, “यह सब क्या कर रहे हो तुम मेरे साथ?”

अखण्ड ने उसे फटकारते हुए कहा, “मैं जयवर्धन के इस शरीर को तुम्हारी दुष्टात्मा से मुक्त कराने वाला हूँ सुबाहु।”

जयवर्धन (सुबाहु) हँस पड़ा, “तुम्हें लगता है कि यह कार्य तुम्हारे वश में है?”

अखण्ड ने कोई उत्तर नहीं दिया। जयवर्धन के शरीर के भीतर से सुबाहु की दुष्टात्मा बोल पड़ी, “मुझे वरदान प्राप्त है; अपनी मृत्योपरांत मैंने इस शरीर पर अधिकार किया है और ब्रह्मदेव के वरदान अनुसार इस शरीर पर पूर्ण रूप से मेरा अधिकार है... तुम्हें वाकई लगता है कि ये तुच्छ ब्राह्मणों के मंत्र ब्रह्मदेव के दिए वरदान से बढ़कर हैं?”

सर्वदमन और अखण्ड दोनों यह सुनकर स्तब्ध रह गये।

“क्या यह सत्य है महाबली, कि इसे ब्रह्मदेव का वरदान प्राप्त है?” सर्वदमन ने प्रश्न किया।

“मुझे इस विषय में कोई जानकारी नहीं थी।” अखण्ड भी आश्चर्य में थे।

“हाँ, मैं समझ सकता हूँ; यह रहस्य मेरे और मेरे गुरु के मध्य ही था।” सुबाहु/जयवर्धन हँस पड़ा।

भैरवनाथ, जो उन ब्राह्मणों के बीच उन्हीं का वेश धरे बैठा था, उठा और चीख पड़ा, “आप लोगों ने हमें सम्पूर्ण सत्य नहीं बताया, यह तो बहुत बड़ा छल है।”

एक अन्य ब्राह्मण ने भी उठकर उसका समर्थन किया, “हम ब्रह्मदेव के दिए वरदान के विरुद्ध खड़े नहीं हो सकते, यह एक महापाप होगा, आपने हमारा बहुमूल्य समय नष्ट किया है।”

अन्य ब्राह्मण जन भी उनके समर्थन में उठ खड़े हुए और वहाँ से प्रस्थान करने लगे। उन ब्राह्मणों की भीड़ जयवर्धन के निकट से होकर निकल रही थी।

“फिर तो हमें जयवर्धन का वध कर देना चाहिए।” शंकराचार्य ने सुझाव दिया।

“वह घायल भी है और बेड़ियों में भी बँधा हुआ है, हम ऐसा नहीं कर सकते।” सर्वदमन ने अपना मत रखा।

“हमारे पास नियमों और आदर्शों पर विचार करने का समय नहीं है; यदि यह जीवित रह

गया, तो इसका परिणाम भयंकर होगा।” यह कहकर शंकराचार्य ने तलवार खींच निकाली।

तभी अखण्ड ने उन्हें रोक लिया, “हमें ऐसा नहीं करना चाहिए ऋषिवर, इसका परिणाम भयंकर हो सकता है।”

“तो आपको क्या लगता है, क्या करना चाहिए हमें?” शंकराचार्य ने प्रश्न किया।

“हम दूसरी योजना पर अमल करेंगे।” अखण्ड ने कहा।

“इसमें लाखों के प्राण जायेंगे।” शंकराचार्य असहमति जताते हुए जयवर्धन की ओर बढ़े।

सौ ब्राह्मणों की भीड़ जयवर्धन के निकट से होकर गुजर रही थी और जब वह भीड़ छँटी, तो जयवर्धन वहाँ नहीं था। उसके स्थान पर उन लोगों के समक्ष उपनंद खड़ा था।

अखण्ड आश्चर्य से उसकी ओर बढ़ा और इधर-उधर दृष्टि घुमाकर देखा, “राजा उपनंद! तुम यहाँ क्या कर रहे हो और जयवर्धन कहाँ हैं?”

उपनंद ने अपने हाथ उठाये और समर्पण के लिए घुटनों के बल बैठ गया, “हम असुरेश्वर दुर्भीक्ष के उपासक हैं और उनके लिए मैं आप लोगों के समक्ष समर्पण करता हूँ।”

“बंदी बना लो इसे!” अखण्ड ने क्रोध में आदेश दिया।

सैकड़ों डकैत योद्धा उसकी ओर दौड़े। अब उपनंद सैकड़ों भालों से घिरा हुआ था, किंतु फिर भी वो मुस्कुरा रहा था।

अखण्ड उसकी ओर बढ़े और उसकी गर्दन पकड़कर उससे प्रश्न किया, “बताओ मुझे, क्या योजना है तुम्हारी?”

उपनंद ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसके मुख पर केवल दुष्टता भरी मुस्कान थी।

अखण्ड ने उसके मुख पर मुष्टि से प्रहार किया। उसने अपने मुख से रक्त उगल दिया। अखण्ड ने उसकी छाती, उदर और शेष सभी शरीर के भागों पर वार किया। उन्होंने एक बार फिर उसकी गर्दन पकड़ी और प्रश्न किया, “बताओ मुझे, यदि अब भी मौन रहे तो तुम्हारी मृत्यु निश्चित है।”

“मैं एक निःशस्त्र योद्धा हूँ, मैं जानता हूँ कि तुम मेरा वध नहीं कर सकते।” उपनंद मुस्कुराया।

“इसे ले जाकर कारागार में डाल दो।” अखण्ड ने डकैत सैनिकों को आदेश दिया। वो उपनंद को अपने साथ ले गये।

“अब क्या करेंगे आप?” महर्षि शंकराचार्य ने अखण्ड से प्रश्न किया।

“जैसा कि पूर्वनिर्धारित था, हम दूसरी योजना पर अमल करेंगे।” अखण्ड में कहा।

“हमें अभी भी दूसरे विकल्पों का विचार करना चाहिए? अखण्ड, क्योंकि आपकी यह योजना लाखों की बलि ले लेगी।” शंकराचार्य ने चिंतित स्वर में कहा।

“इस युग में बड़ी तीव्र गति से दुष्ट प्रवृत्ति के आर्य राजाओं की संख्या बढ़ती जा रही है; उन्हें उचित मार्ग पर लाने का और कोई मार्ग नहीं है, हमें इसी योजना के साथ जाना होगा और इसके लिए मुझे मेघवर्ण और चंद्रकेतु को सम्पूर्ण सत्य से अवगत कराना होगा।” अखण्ड ने स्पष्टता से कहा।

“और उस उपनंद का क्या करना है?” शंकराचार्य ने प्रश्न किया।

“वह स्वेच्छा से हमारा बंदी बना है, मुझे पूरा विश्वास है कि भैरवनाथ ने अपनी किसी कुटिल योजना की पूर्ति के लिए ही इसे यहाँ भेजा होगा।” अखण्ड ने अनुमान लगाया।

सर्वदमन ने अपने कदम आगे बढ़ाये और प्रश्न किया, “तो अब हमें क्या करना चाहिए

महाबली अखण्ड?”

“शीघ्र ही तुम्हारे लिए भी एक प्रमुख अभियान आयेगा सर्वदमन, तब तक तुम्हें प्रतीक्षा करनी है।” कहते हुए अखण्ड ने एक डकैत योद्धा को संकेत किया। वो डकैत योद्धा उनके निकट आया।

“जयवर्धन के अपहरण के उपरांत हमने अपना निवास स्थान परिवर्तित कर दिया था और अब हमें एक बार फिर अपना निवास स्थान परिवर्तित करना होगा, क्योंकि भैरवनाथ को हमारे इस स्थान के विषय में भी ज्ञात हो गया है। इसलिए जैसे ही मेघवर्ण और चंद्रकेतु हमारे पुराने शिविर में आयें, तुम उन्हें हमारे नए स्थान पर ले आओगे।” अखण्ड ने उस डकैत योद्धा को आदेश देते हुए कहा।

“जो आज्ञा गुरुदेव।” वह डकैत योद्धा अपने अश्व पर आरुढ़ हुआ और वहाँ से प्रस्थान कर गया।

“तो फिर आगे क्या करना है?” शंकराचार्य ने प्रश्न किया।

“कुछ क्षण प्रतीक्षा कीजिये।” कहकर अखण्ड ने ऊँचे स्वर में आदेश सुनाया, “पाँच सौ डकैत योद्धा अभी के अभी मुझे यहाँ चाहिए!”

उनके एक आदेश पर कुछ ही क्षणों में पाँच सौ डकैत योद्धा पूर्ण अनुशासन से अलग-अलग पंक्तियों में खड़े हो गये।

अखण्ड ने उन्हें आदेश दिया, “जाओ और समग्र आर्यावर्त में यह अफवाह फैला दो कि महाराज तेजस्वी अपने सिंहासन को वापस प्राप्त करने हेतु लौट आये हैं।”

उनका आदेश सुनते ही डकैत योद्धा उसके पालन हेतु प्रस्थान कर गए।

“मैं समझ नहीं पा रहा हूँ, इस असत्य को फैलाने के पीछे आपकी वास्तविक मंशा है क्या?” शंकराचार्य ने प्रश्न किया।

“आपको शीघ्र ही ज्ञात हो जायेगा ऋषिवर; इस समय मैं सर्वदमन के साथ हरितनापुर जा रहा हूँ, तब तक हमारे दल और उपनंद का ध्यान आप रखिये... हम दो दिवस में लौट आयेंगे, क्योंकि अब सब कुछ दुर्धरा पर निर्भर करता है।” अखण्ड ने कहा।

“ठीक है, जैसा आप उचित समझिये।” शंकराचार्य ने सहमति जताते हुए कहा।

* * *

कुछ दिनों के पश्चात असुरेश्वर दुर्भीक्ष पातालपुरी लौट आया। रक्षगुरु भैरवनाथ और सेनापति भद्राक्ष ने उसका भव्य स्वागत किया।

सभी असुर सैनिक उसके समक्ष झुके और हुंकार भरी, “असुरेश्वर दुर्भीक्ष की जय हो, असुरेश्वर दुर्भीक्ष की जय हो...”

भैरवनाथ उसके निकट आया, “लंबा समय हो गया तुम्हें देखे हुए।”

“हाँ, बहुत ही रोचक अभियान था; बहुत अधिक समय लिया मेरा।” दुर्भीक्ष ने मुस्कुराते हुए कहा।

“क्या मैं जान सकता हूँ कि तुम किस अभियान के विषय में बात कर रहे हो?” भैरवनाथ ने प्रश्न किया।

“दो उत्त्वकोटि के योद्धाओं को मेरे विरुद्ध तैयार किया जा रहा है; उनमें से एक को तो मैंने पहचान लिया, किंतु दूसरा अभी भी मेरी दृष्टि से दूर है... इससे पूर्व कि मैं उसके विषय में कुछ

ज्ञात कर पाता, मेरा भेद खुल गया।” दुर्भीक्ष ने अपनी यात्रा का सम्पूर्ण वृत्तांत कह सुनाया।

“इसका अर्थ है कि तुम्हारी वायु की दिव्यशक्ति ने मेघवर्ण को तनिक भी प्रभावित नहीं किया?” भैरवनाथ ने आश्चर्य से प्रश्न किया।

“हाँ, इस अभियान में यह एकमात्र रोचक घटना थी।” दुर्भीक्ष ने उत्तर दिया।

कुछ क्षण विचार करने के उपरांत भैरवनाथ ने कहा, “फिर तो तुम्हें विश्राम की आवश्यकता होगी; हम इस विषय पर बाद में चर्चा करेंगे।”

“हाँ, विश्राम की आवश्यकता तो मुझे है और एक और बात, मुझे ज्ञात हुआ कि किस चतुरता से आपने जयवर्धन को मुक्त कराया... आपका बुद्धि चातुर्य निःसंदेह प्रशंसनीय है, क्योंकि यह कार्य सरल तो नहीं था।” दुर्भीक्ष, भैरवनाथ की प्रशंसा करते हुए मुस्कुराया।

“हाँ, वो तो है; विश्राम करो असुरेश्वर! मुझे एक आवश्यक कार्य हेतु प्रस्थान करना है।” कहकर भैरवनाथ वहाँ से प्रस्थान कर गया।

इसके उपरांत दुर्भीक्ष ने भद्राक्ष को आदेश दिया, “कम से कम एक पूरे दिन तक मेरी निद्रा में विघ्न न डालना।”

“जो आज्ञा महाराज; आपको लौटता देख प्रसन्नता हुई।” भद्राक्ष मुस्कुराया।

दुर्भीक्ष ने पातालपुरी के महल के भीतर प्रवेश किया।

कुछ और दिवस का समय बीता। दुर्भीक्ष अपने महल के बाहर टहल रहा था। एक असुर सैनिक वहाँ आकर उसके समक्ष झुका।

“क्या हुआ?” दुर्भीक्ष ने उससे प्रश्न किया।

“लगभग पाँच सौ सैनिक हस्तिनापुर का ध्वज लिए हमारी सीमा की ओर बढ़ रहे हैं, रथ पर आरूढ़ स्त्री उनका नेतृत्व कर रही हैं।” उस सैनिक ने सूचना दी।

“एक स्त्री? ठीक है, पाँच सौ की संख्या कुछ अधिक नहीं है; उनसे युद्ध की आवश्यकता नहीं है, उन्हें सम्मान सहित यहाँ ले आओ।” दुर्भीक्ष ने उस सैनिक को आदेश दिया।

“जो आज्ञा महाराज।” वह असुर सैनिक प्रस्थान कर गया।

शीघ्र ही वह स्त्री हस्तिनापुर के पाँच सौ सैनिकों के साथ वहाँ उपस्थित हुयी। दुर्भीक्ष उसकी ओर मुड़ा और अपने सामने खड़ी स्त्री को देख पूर्ण रूप से स्तब्ध रह गया।

नीले वस्त्र धारण किये हुए वह स्त्री अपने रथ से उतरी और दुर्भीक्ष की ओर बढ़ी।

‘दुर्धरा’ दृभीक्ष भी उस स्त्री की ओर बढ़ा।

वह दोनों कुछ क्षणों तक एक दूसरे को निहारते रहे।

“तुम यहाँ क्यों आयी हो दुर्धरा?” दुर्भीक्ष ने अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने का प्रयत्न किया।

दुर्धरा की आँखें भी नम थीं। उसने दुर्भीक्ष की ओर देख कहा, “महाऋषि शंकराचार्य ने मुझे सब सत्य बता दिया है।”

दुर्भीक्ष मौन हो गया। उस क्षण वह कुछ भी बोलने में असमर्थ सा प्रतीत हो रहा था।

दुर्धरा उसके निकट आई, “तुम सत्य कह रहे थे सुर्जन; भूल तुम्हारी नहीं थी... वो मेरे पिता थे जिन्होंने असत्य कहा कि मेरा विवाह हो चुका है; मुझे सत्य का ज्ञान हो चुका है।”

दुर्भीक्ष ने क्षण भर के लिए अपने नेत्र बंद किये, “मुझे विश्वास नहीं हो रहा, कदाचित् यह कोई स्वप्न ही है।”

दुर्धरा ने दुर्भीक्ष का हाथ पकड़ा, “यह स्वप्न नहीं है... दस वर्ष बीत चुके हैं; बहुत प्रतीक्षा की है मैंने, अब मैं तुम्हारे साथ रहना चाहती हूँ सुर्जन, हम दोनों ने अपने जीवन में बहुत कुछ झेला है, किंतु अब और नहीं”

“मैं अपने किये पापों के लिए तुमसे क्षमा चाहता हूँ दुर्धरा” अश्रु की कुछ बूँदें दुर्भीक्ष के नेत्रों से भी बह उठीं।

“मुझे सत्य का ज्ञान हो चुका है, भूल तुम्हारी नहीं थी।” दुर्धरा ने उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा।

दुर्भीक्ष ने दुर्धरा का हाथ अपने हाथों में लिया और कहा, “मुझे अभी भी विश्वास नहीं हो रहा दुर्धरा, कि यह सत्य है या नहीं, किंतु मैं इतना अवश्य जानता हूँ कि यह मेरे जीवन का सबसे सुखद पल है।

“मेरे लिए भी।” दुर्धरा के नेत्रों में भी नमी थी।

दुर्भीक्ष ने उसे कसकर हृदय से लगा लिया, “अब हमें कोई अलग नहीं कर सकता दुर्धरा” इसके उपरांत उसने दुर्धरा के नेत्रों की ओर देखा, “अब मैं और विलंब नहीं करूँगा; शीघ्र ही हमारा विवाह होगा”

“मैं सहमत हूँ” दुर्धरा ने मुस्कुराते हुए कहा।

दुर्भीक्ष ने घोषणा की, “हमारे विवाह की तैयारियाँ शीघ्र से शीघ्र संपन्न की जायँ”

इसके उपरांत उसने दुर्धरा की ओर मुड़कर उसके मुखभाव को देखा, “ओह तो तुम लजा रही हो, है न? कोई बात नहीं, बस थोड़ी प्रतीक्षा और... अब कल ही मैं विवाह मंडप में तुमसे भेंट करूँगा।” दुर्भीक्ष ने मुस्कुराते हुए अपने सैनिकों को संकेत दिया।

“यदि आज्ञा हो तो मैं कुछ कहना चाहता हूँ महाराजा” भद्राक्ष ने हस्तक्षेप करते हुए कहा।

“अब तुम्हें क्या कहना है?” दुर्भीक्ष ने रुष्ट स्वर में उससे प्रश्न किया।

“विवाह के लिए हमें एक उचित मुहूर्त की प्रतीक्षा कर लेनी चाहिए, क्योंकि विद्वानों के अनुसार विवाह का उचित मुहूर्त पर होना नवविवाहित जोड़े के सुखी दांपत्य जीवन के लिए आवश्यक है।” भद्राक्ष ने कहा।

दुर्भीक्ष ने क्षण भर सोचा और आदेश दिया, “ठीक है, ब्राह्मणों को बुला लो।”

तत्पश्चात दुर्भीक्ष ने एक असुर सैनिक को बुलाकर उसे आदेश दिया, “महल की सभी दासियों से कह दो कि उनकी महारानी पधारी हैं, विवाह से पूर्व आज रात्रि हम उत्सव मनायेंगे।”

शीघ्र ही कई स्त्रियाँ वहाँ उपस्थित हुईं। दुर्भीक्ष के संकेत पर वो दुर्धरा को अपने साथ ले गयीं।

इसके उपरांत दुर्भीक्ष ने विचार किया, “धन्यवाद महाबली अखण्ड, कदाचित् आपके ही कारण मुझे मेरा प्रेम वापस मिला है।”

* * *

दिग्विजय नागलोक की ओर चला गया और मेघवर्ण और चंद्रकेतु डकैतों के नए स्थान पर आ पहुँचे। वो दोनों महाबली अखण्ड के समक्ष खड़े थे। वो एक पत्थर के आसन पर बैठे थे। उनका मुख अभी भी ढका हुआ था, ताकि मेघवर्ण उसे न देख सके।

“आज तुम्हारी परीक्षा का अंतिम दिन है मेघवर्ण।” अखण्ड ने कहा।

“आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहा हूँ गुरुदेव।” मेघवर्ण ने विनम्रता से कहा।

अखण्ड और चंद्रकेतु दोनों ही उसके इस व्यवहार में अकस्मात् परिवर्तन देख चकित रह गये।

“तुम बदल गए हो, हैं न?” अखण्ड ने मेघवर्ण की ओर देख प्रश्न किया।

“यह शिक्षा तो मुझे मेरे शत्रु से मिली है।” मेघवर्ण ने उत्तर दिया।

“हाँ, मुझे ज्ञात हुआ कि तुम पहले से कहीं अधिक श्रेष्ठ हो गए हो।” अखण्ड ने कहा।

अगले ही क्षण अखण्ड पत्थर के बने आसन से उठे और घोषणा की, “ठीक है, आज तुम्हें मेरी अंतिम चुनौती है... आज हमारा अंतिम टूट्ट होना और यदि तुम विजयी हुए तो मैं न केवल अपना मुख तुम्हें दिखाऊँगा, अपितु तुम दोनों के जीवन की वास्तविकता से तुम्हारा परिचय भी कराऊँगा।”

“अवश्य गुरुदेव; अपने जीवन का सत्य जानने के लिए मैं अपना सम्पूर्ण सामर्थ्य लगा दूँगा।” मेघवर्ण ने सहमति जताई।

* * *

पातालपुरी के ही एक स्थान पर भैरवनाथ गहन ध्यान में लीन था। असुरों का सेनापति भद्राक्ष शीघ्र ही वहाँ उपस्थित हुआ।

“तुम्हारा मन स्थिर नहीं है भद्राक्ष, ऐसा क्यों?” भैरवनाथ ने अपने नेत्र खोले और भद्राक्ष की ओर देखा।

“हाँ गुरुदेव, समस्या बहुत गंभीर है।” भद्राक्ष ने कहा।

“बात क्या है?”

“वह श्राप उनके जीवन में लौट आया है।”

भैरवनाथ उठ खड़ा हुआ और आश्चर्यपूर्वक प्रश्न किया, “यह मत कहना कि तुम दुर्धरा के विषय में बात कर रहे हो।”

“मैं कहना तो नहीं चाहता, किंतु यही सत्य है।” भद्राक्ष ने कहा।

“विस्तार से बताओ।”

“वो असुरेश्वर दुर्भीक्ष से विवाह करने के उद्देश्य से लौट आयी है, आपको इसमें कुछ अनुचित नहीं लगता?” भद्राक्ष ने प्रश्न उठाया।

“वो दुर्भीक्ष से विवाह करना चाहती है? हाँ, यह संभव है... यदि शंकराचार्य ने दुर्धरा के समक्ष सत्य उजागर कर दिया हो, किंतु मुझे पूरा विश्वास है कि वो ऐसा नहीं करेगा, क्योंकि यदि गरुड़ों के श्राप का विचार किया जाय तो दुर्धरा हमारे शत्रुओं के तुरीण में रखा सबसे बड़ा महाअस्त्र है, जो दुर्भीक्ष के पतन का कारण बन सकता है, इसलिए मेरा मानना है कि उसकी मंशा निःसंदेह कुछ और ही है।”

“ऐसी स्थिति में हमें क्या करना चाहिए?” भद्राक्ष ने प्रश्न किया।

“मैं एक अलग ही दुष्कर समस्या पर विचार कर रहा था और अभी एक और समस्या आ खड़ी हुई।” भैरवनाथ के मुख पर चिंता की लकीरें स्पष्ट दिखाई दे रही थीं।

“एक और दुष्कर समस्या?”

“हाँ, असुरेश्वर की समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं; मैं उसके उस वचन के विषय में विचार कर रहा था, जो उसने जयवर्धन के समर्थन में लिया है।” भैरवनाथ ने कहा।

“तो आपको लगता है कि वो अपना वचन तोड़ सकते हैं, मुझे तो नहीं लगता कि यह संभव है।”

“मुझे ज्ञात है कि वो अपना वचन कभी नहीं तोड़ेगा; किंतु यथार्थ तो यह है कि केवल एक

वचन में बँधे होने के कारण वो जयवर्धन के समर्थन में खड़ा है, किंतु जयवर्धन का उससे कोई भी भावनात्मक जुड़ाव नहीं है और यही कारण है कि वो कभी उसके लिए लड़ते हुए अपनी सम्पूर्ण शक्ति का प्रयोग नहीं करता और वैसे भी जब जयवर्धन का अपहरण हुआ था तो उसे इस बात की कोई विशेष परवाह नहीं थी।” भैरवनाथ ने कहा।

“जयवर्धन और असुरेश्वर दुर्भीक्ष के मध्य कोई भावनात्मक लगाव संभव ही नहीं है गुरुदेव, क्योंकि इतने वर्षों में असुरेश्वर को यह आभास हो चुका है कि वो एक प्रकार से जयवर्धन के दासत्व में बँध चुके हैं, जिनका वो एक अस्त्र की भाँति उपयोग कर रहा है, इसलिए यह तो संभव नहीं है।” भद्राक्ष ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

“और यही कारण है कि जयवर्धन के लिए उसके मन में घृणा का जन्म होने लगा है। कोई भी संकट यदि जयवर्धन की ओर बढ़ा, तो उसे इसकी कोई परवाह नहीं होगी। वो यदि वहाँ उपस्थित रहा, तो उसकी रक्षा करेगा, अन्यथा उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता और यह अनुमान मैं उसके व्यवहार में परिवर्तन देखकर लगा रहा हूँ, अपितु मुझे तो लगता है कि उसके मन में अपने शत्रुओं मेघवर्ण और चंद्रकेतु के प्रति अधिक मित्रवत लगाव सा उत्पन्न होने लगा है।” भैरवनाथ ने कहा।

“किंतु ऐसी स्थिति में हम कर भी क्या सकते हैं?” भद्राक्ष ने प्रश्न किया।

“मैं इस विषय पर कुछ दिनों से विचार कर रहा था और अब मेरी योजना तैयार है, जिससे दुर्भीक्ष अपने सम्पूर्ण सामर्थ्य से जयवर्धन के लिए युद्ध करेगा। इतने वर्षों से उसने अपने जीवन में कई कठोर नियम बना रखे हैं, कि एक वर्ष में वो केवल तीन युद्ध करेगा। यदि दुर्भीक्ष ने हमें इन नियमों में बाँधा नहीं होता तो अब तक हम सम्पूर्ण आर्यावर्त पर विजय प्राप्त कर चुके होते, किंतु अब मुझे पता है कि मुझे क्या करना है; मुझे इस पूरे संसार पर असुरों का आधिपत्य स्थापित करने का अपना स्वप्न पूरा करना है और उसके लिए मैं कुछ भी करूँगा। महर्षि ओमेश्वर का अंश होने के कारण उसमें जो मानवता और वैराग्य भाव उत्पन्न हुआ है, वो हमारे लिए अपरोक्ष रूप से एक चेतावनी है... मैं दुर्भीक्ष के भीतर की उस मानवता और वैराग्यका पूरी तरह से अंत कर दूँगा।”

“योजना क्या है?” भद्राक्ष ने प्रश्न किया।

“उसके विषय में तुम्हें शीघ्र ही ज्ञात हो जायेगा।” भैरवनाथ ने कहा।

“जैसा आप उचित समझें; अब यह बताइये कि दुर्धरा का क्या करना है?” भद्राक्ष ने प्रश्न किया।

“हमें उसके अगले कदम की प्रतीक्षा करनी है; हम उसकी वास्तविक मंशा से अभी तक अनभिज्ञ हैं... देखते हैं उसके यहाँ आने का उद्देश्य क्या है?” भैरवनाथ ने चिंतित स्वर में कहा।

“यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं देवी दुर्धरा के समक्ष सत्य उजागर करना चाहूँगा... इससे पहले कि कोई अनर्थ हो, उन्हें ज्ञात होना चाहिए कि असुरेश्वर दुर्भीक्ष उनके पिता के वास्तविक हत्यारे नहीं हैं।” भद्राक्ष ने कहा।

“तुम अपनी जड़ बुद्धि का उपयोग करना बंद करो; जैसा आदेश दिया गया है वैसे ही करते रहो।” भैरवनाथ ने उसे फटकारते हुए कहा।

* * *

रात्रि का समय था। दुर्भीक्ष अपने उद्यान में टहल रहा था। दुर्धरा से विवाह के विषय में सोचकर उसका मन प्रफुल्लित हुआ जा रहा था।

अकस्मात् ही उसे अपने निकट की झाड़ियों के हिलने का स्वर सुनाई दिया। उसने उन झाड़ियों की ओर दृष्टि घुमाई।

एक हष्ट-पुष्ट शरीर का धनी मनुष्य झाड़ियों से निकलकर उसके समक्ष आ खड़ा हुआ।

दुर्भीक्ष उसे देख स्तब्ध रह गया, “तु..तुम।”

वह मनुष्य दुर्भीक्ष के निकट आया। वो उसे क्रोध से उसे घूरे जा रहा था। वहीं दुर्भीक्ष उसे देख मौन सा हो गया।

अगले ही क्षण उस मनुष्य ने दुर्भीक्ष के मुख पर मुष्टि से वार किया। असुरों का वो महानायक भूमि पर गिर पड़ा।

क्या है महाबली अखण्ड की दूसरी योजना? दुर्धरा की वास्तविक मंशा क्या है? महाबली वक्रबाहु इतने वर्षों से किसकी प्रतीक्षा में है? क्या होगा जब दिग्विजय की भेंट अपनी नागमाता कनिष्का से होगी? चंद्रकेतु और सुनंदा के पूर्व निर्धारित संबंध का क्या होगा? क्या द्रविड़ प्रजाति अपनी मातृभूमि को वापस ले पायेगी? उपनंद ने स्वेच्छा से समर्पण क्यों किया? खाण्डवप्रस्थ का वो निर्वासित नाग तक्षक आखिर गया कहाँ? यदि मेघवर्ण वो पहला योद्धा है, तो कौन है वो दूसरा योद्धा, जिसे असुरेश्वर दुर्भीक्ष के विरुद्ध खड़े होने के लिए चुना गया है? क्या दुर्भीक्ष को कभी भी भैरवनाथ के उन षड्यंत्रों के विषय में ज्ञात होगा, जो वो उसके जीवनपर्यंत स्वता आया है? और भद्राक्ष ने ऐसा क्यों कहा कि दुर्धरा के पिता राजा उग्रसेन का वास्तविक हत्यारा दुर्भीक्ष नहीं है?

और अंतिम प्रश्न... कौन सी ऐसी परिस्थितियाँ बनेगी, जिससे होगा भरतवंश का उदय

रणक्षेत्रम्

- खण्ड चार -

भरतवंश का उदय